भूमिका

महात्मा शुक्राचार्य्य ने बहुतही ठीक कहा है, कि व्याकरण से शब्द और अर्थका ज्ञान होता है; न्याय और तर्क-शास्त्रसे जगत् के पदार्थों का ज्ञान होता है और वेदान्तसे संसारकी असारता एवं देहकी अनित्यताका ज्ञान होता है; किन्तु लौकिक व्यवहारमें इन शास्त्रोंसे कुछ भी प्रयोजन नहीं निकलता। सांसारिक कार्य्य-व्यवहार निर्वाह करने और सुखपूर्व्वक जीवन बितानेके लिये जिस चीज़को बड़ी भारी आवश्यकता है, वह "नीतिशास्त्र" है। जिस तरह जीवधारियोंकी जीवनरक्षाके लिये अन्न-जल की ज़रूरत है; उसी तरह संसारके कार-व्यवहार चलानेके लिये "नीति" की आवश्यकता है। यह शास्त्र महलोंमें रहने वाले राजासे लेकर कुटीर-निवासी क्षुद्र मनुष्य तकके लिये समान भावसे ज़रूरी है।

खेदकी बात है, कि यही "नीतिशास्त्र" संस्कृत भाषामें है। आजकल, संस्कृतका पठन-पाठन राजा भोजके समय या उनके पहले के ज़माने की तरह नहीं है। बहुत कम लोग संस्कृत पढ़ते हैं। मुसलमानी राजत्वकालमें लोगोंकी रुचि फ़ारसी-अरबी की तरफ़ थी और आजकल विशेष रुचि अङ्ग-

रेज़ी की ओर है। ख़ैर, इतनी ही है, कि आजकल पहले से अधिक हिन्दी-शिक्षित पाये जाते हैं। वे जैसी पुस्तकें स्कूलों में पढ़ते हैं, उनसे उनको यथेष्ट नीति-ज्ञान नहीं होता। यही कारण है, कि आजकल के लड़कोंमें माता-पिताकी भक्ति, स्त्रियोंमें पति-प्रेम, पुरुषोंमें स्वपत्नि-अनुराग, सेवकोंमें स्वामी भक्ति, विद्यार्थियोंमें गुरु-भक्ति, भाई-भाईयोंमें भ्रातृ-प्रेमका अभाव पाया जाता है।

हिन्दीके सभी पाठक संस्कृत, अँगरेज़ी, अरबी, फ़ारसी प्रभृति सभी देशी-विदेशी भाषाएं नहीं जानते; इसीलिये वे सुधा-समान नीति-रसके चखनेसे वञ्चित रहते हैं। बस, इसी कारणसे, मैंने हिन्दीके पाठकोंके उपकारार्थ संस्कृतके कतिपय ग्रन्थों, फ़ारसीकी कई पुस्तकों और अङ्गरेज़ी की कितनी ही किताबों तथा मासिकपत्रोंसे अनमोल और समयोपयोगी वाक्योंको चुनकर, सरल हिन्दीमें अनुवाद करके, इस पुस्तक में सजा दिया है। अगर मैं यह कहूं, कि भारत, ईरान, अरब, चीनके प्रायः सभी नीति-विशारदोंकी नीतिका संग्रह पूर्णतया या सबसे अधिक हिन्दीकी इसी पुस्तकमें किया गया है, तोभी अत्युक्ति न समझनी चाहिये। कनफ्यूशियस और शुक्राचार्य्य ने राजनीति बहुत लिखी है; किन्तु मने उसे इस ज़मानेमें, इस मुल्कके लिये, विशेष उपयोगी न समझ कर छोड़ दिया है और अधिक नीतिके संग्रह करनेमें भी इस बातका ध्यान रक्खा है। इस पुस्तकमें एशियाई नीति अधिक

नीतिकारों का संक्षिप्त विवरण।

चाणक्य। चाणक्य ब्राह्मण थे। यह उस ज़मानेमें हुए थे, जब यहाँ महानन्द नामक राजा राज्य करता था। यह बड़े कूटनीतिज्ञ थे। इन्होंने नन्दके पुत्रोंको गद्दीसे उतार कर, अपने नीति-बलसे, अपने शिष्य चन्द्रगुप्तको राज्य दिलाया। इन्हें पैदा हुए कोई २३०० वर्ष हुए। इनकी वनाई नीतिका संसारमें बड़ा आदर है।

विदुर। यह महापुरुष एक तरह धृतराष्ट्रके भाई थे। दासीसे पैदा होनेके कारण मन्त्रीका काम करते थे। इन्होंने राजा धृतराष्ट्रको वहुत कुछ समझाया-बुझाया कि, आप अनीति न कीजिये—पाण्डवोंका राज्य पाण्डवोंको दे दीजिये, मगर धृतराष्ट्रने भावीके कारण या पुत्र-प्रेमके कारण उनका कहना न माना। यह भी वड़े भारी नीतिज्ञ हुए हैं। इनका एक-एक वचन लाख-लाख रुपयेको भी महँगा नहीं है। इन्हें हुए कोई ५००० वर्षसे ऊपर हुए।

शुक्र। इन्हेंशुक्राकार्य्य कहते हैं। सवसे पहले नीति-कार यही हुए हैं। इनके समयका पता नहीं लगता। इन्होंने खूबही बढ़िया नीति कही है।

भर्तृहरि। महाराजा भर्तृहरि राजा विक्रमादित्यके भाई

और उज्जैनके राजा थे। अपनी परम-प्यारी रानी पिङ्गलाके व्यभिचारिणी सिद्ध हो जाने पर, इन्होंने राजपाट त्याग कर वैराग्य ले लिया और तीन शतक लिखे। पहले शतकमें नीति * दूसरेमें शृङ्गार और तीसरेमें वैराग्य विषय पर लिखा है। इन को पैदा हुए भी अनुमान से २००० वर्ष हुए हैं। इन्होंने जो लिखा है, वह विचित्र और मनोमोहक है।

शेख़ सादी। आप मुसल्मान थे और ईरान में पैदा हुए थे। आपने गुलिस्ताँ नामक अपूर्व नीति-ग्रन्थ लिखा है। गुलिस्ताँका प्रत्येक वाक्य अनमोल है। हमने इस पुस्तकमें सिर्फ़ एक अध्यायका अनुवाद दिया है। सम्पूर्ण गुलिस्ताँका अनुवाद भी हमारे यहाँ छपकर बिकनेको तय्यार है। पृष्ठ संख्या ४०० दाम २॥) डाक महसूल और पेकिङ्ग ॥)

महात्मा कनफ्यूशियस। आप चीन के महापुरुष थे। आपको हुए भी कई हज़ार वर्ष बीत गये। आपकी

---

* इनके तीनों शतक उत्तम हैं। परन्तु तीनोंमें नीतिशतक सर्वोत्तम है। इसे स्त्री, बालक, जवान और बूढ़े सभी पढ़ सकते और लाभान्वित हो सकते हैं। नीति शतक हमारे यहाँ बड़ी ख़ूबीसे छपा है। संस्कृत श्लोक हैं, नीचे पद्यानुवाद है, उसके नीचे भाषानुवाद है, और उसके भी नीचे अङ्गरेज़ी अनुवाद है। प्रत्येक मनुष्यके देखने-योग्य चीज़ है। छपाई-सफाई अत्युत्तम। दाम सजिल्दका ५) डाकख़र्च और पेकिङ्ग ॥-) अवश्य देखिये।

नीति और आपकी बुद्धिमानीकी वजहसे आप चीनके घर-घर में पूजे जाते हैं। आपने पहले लड़के पढ़ाये। पचास वर्षकी उम्रमें आपको हाकिमी मिली। पीछे आपने इस्तेफा दे दिया और गली-गली फिर कर अपने उपदेश-रूपी अमृत की वर्षा करने लगे।

हिन्दी भगवद्गीता

गीता ऐसा ग्रन्थ है, जो मनुष्यमात्रको पढ़ना और समझना चाहिये। गीताके समझकर पढ़नेसे प्राणी सब दुःखों से छुटकारा पाकर अनन्त सुख पाता हैं। गीता में जो उत्तम ज्ञान है, वह जगत्के किसी ग्रन्थमें नहीं है। इसीसे आज गीताका सारे जगत्में आदर हो रहा है। अङ्गरेज़, जर्म्मन, फ्रान्सीसी, जापानी प्रभृति जगत्की सभी बड़ी-बड़ी क़ौमोंने गीताका अपनी-अपनी भाषाओंमें अनुवाद कर लिया है। दुःखकी बात है कि, विदेशी और विधर्मी लोग गीता पढ़ें और उसका आदर कर, किन्तु गीता जिन हिन्दुओंकी अपनी चीज़ है वे उसे न पढ़ें ; अथवा पढ़ें तो तोता रटन्तवालीकहावत चरितार्थ करें। गीताके ख़ाली पाठ करनेसे कोई लाभ नहीं है ; समझकर पढ़नेसे मनुष्य गृहस्थीमें रहकर भी मोक्ष लाभ कर सकता हैं।

अनेक स्थानोंमें गीता छपे हैं, मगर उनमें लिखा हुआ अर्थ सब किसी की समझमें नहीं आता ; दूसरे उनके दाम भी बहुत हैं ; इस लिये हमने ऐसा "गीता" तय्यार कराया है, जिसको थोड़ीसो हिन्दी पढ़ा हुआ बालक भी उपन्यास की तरह समझ सकेगा।

इसमें मूल है, अर्थ है, टीका है, शङ्का-समाधान है ; सभी कुछ है। इसमें पूरे १८ अध्याय हैं। पृष्ठ संख्या ५०० से ऊपर है। छपाई सफाई मनोमोहिनी है। एक तिनरङ्गा रङ्गीन चित्र भी है। दाम २।) डाक-खर्च ।।≤) इस एक गीतामें शङ्कराचार्य्य और माधवाचार्य्य दोनोंकी टीकाओं का आनन्द है।

पता—हरिदास एण्ड कम्पनी।

२०१ हरिसन रोड, कलकत्ता।

है और यूरोपिय कम ; तथापि अब हिन्दी-पाठकोंको नीतिके लिये दूसरी पुस्तक देखने की आवश्यकता न होगी।

इस पुस्तककी भाषा मैंने यथाशक्ति नितान्त सरल और सीधी-सादी रक्खी है, जिससे साधारण हिन्दी जाननेवाले बाल, वृद्ध, युवक, नर और नारी एवं शिक्षित, अर्द्ध शिक्षित, हर अवस्थाके मनुष्य, इससे लाभ उठा सकेंगे। बहुत कहनेसे क्या नीतिकी बाहुल्यता और भाषाकी सरलताके कारण यह पुस्तक हिन्दी-संसारमें नई चीज़ है। आशा है, कि हिन्दी-पाठक मेरी मिहनत की क़दरदानी करके मेरा उत्साह पूर्ववत् बढ़ाते रहेंगे।

इस पुस्तकके लिखनेमें मुझे संस्कृत ग्रन्थोंके सिवा The Sayings of Confucius, The Wisdom of the East तथा Arabian Wisdom इत्यादि अंगरेज़ी पुस्तकोंसे भी बहुत-कुछ सहायता मिली है। फ़ारसी गुलिस्ताँके आठवें बाबके अनुवाद करनेमें बाबू रामप्रतापजी भार्गव और मुन्शी बद्रीप्रसादजी भार्गव से मदद मिली है। अतः मैं उक्त महाशयोंको हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता।

कलकत्ता
१—११—१९११

विनीत—
हरिदास।

(३) जब मनुष्य पर विपत्ति पड़ती है तब उसका बचाव धन से हो सकता है, इसवास्ते विपत्ति के लिये पहले से ही धन को बचाकर रखना उचित है। यदि स्त्री पर कष्ट आपड़े तो उसकी रक्षा धन से करनी चाहिये; किन्तु जब स्वयं अपने ऊपर ही मुसीबत आपड़े, तब अपनी रक्षा स्त्री और धन दोनों से करनी चाहिये।

(४) चतुर मनुष्य को चाहिये कि जहाँ उसका आदर-सम्मान न हो, जहाँ उसकी जीविका न हो, जहाँ उसके भाई-बन्धु न हों और जहाँ विद्या पढ़नेका भी लाभ न हो,—वहाँ कदापि न बसे।

(५) जहाँ साहूकार, वेदज्ञ ब्राह्मण, राजा, नदी और वैद्य, ये पाँचो न हों,—वहाँ चतुर मनुष्यको एक दिन भी न रहना चाहिये।

(६) जो बेरोज़गार हैं, जो बेहया या बेशर्म हैं, जो निडर हैं, जो मूर्ख हैं और जिनका स्वभाव उदार नहीं है—उन लोगोंसे प्रीति न करनी चाहिये।

(७) काम में लगाकर नौकर की परीक्षा होती है, अपने ऊपर मुसीबत आनेसे नाते-रिश्तेदारों की जाँच होती है, विपत्तिकाल में मित्र की परीक्षा होती है और धन-धान्य, सुख-सम्पत्ति के नाश हो जानेपर स्त्री की परीक्षा होती है।

(८) जो सङ्कट पड़ने पर सहायता करता है, दुर्भिक्ष के समय धन-धान्य से मदद करता है, वैरियों के सताने पर

उन से छुटकारा कराता है, कचहरी या राज-दर्बार में साथ देता है और किसी की मृत्यु हो जानेपर श्मशान पर भी हाज़िर रहता है,—उसे ही मित्र या भाई-वन्धु कह सकते हैं।

(९) बुद्धिमान् को चाहिये कि यदि अच्छे कुलकी लड़की बद-सूरत भी हो, तो उससे शादी कर ले; किन्तु नीच वंश की सुन्दरी कन्या से भी कदापि विवाह न करे; क्योंकि शादी-विवाह सदा समान कुल में होने से ही सुखदायी होते हैं।

(१०) चतुर मनुष्य को चाहिये कि नदियों का, हथियार बाँधनेवालोंका, गाय-भैंस आदि सींगवाले जानवरों का, शेर-चीते आदि नाख़ूनवाले जानवरोंका, औरतों का तथा राज-कुटुम्बियों का कभी विश्वास न करे। जो इन का विश्वास करेगा, उसका नाश अवश्य ही होगा।

(११) यदि विषमें भी अमृत हो, तो उसे ले लेना चाहिये। अगर विष्ठा आदि मैली चीज़ों में भी सोना मिले तो उसे न छोड़ना चाहिये। अच्छी विद्या यदि नीच मनुष्य के पास भी हो, तो अवश्य सीख लेनी चाहिये। स्त्री-रत्न यदि दुष्ट कुल में भी हो, तोभी ले लेना चाहिये।

(१२) औरत मर्दों से दूना खाती हैं और उन से चौगुनी शर्म करती हैं। उन में पुरुषों की अपेछा छः गुना साहस और अठगुणी कामाग्नि (पुरुषेच्छा) होती है।

दूसरा अध्याय ।

झूठ बोलना, किसी काममें विना बिचारे झट-पट लगजाना, चालाकी, बेवकूफी, लालच, अपवित्रता और बेरहमी (निर्दयता)—ये दोष स्त्रियोंमें स्वभाव से ही होते हैं ।

(२) खाने लायक़ चीज़, खानेकी ताक़त, ख़ूबसूरत स्त्री, मैथुन करनेकी शक्ति, धन-दौलत और नामवरी तथा दान-शक्ति—इन सबका होना थोड़ी तपस्या का फल नहीं है। यानी जिसमें ये सब हों, उसे पूर्व्व जन्मका घोर तपस्वी समझना चाहिये ; क्योंकि बिना कठिन तपस्या के ये सब नहीं मिलते ।

(३) जिस मनुष्यका पुत्र वश में हो, जिसकी स्त्री इच्छा-नुसार चले और जिसे धन में सन्तोष हो,—उसे इस दुनिया में ही स्वर्ग है ।

(४) जो पिता का भक्त है वही पुत्र है, जो पालन-पोषण करता है वही पिता है, जिस पर विश्वास है वही मित्र है और जिससे सुख मिले वही स्त्री है ।

(५) जो मित्र सामने तो चिकनी-चुपड़ी और मीठी-मीठी बातें बनावे ; किन्तु पीठ पीछे निन्दा करे और काम बिगाड़ने

का उद्योग करे,—उस मित्रको उस घड़े के समान समझना चाहिये जिसके मुँहपर तो दूध भरा है, किन्तु भीतर ज़हर भरा है। जिस भाँति वैसा घड़ा त्यागने-योग्य है, वैसे ही वैसा दग़ाबाज़ मित्र भी छोड़ने-योग्य है।

(६) खोटे मित्र पर तो किसी भाँति विश्वास करना ही न चाहिये; किन्तु अच्छे मित्र पर भी बुद्धिमान् एकाएकी विश्वास न कर बैठे; क्योंकि इस बातका भय अवश्य है कि कभी अच्छा मित्र भी, किसी तरह नाराज़ होनेसे, सब गुप्त भेदों को प्रकाशित करके सब काम चौपट न करदे।

(७) जो बात मनमें बिचारी हो, उसे किसी से भी न कहना चाहिये। सोची हुई बात के कह डालने से, बहुधा, बनते-बनते काम बिगड़ जाते हैं; अतएव जब तक कार्य्य सिद्ध न हो जाय तब तक तो अपने पेट की बात को पेटमें रखना ही ठीक है।

(८) मूर्खता मनुष्य को दुःख देती है, जवानी भी दुःख देती है; किन्तु दूसरे के घर का बसना तो सब से ही अधिक दुःखदायी होता है।

(९) सब ही पहाड़ों में माणिक नहीं होते, सब ही हाथियों के मस्तक में मोती नहीं होते; सब ही बनों में चन्दन नहीं होता और सब ही स्थानों में सज्जन पुरुष नहीं होते।

(१०) वह माँ-बाप जो अपने पुत्र को विद्या नहीं

पढ़ाते, उसके (अपने पुत्रके) दुश्मन होते हैं न कि मा बाप; क्योंकि मूर्ख पुत्र विद्वानों की मण्डली में इस भाँति अच्छा नहीं लगता, जैसे कि हंसोंके बीच में बगुला शोभा नहीं पाता।

(११) लाड़ करनेमें बहुत से दोष हैं, किन्तु सज़ा देने में बहुत से गुण हैं। इसवास्ते पुत्र और शिष्य (चेले) को ताड़ना देना ही अच्छा है, परन्तु लाड़ करना हानिकारक है।

(१२) कम से कम एक नया श्लोक नित्य पढ़ना चाहिये, यदि एक श्लोक रोज़ न हो सके तो आधाही पढ़ना चाहिये, यदि आधा भी न बन पड़े तो चौथाई ही रोज़ पढ़ना चाहिये; क्योंकि दान करने और पढ़नेसे दिन को सार्थक करना बहुत ही ज़रूरी बात है।

(१३) अपनी स्त्री की जुदाई, अपने ही आदमियों से अपना अनादर, और युद्ध से बच कर निकल गया हुआ दुश्मन,—ये बिना आग ही मनुष्य को जलाते रहते हैं।

(१४) वह वृक्ष, जो नदीके किनारे होते हैं अवश्य ही नष्ट हो जाते हैं; वह स्त्री, जो अड़ौस-पड़ौस के या दूसरों के घरों में बहुधा आया-जाया करती है, अवश्य ही बदचलन हो जाती है। इसी भाँति वह राजा, जिसके मन्त्री नहीं होता, निश्चय ही नाश हो जाता है।

(१५) ब्राह्मणों का बल विद्या है, राजा का बल फ़ौज है, वैश्यों का बल धन है और शूद्रों का बल चाकरी है।

(१६) वेश्यानिर्धन पुरुष को त्याग देती है, प्रजा निर्बल
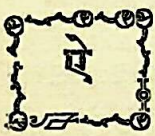
राजा को छोड़ देती है, पखेरू फलहीन वृक्ष को छोड़ देते हैं और अभ्यागत (मिहमान) भोजन करनेके बाद घर को छोड़ कर चल देते हैं।

(१७) जिसका चाल-चलन ख़राब है, जिसकी नज़र हमेशा पाप-कर्म्मों में रहती है, जो ख़राब जगहमें रहता है और जो दुष्ट है,—ऐसे मनुष्य के साथ जो मित्रता करता है, वह शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(१८) अपने बराबर-वालों के साथ प्रेम शोभा देता है, राजा की चाकरी शोभा देती है, व्यवहारों में वाणिज्य-व्योपार शोभा देता है और घरमें सुन्दर स्त्री शोभा देती है।

तीसरा अध्याय।

ऐसा कौन है, जिसके कुल में कुछ दोष नहीं है? ऐसा कौन है जिसे किसी रोगने कभी नहीं सताया? ऐसा कौन है जिसे कभी कुछ दुःख न हुआ हो? ऐसा कौन है, जिसे सदा सुख ही सुख मिला हो?

इसका खुलासा मतलब यह है, कि ऐसा कोई नहीं है जिसके कुलमें दोष न हो। ऐसा कोई नहीं है, जिसे कुछ न कुछ बीमारी कभी न हुई हो। ऐसा कोई नहीं है, जिसे कभी कोई दुःख न हुआ हो और ऐसा भी कोई नहीं है जो सदा सुखी ही रहा हो यानी जिसे मुसीबतने कभी दर्शन न दिये हों।

(२) आचार (चाल-चलन) से कुल का पता लगता है। बोली से मनुष्य के देश का पता लगता है। आदर-सम्मान से प्रीति का पता लगता है और शरीर से भोजन का पता लग जाता है।

(३) कन्या अच्छे कुल में देनी उचित है। पुत्र को विद्या-भ्यास कराना मुनासिब है। दुश्मन को दुःख पहुचाना और दोस्तको धर्म्म-कार्य्य की सलाह देनी उचित है।

(४) दुष्ट मनुष्य और साँप इन दोनोंमें साँप अच्छा है, किन्तु दुष्ट मनुष्य अच्छा नहीं; क्योंकि सर्प तो समय आने पर काटता है परन्तु दुष्ट पैंड पैंड पर दुःख देता है।

(५) राजा लोग कुलीन पुरुषों को जहाँ-तहाँ से ढूढ़ कर इसवास्ते रखते हैं कि अच्छे कुलवाले मनुष्य राजा को उसकी ऊंची-नीची और मध्यम अवस्था में भी नहीं छोड़ते।

मतलब यह है कि हीन कुलवाले लोग राजाकी उन्नत अवस्थामें तो उसके संग चिपटे रहते हैं; किन्तु जब उसका विपत्तिकाल आता है तब उसे दुःखमें छोड़ कर नौ दो हो जाते हैं; किन्तु उत्तम कुलवाले पुरुष तीनों अवस्थाओं में संग नहीं छोड़ते। अतएव कुलीन पुरुषों का संग्रह करना ही अच्छा है।

(६) प्रलयकाल में समुद्र भी अपनी मर्यादा छोड़ कर जगत् को डुबा देता है; किन्तु सज्जन पुरुष प्रलय के समय भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ते।

(७) मूर्ख मनुष्य से दूर रहना ही ठीक है; क्योंकि वह देखने में तो मनुष्य है, लेकिन है दो पाँववाला जानवर। मूर्ख अपने वचन-रूपी बाणोंसे ऐसे छेदता है, जैसे अन्धे मनुष्यको काँटा।

(८) मनुष्य चाहे कैसाही ख़ूबसूरत और जवान हो और उसने कैसेही बड़े कुलमें जन्म क्यों न लिया हो, यदि वह विद्या-हीन हो तो ढाकके फूलोंके समान लगता है, जिन में सुगन्ध तो नामको भी नहीं होती, किन्तु देखनेमें ख़ूबही सुन्दर मालूम होते हैं।

(९) कोयलों की शोभा "स्वर" (मीठी आवाज़) है, स्त्रियों की शोभा "पातिव्रत" है। पुरुषों की शोभा "विद्या" है और तपस्वियोंकी शोभा "क्षमा" है।

(१०) कुलके लिये एक को छोड़ देना उचित है, गाँवके लिये कुल को त्याग देना मुनासिब है, देशके लिये गाँव को और अपने लिये तो पृथ्वीकोही छोड़ देना ठीक है।

(११) जो उद्योगी पुरुष हैं, उनसे दरिद्रता दूर रहती है; जप करनेवालोंके पास पाप नहीं फटकता; चुप रहनेसे लड़ाई-झगड़ा नहीं होता और जागनेवालोंके पास भय नहीं आता।

(१२) सीता अति सुन्दरी थी, इसवास्ते उसे रावण ले गया; रावण अति अभिमानी था, इसलिये रामचन्द्र द्वारा मारा गया; राजा बलि अत्यन्त दानी थे, अतएव वामन भगवान्ने उन्हें बन्धनमें डाल कर पाताल भेज दिया; इसवास्ते सबही कामोंमें "अति" अच्छी नहीं है।

खुलासा मतलब यह है कि सीता अति सुन्दर थी, इसवास्ते उसका हरण हुआ। रावणमें अति घमण्ड था, इसवास्ते उसका नाश हुआ और बलिमें अतिदान देने की प्रकृति थी, इसवास्ते उसका बन्धन हुआ। इस बातको देखकर मनुष्यों को चाहिये कि किसी विषयमें भी " अति " न करें ; क्योंकि जगत् के सभी कार्य्य, अतिसे किये जाने पर, परिणाममें निस्सन्देह कष्टदायी होते हैं।

(१३) सामर्थ्यवानोंके लिये कौनसी चीज़ भारी है ? व्यापारियोंके लिये कौनसी जगह दूर है ? सुन्दर विद्यावालों के लिये परदेश कौनसा है ? मीठो वाणी बोलनेवालोंके लिये अप्रिय (कुप्यारा) कौन है ?

इसका ऐसा मतलब है कि जो सामर्थ्यवान् हैं, उनके लिये कोई वस्तु भारी नहीं, यानी वह कठिनसे कठिन काम कर सकते हैं। जो उद्योगी (व्योपारी) हैं उनके लिये कोई देश दूर नहीं है ; अर्थात् वह दुनियाके एक छोरसे दूसरे छोर तक बेखटके पहुँचते हैं और धन कमाते हैं। जिनके पास विद्या-बल है, वे जहाँ जाते हैं, वहाँ ही सब उनके घरके से हो जाते हैं और उनका सब जगह आदर होता है ; इसवास्ते उनको विदेश भी स्वदेश सा मालूम होने लगता है। जो मीठी बोली बोलते हैं, उनसे तो जगत्के सबही प्राणी प्रसन्न रहते हैं। ऐसा कौन है, जो मीठी बोलीसे सन्तुष्ट न हो ? त्रिलोकीके वश करनेके लिये मीठे वचनसे बढ़ कर कोई दूसरा मन्त्र ही नहीं है।

(१४) सुन्दर फूल और सुगन्धवाले एकही वृक्षसे सारा वन का वन महकने लगता है ; जैसे सपूत (सुपुत्र) से कुल।

(१५) एकही सूखे और आगसे जलते हुए वृक्षसे सारा वनका वन नाश हो जाता है ; जैसे एक कपूत (कुपुत्र) से कुलका कुल डूब जाता है।

(१६) अगर कुलमें एक भी सुपुत्र, विद्वान् और भला हो ; तो उससे सारा कुल इस भाँति सुखी होता है, जैसे एक चन्द्रमासे रात्रि।

(१७) शोक-सन्ताप करानेवाले बहुतसे पुत्रोंके पैदा होने से क्या लाभ है? जिससे कुल को सुख मिले, ऐसा कुलका आश्रयदाता तो एकही पुत्र भला है।

(१८) बुद्धिमान् को उचित है कि पाँच वर्षकी अवस्था तक पुत्रका लाड़-प्यार करे। इसके पीछे पन्द्रह वर्षकी अवस्था तक उसको ताड़ना दे (लाड़ न करे) और जब वह सोलहवें वर्षमें पैर धरे, तब उससे ऐसा वर्ताव करे, जैसा मित्र मित्रके साथ करता है।

नीतिका यह नियम क्या ही अच्छा है! परन्तु आज-कल के अधिकांश लोग नीतिशास्त्रको न स्वयं पढ़ते हैं न बच्चों को पढ़ाते हैं। वे लोग इस नियमसे अजान रहनेके कारण बिल्कुल उल्टा काम करते हैं और अपने भविष्य जीवनके लिये विष-वृक्ष तैयार करते हैं। अनेक मनुष्य ऐसे देखने में आते हैं, जो सदा मोहके वश हो कर पुत्रको लाड़में बिगाड़

देते हैं। जब पुत्र वद्चलन हो जाता है और मूर्ख रह जा
के कारण, उनका अनादर करता और सिरमें जूतियाँ त
लगाने को तय्यार होता है तब हाथ मलते और पछताते हैं
किन्तु पीछे क्या हो सकता है? कच्चे घड़े परही निशान हो
सकते हैं। पके घड़े पर निशान नहीं हो सकते। दूसरे इस
क़िस्मके लोग भी हैं जो सदा-सर्वदा पुत्रके जवान हो जाने पर
भी उससे कठोर वर्ताव रखते हैं। इससे भी कुफल फलता
है, यानी पिता-पुत्रमें प्रेमका अङ्कुर नहीं जमने पाता और वे
एक दूसरेके शत्रु से वन जाते हैं। अतएव सुखार्थी दूरदर्शी
मनुष्यों को चाणक्यका यह वचन, सदा, सादर पालन करना
उचित है।

(१६) उपद्रव उठने पर, दुश्मनके हमला करने पर, भारी
अकाल पड़ने पर और दुष्टका सङ्ग होने पर,—जो मनुष्य भागता
है वही ज़िन्दा रहता है।

इसका खुलासा मतलब इस भाँति समझना चाहिये कि,
यदि अपने नगरमें महामारी, प्लेग आदि उपद्रव उठ खड़े हों
या गदर हो जावे तो नगर को छोड़ कर भाग जानेमें ही
भलाई है। इसी भाँति यदि अपने ऊपर शत्रु आक्रमण करे
और अपनेमें उससे लड़कर पार पानेकी ताक़त न हो तो भाग
कर जान बचाना ही ठीक है। अगर स्वदेशमें भयानक अकाल
पड़ जाय और दूसरे देशमें सुकाल हो, तो स्वदेश छोड़ कर
उस देशमें भाग जानेसे ही जान बच सकती है। इसी तरह

यदि दैवात् दुर्जनका साथ हो जाय, तो उसे छोड़ भागनेमें ही जीवनकी भलाई है।

(२०) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चार पदार्थ मुख्य हैं। जिस मनुष्योंको इन चारोंमें से एक भी प्राप्त न हुआ, उसका मनुष्यों में जन्म लेने का फल केवल मरना ही हुआ।

(२१) जिस जगह मूर्खोंका आदर नहीं होता, जहाँ अन्नका ज़ख़ीरा जमा रहता है और जहाँ पति-पत्नी में लड़ाई-झगड़ा नहीं होता,—वहाँ लक्ष्मी आपसे आप मौजूद रहती है अर्थात् ऐसे घर को छोड़ कर लक्ष्मी कदापि नहीं जाती।

चौथा अध्याय।

इस बातका निश्चय है कि जब जीव गर्भमें रहता है तवही उसके ललाटमें उसकी "उम्र, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु" ये पाँचों लिख दिये जाते हैं।

(२) जब तक शरीर आरोग्य है और जब तक मौत दूर है, तब तक अपनी भलाई का उपाय करना उचित है; क्योंकि प्राणान्त होनेके बाद कोई क्या कर सकेगा ?

जब तक मनुष्यका शरीर किसी व्याधिसे पीड़ित न
और मृत्यु न आवे ; तबही तक वह अपनी पारलौकिक भलाई
लिये भगवद्भजन, दान, पुण्य, परोपकार आदि कर सकता है
जब कफ, खाँसी और दम घेर लगे और काल अपने करा
चुंगलमें फँसा लेगा ; तब मनुष्य हाथ मलने और पछताने
सिवाय क्या कर सकेगा ? फिर उसे वह पिछला समय को
यत्न करने पर भी न मिलेगा ।

(३) विद्या काम-धेनु (गांय) के समान है, क्योंकि व
अकालमें भी फल देती है ; विद्या परदेशमें माताके समान है
विद्या को गुप्त धन कहते हैं ; अतएव मनुष्य-मात्र को विद्
पढ़नेका उद्योग जी-जानसे करना चाहिये ।

(४) गुणवान् पुत्र तो एकही भला होता है ; य
गुणरहित पुत्र सौ भी हों तोभी कुछ लाभ नहीं है। जैसे एक
चन्द्रमा सारे अन्धेरे का नाश कर देता है ; मगर हज़ारों तारों
वह काम नहीं हो सकता ।

(५) पुत्र दो प्रकारके होते हैं :—एक वह, जिसने जन
लिया और शीघ्रही मर गया। और दूसरा वह, जो बहुत दि
तक जिया। यदि चिरञ्जीवी पुत्र मूर्ख हो, तो उससे वह
पुत्र भला है, जो जन्म लेतेही मर गया ; क्योंकि उससे बहु
थोड़ा दुःख हुआ। किन्तु चिरञ्जीव मुर्ख पुत्र अच्छा नहीं है
क्योंकि वह जब तक जीता रहेगा तब तक कुढ़ाता और
जलाता रहेगा।

(६) ख़राब गाँवका बसना, नीच कुलकी चाकरी, ख़राब भोजन, कर्कशा या कलह-कारिणी स्त्री, मूर्ख पुत्र और विधवा कन्या—ये छः बिना आग ही शरीर को जलाते रहते हैं।

(७) उस गायसे क्या फ़ायदा, जो न दूध देवे न गाभिन होवे ? उस पुत्रसे क्या लाभ, जो न विद्वान् होवे न भक्तिमान् ?

(८) जगत् की आगसे जलते हुए पुरुषों की शान्ति और विश्रामके तीनही हेतु हैं :—पुत्र, स्त्री और सज्जनों की सङ्गति।

(९) राजा एकही बार हुक्म देते हैं, विद्वान् एकही बार बोलते हैं और कन्या का दान एकही बार किया जाता है,—ये तीनों बातें एकही दफ़ा होती हैं, बार-बार नहीं होतीं।

कन्या-दान एकबारही होता है। एक बार दान की हुई चीज़ पराई हो जाती है। दानकर्त्ता को फिर उसके दान करने का कोई अधिकार नहीं रहता। इस बातको मोटी समझके आदमी भी सरलतासे समझ सकते हैं।

(१०) तपस्या अकेलेमें ठीक होती है ; पढ़ना दो जनों का साथ होनेसे अच्छा होता है ; गाना तीन जनोंसे अच्छा बनता है ; सफ़रमें चार जनोंके साथ रहनेसे सुख मिलता है ; पाँच जनोंसे खेती अच्छी होती है और बहुत जनोंके एक साथ मिल कर युद्ध करनेसे युद्धमें जय होती है।

(११) वही भार्या ठीक है, जो पवित्र और चतुर हो ; वही स्त्री अच्छी है, जो पतिव्रता हो ; वही पत्नी भली है, जिस पर पति का प्रेम हो और वही स्त्री श्रेष्ठ है, जो सत्य बोलती हो।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि उपरोक्त गुणोंवाली भार्या प्रशंसा-योग्य है। उससेही पुरुषको स्वर्ग-सुख मिलता है और वही भार्या अच्छी तरह पालन-पोषण और ख़ातिर करने लायक़ है।

(१२) जिसके पुत्र नहीं है, उसका घर सूना है, जिसके भाई-बन्धु नहीं हैं, उस की दिशाएँ सूनी हैं, मूर्ख का हृदय सूना है और दरिद्रके लिये तो सब कुछही सूना है।

(१३) अभ्यास (मश्क) न करनेसे शास्त्र विष हो जाता है, न पचनेसे भोजन विष हो जाता है, दरिद्र आदमीके लिये सभा और बूढ़े पुरुषके लिये नव-यौवना स्त्री ज़हरके जमान मालूम होती है।

(१४) जिस धर्ममें दया न हो, उसे छोड़ देना चाहिये। जो गुरु विद्या-हीन हो, उसको त्याग देना ही ठीक है। जो अपनी स्त्री लड़ाकी हो यानी उसके मुँह पर सदा क्रोध ही छाया रहता हो, तो उसे अलग कर देनाही उचित है और जो भाई-बन्धु अपनेसे मुहब्बत न रख़ते हों तो उनको भी त्याग देनाही मुनासिब है।

(१५) कौन समय है ? कौन मेरे मित्र हैं ? कौन देश

है? मेरी आमदनी और ख़र्च क्या है? मैं किसका हूँ? मुझ में कितना बल है? इतने प्रश्न मन में बारम्बार विचारने चाहियें।

मतलब यह है कि जो शख़्स ऊपरके सवालात मनमें सदा विचारता रहता है, वह एकाएकी मुसीवतमें नहीं फँसता। किसी कामके आरम्भ करनेसे पहिले तो उपरोक्त प्रश्न अवश्यही विचारने चाहिये।

(१६) ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्यों का देवता अग्नि है, ऋषि-मुनियों का देवता उनके हृदयमें रहता है, अल्पबुद्धियों अर्थात् कम-अक्लों का देवता मूर्त्तिमें रहता है; किन्तु सम-दर्शियोंका देवता सब ठौरही रहता है।

(१७) स्त्रियोंका गुरु केवल पति है। अभ्यागत (मिह-मान) सबका गुरु है। ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य इन तीनों वर्णोंका गुरु अग्नि है और चारोंही वर्णोंका गुरु ब्राह्मण है।

पाँचवाँ अध्याय।
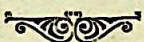
जिस भाँति कसौटीपर घिसने, काटने, आगमें तपाने और हथौड़ीसे कूटनेपर "सोने" की परीक्षा होती है; उसी भाँति 'दान, शील (स्वभाव), गुण और चाल-चलन' से पुरुषकी परीक्षा होती है।

(२) जबतक डर पास न आया हो तबतक ही डरसे

डरना उचित है; किन्तु जब डर पास ही आजावे तब डरने
कुछ लाभ नहीं है; उस समय तो उससे बचनेका, यथोचित
उपाय करना ही उचित है।

(३) एक ही नक्षत्रमें और एक ही गर्भसे पैदाहुए मनुष
"शील" (स्वभाव) में बराबर नहीं होते; जैसे बेर और उस
काँटे।

(४) जिसे किसी विषयकी इच्छा न होगी, वह कभ
कोई अधिकार न लेगा। जो पुरुष कामी या स्त्री-लोलुप
होगा, उसे शरीरकी ख़ूबसूरती बढ़ानेवाली चीज़ोंसे मुहब्ब
न होगी। जो चतुर (होशियार) न होगा, वह कभी मी
न बोल सकेगा। जो कपटी न होगा, वह सदा खरी अ
साफ़ बात कहेगा।

इसे यों भी कह सकते हैं कि जो कोई अधिकार लेगा, उ
विषयोंकी इच्छा अवश्य होगी। जो बदनकी ख़ूबसूरती बढ़ा
वाली चीज़ोंमें प्रीति रखेगा, वह अवश्य कामी होगा। जो मी
वाणी न बोल सकता होगा, वह चतुर न होगा। जो छली
कपटी होगा वह साफ़ बात न कह सकेगा।

(५) मूर्ख मनुष्य विद्वानोंसे जलते हैं, धनहीन मनु
धनियोंको देखकर कुढ़ते हैं। पर-पुरुषोंसे लगी हुई स्त्रि
कुलवती और पतिव्रता स्त्रियोंसे द्वेष करती हैं और विध
स्त्रियाँ सधवा (सुहागन) स्त्रियोंसे ईर्षा करती हैं।

(६) आलस्यसे विद्याका नाश होता है; पराये हाथ

जानेसे धनका नाश होता है; बीजकी कमीसे खेतका नाश होता है और जरनेल (सेनापति) के बिना फ़ौज नाश हो जाती है।

(७) विद्या अभ्यास (मश्क़) करनेसे आती है; कुल शीलसे रहता है; गुणसे भला आदमी मालूम होता है और आँखोंसे गुस्सा (क्रोध) मालूम होजाता है।

(८) धनसे धर्मकी रक्षा होती है; योगसे विद्याकी रक्षा होती है; नम्रतासे राजाकी रक्षा होती है और अच्छी स्त्रीसे घरकी रक्षा होती है।

(६) वेदोंको वृथा कहनेवाला, शास्त्रोंके विषयमें वृथा तर्क-वितर्क करनेवाला और शान्त मनुष्यको अशान्त कहनेवाला पुरुष वृथा ही क्लेश भोगता है।

(१०) दानसे दरिद्रताका नाश होता है; सुशीलतासे दुर्गतिका नाश होता है; बुद्धिसे मूर्खताका नाश होता है और भक्तिसे भयका नाश होता है।

(११) काम (स्त्रियोंको चाहना) के समान दूसरा रोग नहीं है; मूर्खताके समान दूसरा दुश्मन नहीं है; क्रोध (गुस्सा) के समान दूसरी आग नहीं है और ज्ञानसे बढ़कर दूसरा सुख नहीं है।

(१२) एक ही मनुष्य जन्म लेनेका कष्ट भोगता है; एक ही मरनेके समयकी असह्य यन्त्रणायें भोगतां है; एक ही सुख-दुःख भोगता है; एक ही नरकोंके कष्ट सहन करता है

और एक ही मनुष्य मोक्ष पाता है। इस विषयमें सन्देह करनेको जगह नहीं है। मतलब यह है, कि उपरोक्त कामों में कोई किसीकी मदद नहीं कर सकता।

जब मनुष्य गर्भमें रहता है और जन्म लेनेतक जो-जो कष्ट उठाता है, उनमें उसका दुःख बँटानेवाला कोई नहीं होता। इसी भाँति मरनेके समय, उसपर जो-जो भय और कष्ट पड़ते हैं, उनमें उसकी सहायता करनेवाला कोई नहीं होता। माता, पिता, पुत्र और प्राणप्यारी स्त्री सब देखा करते हैं मगर कुछ कर नहीं सकते ; जिसकी जानपर बीतती है, वही भोगता है। यदि मनुष्य जीवित अवस्थामें पापकर्म, जुल्म, अत्याचार, चोरी आदि करता है तो उनका दण्ड उसे ही नरकोंमें पड़कर भोगना पड़ता है। वहाँ सगे-सम्बन्धी, भाई-बन्धु, स्त्री, पुत्र आदि उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते। और जब वह अपने सुकर्मों या पुण्य-फलसे स्वर्गमें जाता है या एकदम संसारके आवा-गमनसे छूटकर मोक्ष या निर्वाण पाता है तो उस सच्चे सुखमें भी उसका हिस्सा बँटानेवाला या मददगार कोई नहीं होता।

(१३) जो ब्रह्मको चिन्हते हैं वे स्वर्गको तिनके के समान समझते हैं ; जो वीर पुरुष होते हैं वे अपनी ज़िन्दगीको ही तिनके के समान समझते हैं। जिन्होंने अपनी इन्द्रियोंको जीत लिया है, उनके लिये 'स्त्री' तृणके समान मालूम होती है और जिनको किसी चीज़की ज़रूरत ही नहीं है, वे संसार को ही तिनके के समान समझते हैं।

(१४) परदेशमें मनुष्यका मित्र 'विद्या' है। घरमें पुरुष का मित्र 'स्त्री' है। रोगीका मित्र 'दवा' है और मरे हुए मनुष्यका मित्र 'धर्म' है।

(१५) समुद्रमें वर्षा होना व्यर्थ है; अघाये हुए मनुष्य को भोजन कराना वृथा है; जो स्वयं धनवान् है, उसे दान देनेसे कुछ लाभ नहीं है और दिनमें चिराग़ जलानेसे भी कुछ फ़ायदा नहीं है।

समुद्रमें आप ही अथाह जल भरा है; अगर वहाँ वृष्टि हो ही जाय तो क्या लाभ? वृष्टि यदि मारवाड़ देश जैसे पानीको तरसते हुए देशमें हो तो बेशक उसका होना अच्छा है। जिसका पेट भरा हुआ है, उसे खिलानेसे क्या पुण्य हो सकता है? कदापि नहीं। भोजन तो भूखेको ही कराना उत्तम है। जो स्वयं धनवान् है उसे दान देनेसे क्या लाभ होगा? अर्थात् कुछ भी लाभ न होगा। यदि निर्धनको धन दिया जाय तो बेशक पुण्य-सञ्चय होसकता है। जब सूर्यका चाँदना जगत्में फैल रहा हो तब चिराग़ जलाना व्यर्थ नहीं तो और क्या है?

हमारे बहुतसे भाई आजकल इस श्लोकके विरुद्ध कार्रवाई करते हैं। वे लोग धापे हुओंको भोजन कराते हैं; तीर्थोंके धनवान् ऐश्वर्य्यशाली पण्डोंके चरणोंपर धन अर्पण कर देते हैं। भला, वे क्या पुण्य-सञ्चय करके अपना परलोक सुधार सकते हैं? हमारे भोले-भाले भाइयोंको दान-विषयमें

इस श्लोकसे शिक्षा लेना और इसपर अमल करना बहुत ही आवश्यक है ।

(१६) वर्षाके जलके समान दूसरा जल नहीं है ; अपने बल (ताक़त) के समान दूसरा बल नहीं है ; क्योंकि समय पड़नेपर अपना बलही काम आता है ; पराये बलसे कुछ लाभ नहीं होता, आंखोंके समान दूसरा कोई चाँदना करनेवाला नहीं है और अन्न के समान कोई प्यारी चीज़ नहीं है ।

(१७) निर्धन मनुष्य 'धन' चाहते हैं ; पशु पक्षी 'बोलना' चाहते हैं ; मनुष्य 'स्वर्ग' की इच्छा रखते हैं ; और देवता 'मोक्ष' की वाञ्छा रखते हैं ।

(१८) सत्यके सहारे ही पृथ्वी ठहरी हुई है ; सत्यही के बलसे सूर्य्यनारायण तपते और जगत्का अन्धकार नाश करते हैं एवं सत्य ही से हवा चलती है । मतलब यह है, कि सब कुछ सत्य ही से स्थिर है ।

(१९) लक्ष्मी चलायमान है यानी वह सदा नहीं रहती ; प्राण, जीवन और मकान-बाड़ी, आदि भी सदा नहीं रहते । तात्पर्य्य यह है कि संसारमें सब कुछ अनित्य है ; यदि है तो केवल "धर्म" ही नित्य और निश्चल है ।

(२०) पुरुषोंमें 'नाई' चालाक होता है ; पखेरुओंमें 'कौआ' सयाना होता है ; पशुओंमें 'स्यार' (गीदड़) धूर्त्त होता है और औरतोंमें 'मालिन' मक्कारा होती है ।

(२१) जन्म देनेवाला, जनेऊ आदि सोलह संस्कार करा-

नेवाला, विद्या पढ़ानेवाला, अन्न देनेवाला और भयसे छुड़ानेवाला—ये पांचों पिता समझे जाते हैं।

(२२) राजाकी स्त्री, गुरुकी स्त्री, मित्रकी स्त्री, अपनी स्त्रीकी माता (सास), और अपनी जननेवाली माता—ये पांचों माता कहलाती हैं।

छठा अध्याय ।

मनुष्य "शास्त्र" को सुननेसे धर्मको जानता है, मूर्खता छोड़ता है और ज्ञान तथा मुक्ति-पद पाता है।

(२) पखेरुओंमें "कव्वा" चाण्डाल होता है, पशुओंमें "कुत्ता" चाण्डाल होता है, मुनियोंमें "पाप" चाण्डाल होता है और सबमें "निन्दा करनेवाला" चण्डाल होता है।

(३) काँसीका बरतन राखसे माँजनेपर शुद्ध होजाता है, ताम्बेका बरतन खटाईसे पवित्र होता है; स्त्री मासिक-धर्म होजानेपर शुद्ध होती हैं और नदी धारकी तेज़ीसे शुद्ध होती है।

(४) राजा, ब्राह्मण और योगी घूमनेसे सम्मान पाते हैं; परन्तु स्त्री घूमनेसे नष्ट होजाती हैं यानी बिगड़ जाती है।

(५) जिसके पास धन होता है, उसीके दोस्त और भाई-

बन्धु होते हैं ; और जिसके पास लक्ष्मी होती है, वही पुरुष औ
वही विद्वान् कहलाता है ।

(६) जैसी भावी (होनहार) होती है वैसी ही बुद्धि ह
जाती है, वैसे ही उपाय होजाते हैं और वैसे ही मददगा
मिल जाते हैं ।

(७) काल ही सब जीवोंको पचाता है, काल ही सबक
नाश करता है और सबके सो जानेपर भी काल ही जागत
रहता है । काल ऐसा बलि है कि उसे कोई भी टालनेमें समर्थ
नहीं है ।

(८) जो जन्मसे ही अन्धे हैं, उन्हें कुछ नहीं दीखता, ज
काम (स्त्री-इच्छा) से अन्धे होरहे हैं, उन्हें भी कुछ दिखा
नहीं देता, जो नशेसे मतवाले होरहे हैं, उन्हें भी कुछ नह
सूझता और स्वार्थी (मतलबी) को तो दोष दिखाई ही नह
देता ।

(९) जीव आप ही बुरे-भले कर्म करता है, आप ह
अपने किये कर्मोंका फल भोगता है, आपही संसारमें भ्रमत
है और आप ही संसारके बन्धनसे छूटता और मोक्ष प
जाता है ।

मतलब यह है कि मनुष्य बिना किसीकी प्रेरणाके आ
ही कभी अच्छे कर्म करता है और कभी बुरे कर्म करता है
पीछे आपही उनके अच्छे-बुरे फल—नरक स्वर्ग आदि भोगत
है । आप ही संसारके बन्धनमें पड़ता है और आप ही अप

पुण्य-कर्मों से जन्म-मरणसे रहित होजाता है। जन्म-मरणसे छूट जानेको ही मोक्ष या मुक्ति कहते हैं।

(१०) प्रजाके किये हुए पापको राजा भोगता है। राजाके पापको राज-पुरोहित भोगता है; स्त्रीके किये हुए पापको उसका पति भोगता है और चेलेके किये हुए पापको उसका गुरु भोगता है।

(११) सिरपर क़र्ज़ चढ़ानेवाला पिता शत्रुके समान है; पर-पुरुष रता महतारी वैरीके समान है; ख़ूबसूरत स्त्री दुश्मनके समान है और अशिक्षित—मूर्ख—पुत्र भी शत्रुके ही समान है।

(१२) लोभीको धन देकर वशमें करना चाहिये, घमण्डीको हाथ जोड़कर वशमें करना चाहिये, मूर्खको उसके मनके माफ़िक़ काम करके वशमें करना चाहिये और विद्वानको यथार्थ यानी सचसे वशमें करना चाहिये।

(१३) राज्य न रहे तो अच्छा; परन्तु बुरे राजाका राज्य अच्छा नहीं। मित्र न हो तो भला; किन्तु बुरे मित्रको मित्र बनाना भला नहीं। चेला न हो तो कुछ परवा नहीं। लेकिन जिसकी वजहसे अपनी निन्दा हो वैसा चेला न होना ही ठीक है। स्त्री बिना रहना उतना बुरा नहीं, किन्तु दुष्टा स्त्रीका होना बहुत ही बुरा है।

(१४) ख़राब राजाके राज्य करनेसे प्रजाको सुख कहाँ मिल सकता है? ख़राब आदमीको मित्र बनानेसे सुख कैसे

मिल सकता है ? ख़राब स्त्रीके घरमें होनेसे घरसे प्रेम कैसे होसकता है ? ख़राब चेलेको विद्या पढ़ानेवालेके लिये नेकनामी कैसे मिल सकती है ?

(१५) शेरसे एक गुण सीखना चाहिये, मुर्ग़ेसे चार गुण सीखने चाहियें, कव्वेसे पाँच, कुत्तेसे छः और गधेसे तीन गुण सीखने चाहियें ।

(१६) सिंह का स्वभाव है कि वह छोटे अथवा बड़े काम को जिस-तिस उपायसे किये विना नहीं रहता ; यानो काम चाहें छोटा हो चाहें बड़ा हो, वह उसे हर उपायसे सिद्ध करता है। सिंह का यह काम प्रशंसा-योग्य है। मनुष्योंको सिंहसे यह गुण लेना उचित है।

(१७) चतुर पुरुषको चाहिये कि इन्द्रियोंको वश कर और देश तथा बलको समझ कर "बगुले" के समान अपना कार्य्य साधन करे।

(१८) मुर्ग़ा ठीक समय पर जागता है, लड़ाई के समय तय्यार रहता है, भाई-बन्धुओंको उनका हिस्सा देता है और आप हमला करके भोग करता है,—ये चार गुण मुर्ग़ेमें अच्छे हैं। मनुष्यों को चाहिये कि "मुर्ग़े" के इन गुणों की नक़ल करें।

(१९) कव्वा छिपकर मैथुन करता है, बहुत धीरज धरता है, समयपर घर हथिया लेता है, हर वक्त सावधान (चौकन्ना)

रहता है और किसीका विश्वास नहीं करता—ये पाँच गुण "कव्वे" से सीखने उचित हैं।

(२०) कुत्ता बहुत खानेकी ताक़त होते हुए भी थोड़ा सा खाना पाजानेसे सन्तुष्ट हो जाता है, गाढ़ी नींद में सोता हुआ भी चटपट जाग उठता है, अपने मालिक को बहुत चाहता है और समय पर बहादुरी दिखाता है। "कुत्ते" के ये छः गुण अवश्य सीखने चाहियें।

(२१) गधा निहायत थक जानेपर भी बोझा ढोने को उद्यत रहता है, गर्मी-सर्दीकी परवा नहीं करता और सदा चैन-आनन्दसे फिरता रहता है। "गधे" के ये तीन गुण सीखने उचित हैं।

(२२) जो मनुष्य ऊपर कहे हुए सिंह, बगुले, मुर्ग़े, कव्वे, कुत्ते और गधेके बीसों गुणोंको सीखकर उनके अनुसार काम करेगा, उसकी सदा सब कर्मोंमें जय होगी।

सातवाँ अध्याय।

बुद्धिमान् को चाहिये कि 'अपने धनका नाश, अपने मनका दुःख, अपने घरका चरित्र, नीचका वचन और अपना अपमान (अनादर) किसीसे भी ज़ाहिर न करे।

(२) अन्नके व्योपार, रुपये-पैसे के लेन-देन, विद्या पढ़ने,

भोजन करने तथा व्यवहार करनेमें जो पुरुष लज्जाको दूर रक्खे यानी शर्म न करेगा, वही सुखी रहेगा।

(३) सन्तोष रूपी अमृतसे तृप्त हो जानेवालोंको सुखशान्ति मिलती है, वह सुख-शान्ति उनको नहीं मिलती जो, धनके लो है और उसके हासिल करनेके लिये इधर-उधर दौड़-धूप करते फिरते हैं।

(४) "अपनी स्त्री, भोजन और धन"—इन तीनोंमें सन्तोष करना ही मुनासिब है; किन्तु "पढ़ना, जप और दान"—इन तीनोंमें कदापि सन्तोष न करना चाहिये।

(५) दो ब्राह्मण, ब्राह्मण और आग, स्त्री और पुरुष मालिक और नौकर, हल और बैल—इनके बीचमें होकर जा अनुचित है।

(६) अग्नि, गुरु, ब्राह्मण, गाय, कुमारी, बूढ़े और बालकको कदापि पैर से न छूना चाहिये।

(७) सींगवाले जानवरसे पाँच हाथ, घोड़ेसे दश हाथ औ हाथीसे हजार हाथ दूर बचना चाहिये; किन्तु दुर्जनसे तो दे छोड़कर ही अलग रहना चाहिये।

(८) हाथी को केवल अङ्कुश से सज़ा दी जाती है; घोड़े क हाथसे और सींगवाले जानवरोंको लकड़ीसे सज़ा दी जाती है किन्तु दुर्जनको तलवार-युक्त हाथसे दण्ड दिया जाता है।

(९) ब्राह्मण भोजन करके खुश होते हैं, मोर बादलों गड़गड़ाहट सुनकर प्रसन्न होते हैं, सज्जन दूसरोंकी सम्प

धन-दौलत आदि) मिलते देखकर, फूले नहीं समाते; किन्तु दुष्ट लोग दूसरोंको मुसीबत या किसी बलामें फँसा हुआ देखकर बाग़-बाग़ हो जाते हैं।

इस ज़मानेमें दूसरोंकी श्रीवृद्धि देखकर राज़ी होनेवाले साधु पुरुष विरले ही दिखाई पड़ते हैं; किन्तु पर-सम्पत्ति देखकर कुढ़नेवाले शख़्स अधिकतासे नज़र आते हैं। यद्यपि पराई सम्पत्ति देखकर कुढ़नेसे अपनेही स्वास्थ्यकी हानि होती है और लाभ की कुछ भी सम्भावना नहीं होती तथापि जिनका स्वभाव ही ऐसा ख़राब हो गया है, वे अपनी अधम प्रकृतिको छोड़नेमें असमर्थ होते हैं।

पर-सम्पत्ति को बढ़ते देख कर, चित्तमें जो एक प्रकारके अनिर्वचनीय आनन्दका उदय होता है, उसे हम लेखनी द्वारा लेखकर जतानेमें असमर्थ हैं। हमने स्वयं दोनों प्रकारकी प्रकृतियोंका अनुभव किया है।

(१०) अगर अपना दुश्मन अपनी निस्बत ज़बरदस्त हो; तो उसकी मरज़ी माफ़िक़ काम करके उसे अपने क़ब्जेमें लाना चाहिये; यदि वह अपने से कमज़ोर हो तो उसे लड़भिड़कर वशमें करना चाहिये। यदि अपने समान हो तो उसे प्रथम तो नम्रतासे वश करनेका उद्योग करना चाहिये, यदि वह नम्र बर्ताव से क़ाबूमें न आवे तो बलसे वश करना उचित है।

(११) राजा का बल उसकी भुजायें हैं, ब्राह्मण का बल ब्रह्मज्ञान है और स्त्रियोंका बल उनकी सुन्दरता, तरुणाई और लावण्य है।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि जिस राजाके पा
भुज-बलका ज़ोर होगा, उसके सामने कौन शत्रु सिर उ
सकेगा? उसका दाँत जिस देश पर होगा, वह अवश्य उसं
हाथमें आजायगा। जो ब्रह्मण ब्रह्मको पहचानता होगा, व
क्या न कर सकेगा? प्राचीन कालमें ब्राह्मणोंमें यह बात पा
थी; इसी वजहसे उनका ठौर-ठौर सम्मान होता था। बड़े
बड़े महीपाल उनके चरणोंमें सिर रखना अपना सौभा
समझते थे; किन्तु आज वह ज़माना है कि यह जाति प्राय
बिल्कुल अधोगतिको पहुँच गयी है। अब इस जातिमें वेद
वक्ता ब्रह्मज्ञानी अँगुलियोंपर गिनने-योग्य भी कठिनता
मिलते हैं। इन लोगोंमें आज-कल छल-छिद्र, कपट, जाल
साज़ी आदिका बाज़ार गर्म है। स्त्रियोंकी सुन्दरता, तरुणा
और लुनाई पर किसका मन चलायमान नहीं होता?
अपनी एक नज़रमें महा बलवान् अजेय योधा को भी क़ाबू
कर लेती हैं; तपोबली तपस्वियोंके औसान् ख़ाता कर देती हैं
तब साधारण कच्चे दिलवालोंका तो कहना ही क्या है? ज
इनके कटाक्ष-रूपी बाणोंसे अछूता बच जाता है, हम उ
सच्चा महाबली कहते हैं। ऐसा पुत्र बिरलीही जन
जनती है।

(१२) इस संसारमें बिल्कुल सीधा स्वभाव रखनेसे भी ख़रा
आती है; जैसे जङ्गलमें सीधे-सीधे वृक्षही काटे जाते हैं, कि
टेढ़े वृक्ष छोड़ दिये जाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदासजीने बहुतही ठीक कहा है, "टेढ़ु जानि शंका सब काहू, वक्र चन्द्रमहि ग्रसहि न राहू"; अर्थात् टेढ़ेसे सब डरते हैं, सीधेसे कोई नहीं डरता, जैसे पूर्ण चन्द्र में ग्रहण लगता है, किन्तु अपूर्ण चन्द्रको राहु भी नहीं ग्रसता अतएव, मनुष्योंको बिल्कुलही सीधा स्वभाव न रखना चाहिये।

(१३) हंसोंका स्वभाव है कि वे तालावमें जल रहता है तब तक उसपर बसते हैं और जब वह सूख जाता है तब उसे छोड़कर दूसरी जगह चले जाते हैं और उस तालाबमें फिर जल भर जाता है तब वे फिर उसीका आश्रय लेते हैं। पुरुषोंको चाहिये कि हंसोंकी चाल कदापि न चलें।

(१४) कमाये हुए धनको ख़र्च करनेसे धन-रक्षा होती है; जैसे तलावके अन्दरके पुराने पानीको निकालनेसे तालाव की रक्षा होती है।

(१५) जिसके पास धन होता है, उसके बहुतसे मित्र होते हैं। जिसके पास धन होता है, उसके अनेक भाई-बन्धु और रिश्तेदार होते हैं; जिसके पास धन होता है, वही दर्द और वही जीता हुआ गिना जाता है।

हमने भी अपनी अवस्थामें ख़ूब देख लिया है कि इस श्लोक का अक्षर-अक्षर सत्य है। धनसेही जगत् है; धन विना जगत् सूना है। धनहीनको न मा पूछती है न बाप। निर्धन की स्त्री-

तक उससे परहेज़ करने लग जाती है और उसका पैंड़ पैंड़ प
अनादर और अपमान करती है।

ग़रीबको जाति-बिरादरी भी नहीं चाहती और उसके
रिश्तेदार भी उससे रिश्ता रखनेमें शरमाते हैं। सच बात
तो यह है कि, जिसपर लक्ष्मीकी कृपा होती है, उससे जगत्
राज़ी रहता है ; लक्ष्मीवान्का जीना ही जीना है। जिनपर
लक्ष्मीकी कृपा नहीं है, वे प्राण धारण करते हुए भी मरे हुए
के समान हैं।

(१६) जो दानी हैं, जो मिठी वाणी बोलते हैं, जो देवता
की पूजा करते हैं और जो ब्राह्मणोंका आदर-सत्कार करते
हैं,—उन्हें स्वर्गीय पुरुष समझना चाहिये। यानी जो पुरुष
स्वर्गसे मृत्युलोक में आते हैं, उनमें उपरोक्त चारों चिन्ह पाये
जाते हैं।

(१७) जो अत्यन्त क्रोधी होते हैं ; जो मुँहसे कड़वे वचन
निकालते हैं ; जो दरिद्र होते हैं ; जो अपने आदमियों से
शत्रुता रखते हैं ; जो नीच लोगोंकी सङ्गति करते हैं और नीच
कुलवालोंकी नौकरी करते हैं,—उन्हें नरक-वासी समझना
चाहिये। अर्थात् जो मनुष्य नरक-लोकसे आकर इस दुनियामें
जन्म लेते हैं, उनमें उपरोक्त लक्षण पाये जते हैं।

(१८) यदि कोई सिंह की गुफ़ामें चला जाय तो उसे
गज-मोती मिलते हैं, किन्तु यदि कोई गीदड़के भिटेमें चला
जाय तो उसे बछड़े की दुम और गधेका चमड़ा मिलता है।

(१९) कुत्तेकी पूछ किसी काम की नहीं होती; क्योंकि इससे न तो उसका मल-द्वार ही ढका जाता है और न उससे मक्खी-मच्छर ही उड़ाये जा सकते हैं जो मनुष्य विद्याहीन है, वह कुत्ते की पूँछके समान व्यर्थ हैं।

(२०) वचन की शुद्धता, मनकी सफाई, इन्द्रियोंका बन्धेज, सब प्राणियों पर दया और पवित्रता,—ये परार्थियों की शुद्धियाँ हैं।

(२१) खूब विचार कर देख लो कि—जैसे फूलमें गन्ध है, तिलमें तेल है, काठमें आग है, दूधमें घी है और ऊखमें गुड़ है, वैसेही शरीरमें आत्मा है।

आठवां अध्याय।

अधम (नीच) मनुष्य धनकी इच्छा करते हैं; मध्यम मनुष्य धन और मान दोनो चाहते हैं; किन्तु उत्तम मनुष्य केवल मानही चाहते हैं। इसका सबब यह है कि उदार-हृदय या बड़े मनुष्य 'मान' को ही धन समझते हैं।

(२) ऊख, जल, फल, फूल, मूल, औषधि और पान खाने पर भी स्नान-दान आदि करना चाहिये।

(३) चिराग़ अन्धेरा खाता है और काजल पैदा करता है; मतलब यह है कि जो जैसा अन्न खाता है, उसके सन्तान भी वैसीही होती है।

(४) हे बुद्धिमान्! गुणवानोंको धन दे, जो गुणहीन हैं उनको धन मत दे। समुद्र का खारा पानी बादल के मुंहमें जाने से मीठा हो जाता है और समस्त भूमण्डल के चराचर जीवोंको जिलाकर फिर करोड़ गुणा होकर समुद्रका समुद्र ही चला जाता है।

(५) तेल मालिश कराकर, चिता-धूम लगनेपर, मैथुन करके, हजामत बनवाकर, जो स्नान नहीं करता,—वह स्नान न करने तक चाण्डाल रहता है।

(६) अजीर्ण होनेपर "जल" औषधि है, भोजन पचनेपर 'जल' बलवर्द्धक है, भोजन करते समय 'जल' अमृत है; किन्तु वही 'जल' भोजनके अन्तमें विषका काम करता है।

(७) क्रिया बिना ज्ञानसे कुछ लाभ नहीं है। अज्ञानी मनुष्य मुर्दे के समान है। बिना सेनापतिके सेना नाश हो जाती है और पतिहीना स्त्री नष्ट हो जाती है।

(८) वृद्धावस्थामें 'स्त्री' का मरजाना, भाईके हाथमें 'धन' का चला जाना और दूसरे के अधीन 'भोजन' 'मिलना'—ये तीनों बातें मर्दोंके लिये बड़ी ही दुःखदायिनी हैं।

(९) अग्निहोत्र बिना वेद पढ़ना ठीक नहीं होता, दान बिना यज्ञ-हवन वगैरः ठीक नहीं बनते; भाव (प्रेम) बिना

सिद्धि नहीं होती ; मतलब यह है कि प्रेम (भाव) से ही सब कुछ होता है।

(१०) धातु, लकड़ी और पत्थर-सेवा प्रेम (भाव) से करो। ईश्वरकृ-पासे, जैसा भाव (प्रेम) होगा वैसी ही सिद्धि होगी।

(११) देवता न तो लकड़ी में है ; न पत्थर या मिट्टीकी मूर्त्तिमें। देवता भावमें है ; अतएव भाव (प्रेम) ही सबका कारण है।

(१२) 'शान्ति' के समान तप नहीं है, 'सन्तोष'के समान सुख नहीं है; 'तृष्णा' के समान रोग नहीं है और 'दया' से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

(१३) 'क्रोध' यमराज है, 'तृष्णा' वैतरणी नदी है, 'विद्या' कामधेनु गाय है और 'सन्तोष' नन्दन-कानन या इन्द्रका बग़ीचा है।

(१४) गुणसे रूप खिलता है, शील (अच्छे स्वभाव) से कुल शोभा पाता है, सिद्धिसे विद्या शोभायमान लगती है और भोगनेसे धन शोभा पाता है।

जो गुणहीन हैं, उनकी ख़ूबसूरती फ़िज़ूल है ; जो शीलवन्त नहीं हैं, उनका कुल बुरा है ; सिद्धि नहीं है तो विद्या व्यर्थ है और यदि भोगा नहीं जाता तो धनका होना व्यर्थ है।

(१५) ज़मीनके अन्दर का जल शुद्ध होता है, पतिव्रता नारी पवित्र गिनी जाती है, दयालु राजा शुद्ध समझा जाता है और सन्तोषी ब्राह्मण पवित्र माना जाता है।

(१६) सन्तोष न रखनेवाला ब्राह्मण बुरा समझा जा
है ; सन्तोषी राजा निन्दित माना जाता है ; शर्म करनेवाली वेश्
अच्छी नहीं समझी जाती और कुलवती स्त्री बेशर्म (निर्लज्ज
होनेसे बुरी समझी जाती है।

मतलब यह है कि ब्राह्मण सन्तोषी अच्छा, राजा असन्तो
अच्छा, रण्डी बेशर्म अच्छी और कुलीन स्त्री शर्मदार अच्छी।

(१७) यदि कुल बड़ा हो किन्तु उसमें विद्याहीनता हो
तो उस विद्याहीन कुल से मनुष्यों को क्या फ़ायदा पहुँ
सकता है ? कुल चाहें नीच हो किन्तु उसमें विद्वान् हो, त
उस विद्वान् के कुल का देवता भी आदर करते हैं।

(१८) जगत् में विद्वान् ही की बड़ाई होती है, सब जग
विद्वान् ही का सम्मान होता है, विद्या से ही सब कुछ प्रा
होता है और सब ठौर विद्या की ही पूजा होती है।

(१९) पुरुष कैसा ही ख़ूबसूरत और जवान क्यों न हं
उसने कैसे ही उच्च कुल में जन्म क्यों न लिया हो ; किन्तु यी
वह विद्याहीन (मूर्ख) हो ; तो इस भांति अच्छा नहीं लगत
जैसे बिना सुगन्धके ढाक का फूल।

(२०) जो मांस खाते और शराब पीते हैं एवं जो अपढ़ अं
अज्ञानी हैं,—उन पुरुषरूपी पशुओंके बोझसे पृथ्वी दुःख पाती है

(२१) अन्न-हीन यज्ञ राज्यको जलाता है, मन्त्र-हीन य
होताओं को जलाता है और दान-हीन यज्ञ जिजमान (यज्ञ कराने
वाले) को जलाता है ; इस वास्ते यज्ञके समान शत्रु नहीं है

नवाँ अध्याय।

अगर आप इस संसार के वन्धन या जन्म-मरण से छुटकारा पाना चाहते हैं; तो विषयों को विष (ज़हर) के समान समझकर छोड़ दो और क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता एवं सत्य को अमृत की भाँति पीओ।

(२) जो नीच मनुष्य, आपस में एक दूसरे के मर्म को पीड़ा पहुँचाने वाले वचन कहते हैं, वे इस भाँति नाश हो जायँगे जैसे दीमक के विमौट में पड़ कर साँप नाश हो जाता।

(३) सोने में गन्ध न की, ऊख में फल न लगाये, चन्दन में फूल न उपजाये, विद्वान् को धनवान् न वनाया और राजाको दीर्घजीवी न किया,—इससे मालूम होता है कि प्राचीन समय में ब्रह्मा को कोई अक्ल देनेवाला न था।

(४) समस्त दवाइयों में "गिलोय" उत्तम है, सब सुखों में "भोजन" प्रधान है, सारी इन्द्रियों में " आँख " मुख्य है और सब अङ्गोंमें "शिर" श्रेष्ठ है।

(५) आस्मान में दूत जा नहीं सकता, न वहाँ की बात ही चल सकती है, न किसीने पहिलेसे कह ही दिया है और न वहाँ के किसीसे मेल-मिलाप ही हो सकता है। ऐसी हालतमें,

अगर कोई आकाश-स्थित सूरज और चाँदमें ग्रहण लगने साफ़-साफ़ जान जावे; तो उसे विद्वान् किस तरह कहेंगे ?

(६) विद्यार्थी (पढ़नेवाले), नौकर, मुसाफ़िर, भूखे भयभीत, भण्डारी और दरबान,—यदि ये सात सो रहे हों इनको जगा देना उचित है।

(७) साँप, राजा, शेर, वर्रे, बच्चा, पराया कुत्ता और मूर्ख,—यदि ये सात सोते हों तो इनको न जगाना चाहिये।

(८) जिन ब्राह्मणोंने धन कमाने के लिये वेद पढ़े हैं और जो शूद्रका अन्न भक्षण करते हैं,—ये ब्राह्मण विना ज़हरवाले साँप के समान क्या कर सकते हैं ?

(९) जिसके गुस्सा होनेसे भय नहीं है और जिसके खुश होनेसे धनकी आमदनी नहीं है; यानी जो नाराज हो कर सज़ा नहीं दे सकता और प्रसन्न होकर कोई मिहरबानी नहीं कर सकता,—वह रूठ कर हमारा क्या कर सकता है ?

(१०) जिस साँप में विष न हो उसे भी अपना फन बढ़ाना चाहिये; क्योंकि ख़ाली ढोंग से भी भय पैदा हो जाता है।

(११) बुद्धिमान्को उचित है कि सुबह के वक्त जुआरियों की कथा यानी "महाभारत" पढ़े या सुने। दोपहर के समय स्त्री-प्रसंग यानी "रामायण" पढ़े और रातके समय चोर की बातें यानी "श्रीमद्भागवत" सुने या पढ़े।

इसका खुलासा मतलब यह है. कि 'महाभारत' में जूआ लनेवालों की बहुत कथायें मौजूद हैं; उनके पढ़ने से नुष्योंको जूएसे नफ़रत हो जाती है। राजा नलकी मुसीबत र धर्मराज युधिष्ठिरकी बुरी हालत होनेका कारण एक-मात्र जूआ" ही था। उन कथाओं को पढ़कर कौन जूएकी ओर खना भी चाहेगा?

रामायण के पढ़नेसे मालूम हो जाता है कि जो शख़्स, क़दम, स्त्रीके वशमें हो जाते हैं वे राजा दशरथ की तरह कष्ट ोगकर प्राण छोड़ने को लाचार होते हैं और जो पराई स्त्री को ाहते हैं वे रावणकी भाँति कुटुम्ब, परिवार, धन-धान्य, और ाज-पाट सहित पानीके वबूले की भाँति बिलाय जाते हैं।

श्रीकृष्ण महाराजके १६१०८ रानियाँ और पटरानियाँ थीं; सग़र वे इतनी स्त्रियों के होते हुए भी इन्द्रियोंके वश न हुए। मनुष्यों को महात्मा कृष्णको आदर्श मान कर चलना उचित है। इन्द्रियाँ रातके समय मनुष्यों को अपने वशमें कर लेती हैं। इन्द्रियोंका दमन करनाही पुरुषोंके लिये उत्तम मार्ग है। भागवत में कृष्ण-चरित्र ख़ूब लिखा हुआ है; इसवास्ते रातके समय उसके सुननेसे पुरुष इन्द्रियोंके वशीभूत नहीं होता।

(१२) अपने हाथकी गूँथी हुई माला, अपने ही हाथों से घिसा हुआ चन्दन और निज हाथोंसे लिखा हुआ स्तोत्र,— इन्द्रकी लक्ष्मीका भी नाश कर देते हैं; तब सांसारिक मनुष्यों की क्या गिनती है?

(१३) ऊख, तिल, शूद्र, स्त्री, सोना, धरती, चन्दन, का
और पान,—इनका मर्दन (मथन) गुणदायक है ।

ऊखके पेरने से खाँड़, गुड़ आदि सुन्दर पदार्थ तय्यार
हैं । तिलों के पेरने से तेल निकलता है, जिससे संसारमें
याला होता है और सैकड़ों काम निकलते हैं । शूद्र (
जाति) पीटने-कूटने से सीधा बना रहता है । पृथ्वी में
चलाने से अनाज पैदा होता है, जिससे जगत् के चराचर
का पालन होता है । दहीके मथने से, अमृत-समान
मक्खन और घी निकलते हैं । इसी तरह स्त्री वग़ैरः के विष
समझ लो ।

(१४) अगर धीरज हो तो कङ्गाली बुरी नहीं लग
अगर कपड़े ख़राब भी हों, मगर साफ़ हों तो बुरे नहीं ल
अगर अन्न ख़राब भी हो, मगर गरमगरम हो तो अच्छा ल
है ; यदि मनुष्य कुरूप भी हो, लेकिन अच्छे स्वभाव का हो
वह बुरा नहीं मालूम होता ।

दसवाँ अध्याय ।

जिसके पास 'धन' नहीं होता, वह नीचा नहीं सम
जाता ; किन्तु जिसके पास 'विद्या' नहीं होती
बेशक नीचा समझा जाता है ।

(२) आँखोंसे देखकर ज़मीनपर पाँव रखना चाहि

कपड़ेसे छानकर जल पीना चाहिये ; शास्त्रके अनुसार बात निकालनी चाहिये और मनमें विचार करके काम करना चाहिये।

आँखोंसे देखकर ज़मीनपर पैर रखनेसे मनुष्य, बहुधा कूआ, खाई ख़न्दक आदिमें गिरकर प्राण गँवानेसे बच जाता है, एवं सर्प आदि ज़हरीले जानवरों पर भी पैर नहीं पड़ता। आस्मानकी तरफ़ देखते हुए चलनेसे, अकसर आदमीकी जान ख़तरेमें पड़ जाती है।

पानीमें अनेक प्रकारके कीड़ोंका वास होता है तथा और भी ऐसी अनेक चीज़ें उसमें पड़ जाती हैं, जो मनुष्योंके प्राणान्त करनेके लिये काफ़ी होती हैं ; इसवास्ते पानी हमेशा छानकर पीना उचित है। शायद यही कारण है कि "कपड़े से छान-कर पीनेको" जैनधर्म-वालोंने धर्मका एक अङ्ग बना दिया है ; मारवाड़में हर कोई मनुष्य बिना छाने जल नहीं पीता।

व्याकरणके नियमानुसार या शास्त्रोंके नियमानुसार मुँह से बात निकालना सुखदायी है। अशुद्ध या बेक़ायदे बोलने से शिक्षित-समाज अप्रसन्न होता है।

मनमें बिना विचारे हुए काम करनेका परिणाम सदा दुःखदायी होता है और विचारकर काम न करनेवाला सदा पछताता और हानियाँ सहता है ; अतएव, दिलमें खूब सोच-समझकर किसी काममें पैर देना सुखदायी है।

(३) यदि सुख चाहते हो तो "विद्या" को त्याग दो और यदि विद्या चाहते हो तो "सुख" को तिलाञ्जलि दे दो ; क्योंकि सुख चाहनेवालेको विद्या नहीं आ सकती और विद्या चाहनेवालेको सुख नहीं मिल सकता ।

(४) कवि लोग क्या नहीं देखते ? स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकतीं ? शराबी क्या नहीं बकते ? कव्वे क्या नहीं खाते ?

कवि लोग सब कुछ देखते हैं । जो उन्होंने देखा नहीं कुछ उसे भी अपनी कवितामें दिखा देते हैं । ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे स्त्रियाँ न कर सकती हों । शराबी अण्ड-बण्ड अनेक तरहकी बातें बका करते हैं और जो गुप्त-से-गुप्त भेद होता है— उसे भी नशेमें प्रकट कर देते हैं । कव्वे मैली-कुचैली, बुरी-भली सब भाँतिकी चीज़ें खा जाते हैं ।

(५) इस बातका निश्चय है, कि विधाता राजाको फ़क़ीर और फ़क़ीरको राजा बना देता है, एवं निर्धनको धनवान् और धनवान्को निर्धन कर देता है ।

(६) लालचियोंको माँगनेवाला बुरा लगता है । मूर्खों को समझानेवाला बुरा लगता है । पर-पुरुष-रता स्त्रियोंको अपना पति बुरा लगता है और चोरोंको चन्द्रमा बुरा मालूम होता है ।

(७) जो न तो विद्वान् हैं, न तपस्वी हैं, न दानी हैं, न शीलवन्त हैं, न गुणवान् हैं, न धर्मात्मा हैं,—वे मनुष्य नहीं

; किन्तु पृथ्वीका बोझा बढ़ाते हुए मनुष्योंके रूपमें हिरन फिरते हैं।

(८) जिनका हृदय सूना है, उनको उपदेशसे कुछ लाभ नहीं होता ; जैसे मलयाचलपर पैदा होनेवाले बाँस चन्दन नहीं होजाते ।

(९) जिसमें स्वाभाविक बुद्धि नहीं होती, उसे शास्त्रोंसे कुछ लाभ नहीं होता ; जैसे अन्धेको दर्पणसे कुछ फ़ायदा नहीं होता ।

(१०) जिस तरह मल त्याग करनेवाली इन्द्रिय—गुदा —सौ दफ़ा धोनेपर भी पवित्र नहीं होती ; उसी तरह दुष्ट आदमीको भला आदमी बनानेका उपाय जगत्में नज़र नहीं आता ।

(११) महात्माओंकी नाराज़ीसे मृत्यु होती है ; दुश्मनकी नाराज़ीसे धनका नाश होता है ; ब्राह्मणकी नाराज़ीसे कुलका नाश होता है ; किन्तु राजाकी नाराज़ीसे तो सब कुछ ही नाश होजाता है ।

(१२) जिस वनमें बड़े-बड़े हाथी और शेर हों वहाँ रहना और वहाँके पके-पके फल खाना, शीतल पानी पीना, घास पर सो रहना, वृक्षोंके छालोंके कपड़े पहिनना अच्छा है ; किन्तु भाई-बन्धुओंके बीचमें धन-हीन होकर जीना अच्छा नहीं है ।

(१३) लक्ष्मी जिसकी माता है, कृष्ण जिसके पिता, कृष्ण-भक्त जिसके भाई-बन्धु हैं,—उसके लिये तीनों लोक स्तुता ही के समान हैं।

(१४) नाना प्रकारके पखेरू रातको एक वृक्षपर बैठ और सवेरा होते ही सबके सब दशों दिशाओंमें उड़ जाते है इसमें आश्चर्य्यकी क्या बात है ?

(१५) जिसके पास बुद्धि है वही बलवान् है, निर्बु के पास बल नहीं होता। मदसे मतवाले सिंहको ज़रासे, बुद्धिमान्, स्यारने मार डाला।

(१६) यदि भगवान् जगत्के पालनकर्त्ता—विश्वम्भर कहलाते हैं; तो मुझे अपनी ज़िन्दगीकी क्या फ़िक्र है ? वह विश्वम्भर—संसारके पालनेवाले—न होते तो बालक जीवन-रक्षाके लिये माताके स्तनोंमें दूध क्यों पैदा करते ? बातको बारम्बार विचारकर, हे कृष्ण ! मैं सदा आपके च कमलोंकी सेवामें ही लगा रहता हूँ।

(१७) यद्यपि मुझे देव-वाणी—संस्कृत—का अधिक है; तथापि मैं दूसरी भाषओंको भी प्रेम-दृष्टिसे देखता हू क्योंकि स्वर्गमें अमृतके होनेपर भी देवताओंकी लालसा स्वर्ग स्त्रियोंके अधरामृत—होठोंके रस—में रहती है।

(१८) चाँवलोंसे दश गुणा बल आटेमें है; आटेसे गुणा बल दूधमें हैं; दूधसे आठ गुणा बल मांसमें है और मांस दश गुणा बल घीमें है।

(१९) साग खानेसे रोग बढ़ते हैं। दूध पीनेसे शरीर बढ़ता है। घी खानेसे वीर्य्य और मांस खानेसे मांस बढ़ता है।

ग्यारहवाँ अध्याय।
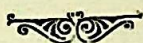
उदारता (फ़ैयाज़ी), मीठा बोलना, धैर्य्य और उचित बातका ज्ञान,—ये चार गुण स्वाभाविक हैं यानी जन्मसे ही होते हैं। अभ्यास करनेसे ये गुण कदापि नहीं आते।

(२) जो अपनी जातिको छोड़कर दूसरी जातिमें मिल जाता है, वह अपने आप इस तरह नाश होजाता है जैसे राजा के अधर्मसे राज्य नाश होजाता है।

(३) हाथी डील-डौलमें बड़ा भारी होता है, लेकिन ज़रासे अंकुशके वशमें होजाता है। क्या अंकुश हाथीके समान होता है? दीपकके जलते ही अँधेरा दूर होजाता है। क्या दीपक अँधेरेके बराबर होता है। बिजलीसे पहाड़ोंका नाश होजाता है। क्या बिजली पहाड़ोंके समान होती है?

मतलब यह है कि, जिसमें तेज रहता है वह छोटा
बलवान् होता है। मोटा-ताज़ा और डील-डौलका
तेज-रहित होनेपर किसी कामका नहीं होता।

(४) जिनका दिल घरमें फँसा रहता है, उनमें "वि
नही होती; जो माँस खाते हैं, उनमें "दया" नहीं हो
जो धनके लोभी होते हैं, उनमें "सत्य" नहीं होता औ
पर-स्त्रियोंमें आसक्त रहते हैं, उनमें "पवित्रता" नहीं होती।

(५) जिस भाँति नीमकी जड़में दूध और घी सीं
नीम मीठा नहीं होता; उसी भाँति दुष्ट आदमी भाँति-
की शिक्षा दी जानेपर भी भला आदमी नहीं होता।

(६) जिसके दिलमें पाप होता है, वही दुष्टात्मा होत
दुष्टात्मा सौ तीर्थोंमें भी स्नान करनेसे उस भांति पवि
निष्पाप—नहीं होता; जिस भांति शराबका बरतन
डालनेपर भी शुद्ध नहीं होता।

(७) जो जिसके गुणोंकी उत्तमता नहीं जानता,
सदा उसकी निन्दा ही किया करता है। इसमें आश्चर्य
कोई बात नहीं है। क्योंकि भीलनी गज-मोतियोंका
न जाननेके कारण उनको तो फक देती है, किन्तु चिरमि
योंके गहने बना-बनाकर पहनती है।

(८) जो शख़्स एक बरस तक रोज़-रोज़ बिना
बोले-चाले—चुपचाप—भोजन करता है, उसकी हज़ार को
वर्षोंतक स्वर्गमें पूजा होती है।

(६) विद्या-अभ्यास करनेवालेको चाहिये कि स्त्री-इच्छा, क्रोध, लोभ, जीभका स्वाद, बदनका सजाना, खेल-तमाशे, बहुत सोना और अति सेवा करना,—इन आठोंको छोड़ दे।

विद्यार्थियोंके हक़में उपरोक्त श्लोक बहुत ही ठीक कहा है। उपरोक्त आठों बातें विद्यार्थियोंके पथमें कण्टक-स्वरूप हैं। जिस विद्यार्थी में उपरोक्त बातें होंगी, वह कभी विद्वान् न हो सकेगा। इसवास्ते जो विद्वान् होना चाहते हैं, उन्हें स्त्री आदि से बिलकुल ही किनारे रहना चाहिये। स्त्री विद्याभ्यास में पूरी-पूरी बाधक होती है। इसी वजह से, प्राचीन समय में, भारतवासी पूर्ण विद्याभ्यास हो जाने पर विवाह करते थे। उस ज़माने में आज-कल की तरह दुधमुँहे बच्चोंका विवाह न होता था। इसका फल यह होता था, कि प्राचीन काल के मनुष्य पूर्ण बलवान्, वीर्य्यवान् और विद्वान् होते थे।

(१०) जो ब्राह्मण सदा वनमें बसता है और बिना जोती हुई ज़मीन के कन्द-मूल और फल फूल खाकर ज़िन्दगी बसर करता है एवं नित्य श्राद्ध करता है,—वह ब्राह्मण ऋषि कहलाता है।

(११) जो ब्राह्मण एक समय ही भोजन करके सन्तुष्ट हो जाता है; सदा पढ़ता और पढ़ाता है; यज्ञ करता और कराता है; दान लेता और देता है; एवं ऋतुकाल की रात्रियों में ही अपनी स्त्री से मैथुन करता है,—वह ब्राह्मण "द्विज" कहलाता है।

(१२) जो ब्राह्मण सांसारिक कर्मों में लगा रहता; गाय, भैंस आदि पशुओं को पालता है; वाणिज्य, व्यापार; खेती करता है,—वह ब्राह्मण "वैश्य" कहलाता है।

(१३) जो ब्राह्मण लाख, तेल, नील, कुसुम, शहद, शराब और मांस बेचता है,—वह ब्राह्मण "शूद्र" कहलाता है।

(१४) जो पराया काम बिगाड़ता है; दग़ाबाज़ी करता; अपने मतलब साधने की फ़िक्र में रहता है, ठगपना करता; दूसरों को देखकर कुढ़ता है; ऊपरसे मीठी-मीठी बातें बना है; किन्तु भीतर से कड़वा होता है,—वह ब्राह्मण "विला कहलाता है।

(१५) जो बावली, कूआ, तालाब, बाग़, बग़ीचा और दे मन्दिर के नाश करने में भय-रहित होता है यानी निर्भय चित्त इनका नाश करता है,—वह ब्राह्मण "म्लेच्छ" कहलाता है।

(१६) जो देव-धन और गुरु-धन को हरता है, परस्त्रियों से रमण करता है और सब जीवों में अपना गुज़ारा कर ले है, वह ब्राह्मण "चाण्डाल" कहलाता है।

(१७) बुधिमानों को चाहिये कि सदा धन-धान्य को दा किया करें, किन्तु जमा न करें; क्योंकि दानी होनेके ही का से राजा विक्रमादित्य, कर्ण और बलि का नाम आज त जगत् में चला आता है। मधुमक्खियाँ बहुत दिनों तक क परिश्रम करके मधु जमा करती हैं। उसे न वे ख़ुद खाती

दूसरों को देती हैं; किन्तु जब उनका सञ्चित मधु लोग ले
ते हैं, तब वे दोनों पैरोंको घिसती हैं यानी हाय-हाय
रती और पछताती हैं।

बारहवाँ अध्याय।

जिसके सुन्दर सुखदायी मकान हो, जिसके पुत्र विद्वान् हों, जिसकी स्त्री प्रियवचन बोलनेवाली हो, जिसके पास इच्छानुसार धन हो, जो अपनी स्त्री
रमण करता हो, जिसके नौकर आज्ञापालक हों, जिसके
रमें अतिथि-सेवा—मिहमानों की ख़ातिर—होती हो,
जिसके यहाँ भोलानाथ—शिव—की पूजा होती हो, जिसके
हाँ नित्य मीठा अन्न और पानी तय्यार रहता हो, जो सदा
धुजनों की सङ्गति में समय व्यतित करता हो, उसका ही
गृहस्थाश्रम” धन्य है।

(२) जो दयालु पुरुष अपनी श्रद्धा-अनुसार दुःखी
ह्मणों को थोड़ा सा भी धन देता है, वह उसे अनन्त होकर
लता है।

(३) अपने आदमियों में दक्षता, ग़ैरों पर दया, दु
साथ दुष्टता, साधु पुरुषों से प्रेम, शठों के साथ अ
विद्वानों के साथ सिधा बर्त्ताव, दुश्मनों के दर्म्यान व
माता-पिता और गुरु आदि बड़े लोगों के साथ क्षमा,
के साथ चालाकी—जिन लोगोंमें ऐसी कलायें होती हैं,
से लोक की मर्यादा रहती है।

(४) हाथों से दान नहीं किया, कानो से वेद
नहीं सुने, आँखों से महात्माओं का दर्शन नहीं किया,
से तीर्थाटन नहीं किया, अन्याय से धन पैदा करके पेट
और घमण्ड से सिर ऊँचा हो रहा है,—ऐसे नीच और
योग्य शरीर को, हे स्यार ! छोड़ दे।

(५) कीर्त्तनके समय मृदङ्ग सदा यह कहता र
कि जिनकी यशोदानन्दन—कृष्ण—के चरणकमलों में
नहीं है, जिनकी जीभ ग्वालिनों के प्यारे—कृष्ण-के गु
नहीं करती, जिनके कान श्रीकृष्ण की प्यारी-प्यारी लीला
आदर नहीं करते,—उन लोगोंको धिक्कार है ! धिक्कार है !! हो

(६) यदि करील के वृक्षों में पत्ते न आवें, तो वसन्त
क्या दोष है ? यदि दिन में उल्लू को दिखाई न दे, तो उ
का क्या अपराध है ? यदि मेघ-जल पपहिये के मुंह में
तो मेघ का क्या अपराध है ? जो कुछ विधाताने पहले
ललाट (पेशानी) रूपी पट्टी पर लिख दिया है, उसे
की सामर्थ्य किसमें है ?

(७) साधु लोगों की सङ्गति से दुष्ट भी साधु हो जाते हैं। किन्तु साधु लोग दुष्टों की सङ्गति से दुष्ट नहीं होते ; जैसे फूलों को खुशबू मिट्टी में आजाती है, किन्तु मिट्टी की गन्ध फूलों में नहीं आती।

(८) साधु पुरुषों के दर्शन से पुण्य होता हैं ; क्योंकि वे तीर्थों के समान होते हैं। तीर्थों का फल तो समय पाकर ही मिलता है ; किन्तु साधुओं के समागम का फल तत्काल ही मिल जाता है।

(९) हे ब्राह्मण ! इस शहर में बड़ा कौन है ? ताड़के वृक्षों का झुण्ड। दाता कौन है ? धोबी ! क्योंकि वहसवेरे कपड़े लेजाता है और रात को देजाता है। चतुर कौन है ? पराये धन और परायी स्त्री के हरण करने में सब ही चतुर हैं। यदि ऐसा है तो, हे सखे ! आप कैसे जीते हैं ? जिस तरह विष का कीड़ा विष में जीता है वैसे ही मैं भी जीता हूं।

(१०) जिन घरों में ब्राह्मण के चरण-जल से कीचड़ न होती हो, जिन घरों में वेद-शास्त्रों की ध्वनि न होती हो, जिन घरोंमें स्वाहा-स्वधा न होती हो यानी हवन न होता हो, उन घरों को श्मशान के समान जानना चाहिये।

(११) 'सत्य' मेरी मा है। 'ज्ञान' मेरा बाप है। 'धर्म्म' मेरा भाई है। 'दया' मेरी सखी है। 'शान्ति' मेरी स्त्री है और 'क्षमा' मेरा पुत्र है,—तात्पर्य्य यह है कि यही छः मेरे बान्धव हैं।

इसका खुलासा मतलब यह है कि किसी दुनि
मनुष्य ने किसी महापुरुष को आनन्द-मग्न देखकर आश्च
कहा:—"भाई! संसार में अच्छे महतारी-बाप, भाई,
मित्र, स्त्री, पुत्र आदि से ही आनन्द मिलता है। लेकिन
तो मैं किसीको भी नहीं देखता; फिर भी आप आनन्
दिखाई देते हैं, इसकी क्या वजह है?" उसने उत्तर दि
"भाई! 'सत्य' मेरी मेरी माता है, 'ज्ञान' मेरा पिता है,
मेरी सखी है, 'शान्ति' मेरी स्त्री और 'क्षमा' मेरा पुत्र
सांसारिक कुटुम्बियों से इतना आनन्द लाभ करना असु
समझता हूं, जितना कि मुझे उपरोक्त कुटुम्बियोंसे मिलता
ज्ञानी पुरुष ने उक्त बात केवल प्रश्नकर्त्ताकी आंखें खोलक
लिये कही थीं।

(१२) शरीर अनित्य है, धन-दौलत भी हमेशा
रहती, मौत हर वक्त पास ही रहती है; इस लिये "धर्म
को संग्रह करना चाहिये।

(१३) नेवता (न्योता) पानेसे ब्राह्मणों को प्रसन्नता
है; नवीन-नवीन घास मिलने से गाय प्रसन्न होती हैं;
प्रसन्नता से स्त्रियों को प्रसन्नता होती है; किन्तु हे
मुझे "युद्ध" से ही प्रसन्नता होती है।

(१४) जो पर-स्त्री को माताके समान समझता है,
धन को मिट्टी के ढेले के समान समझता है, और अपने
सब जीवों को समझता है,—वही विद्वान् या पण्डित है।

(१५) धर्म्म में रुचि, मुंहमें मीठी वाणी, दानमें उत्साह, मित्र के सङ्ग निष्कपट भाव, बड़ों के साथ नम्रता, चित्त में गम्भीरता, चालचलन में पवित्रता, गुण में रसिकता, शास्त्रों में ज्ञान की अधिकता, रूप में सुन्दरता, और शिव से प्रेम, हे रामचन्द्र ! ये सब गुण आपही में हैं ।

उपोरक्त बारह गुण मर्यादापुरुषोत्तम राजा रामचन्द्र में मौजूद थे । नीतिकारकी यही मन्शा थी कि आजकल के लोग भी इन सद्गुणों को ग्रहण करें और अपने लोक-परलोक सुधारें । इसी अभिप्राय से उसने यह श्लोक लिखा है । मनुष्यों का धर्म्म है, कि वे हर बात में राजा रामचन्द्रका अनुकरण करने की चेष्टा करें ।

(१६) कल्पवृक्ष काठ है, सुमेरु पर्वत है, चिन्तामणि नामक रत्न भी पत्थर है, सूरज में गरमी बहुत है, चन्द्रमा की ज्योति घटती रहती है, समुद्र जल खारा है, कामदेव के शरीर नहीं है, राजा बलि राक्षस हैं, कामधेनु (गाय) पशु है ; इस-वास्ते, हे रामचन्द्र ! हम आपको इनकी उपमा नहीं दे सकते ; क्योंकि ये आपके बराबर नहीं हैं । फिर आपही कहिये, आपके साथ किसकी तुलना की जाय ?

(१७) परदेशमें 'विद्या' मित्रके समान भलाई करती है, घरमें 'स्त्री' मित्रका काम करती है, रोगी के लिये 'दवा' मित्रवत् हित करती है और परलोक में 'धर्म्म' मित्र की भाँति सहायता करता है ।

(१८) 'विनय' राज-पुत्रों से, अच्छी बात विद्वा[illegible] 'झूठ' जुआरियों से और 'छल' औरतों से सीखना चाहिये।

(१९) विना विचारे ख़र्च करनेवाला, मददगार न हो[illegible] भी झगड़ा पैदा करनेवाला और सब जाति की स्त्रियों से[illegible] की इच्छा करनेवाला पुरुष, शीघ्र ही, नाश हो जाता है।

(२०) बुद्धिमानों को अपने भोजन की फ़िक्र न क[illegible] चाहिये, बल्कि 'धर्म्म' की फ़िक्र करनी चाहिये। भोजनकी [illegible] फ़िज़ूल है; क्योंकि भोजन तो जन्मके साथ ही पैदा होजाता [illegible]

(२१) धन-धान्य के लेने-देने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने [illegible] भोजन तथा व्यवहार में जो शर्म छोड़कर काम करता है[illegible] वही सुखी रहता है।

(२२) जैसे बूँद-बूँद के पड़ने से घड़ा भर जाता [illegible] वैसे ही विद्या, धन और धर्म्म क्रम-क्रमसे संग्रह करते जा[illegible] सहज में इकट्ठे होजाते हैं।

(२३) जो दुष्ट होता है, वह बुढ़ापा आजानेपर भी [illegible] ही बना रहता है; जैसे कड़वी घिया (लौकी) ख़ूब पक[illegible] पर भी मीठी नहीं होती।

तेरहवाँ अध्याय।
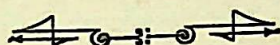
यदि मनुष्य अच्छे कर्म करता हुआ एक मुहूर्त भर भी जीवे तो अच्छा है; किन्तु दोनों लोक बिगाड़नेवाले बुरे कर्म करके उसका एक कल्प भी जीना अच्छा नहीं है।

(२) बीती हुई बात का शोक और आगे होनेवाली बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। चतुर पुरुष केवल वर्त्तमान काल के अनुसार ही चलते हैं।

(३) देवता, सज्जन और पिता केवल स्वभाव से सन्तुष्ट होते हैं; किन्तु भाई-बन्धु खान-पान से और विद्वान् मीठे वचनों से प्रसन्न होते हैं।

(४) "अवस्था (उम्र), कर्म, विद्या, धन और मरण,"– ये पाँचों उसी समय रच दिये जाते हैं, जब कि जीव गर्भ ही में रहता है।

जीव कितने दिनोंतक इस भूतलपर रहेगा, कैसे कर्म करेगा, कितनी विद्या पढ़ेगा कितना धन उसे मिलेगा और वह कब किस तरह मरेगा—ये पाँचों बातें उसी समय जीव के ललाटमें लिख दी जाती हैं, जब कि वह गर्भसे बाहर भी

नहीं आता है। इस बातको विचारकर सब ही जी
सन्तोष करना चाहिये। सुकर्म करने और विद्या एवं
पार्जनका उद्योग करना चाहिये; किन्तु अधीर न
चाहिये। क्योंकि जो कुछ पहिले ही से लिख दिया गय
वह होकर रहेगा।

(५) महात्माओंमें यह बड़ी विचित्र बात है कि, ज
लक्ष्मी-हीन होते हैं, तब तो लक्ष्मीको तिनके के बराबर सम
हैं और जब उनके पास लक्ष्मी आ जाती है, तब उसके बो
मारे एकदम नम्र होजाते हैं।

(६) जिसका किसीके साथ प्रेम होता है, उसीसे
भय होता है। प्रेम ही दुःखकी जड़ है; इसवास्ते प्रे
छोड़कर सुखसे रहना चाहिये।

(७) आनेवाली विपत्तिके रोकनेका उपाय, पहलेसे
करनेवाला और एकाएक सिरपर आई हुई विपत्तिके
करनेकी तदवीर, तत्काल ही, सोचनेवाला,—ये दोनों सु
रहते हैं और जो शख़्स यह सोचता है कि जो होनहार
वह अवश्य ही होकर रहेगी, वह मारा जाता है।

नीतिकारकी उपरोक्त शिक्षा राई-रत्ती सच है। हम
अपनी ज़िन्दगीमें इस वचनकी सत्यताकी परीक्षा करनेका
बीस बार मौक़ा पड़ा है। हर बार इस बातको बावन तो
पाव रत्ती पाया है। संसारमें सुख-पूर्वक जीवन बिताने
इच्छा रखनेवालोंको, हम इस वचनपर सदा ध्यान रखने

इसके अनुसार चलनेकी सलाह ज़ोरसे देते हैं। आनेवाली विपत्तिके रोकनेका उपाय पहिलेसे ही करनेवाला सदा सुखी रहता है, इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं है।

(८) अगर राजा धर्मात्मा होता है तो प्रजा भी धर्मिष्ठा होती है; यदि राजा पापी होता है तो प्रजा भी पापाचारिणी होती है। प्रजा राजाकी नक़ल करती है, जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है।

(९) धर्म-हीन जीते हुए मनुष्योंको, मैं मुर्देके समान समझता हूं; किन्तु धर्मयुक्त मरे हुओंको दीर्घजीवी समझता हूं।

(१०) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,—यही चार मुख्य हैं। जो इन चारोंमेंसे एकका भी अधिकारी नहीं है, उसका जन्म बकरीके गलेके स्तनोंकी नांई फ़िज़ूल है।

(११) दुर्जनोंका स्वभाव होता है कि वे पर-कीर्त्तिको सहन नहीं कर सकते; बल्कि, जल-जलकर ख़ाक होते हैं। उनके ऐसा करनेका कारण यही मालूम होता है कि वे, कीर्त्तिमानोंकी पदवी नहीं पा सकते।

(१२) विषयोंमें फँसा हुआ "मन" बन्धनका कारण है और विषयोंमें न फँसा हुआ "मन" ही मोक्षका कारण है; इससे प्रतीत होता है कि "मन" ही बन्धन और मुक्तिका कारण है।

(१३) जब ब्रह्मज्ञान होजाता है तब इस कायाका अभिमान नहीं रहता। कायाका अभिमान नाश होनेपर जहाँ-जहाँ मन जाता है वहां-वहां ही समाधि है।

(१४) मन-चाहे सब तरहके सुख किसीको भी न मिलते हैं; क्योंकि सब ही दैवाधीन हैं। इस बातको विचार कर बुद्धिमानोंको सन्तोष करना चाहिये।

(१५) जिस भाँति हज़ारों गायोंके बीचमेंसे बछड़ा अपनी माके पास ही चला जाता है; उसी भाँति जो कुछ कर्म किया जाता है, वह अपने कर्त्ता ही के पीछे-पीछे चला जाता है।

इसका मतलब यह है कि, जो कुछ सुकर्म या कुकर्म किया जाता है, उसका फल ठीक उस कर्मके करनेवालेको मिलता है। एक के किये हुए कर्मका फल दूसरेको नहीं भोगना पड़ता।

(१६) खोदनेवालेको खोदनेसे जिस तरह पाताल जल मिल जाता है; वैसे ही सेवा करनेवालेको गुरुकी विद्या मिल जाती है।

(१७) यद्यपि कर्मके अनुसार फल मिलता है और बुद्धि भी कर्मानुसार ही चलती है; तथापि बुद्धिमान् महापुरुष हरेक कामको विचारकर ही करते हैं।

(१८) स्त्री, धन और भोजन,—इन तीनोंमें सन्तोष करना चाहिये; किन्तु विद्याभ्यास, तपस्या और दान करनेमें हरगिज़, सन्योष न करना चाहिये।

(१९) जो एक अक्षर भी पढ़ानेवाले गुरुके सामने अपना सिर नहीं नवाता, वह सौ बार कुत्तोंकी योनिमें जन्म लेकर अन्तमें चाण्डालोंमें जन्म लेता है।

इसका तात्पर्य्य यह है कि, जिस गुरुने एक अक्षर भी पढ़ाया हो, उसके सामने, सदा, सिर नवाना चाहिये अर्थात् उसकी वन्दना सदा करनी चाहिये। जो ऐसा नहीं करते, वह पहले एक सौ बार कुत्ता होकर इस भूतलपर आते हैं। पीछे चाण्डाल योनिमें जन्म लेते हैं तब उनको अच्छी योनि मिलती है। प्राचीन समयके शिष्य बिल्कुल इस नीतिपर ही चलते थे; क्योंकि उनके दिलमें ऐसे-ऐसे सैकड़ों-हज़ारों वाक्य बैठाये जाते थे। किन्तु आजकलकी अङ्गरेज़ी शिक्षा-पद्धति ऐसी ख़राब है कि, विद्यार्थी बेचारे इस बातको जानते ही नहीं और जो जान जाते हैं, वे इसकी सत्यतापर विश्वास नहीं करते। आजकलके स्कूली विद्यार्थी उस्तादको अपना एक नौकर समझते हैं। इसका कारण यही है कि, उन लोगोंको बचपनमें घरपर और बड़े होनेपर पाठशालाओंमें हिन्दू-धर्म-शिक्षा नामको भी नहीं मिलती।

(२०) युगान्त होनेपर सुमेरु पर्वत चलायमान होजाता है, कल्पान्त होनेपर सातों समुद्र अपनी मर्यादा छोड़कर भूमण्डलको डुबा देते हैं, किन्तु साधु पुरुष अपनी स्वीकार की हुई बातसे किसी दशामें भी नहीं डिगते।

(२१) जिसके कामका कोई ठहराव नहीं है यानी जो एक कार्य्यपर स्थिर नहीं रहता,—वह न वनमें सुख पाता है न जनमें। वनमें अकेले रहनेसे और मनुष्योंमें उनके सङ्गसे उसकी काया जालती रहती है।

चौदहवाँ अध्याय ।

इस पृथ्वीपर "जल, अन्न और मीठे वचन" ये तीन रत्न हैं; किन्तु मूर्ख लोग पत्थरके टुकड़ोंको भी रत्न समझते हैं।

(२) जीव जो कुछ बुरे कर्म या अपराध करता है, उस अपराधरूपी वृक्षमें "दरिद्रता, रोग, दुःख और बन्धन," ये चार फल लगते हैं।

मतलब यह है कि, निर्धनता, बीमारी, क्लेश और कैद—ये सब जीवके बुरे कामोंके फल हैं। जो जैसा बोता है, वह वैसा ही काटता है।

(३) धन नाश होजानेपर फिर हाथ आ सकता है, मित्रके नाश होजानेसे दूसरा मित्र मिल सकता है, स्त्रीके नाश होजानेसे दूसरी स्त्री फिर आ सकती है और पृथ्वीके अधिकारमेंसे निकल जानेपर वह फिर अधिकारमें आ सकती है; किन्तु यह काया एक बार नाश होनेपर फिर नहीं मिल सकती।

मतलब यह है कि धन, मित्र, स्त्री और पृथ्वी नाश होनेपर फिर भी मिल जाते हैं, किन्तु यह मनुष्य-शरीर नाश हो जानेपर फिर नहीं मिलता। इसीवास्ते बुद्धिमान् और विवे

ोग कहा करते हैं कि मनुष्यका चोला बारम्बार नहीं मिलता। इसलिये बुद्धिमान् और दूरदर्शियोंको चाहिये कि स दुर्लभ चोलेको पाकर कोई-न-कोई ऐसा काम कर डालें, ज़ससे उनका नाम अमर होजाय और इस आवागमनके न्धनसे छूटकर मुक्ति या निर्वाण-पदको प्राप्त कर सकें। जो काम इस चोलेसे होसकता है वह और चोलों से नहीं बन सकता।

(४) एक तिनका मेहकी एक बूंदको भी रोकनेमें समर्थ नहीं होता; किन्तु तिनकोंका समूह मेहकी मूसल धाराओंको भी नीचा दिखा देता है; उसी भांति इस बातका निश्चय है कि, बहुतसे आदमियोंका समूह दुश्मनको, निस्सन्देह, परास्त कर सकता है।

(५) जलमें तेल अपनी शक्तिसे आप ही फैल जाता है, दुष्ट आदमीमें गुप्त बात अपने आप विस्तार पकड़ लेती है, सुपात्रको दिया हुआ दान स्वयं बढ़ जाता है और बुद्धिमान्में जो शास्त्र-ज्ञान होता है, वह भी अपनी शक्तिसे अपने आप ही बढ़ता चला जाता है।

(६) धर्म-सम्बन्धी आख्यान (कथा) सुननेके समय, श्मशानमें जानेके समय और रोगियोंकी रोगावस्थामें ज़ो बुद्धि उत्पन्न होती है; अगर वही बुद्धि, सदा स्थिर बनी रहती; तो किसे इस संसारके बन्धनसे छूटकारा न मिल जाता?

(७) बुरा कर्म करके जो मनुष्य पछताता है औ
समय उसको जो बुद्धि पैदा होती है; यदि वही बुद्धि प
ही होती; तो किसकी सुख-सम्पत्ति न बढ़ती?

(८) दान, तप, बहादुरी, चतुराई, सुशीलता और नं
किसीको आश्चर्य नहीं करना चाहिये; क्योंकि इस वसुन्
अनेक रत्न मौजूद हैं।

(९) जिसके दिलमें बसा रहता है, अगर वह दूर भी है
भी दूर नहीं है; किन्तु जो जिसके दिलमें नहीं है, यदि वह
भी हो तो भी दूर ही है।

(१०) यदि तुम चाहते हो कि अमुक मनुष्य हमसे
वचन बोले; तो तुमको भी उचित है कि, तुम आप
सदा, प्रिय वचन बोलो; क्योंकि शिकारी हिरनके मारनेके
मीठे स्वरसे गाना गाता है; तब हिरन प्रेमके मारे उसके
स्वयं चला आता है।

(११) राजा, अग्नि, गुरु और स्त्री,—ये चार ऐसे हैं
यदि इनके बिल्कुल पास ही रहो तो नाश कर देते हैं; यदि
अलग रहो तो फल नहीं देते; इसवास्ते उपरोक्त चारोंको म
अवस्थासे सेवन करना चाहिये।

(१२) आग, जल, स्त्री, मूर्ख, साँप और राजकुल, इ
सदा, सावधानीसे सेवन करना चाहिये; क्योंकि ये छः
ही जान लेनेवाले हैं।

(१३) जो गुणवान् है, वही ज़िन्दा है; जो धर्मात्मा है, वही ज़िन्दा है; गुणहीन और धर्मरहित पुरुषका जीना व्यर्थ है।

(१४) अगर एक ही कामसे जगत्को वश करना चाहते हो; तो पहले दशों इन्द्रियों [और उनके पाँचों विषयोंसे "मन" को रोक लो।

आँख, कान, नाक, जीभ और चमड़ा—ये पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ कहलाती हैं। मुँह हाथ, पाँव, लिङ्ग और गुदा, ये पाँच कर्म-इन्द्रियाँ कहलाती हैं। आँखोंका विषय " रूप " है, कानोंका विषय " शब्द " है, नाकका विषय " गन्ध " है, जीभका विषय " रस " है और चमड़ेका विवय " स्पर्श " (छूना) है। मतलव यह है कि, ऊपर कही हुई पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँचों विषयोंसे जो मनुष्य " मन " को हटा सकता है, वह इस एक ही कामसे जगत्को वशमें कर सकता है।

(१५) जो शख़्स मौक़ेके अनुसार वात निकालता है, स्वभावके अनुकूल प्रिय वोलता है और अपनी शक्तिके अनुसार कोप करता है, वह 'पण्डित' है।

(१६) एक ही देह तीन तरहकी नज़र आती है। योगी उसे अति बुरी और मुर्देके समान समझते हैं, कामी उसे कामिनी समझते हैं और कुत्ते उसे मांस समझते हैं।

(१७) सिद्ध औषधि, धर्म, घरका दोष, मैथुन, ख़राव

अन्नका भोजन और अपने अपमानकी बात,—ये बातें बुद्धिमान्‌को किसीसे भी न कहनी चाहियें ।

(१८) हे मनुष्य ! दुर्जनोंकी संगति छोड़, साधुओंकी संगति कर, दिन-रात पुण्य कर और नित्य भगवान्‌को याद कर; क्योंकि यह जगत् अनित्य और असार है ।

पन्द्रहवां अध्याय ।

जिसका दिल दया के मारे सब जीवों पर पिघल जाता है,—उसे ज्ञान, मोक्ष, जटा और भभूत की क्या ज़रूरत है ?

(२) जो गुरु चेले को एक अक्षर भी बताता है, उससे उऋण होने के लिये संसार में ऐसा धन नहीं है, जिसे देकर शिष्य उऋण हो जावे ।

(३) दुष्ट आदमी और काँटे से बचने के दो ही उपाय हैं :—जूते से मुँह तोड़ना या दूर ही से बच जाना ।

(४) जो मैले कपड़े पहिनता है, जो दाँतों को साफ़ नहीं करता है, बहुत भोजन करता है, कड़वी बातें मुँह

कालता हैं, सूरज के उदय होने और अस्त होनेके समय
ता रहता है,—वह यदि चक्रधारी विष्णु भी हो, तोभी उसे
क्ष्मी छोड़ देती है।

(५) संसार में कोई किसीका बन्धु नहीं है, धनही सब का
धु है; क्योंकि मित्र, स्त्री, नौकर और भाई-बन्धु धन-हीन
ष को त्याग देते हैं; किन्तु यदि वही धन-हीन फिर धनी हो
ता है, तो सबके सब उसके साथ लग लेते हैं।

(६) अन्यायसे कमाया हुआ धन दस बरस तक ठहरता है;
ारहवाँ वर्ष लगते ही मूल (पूँजी) सहित नाश हो जाता है।

(७) अयोग्य चीज़ भी योग्य पुरुष में योग्य हो जाती है;
र योग्य चीज़ भी नीच पुरुष में अयोग्य हो जाती है; अमृत
ने से राहु की मृत्यु हुई और विष पीने से शङ्कर के गले की
न्दरता बढ़ गयी।

(८) वही भोजन है, जो ब्राह्मण भोजन करने से बचा
; वही मित्रता है, जो ग़ैर से की जाती है; वही बुद्धिमानी
जिसमें पाप नहीं है; वही धर्म है जो बिना कपट के किया
ता है।

(९) मणि पाँव के आगे लोटती है, काँच शिर पर भी
खा जाता है; किन्तु बेचने और ख़रीदनेके समय मणि मणि
रहती है और काँच-काँच ही रहता है।

(१०) शास्त्रोंका अन्त नहीं है और विद्या बहुत है,

लेकिन समय थोड़ा है और विघ्न बहुत हैं ; इसवास्ते जैसे जलमें से दूध निकाल लेता है, वैसे ही मनुष्यों को सार-मात्र ग्रहण कर लेना उचित है।

(११) दूर से आये हुए, रास्ते से थके हुए और मतलब घर पर आये हुए का बिना सत्कार किये हुए जो खाता है,—वह निश्चय ही चण्डाल गिना जाता है।

(१२) जो चारों वेदोंको पढ़कर और अनेक धर्मशास्त्र देख कर भी "आत्मा" को नहीं पहिचानते ; वे कलछी के हैं, जो रसों का स्वाद नही जानती।

(१३) अमृतका घर, औषधियोंका स्वामी, अमृत शरीरवाला और शोभायमान चन्द्रमा सूर्य्य-मण्डल में निस्तेज हो जाता है ; इस से प्रतीत होता है कि, पराये से कौन नीचा नहीं होता ?

(१४) भौंरा जब कमलिनी के फूलोंके बीचमें तब उसके फूलों के रस के मदसे उसी में अलसाया हुआ रहता है ; किन्तु जब दैववश परदेश में चला जाता कमलिनी के फूलों के न होनेसे कुटज के फूलों को ही समझ लेता है।

(१५) बन्धन तो बहुत तरह के होते हैं, परन्तु प्री रस्सी का बन्धन और ही होता है ; भौंरा लकड़ी को सकता है, किन्तु वह कमल-कोष में, प्रीतिके कारण, हुए भी, कुछ नहीं करता।

(१६) काटा हुआ चन्दन का वृक्ष अपनी सुगन्ध नहीं छोड़ देता ; बुड्ढा हाथियों का सरदार भोग-विलास करना नहीं छोड़ देता ; कोल्हूमें पेरे जाने पर ऊख अपनी मिठास नहीं छोड़ देता ; इसी भाँति अच्छे कुलका दरिद्र आदमी भी अपनी कुलीनता, सुशीलता और सुन्दर आचरण आदि सद्गुणों को नहीं छोड़ देता।

(१७) मैं ने संसार-बन्धन से छुटकारा पाने के लिये, ईश्वर के चरण-कमलोंका ध्यान न किया, जो 'धर्म' स्वर्ग-द्वार के किवाड़ों को तोड़ सकता है, मैंने उसका भी संग्रह न किया ; मैंने स्त्री के पीन पयोधरों और जाँघों का सुपने में भी आलिङ्गन न किया ; इसवास्ते मैं केवल अपनी माँके जवानीरूप वृक्ष के काटने में कुल्हाड़ी-स्वरूप हुआ।

(१८) स्त्रियाँ एक पुरुष से बात करती हैं, दूसरे को प्रेमभरी दृष्टि से देखती हैं, तीसरे को दिल से चाहती हैं ; स्त्रियों का प्रेम एक से नहीं होता।

(१९) जो मूर्ख पुरुष अज्ञान से समझता है कि, अमुक स्त्री मुझे प्यार करती है, वह उसके अधीन होकर खेल के पक्षी के समान नाचा करता है।

(२०) धन पाकर किसे घमण्ड न हुआ ? किस विषयी पुरुष की मुसीबत दूर हुई ? संसारमें किसके मन को स्त्रियोंने खण्डित नहीं किया ? राजाका प्यारा कौन हुआ ? कौन मौत के वश न हुआ ? किस माँगनेवाले का दर्जा बड़ा

हुआ? दुर्जनों के वशमें पड़कर कौन सुखके मार्ग चे
हुआ?

(२१) सोनेका हिरन न तो किसी ने पहिले
किसीने देखा या सुनाही; तोभी रामचन्द्रजीका मन
हिरन पर ललचा गया; इस से मालूम होता कि, नाश कास
आने पर सब की बुद्धि विपरीत (उल्टी) हो जाती है।

मूर्ख से मूर्ख भी सोनेके हिरन पर विश्वास नहीं कर
वह भी तर्क वितर्क करके जान सकता है कि,
सोनेका हिरन न किसी ने कभी देखा है न सुना है
हिरनका होना भी असम्भव है तथापि रामचन्द्रजी, जो
निधान और अनन्त बुद्धिके ख़ज़ाने थे, रावणके माया-
ललचा गये और सीता तथा लक्ष्मणको अकेले छोड़कर
पीछे दौड़े चले गये; जिसका परिणाम कैसा ख़राब हुआ
रामचन्द्र पर कैसी घोर मुसीबत पड़ी, वह किसी
प्रेमीसे छिपी नहीं है।

इससे साफ़ मालूम होता है कि, बुद्धिमान्से बुद्धिम
भी बुद्धि विपत्तिकाल आनेके समय नष्ट होजाती है।
मर्यादापुरुषोत्तम, विष्णुके अवतार, सब गुणोंके ख़ज़ाने,
रामचन्द्रजी की ही बुद्धि ठिकाने न रही तो साधारण
की क्या बात है?

(२२) प्राणी की बड़ाई उसके गुणोंसे ही होती है

चे स्थान पर बैठनेसे। कौआ क्या ऊँचे स्थान पर बैठनेसे
रुड़के समान हो सकता है?

(२३) बड़ी भारी सम्पत्तिवाले का आदर सब जगह नहीं
ता; किन्तु गुणोंका आदर सब जगह ही होता है; जैसे, पूर्ण-
ासीके पूर्ण चन्द्रमा की लोग उतनी पूजा नहीं करते, जितनी
 दूजके चन्द्रमाकी करते हैं।

(२४) मनुष्य गुणवान् न भी हो, किन्तु लोग उसके गुणों
ो तारीफ़ करें, तो वह मनुष्य गुणवान् कहा जा सकता है;
दि इन्द्र अपने मुखसे अपनी प्रशंसा करे तो लोग उसे बड़ा
हीं समझेंगे। मतलब यह है कि, जिसकी तारीफ़ दूसरे आदमी
रते हैं वही सच्चा गुणवान् है।

(२५) जिस तरह सोनेमें रत्नके जड़े जानेसे रत्नकी शोभा
ढ़ जाती है; उसी तरह विचारवान् मनुष्य को पाकर गुण भी
ड़ी भारी शोभाको प्राप्त होते हैं।

(२६) जो मनुष्य अकेला है, जिसको किसीका सहारा
हीं है; यदि वैसे मनुष्य में भगवान् के समान गुण हों, तोभी
ह दुःख पाता है; क्योंकि मूल्यवान् मणिको भी सोनेके सहारे
ी ज़रूरत पड़ती है।

(२७) जो धन बड़ी भारी तकलीफ़से, अपने धर्मके छोड़-
से अथवा शत्रुओंकी खुशामद करनेसे मिले,—ऐसे धनको
ोड़ देना ही ठीक है।

(२८) जो प्राणी इस संसारमें पैदा हुए हैं, उनको रहने, धन, स्त्री और खाने-पीने से न कभी सन्तुष्टता हुई होगी । अर्थात् वे इन वासनाओंसे तृप्त न होते हुए असार संसारसे कूच कर जाते हैं और करते रहेंगे ।

(२९) किये हुए होम, यज्ञ, दान और वलि—ये हो जाते हैं ; किन्तु जो देने-योग्य मनुष्य है, उसको दान और प्राणी-मात्र पर दिखाई हुई दया व क्षमा नहीं होती ।

(३०) तिनका सबसे छोटा होता है, तिनके से होती है, रूईसे भी हल्का भिक्षा माँगनेवाला होता है, भी उड़ाकर नहीं ले जाती ; क्योंकि वह समझती है भिक्षुक मुझसे भी कुछ न माँग बैठे ।

(३१) जिसका मान भंग हो चुका है अर्थात् इज़्ज़तमें बट्टा लग चुका है, उसका जीना वृथा है । समय तो पल-भर का ही कष्ट होता ; किन्तु मान-भंग कष्ट सदैव दिलमें खटकता रहता है ।

सोलहवाँ अध्याय।

सो
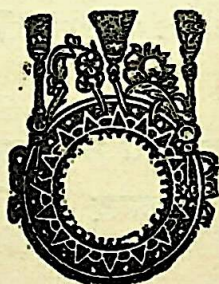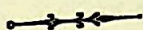
ठी बातके बोलनेसे सब प्राणी राज़ी होते हैं; इसलिये कड़वे वचन न बोलकर, हमेशा, मीठी बात ही बोलनी चाहिये।

(२) मीठी और प्यारी लगनेवाली बात तथा अच्छे मनुष्योंका संग,—ये ही संसार-रूपी कड़वे वृक्षके अमृत-रूपी दो फल हैं।

(३) मनुष्य इस संसार में जितनी बार जन्म लेता है, यदि उतनी ही बार दान देने, पढ़ने और तपस्या करनेका अभ्यास करता है, तो वह संसार में बार-बार मनुष्य-देह धारण करता है।

(४) जो विद्या सिर्फ़ किताबमें ही रहती अर्थात् कण्ठस्थ नहीं की जाती, वह विद्या और वह धन जो पराये हाथमें है, मौक़ा पड़ने पर न वह विद्या ही किसी काम में आती है और न वह धन ही किसी काम में आता है।

(५) जिसने केवल पुस्तक के सहारे विद्याभ्यास किया है; किन्तु गुरुके पास जाकर विद्या नहीं सीखी, वह सभाके

बीचमें इस तरह शोभा नहीं पाता, जिस तरह व्यभिचारि गर्भवती होकर शोभा नहीं पाती ।

(६) जो भलाई करे, उससे साथ भलाई करना उ; जो युद्ध करे, उससे लड़ना उचित है और जो बुराई करे, बुराईका ही आचरण करना उचित है ; ऐसा करनेमें कुछ गिनना चाहिये ।

(७) जो दूर है, जिसकी दूर होनेके पूजा नहीं की जाती है और जो दूर ही स्थित है, वह सब तपस्या करनेसे सिद्ध हो हैं ; इसवास्ते तपके बराबर और कोई बल नहीं है ।

(८) अगर लालच है, तो और अवगुणोंसे क्या है ? अगर चुगली है, तो और पाप-कर्मों से क्या प्रयोज यदि सत्य है, तो तपस्या करनेसे क्या प्रयोजन है ? अग साफ़ है, तो पवित्र स्थानोंकी यात्रासे क्या मतलब है ? भलमन्साई है, तो दूसरे गुणोंसे क्या मतलब है ? यदि है, तो गहनोंका लादना फ़िज़ूल है । अगर अच्छी वि तो धन चाहे हो या न हो, कोई चिन्ताकी बात नहीं है । अपकीर्त्ति है, तो मरनेसे क्या भय है ?

(९) जिसका बाप रत्नोंकी खानि समुद्र है, जिसकी लक्ष्मी है, ऐसे प्रतापी और बलवान् सहायकोंके होते भी शङ्खको भीख ही माँगनी पड़ती है ! सच है, बिना किसीको कुछ नहीं मिलता ।

(१०) जिसमें किसी प्रकारका बल नहीं रहता, वह घु होजाता है; जो ग़रीब होता है, वह ब्रह्मचारी बन जाता ; जो रोगी होता है, वह देवताओंकी भक्ति करने लगता है र जो स्त्री वृद्धा होजाती है, वह पतिव्रता बन बैठती है।

(११) अन्न और जलसे बढ़कर कोई दान नहीं है, द्शीसे बढ़कर तिथि नहीं है, गायत्रीसे बढ़कर कोई मन्त्र हीं है और मातासे बढ़कर कोई देवता नहीं है।

(१२) कुंदरूके सेवन करनेसे बुद्धि शीघ्र ही नाश हो ती है, बच शीघ्र ही बुद्धि देती है, स्त्री बलको चटपट हर ती है, किन्तु दूधसे तत्काल ही बल उत्पन्न होजाता है।

(१३) अगर घरमें स्त्री हो, धन खूब हो, पुत्र गुणवान् र विचारवान् हों और पुत्रके पुत्र पैदा होगया हो, तो फिर नुष्य के लिये इससे ज़ियादः स्वर्ग में और क्या सुख है?

(१४) जिन भले मनुष्योंका मन सदैव भलाई करने में ा रहता है, उनका दुःख नाश होजाता है और उनको पद- पर सम्पदा मिलती है।

(१५) भोजन करना, नींद लेना, डरना और मैथून रना,—इन बातोमें मनुष्य और जानवर बराबर हैं। सिर्फ़ न अथवा बुद्धि ही मनुष्योंमें ज़ियादः है; किन्तु जो मनुष्य द्धिरहित हैं, वे पशुके समान हैं।

(१६) राजा, वेश्या, यम, अग्नि, बालक, चोर, भिक्षा गनेवाला और ग्रामकण्टक अर्थात् जो नगर-निवासियोंको

दुःख देकर अपनी जीविका उपार्जन करता है,—ये सकल
के दुःखको नहीं जानते।

(१७) किसीने किसी स्त्री से पूछा,—हे स्त्री! ऐसे
की तरफ़ क्या देखती है? क्या पृथ्वीपर तेरा कुछ गि
है?" स्त्रीने उत्तर दिया,—"रे मूर्ख! क्या तू नहीं
कि मेरा तरुणता-रूपी मोती खो गया है?"

(१८) हे केतकी! यद्यपि तेरे समीप अनेक साँप
हैं, तू काँटोंसे भी युक्त है, टेढ़ी है, कीचड़से पैदा हुई
सहज ही में मिल भी नहीं सकती है; तथापि इतने
होते हुए भी एकमात्र सुगन्धके कारणसे सबकी प्यारी
है; इससे निश्चय है कि एक भी गुण सब दोषोंको ढक दे

(१९) साँपके दाँतोंमें ज़हर रहता है, मक्खीके
ज़हर रहता है, बिच्छूकी पूँछमें ज़हर रहता है; किन्तु
के तो सब शरीरमें ही ज़हर भरा रहता है।

(२०) जो स्त्री बिना अपने पतिकी आज्ञाके व्रत
करती है, वह अपने स्वामीकी आयु (उम्र) को नाश
है और मरनेपर नरकमें जाती है।

(२१) दान देने, सैकड़ों व्रत-उपवास करने और
टन करनेसे स्त्री उतनी शुद्ध नहीं होती, जितनी कि अपने
चरणोदक पीनेसे होती है।

(२२) पाँवोंके धोने बाद जो पानी बाक़ी रह

ल पीने बाद जो पानी बच जाता है और संध्या कर चुकने पर जल शेष रह जाता है, वह कुत्तेके मूत्रके समान होता है, ला जल पीकर चान्द्रायण व्रत करना चाहिये।

(२३) हाथ कङ्कणसे शोभा नहीं पाता, किन्तु दानसे शोभा पाता है। चन्दनसे शरीर शुद्ध नहीं होता, किन्तु स्नानसे होता है। भोजन से तृप्ति नहीं होती, किन्तु सम्मान से होती है। छापा, तिलक इत्यादि भूषणोंसे मुक्ति नहीं होती, किन्तु ज्ञानसे होती है।

(२४) जो मनुष्य नाईके घर जाकर बाल बनवाता है, जो पत्थरसे लेकर चन्दनका लेप करता है और जो अपना मुख पानीमें देखता है, वह यदि इन्द्र भी हो तोभी उसको लक्ष्मी छोड़ देती है।
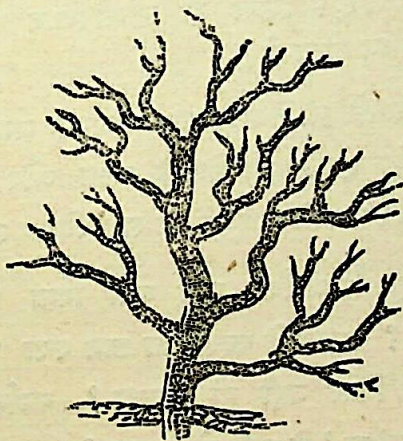
प्रथम अध्याय।

नीति-शास्त्र धर्म, अर्थ, कामका कारण और मुक्ति दाता है; इससे ही लोकोपकार और मर्यादाका पालन होता है।

(२) राजाको नीति-शास्त्रका अभ्यास भली-भाँति करना चाहिये, क्योंकि इसके जाननेवाले राजा और मन्त्री प्रजाके प्यारे बनते हैं और अपने शत्रुओं पर सदा विजय लाभ करते हैं।

(३) शब्द और अर्थका ज्ञान क्या बिना 'व्याकरण' के नहीं हो सकता? जगत्के पदार्थोंका ज्ञान क्या 'न्याय' और 'तर्कशास्त्र' के बिना नहीं हो सकता? कर्मकाण्डका ज्ञान क्या बिना 'मीमांसा' के नहीं हो सकता? जगत्की अ

र देहकी अनित्यताका ज्ञान क्या विना 'वेदान्त' के नहीं हो
कता ? ये व्याकरण, न्याय, तर्क, कर्मकाण्ड, मीमाँसा और
ान्त एक-एक तरहके विषयके ज्ञानका-बोध कराते हैं।
से लौकिक व्यवहारमें कुछ मतलब नहीं निकलता।
ंसारिक काम चलानेके लिये "नीति" की बड़ी भारी ज़रूरत
। जिस तरह भोजन विना जीवधारियोंकी जीवन-रक्षा
ीं हो सकती; उसी तरह नीति विना उनका लौकिक
ाम नहीं चल सकता। नीतिशास्त्रमें मतभेद नहीं है। यह
ास्त्र राजासे लेकर रङ्क तकके लिये ज़रूरी है।

(४) अपथ्य भोजन करनेवालोंको रोग हुए बिना नहीं
हते; रोग कभी जल्दी होजाते हैं और कभी कालान्तरमें
होते हैं; उसी तरह नीति-हीन राजाके शत्रु भी शीघ्र ही अथवा
समय पाकर पैदा होते और राजाको हैरान करते हैं।

(५) प्रजाका पालन करना और दुष्टोंका दमन करना—
राजाओंके धर्म्म हैं; किन्तु ये दोनों काम "नीति" विना
हीं हो सकते। अतः राजाओंको नीति जानना बहुत ही
रूरी है।

(६) नीतिमान् राजाको प्रजा खुशीसे चाहती है; किन्तु
नीतिमान्को दुःख से (ज़ोर-ज़बरदस्तीसे) चाहती है।
ंस राजामें नीति और बल दोनों होते हैं, उस राजाके पास
ारों ओरसे धन आता है

(७) धर्मके जाननेवाले मनुष्यकी देवता भी इज़्ज़त् करते

हैं; तब साँसारिक मनुष्य उसकी इज्जत् क्यों न...
धर्मज्ञ राजाको उचित है कि, अच्छे-अच्छे और भयानक...
से प्रजाको धर्म-काय्य में लगावे।

(८) बुद्धिमान् राजाका थोड़ासा भी धन सदा...
रहता है। सर्प आदि भयानक जीव भी शूरवीरता...
बल और धनसे वशमें होजाते हैं।

(९) जो राजा धर्मपूर्व्वक प्रजाका पालन करता...
यग करता है, शत्रुओंको परास्त करता है; तथा दा...
शील, वीर और निर्लोभ होता है एवं विषय-भोगों...
रहता है,—वह सतोगुणी राजा अन्तमें मोक्ष पाता है।

(१०) जो राजा क्रोधी, निर्दयी, मदोन्मत्त, वह...
चाहनेवाला और असत्यवादी होता है, वह तमोगुणी...
अन्त समय नरकमें जाता है।

(११) जो राजा घमण्डी, लालची, विषयी, ठग,...
झगड़ालू, नीचोंका चाहनेवाला, अपने इच्छानुसार...
वाला, नीतिको न जाननेवाला और छली होता है...
राजाओंमें नीच समझा जाता है। ऐसे राजाको...
कहते हैं। वह अन्तमें स्थावर योनिमें जन्म लेता है।

(१२) इस संसारमें सुख और दुःखका कारण केवल...
है। पहले जन्मके किये हुए कर्मको ही "प्रारब्ध" क...
कर्म जीवके साथ छाया की भाँति रहता है—अर्थात्...
क्षण भर भी जीवका सङ्ग नहीं छोड़ता।

हम हिन्दू लोग ऐसा समझते हैं कि, हम पहले भी कहीं थे और अव वहाँसे चोला छोड़कर इस लोकमें जन्मे। इस लोकमें आनेसे पहले हम जहाँ थे, वहाँ हमने जैसे बुरे या भले कर्म किये हैं, हमको उनके अनुसार ही फल मिल रहा है और अव जो कुछ वुरे या भले कर्म कर रहे हैं, उनका फल भावी जन्ममें मिलेगा। यानी इस लोकमें इस देहको त्याग कर, जहाँ जाकर जन्म लेंगे, वहाँ इस जन्मके सुकृत और दुष्कृत कर्मोंका फल भोगना होगा। हम लोगोंके ख़यालमें जीव बारम्बार मरता* और जन्म लेता है, केवल मोक्ष हो जानेपर उसका जन्म लेने और मरनेका झगड़ा मिटजाता है। अङ्गरेज़ वग़ैरः पश्चिमीय दुनियाके आदमियोंके ख़यालमें पुनर्जन्म नहीं होता। किन्तु वात हम हिन्दुओंकी ही ठीक है। अव कुछ पश्चिमी विद्वान् भी पुनर्जन्मपर विश्वास करने लगे हैं और धीरे-धीरे उनका विश्वास पक्का हो जायगा।

(१३) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और म्लेच्छ,—ये सब जन्मसे नहीं होते ; किन्तु गुण और कर्मसे होते हैं।

आजकल लोग ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व आदि जन्मसे मानने लग गये हैं किन्तु प्राचीन कालमें यह वात नहीं थी। पहले,

---

* जीव अमर और अविनाशी है। वह बारम्बार काया बदलता है यानी एक चोला छोड़ कर दूसरा चोला पहिनता है। कायाका नाश होता है, किन्तु जीवका नाश नहीं होता। जीवका मरना वैसा ही है, जैसा हमलोगोंका मैले कपड़े उतार कर फेंक देना और नये पहिनना।

जिसमें जैसे गुण होते थे, वह वैसे ही वर्णमें गिना जा
आजकलके लोग समझते हैं कि, चाहें हम शूद्र या
काम क्यों न करें ; किन्तु हमने ब्राह्मणके वीर्य्यसे जन
है, अतः हम ब्राह्मण हैं। बस, इसी ख़यालसे ब्राह्म
तीनों उच्च वर्ण अधोगतिको पहुँच गये। बड़े-बड़े ब्रह्मर्षि
सन्तान रोटी पकाती, आटा-दाल बेचती, जूआचोरी
और अपनेको ब्राह्मण मानती है। इसी भाँति मह
शूरवीर क्षत्रियोंकी सन्तान बिल्ली, चूहों से भी डरती है,
चलती देखकर ग़श खाकर गिर जाती है ; किन्तु
क्षत्रिय-सन्तान मानती है। श्रेष्ठ वैश्यवंशोत्पन्न लोग
सा कर्म न करके भी अपने तईं वैश्य समझते हैं।
किसीको अपने कुल या वर्णका नाम सार्थक
चिन्ता नहीं है। हमारा अभिप्राय यह है कि, जो जिस
पैदा हुआ है, उसे अपने वंशके अनुसार ही कर्म करने चा
हम लोगोंमें वर्ण-व्यवस्था लाभदायक समझकर ही चल
है। वास्तवमें, वर्ण-व्यवस्थासे भारतको असीम भल
है ; किन्तु अब गड़बड़ होजाने से लाभके बदले हानि है
और होगी ; अतएव सबको अपने-अपने वर्णाश्रम-धर्मका
करना उचित है।

(१४) यों तो समस्त जीव ब्रह्मासे ही पैदा हुए हैं।
वे सब ब्राह्मण होसकते हैं ? कभी नहीं। वर्ण और
कोई ब्राह्मण नहीं होसकता।

(१५) जो मनुष्य ज्ञान और कर्मसे देवताओंकी उपासना-
ाधनामें लगा रहता है एवं जो शान्त, जितेन्द्रिय और
ालु होता है,—वही "ब्राह्मण" कहलाता है।

(१६) जो मनुष्य लोक-रक्षामें प्रवीण, शूरवीर और परा-
ी होता है तथा दुष्ट लोगोंको दण्ड दे सकता है,—वही
त्रीय" कहलाता है।

(१७) जो मनुष्य लेन-देन करता है, व्यापार या वाणि-
से जीवन-निर्वाह करता है, गाय, भैंस प्रभृति जानवरोंको
लता है तथा खेती करता है,—वही वैश्य कहलाता है।

(१८) जो मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य,—इन तीनों
तियोंकी सेवा-टहल करता है, शान्त और जितेन्द्रिय होता
हल चलाता है एवं लकड़ी और घास वग़ैरह लाता है,—
"शूद्र" कहलाता है।

१९) जो मनुष्य अपना धर्म छोड़ देता है, औरोंको
ताता है, जीवोंकी हिंसा करता है तथा जो निर्दयी और
विचारी होता है,—वही "म्लेच्छ" कहलाता है

(२०) मनुष्यके पहले जन्मके जैसे कम होते हैं, उसकी
द्धि भी उन कर्मोंके फल भोगनेके लिये वैसीही हो जाती है।
नुष्य अपनी बुद्धिके अनुसारही कर्म करता है यानी बुद्धिके
परीत कर्म नहीं करता।

(२१) पहले जन्मके बुरे या भले जैसे कर्मका उदय होता

है, वैसीही वुद्धि हो जाती है और जैसी होनहार होती
ही मददगार मिल जाते हैं।

(२२) जब इस बातका निश्चय है कि, इस जग
या भला सब पहले जन्मके कर्मानुसाही होता
बुरे या भले कर्मोंके जतानेवाले उपदेशोंसे क्या
होगा?

(२३) बुद्धिमान् और सुचरित्र मनुष्य "पुरुषा
बड़ा मानते हैं। कायर—डरपोक—मनुष्य "प्रारब्ध"
मानते हैं। उनके प्रारब्ध—तक़दीर—को बड़ा मान
कारण है कि, वे लोग पुरुषार्थ करनेमें असमर्थ हैं

(२४) यह सारा संसार 'पुरुषार्थ' और 'प्रारब्ध'
है। पहले जन्मके कर्मको 'प्रारब्ध' और इस जन्म
को 'पुरुषार्थ' कहते हैं। एक ही कर्म दो
होता है।

(२५) संसारका स्वाभाविक नियम है कि, क
ज़बरदस्त दबा लेता है। कौन कमज़ोर है और कौन
है, यह बात विना फल मिले मालूम नहीं हो
यदि किसी कार्यके सिद्ध करनेके लिये कोशिश की
वह काम सिद्ध हो जाय, तो कहा जायगा कि 'पुरुषा
है। अगर किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करनेके लिये
कोशिशों पर कोशिशें की जायँ, मगर कामयाबी
कहा जायगा कि, 'प्रारब्ध' बलवान् है।

(२६) फलकी प्राप्तिका कारण प्रत्यक्षमें तो कुछ नज़र नहीं आता ; परन्तु इस बातका निश्चय है कि, पूर्व-जन्मके कर्म के अनुसार ही फल मिलता है ।

(२७) अक्सर देखते है, कि मनुष्यको थोड़ा सा कर्म करनेसे भी बड़ा फल मिल जाता है । उसे पूर्वजन्म के कर्मका फल सकझना चाहिये । इस जन्मके कर्मसे कुछ भी नहीं हो सकता ।

(२८) कोई-कोई कहते हैं कि, इस जन्मके कर्मसेही सब कुछ होता है । तेल और बत्ती सहित चिराग़को अगर हवा से न बचाया जाय ; तो वह हरगिज़ नहीं जल सकता ।

मनुष्यको चाहिये कि प्रारब्धको भूल जावे और पुरुषार्थ पर भरोसा रक्खे । बोल-चालकी भाषामें आज-कल प्रारब्ध को "तक़दीर" और पुरुषार्थको "तदबीर" कहते हैं । तक़दीर पर भरोसा करना अच्छा नहीं है । कौन जानता है कि, किसकी तक़दीरमें क्या लिखा है । तक़दीर भी बिना तदबीर फल नहीं देती । हमारे पास पङ्खा पड़ा रहे, अगर हम उसे हाथमें लेकर न हिलावें तो हमें हवा कभी मिलेगी । भोजन की परोसी हुई थाली हमारे सामने रक्खी रहे, यदि हम हाथ में उठाकर मुंहमें न देंगे, तो भोजन हमारे पेटमें न पहुंचेगा । परमात्माने हमलोगोंको हाथ, पैर और बुद्धि वग़ैरः तदबीर करनेके लिये हो दिये हैं । यदि हम ईश्वर-इच्छाके

विरुद्ध हाथ, पैर और बुद्धिसे काम न लें, केवल हाथ पर
धरे तक़दीरके भरोसेही बैठे रहें, तो हमें कभी कुछ न मि
पुरुषार्थ—तदबीरपर भरोसा करनेवाले धन, मान औ
आदि सर्व सुख भोगते हैं; किन्तु तक़दीर पर भरोसा
वालोंको भीख भी नहीं मिलती। तक़दीर और तदबी
एक गाड़ीके दो पहिये हैं; गाड़ी जिस तरह एक प
नहीं चल सकती; उसी तरह तक़दीर विना तदबीर
तदबीर विना तक़दीर कुछ काम नहीं करती; लेकिन
रायमें विशेष भरोसा पुरुषार्थ—तदबीर—पर ही
चाहिये। पुरुषार्थका फल हाथों-हाथ मिलता है।
बार एक ऊँचे दर्जेके फ़ौजी अफ़सरसे, हम किसी वि
वार्त्तालाप कर रहे थे। हमारे मुँहसे निकल गया—"
जो तक़दीरमें लिखा है, वही होगा।" साहिब बहादु
बहुत अच्छी तरह समझाया कि, तक़दीर कुछ चीज़ न
जो कुछ है, वह तदबीर है। तक़दीर पर भरोसा क
आज हम लोग इस उच्च दशाको न पहुंचते। हि
केवल भाग्य पर भरोसा करनेसे ही अधोगतिको पहुंचते हैं

(२९) अगर अवश्य होनेवाली बातका प्रति
होता; तो कोई अपनी बुद्धि और बलसे दुष्टोंका नाश
सकता। मतलब यह है, कि पुरुषार्थसे होनहार—भावी
टल जाती है।

(३०) जिस रावणने तीनों लोकोंको अपने बा

परास्त कर दिया, जिसने देवताओंसे अपने सेवकोंकासा काम लिया, जिसने मेघ-वृष्टि और वायु आदि पर भी अपना अधिकार जमा लिया, उस रावणके बग़ीचेको हनुमान नामक एक बन्दरने ऊजड़ कर दिया। जिस भीष्मपितामहको देवता भी अपने वशमें न कर सकते थे, जिस गङ्गा-पुत्र भीष्मने क्षत्रिय-द्रोही परशुरामको भी युद्धमें नीचा दिखा दिया, जो भीष्म वसुओंके अंशसे जन्मे थे,—उनको एक नर—अर्जुन—ने युद्धमें मार डाला। इन बातों पर विचार करनेसे कर्मकी प्रतिकूलताही जान पड़ती है।

(३१) राजा रामचन्द्रके महाबली रावणको नाश कर देने और अर्जुनके भीष्मपितामहको मार डालनेसे साफ़ मालूम होता है कि, 'समय' उनके अनुकूल था। जब प्रारब्ध बलवान् होता है, तब थोड़े से उद्योगसे भी काम बन जाते हैं।

(३२) जब प्रारब्ध—तक़दीर--बुरी होती है; तब बड़े-बड़े और अच्छे कामोंका फल भी बुरा ही मिलता है। राजा बलिने वामन भगवान्को सर्वस्व दे दिया; तोभी वह बाँध कर पाताल भेजे गये। उधर राजा हरिश्चन्द्रने विश्वामित्रको सर्वस्व दान करके भी घोर विपत्ति भोगी।

(३३) अच्छे कर्म करनेसे अच्छा फल मिलता है और बुरे कर्म करनेसे बुरा फल मिलता है। इसलिये शास्त्र द्वारा अच्छे और बुरे कामोंका निर्णय करना चाहिये।

पीछे, बुरे कामों को छोड़ देना और अच्छों को
चाहिये ।

(३४) अगर राजा उत्तम नीतिमें निपुण नहीं हो
प्रजा इस भाँति नाश हो जाती है, जैसे बिना केवट—म
की नाव समुद्रमें डूब जाती है ।

(३५) राजा को उचित है कि, विषय-रूपी वनमें
हुए, इन्द्रिय-रूपी हाथी को, ज्ञान-रूपी अंकुश से अपने
करे ।

(३६) मन विषय-रूपी मांसका लोभी होता है।
इन्द्रियोंको विषय-भोगोंकी ओर चलायमान करता है
मनको वशमें करना चाहिये। एक मनके वश करने
इन्द्रियाँ वशमें हो जाती हैं। जो राजा मनको वशमें क
है, वह जितेन्द्रिय कहलाता है।

(३७) जो राजा एक मनको ही वश में क
सकता ; वह समुद्र-पर्य्यन्त पृथ्वी को अपने अधीन कै
सकेगा ।

(३८) सांसारिक विषय-भोग नाशवान् और परि
नीरस हैं। जिस राजा का मन विषयों में लिप्त रहता
हाथीके समान बन्धन में पड़ता है।

(३९) जङ्गलमें रहनेवाला, घास पर ज़िन्दगी ब
नेवाला, शुद्ध हिरन शिकारीके सुरीले रागपर मोहित

न दे देता है। मतलब यह कि, एक कर्णेन्द्रिय—कान—अधीन होकर हिरन अपने प्राण खो देता है।

(४०) पर्व्वत की चोटीके समान आकारवाला, खेलमें बड़े-बड़े वृक्षोंको उखाड़ डालनेवाला, महाबलवान् हाथी, थनीसे भोग करनेके लिये बन्धनमें फँस जाता है। मतलब यह कि, हाथी अपनी लिङ्गेन्द्रियके वशमें होकर पकड़ा जाता है।

(४१) पतङ्गको दीपककी शिखा बहुत प्यारी मालूम होती है। वह उसकी ख़ूबसूरती पर आशिक़ होकर, उसपर झपटता और जल-बल कर ख़ाक हो जाता है। तात्पर्य्य यह कि पतङ्ग अपनी नेत्र-इन्द्रिय--आँख—के वशमें होकर प्राण गंवा देता है।

(४२) अथाह जलमें डूबी हुई मछली मांस रसके लालच में आकर, मांस-सहित काँटेको पकड़ लेती है और मारी जाती है। यानी वह एक जिह्वा-इन्द्रिय—जीभ—के वश होकर अपने प्राण खो बैठती है।

(४३) भौंरा कमल को काट कर उड़ जा सकता है; किन्तु वह उसकी खुशबूके लालचमें आकर उसीके अन्दर बन्द रह कर जीव खो देता है। अर्थात् भौंरा अपनी घ्राण-इन्द्रिय—नाक—के अधीन होकर मारा जाता है।

(४४) विषय विष के समान हैं। एक-एक विषय अकेला ही जीवका नाश कर देता है। अगर पाँचों विषय

एक साथ मिल जायँ ; तो प्राणीके प्राण नाश कर
शक है ?

(४५) जो एकान्त कार्य्यमें कुशल है, मीठे-मी
बोलती है और जिसके नेत्रोंके कोये लाल हैं,—
किसका मन मोहित नहीं कर लेती ? अर्थात् सब
अपने वशमें कर लेती है ।

(४६) जितेन्द्रिय ऋषि-मुनियों को भी स्त्री गि
देती है ; तब अजितेन्द्रिय लोग तो उसके सामने
ही नहीं है ।

ऊपरकी बात बिल्कुल ठीक है। विश्वामित्र जै
मुनिका मन मेनका नामक स्वर्गीय अप्सराने अपने
लिया। उनका तप छुड़ाकर उन्हें विषयी बना दि
सांसारिक माया-मोहमें फँसे हुए अजितेन्द्रिय पुरुषोंकी
है ? स्त्रीमें वह शक्ति है कि, प्रायः पुरुष-मात्रका
लेती है। किन्तु वह पुरुष जो, स्त्रीकी रूप-छटा और
नहीं फंसते हैं, धन्य हैं। अर्जुनको उर्व्वशीने अपने
करनेके अनेक यत्न किये ; किन्तु वह वीर पुरुष उस
न आया। सूर्पणखा नामक राक्षसीने मायासे मो
धारण करके लक्ष्मणको वश करना चाहा ; किन्तु
न्द्रिय पुरुष भी उसके वश न हुए। जो स्त्रीके नयन
घायल नहीं होते, वह वास्तवमें प्रशंसा-भाजन हैं।

(४७) पर-स्त्रियों पर मन न डिगाना चाहिये, प

की इच्छा करनेवाले राजा इन्द्र, दण्डक्य, नहुष और रावण आदिका अन्तमें नाश ही हुआ।

(४८) जो मनुष्य स्त्री के वश में नहीं होता, उसीको स्त्री से सुख मिलता है। घरका काम-काज स्त्री बिना नहीं चल सकता।

(४९) जो अत्यन्त मदिरा पान करते हैं, उनकी बुद्धि नाश हो जाती है ; अधिक मदिरा नाश की निशानी है ; क्योंकि इससे काम और क्रोधकी उत्पत्ति होती है। अतः, बुद्धिमान् मनुष्यको इस राक्षसीसे बचनाही उचित है।

शराब भूल कर भी न पीनी चाहिये। शराबख़ोरी बड़ी ख़राब है। बहुतेरे मुसल्मान बादशाह और नव्वाब शराब-कबाबमेंही स्वाहा हो गये। प्राचीन कालके क्षत्रिय मदिरा पान करते थे, किन्तु परिमित रूपसे ; इसीसे वह लाभ उठाते थे। किन्तु आजकल अनेकानेक ठाकुर बोतलवासिनीके नशेमें चूर रहकर अपनी रियासतोंको मटियामेट कर रहे हैं। जिनको अपने भविष्य-जीवनको उन्नत दशा पर पहुंचाना हो वे इसी राक्षसीको अवश्य छोड़ द।

(५०) राजाको चाहिये कि पर-स्त्री-सङ्गम की इच्छा न करे, दूसरे के धन पर मन न डिगावे और प्रजाको दण्ड देनेमें क्रोधको पास न आने दे।

(५१) पर-स्त्रीके सङ्गसे कोई कुटुम्बी नहीं होता, प्रजाको

दण्ड देनेसे कोई बहादुर नहीं कहलाता और दूसरे — कोई धनवान् नहीं कहलाता।

(५२) देवता लोग, उस राजाको जो अपनी प्रजाएँ नहीं करता, उस ब्राह्मणको जो तप नहीं करता और धनी को जो दान नहीं करता, मारते और नरक में डालते हैं।

(५३) मालिकी, दातारी और अमीरी,—ये तीनों पुण्य फल हैं; किन्तु माँगना, नौकरी करना और कंजूसी तीनों पापके फल हैं।

इसका खुलासा मतलब यह है कि, जो दस से अधिक आदमियों पर हुकूमत करते हैं, जो धनी और हैं, उन्होंने पूर्व जन्ममें पुण्य या तप किया है। जो भीख माँगते फिरते हैं, जो पराई तावेदारी करते हैं और जो कंजूस हैं, उन्होंने पूर्व जन्ममें पाप किये हैं।

(५४) जिस राजासे प्रजा थर्राती है और उसके काजकी निन्दा करती है, उस राजाको धनी और गुणी जा देते हैं। वैसा राजा नीच समझा जाता है।

(५५) जिस राजाका मन नटों, गानेवालों, हीजड़ों तथा नीच लोगोंमें लगा रहता है, वह राजा है। वैसे राजाको दुश्मनके मुँहमें समझना चाहिये।

हमारे देशके बहुतेरे राजे-महाराजे इन व्यसनोंमें तबाह होगये और होते जाते हैं। लखनऊके नवाबों

रंडी-भडुओं और गवैयोंमें फँसकर अपना राज्य ही गँवा दिया । साधारण लोगोंको भी इन बलाओंसे दूर रहना चाहिये । ये बलाएँ जिसके पीछे लग जाती हैं, उसे ख़ाकपति बनाकर ही छोड़ती हैं ।

(५६) विना आमदनी इच्छानुसार ख़र्च करनेसे कुवेर का भी ख़ज़ाना ख़ाली होजाता है ; तब दूसरे लोगोंका धन कितने दिन ठहर सकता है ?

(५७) जो राजा अपने दोषोंके छिपानेके लिये क्रोध करता है, वह पापी होता है । राजा रामचन्द्रने साध्वी सीता को लोक-निन्दासे डरकर वनमें निकाल दिया ।

(५८) जिस बातसे दूसरे का दिल दुःखे, वह बात, बुद्धि-मान्को, दुःखी होकर भी, न कहनी चाहिये ।

(५६) जो शख़्स सज्जनों और दुर्जनोंसे मीठे वचन बोलता है, वह मीठी वाणी बोलनेवाले मोर की भाँति सबका प्यारा होजाता है ।

(६०) सब जीवोंपर दया, मैत्री, दान और मीठी वाणी— इनके समान और वशीकरण मन्त्र त्रिलोकीमें नहीं है ।

(६१) मित्रको प्रेमसे, रिश्तेदारोंको अच्छे वर्त्ताव से, स्त्री को मुहब्बतसे, नौकरको मानसे और दूसरे लोगोंको चतुराईसे वशमें करना चाहिये ।

दूसरा अध्याय ।

इस भाँति सोनेकी परीक्षा तपाने, कूटने आदि
जाती है, उसी तरह नौकरकी परीक्षा उसके
उसकी रहन-सहन, उसके गुण-शील और
आदिसे करनी चाहिये। परीक्षा करके विश्वासयोग्य
का विश्वास करना चाहिये। नौकरके जातिकुलको
ही विश्वास न कर लेना चाहिये। जितना कर्म, शील
गुणका आदर है, उतना जाति-कुलका नहीं। क्योंकि
जाति और कुलसे कोई श्रेष्ठ नहीं समझा जाता ;

हमने देखा है कि, एक दफ़ा एक शख़्सने विदेशमें
हुए और रोटियोंसे मुहताज अपने एक जाति-भाईको
जाँचे-समझे नौकर रख लिया। उसके गुण, कर्म और
आदिकी ज़रा भी जाँच न की। बहुत लिखनेसे क्या, प
यह हुआ कि, वह नौकर उसका बहुत सा धन चुरा ले
और उसकी बेहद बदनामी कर गया। अतः नौकरके गुण
आदिकी जाँच अवश्य करनी चाहिये।

(२) नौकरको चाहिये कि, शान्त स्वभाव रक्खे और
कामसे मालिकका काम अधिक करे।

(३) नौकरको उचित है कि, अपने कामकी

[मा]लिकका काम चौगुना करे; अपनी नौकरीसे सन्तुष्ट रहे; [को]मल वचन बोले; काममें होशियारी दिखावे। अगर अपना [मा]लिक अन्याय करता हो, तो उसे समझाकर अन्याय-कर्मसे [रो]के और खुद अन्याय न करे और मालिककी कही हुई [बा]तमें सन्देह न करे। अगर स्वामीमें कोई दोष हो, तो उसे [दू]सरोंको न बतावे। अपने मालिककी स्त्री, पुत्र और भाई-[ब]न्धुओंको अपने मालिकके समान ही समझे। उनकी निन्दा [न] करे।

(४) नौकरको चाहिये कि, दूसरे नौकरके अधिकार पर मन न डिगावे; इच्छा-रहित होकर सदा खुश रहे; मालिक जो कपड़े या ज़ेवर आदि बख़्शे, उन्हें मालिकके सामने सदा पहने रहे।

(५) नौकर को उचित है कि, अपनी तनख्वाह देखकर खर्च करे। अगर मालिक कोई बुरा काम करे, तो उसे एकान्तमें समझावे।

(६) जो नौकर दग़ाबाज़, डरपोक और लोभी होता है, जो सामने बहुत सी चिकनी-चुपड़ी बातें बनाता है, जो शराब और रण्डी वगैरः में लिप्त रहता है, जो जूआ खेलता है और रिशवत लेता है,—वह नौकर अच्छा नहीं होता।

(७) छोटेसे छोटा काम भी बिना मददगारके नहीं चलता; तो बड़ा भारी राज्य बिना सहायकके कैसे चल सकता है?

(८) राजा चाहे जैसा विद्वान् और राजनीति-निपुण न हो ; उसे बिना मन्त्रियोंकी सलाहके राज-काज न चाहिये ।

(६) राजाको अपना राज-काज मन्त्रियों, सभासदों, कर्मचारियों और प्रजाकी सम्मति से करना चाहिये, मतिके अनुसार काम करना ठीक नहीं है ।

(१०) राजा स्वतन्त्र होकर अन्याय और अनर्थ क ऐसा करनेसे राज्य छूट जाता है और प्रजा भी जाती है ।

(११) राजाका मददगार ऐसा होना चाहिये, जो राहमें पड़े हुए राजाको भी अपनी बुद्धिसे रोग सके । सहायक निर्लोभ, निरालसी, अक्रोधी, ईर्षा-रहित और होना चाहिये ।

(१२) राजाको उचित है कि, अपने राज्यके बड़े मियों—सेठ-साहूकारों—को तकलीफ़ न दे और बहुत जानेपर भी पिताकी आज्ञानुसार ही चले ।

(१३) पुत्रके लिये पिताकी आज्ञा मानना ही कर्त्तव्य है । परशुरामने अपने पिता यमदग्निकी आ माताका सर काट लिया और रघुवंश-शिरोमणि राम पिताके हुक्मसे राज्य छोड़कर वनको चले गये । तपोबलसे परशुरामको उनकी माता मिल गई और रामचन्द्र राज्य मिल गया ।

(१४) सब भाइयोंमें अपने ही को बड़ा न माने। हिस्सा पानेके हक़दार युधिष्ठिर, भीम आदि भाइयोंके अपमान करनेसे दुर्योधनका नाश होगया।

(१५) राजा ययाति और विश्वामित्र मुनिके पुत्र, अपने-अपने पिताओं की आज्ञा न मानने से नष्ट हो गये; अतः हर तरह पिताका हुक्म माननाही पुत्रका कर्त्तव्य है।

(१६) पुत्रको वही काम करना उचित है, जिससे पिता राज़ी हो और वह काम हरगिज़ न करना चाहिये, जिससे पिता ज़रा भी नाराज़ हो।

(१७) पिता जिस शख़्सको चाहे, आप भी उसे चाहे। पिता जिसे न चाहे, आप भी उसे न चाहे।

तीसरा अध्याय ।

मनुष्यके लिये धर्म बिना सुख नहीं मिलता। उसे हमेशा धर्म करना चाहिये। जिस का… धर्म, अर्थ और कामका लवलेश न हो, उस का… कदापि न करना चाहिये।

(१) हमेशा धर्मानुसार काम करो। रोम, नाखून … मूछें मत रक्खो एवं पैरोंको एकदम साफ़ रक्खो।

(३) सदा स्नान किया करो। खुशबूदार फूलोंकी मा… पहिनो। मैले कुचैले मत रहो, साफ़ कपड़े पहिनो।

(४) जब कहीं बाहर जाओ तो बिना जूतों और छ… मत जाओ। चलते समय अपने आगेको चार हाथ ज़मीन… नज़र रक्खो। अगर कहीं रातके समय जानेका काम हो, … हाथमें लकड़ी और साथमें नौकर लेकर जाओ।

(५) हिन्सा, चोरी, बुरे कर्म, चुगली, सख़्ती, झुँठ, … द्रोह, चिन्ता और फ़िज़ूल बातें—इनको छोड़ दो। इन द… छोड़नेमें ही भलाई है।

(६) जो लोग कङ्गाल हैं, जो किसी रोगसे पीड़ित … और जो किसी मुसीबतकी वजहसे रञ्जीदा हैं;—उन सब…

दर लो और अपनी सामर्थ्यके अनुसार उनके दुःख दूर करने का उद्योग करो।

(७) चींटी-समान छोटे-छोटे जीवोंको भी अपनी ही बराबर समझो। जिस दुश्मनको तुम बुराईके लायक़ समझते हो, उसके साथ भी भलाई ही करो।

(८) सम्पत्ति और विपत्ति दोनोंके समय, एक समान रहो। अर्थात् सुख-सम्पदामें फूल मत जाओ और दुःख पड़ने के समय एकदम घबरा मत जाओ।

(९) किसीसे ऐसी बात मत कहो कि, अमुक मनुष्य मेरा शत्रु है अथवा मैं अमुक मनुष्यका दुश्मन हूं। अगर तुम्हारा मालिक कभी तुम्हारा अपमान—अनादर—करे या तुमसे प्रेम न रक्खे; तो दूसरों से यह मत कहते फिरो कि, हमारा मालिक हमको नहीं चाहता और इस तरह हमारी बेइज़्ज़ती करता है।

(१०) अगर तुम किसीकी नौकरी करो या किसीकी मातहती—अधीनता—में काम करो, तो अपने स्वामी या अफ़सरका दिल जिस तरह खुश रहे, वैसा ही उद्योग किया करो। मालिक या अफ़सरका दिल हाथमें रखनेमें ही भलाई है।

(११) सुन्दरी स्त्रियाँ मुनियोंका भी मन मोहित कर लेतीं और उन्हें विषयी बना देती हैं; इसलिये उचित रीतिसे विषयोंका सेवन करो।

(१२) अपनी माता, अपनी बहिन और अपनी बेटी

स्त्रियोंके बेकार रहनेसे उन्हें अनेक बुरी-बुरी इच्छाओंके पूर्ण करने या ऐसे ख़यालातोंमें ग़र्क रहनेका मौक़ा मिलता है।

हमारी नई रोशनीके जैण्टिलमैन औरतोंको पश्चिम-देशीय आज़ादी देना चाहते हैं। अगर बाबू लोग इस कार्यमें सफल-मनोरथ हुए, तो भारतका पटड़ा ही हुआ समझिये। चाहे जिसकी बीबीको चाहे जो कोई टमटमों और साइकलों पर लिये क्लबों और जिमखानोंमें दौड़ता फिरेगा। कोर्ट-शिप और व्यभिचारका बाज़ार और भी गर्म हो जायगा। भारत-वासियोंकी अपने पूर्व्वपुरुषोंकी रीति-नीति परही चलने में भलाई है।

(१४) जो पुरुष अत्यन्त कंगाल और रोगी होता है अथवा पर-स्त्री-गामी होता है, उसकी स्त्री उससे सम्बन्ध छोड़ कर दूसरे पुरुषके पास चली जाती है। अतः पुरुष को उचित है, कि कपड़े-लत्ते, गहने, ज़ेवर और खाने-पीनेके सुन्दर पदार्थों एवं मीठी-मीठो बातोंसे स्त्री को प्रसन्न रक्खे और पर-स्त्री-गमन आदि दुर्व्यसनों को बिल्कुल त्याग दे।

(१५) भुजाओंसे नदीको तैरकर पार न करे। ख़राब सवारी, टुटे-फूटे रथ, गाड़ी या नाव पर न चढ़े। बिना भारी ज़रूरतके दरख़्त पर न चढ़े। अपनी नाक न खुजावे और बिना मतलब धरती न खोदे।

(१६) बहुत दिनों तक खट्टो चीज़ें न खावे, बहुत देरतक ऊपर की ओर पैर करके न बैठे, रातके समय वृक्ष पर न रहे।

(१७) श्मशान-भूमिकी छत्री, चबूतरे, सूने मकान, चौ
देव-मन्दिर, सूने वन और श्मशानमें, दिनके समय भी
रहे ।

(१८) सूर्य्य को टकटकी लगाकर न देखे। सिर
बोझ लेकर न चले। बारीक चीज़ोंको वहुत देर तक न दे
चमकती हुई, अपवित्र और दिल बिगाड़नेवाली चीज़ोंको
बारम्बार न देखे ।

(१९) शामके वक्त भोजन करना, स्त्री-प्रसङ्ग करना, सं
और पढ़ना अनुचित है। शराब तैयार करना, पीना
पिलाना भी उचित नहीं है ।

(२०) बुद्धिमान्को चाहिये कि लोक-विरुद्ध—और शा
विरुद्ध काम न करे; हमेशा न्याय-सङ्गत कर्म करे; अन्याय
मनमें भी ख़याल न करे ।

(२१) मैंने हज़ारों पाप किये हैं, इस एक पाप-कर्मसे
क्या हानि होगी,—ऐसा सोचकर पाप न बढ़ावे; क्योंकि ए
एक बून्दसे घड़ा भर जाता है ।

(२२) मनुष्यको उचित है कि, बड़े लोग जिस धर्मके प
पर चले हैं उसका विचार करे और वेद तथा धर्म्मशास्त्रमें लि
हुए कर्मों को करे ।

(२३) अगर राजाके मित्र, पुत्र और गुरु भी चोरी,
या अन्य पाप-कर्म करें; तो राजा उनको न छिपावे; कि
उनको अपने राज्यसे निकाल दे ।

(२४) बुद्धिमान्को स्त्री, बालक, रोग, नौकर, जानवर धन, विद्या-अभ्यास और सज्जन-सेवाकी एक क्षण भी उपेक्षा न करनी चाहिये। अर्थात् इनकी तरफ़से लापरवाही न दिखानी चाहिये।

(२५) जिस स्थानका राजा अपने वख़िलाफ़ हो, जहाँ वेद-पाठी धनवान् और वैद्य आचारी हों—उस स्थानमें एक दिन भी न रहना चाहिये।

(२६) जिस राजाके राज्यका काम स्त्री, बालक, अत्यन्त क्रोधी, मूर्ख और साहसी राज-कर्म्मचारी चलाते हों—उस राज्यमें एक दिन भी न ठहरना चाहिये।

(२७) जिस देशका राजा विचारवान् न हो, राज-सभाके सदस्य पक्षपात या तरफ़दारी करते हों, विद्वान् लोग सज्जनोंकी राह पर न चलते हों तथा गवाह झूँठी गवाही देते हों—वहाँ भी बुद्धिमान्को न बसना चाहिये।

(२८) जिस जगह दुष्टा स्त्रियों और नीच लोगोंका ज़ोर हो,—उस जगह धन-मान पाने, जीवित रहने और बसनेकी आकांक्षा न करनी चाहिये।

(२९) माता बाल्य-अवस्थामें बच्चेको न पाले, पिता अच्छी तरह विद्याभ्यास न करावे और राजा धन छीन ले; तो इसमें रञ्ज करनेकी कोई बात नहीं है।

(३०) अगर भली भाँति सेवा करने पर भी दोस्त, भाई-बन्धु या राजा नाराज़ हो, आग लगने या बिजली पड़नेसे

अपना घर नाश हो जावे ; तो ऐसे मौक़े पर सोच करनेसे क्या
हो सकता है ?

(३१) अगर किसी भले आदमीका कहना न मा
घमण्डसे, अपनी मतिके अनुसार काम किया जाय और
परिणाम खोटा निकल जाय, तो वहाँ शोक करनेसे
फ़ायदा ? क्योंकि वैसा तो होना ही था ।

(३२) मा, बाप, गुरु, मालिक, भाई, पुत्र और मि
एक पलके लिये भी, विरोध और अनादर न करना चाहिये।

(३३) अपने कुटुम्बियोंके साथ विरोध और स्त्री,
बूढ़े और मूर्खके साथ झगड़ा या विवाद न करना चाहिये।

(३४) दूसरेका धर्म ग्रहण न करे। किसीके साथ
विरोध न करे, नीच-कर्मी मनुष्यों और स्त्रियोंके साथ
आसन पर न बैठे ।

(३५) जो शख़्स अपनी भलाई चाहे, वह निद्रा, त
भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता—इन छः दोषोंको छो
क्योंकि ये छः कामको बिगाड़नेवाले हैं ।

(३६) मनुष्य को चाहिये कि, सदा अपने धर्ममें
रक्खे, पराई स्त्रियोंका ध्यान न करे, तरह-तरहकी अजीब
कहे और मुँहसे कड़वी बात न निकाले ।

(३७) किसी चीज़के बेचने या ख़रीदनेमें अपनी क
न दिखावे और बिना मतलब किसीके घर न जावे ।

(३८) किसीके बिना पूछे अपने घरकी बात किसी

कहे और मुंहसे ऐसी बात निकाले, जिसमें अक्षर थोड़े हों किन्तु मतलब बहुत निकले।

(३९) अपने मनकी बात अनजान मनुष्यको न बतावे। दूसरेकी बात ख़ूब सुन-समझकर जवाब दे।

(४०) अगर स्त्री-पुरुषमें तकरार हो या बाप बेटेमें झगड़ा हो तो बुद्धिमान् उनकी गवाही न दे। अगर किसी विषय की सलाह करनी हो, तो गुप्त स्थानमें करे और शरणागतको न छोड़े।

(४१) अपने करने योग्य ज़रूरी कामको सामर्थ्यानुसार करे, आफ़त पड़ने पर न घबरावे और किसी की झूठी बदनामी न करे।

(४२) मुँहसे अश्लील बात न निकालनी चाहिये और न वृथा बकवाद करनी चाहिये।

(४३) अपनी युक्तियोंसे किसीकी बात न काटनी चाहिये; हरेक बात का जवाब विचार कर देना चाहिये; ऐसे मौक़े पर जल्दी करना ठीक नहीं है।

(४४) बुद्धिमान् को चाहिये, कि दुश्मनके भी गुण ग्रहण करे और गुरुके भी अवगुण त्याग दे।

(४५) मनुष्य पूर्व-जन्मके कर्मोंसे धनवान् और निर्धन होता है; अतः किसीसे वैर-विरोध न करना चाहिये। सब से मित्र भाव रखनाही भला है।

(४६) मनुष्यको चाहिये कि सदा दूरदर्शी रहे और समय-

समय पर हाज़िर-जवाबी भो किया करे। किसी काममें या देर न करे तथा आलस्य को त्यागे।

(४७) सुस्त आदमी, कामके समय भी, काम का नहीं करता। ऐसे आदमीका कोई काम नहीं बनता और कुटुम्ब-सहित नाश हो जाता है।

(४८) जो मनुष्य किसी कामका परिणाम विना सूझेही काम का आरम्भ कर देता है, उस आदमी को स कहते हैं। साहस और जल्दबाज़ीसे काम शुरू करनेवाले अन्तमें, दुःखही भोगना पड़ता है।

(४६) जो मनुष्य छोटेसे काम को वड़ी देरमें करत वह पीछे थोड़ासा फल पानेसे दुःखी होता है; इसलिये म को दीर्घदर्शी होना चाहिये।

(५०) बाज़ वक्त ज्ल्दबाज़ीसे किये हुए काम का भी अधिक मिल जाता है और कभी-कभी अच्छी भाँति किये काम का फल मिलता ही नहीं; तथापि बुद्धिमान्को कि काममें जल्दी न करनी चाहिये; क्योंकि जल्दबाज़ी का दुःखदायी होता है।

(५१) जिस कामको नौकर, स्त्री और भाई नहीं सकते,—उसको मित्र निस्सन्देह कर सकता है। इसवा मित्र-प्राप्तिके लिये उद्योग करना चाहिये।

(५२) जिसका अपने मनमें पक्का विश्वास हो, उसका अत्यन्त भरोसा न करना चाहिये। अपने पुत्र, स्त्री, भा

मन्त्री और अधिकारी का भी भरोसा न करना चाहिये; क्योंकि धन, स्त्री और राज्य का लालच सबसे ज़ियादा होता है।

(५३) बुद्धिमान को नीतिज्ञ, धर्मात्मा और बलवान पुरुष के साथ मित्रता करनी चाहिये; अर्थात् नीति के न जाननेवाले, अधर्मी और निर्बल के साथ कदापि दोस्ती न करनी चाहिये।

(५४) किसीको कड़वी बात कहना और कड़ी सज़ा देना अनुचित है। क्योंकि कड़वी बात और सख़्त सज़ासे स्त्री और पुत्र भी घृणा करने लगते हैं; किन्तु दान देने और मीठा बोलनेसे जानवर भी अधीन हो जाते हैं।

(५५) विद्या, बहादुरी, धन, कुल और बल पर कभी न फूलना चाहिये; अर्थात् इनका अत्यन्त घमण्ड न करना चाहिये।

(५६) जिसे विद्याका अभिमान होता है, वह अपने मतलबके लिये बड़ोंके उपदेश को भी नहीं मानता और अपनी हानिकारी बातों को लाभकारी समझता है।

(५७) जिसे शूरवीरता—बहादुरी—का घमण्ड होता है, वह चाहे जिससे लड़ बैठता है और शीघ्रही मारा जाता है।

(५८) जिसे धनका मद होता है, वह अपनी बदनामी की बात नहीं जानता। वह अपनी बुरी बात को उसी तरह

दबाता है, जिस तरह बकरा अपने पेशाब की बदबू को ही पेशाबसे सींच-सींच कर दबाना चाहता है ।

(५६) जिसे अपने बड़े कुल का अभिमान होता है, विद्या-अभिमानी एवं धन-मत्त प्रभृति सब का अनादर कर और बुरे काम करता है ;

(६०) बलका मतवाला पुरुष चटपट लड़ बैठता है; अपने बलसे सब को दुःख देता है ।

(६१) मानसे उन्मत्त पुरुष समस्त जगत्को तिनकेके समान समझता है और सबसे नीचा होने पर भी, सबसे ऊँचा बैठना चाहता है ।

(६२) घमण्डी लोग बल और धन आदिसे इतराते हैं, किन्तु सज्जन पुरुष इनको पाकर नव जाते हैं ।

(६३) विद्वान्को ज्ञानी और नम्र होना उचित है । धनवानको यज्ञ और दान करना चाहिये । बलवान को आदमियों की रक्षा करनी चाहिये । शूरवीर को दुष्टोंके लिये नीचा दिखाना और उनसे कर लेना चाहिये । कुलवाले को शान्त-स्वभाव, नम्र और जितेन्द्रिय होना चाहिये । जो प्रतिष्ठित पुरुष हैं, उन्हे सबको अपने बराबर समझना चाहिये ।

(६४) जिसे अपना काम बनाना हो, वह मान-प्रतिष्ठा एक ओर रखकर, नीच कुलसे भी उत्तम विद्या, उत्तम स्त्री और वैद्य-विद्या को ले लेवे ।

(६५) बुद्धिमानको चाहिये कि जो चीज़ नाश हो गयी हो उसकी चिन्ता न करे और मिली हुई चीज़को यत्नसे रक्खे।

(६६) बालक और स्त्री का न तो अत्यन्त लाड़ ही करना चाहिये और न उन्हें सख़्त सजाही देनी चाहिये। बालक को विद्या-अभ्यास और स्त्री को घरके काम-काजमें लगाना चाहिये।

(६७) किसी का तुच्छ और थोड़ासा धन भी बिना दिये न लेना चाहिये, किसीके पाप-कर्म की बात अपने मुँहसे न कहनी चाहिये, स्त्री को दोष न लगाना चाहिये, झूठी गवाही न देनी चाहिये तथा जान-बूझ और देखकर गवाही देनेसे इँकार न करना चाहिये।

(६८) यदि प्राण-नाश होता हो या कोई बड़ा भारी कार्य्य सिद्ध करना हो, तो झूठ बोलनेमें दोष नहीं है।

(६९) कन्यादान करनेवाले को यह न कहना चाहिए कि, जिसके यहाँ तुम अपनी कन्या देते हो वह निर्धन है; चोरी करनेवाले को यह न बताना चाहिये कि अमुक मनुष्य धनवान है; जीव-हिंसा करनेवाले को, जान बचा कर छिपा हुआ जीव न बताना चाहिये।

(७०) स्त्री-पुरुष, दो भाई, दो बहिन, दो मित्र, गुरु और चेले तथा मालिक और नौकरमें फूट न करानी चाहिये। आपसमें बात-चीत करते हुए या एक जगह बैठे हुए दो पुरुषों के बीचमें न जाना चाहिये।

(७१) मित्र, भाई और रिश्तेदार की तथा अपने
आये हुए छोटे मनुष्य को यथायोग्य पूजा करनी चाहिये।

(७२) बुद्धिमान को चाहिये कि बहिन और बहं
एक साथ अपने घरमें न बसावे ; किन्तु ये दरिद्री या
हों, तो इनका पालन अवश्य करे।

(७३) क़र्ज़, बीमारी और दुश्मन,—इन तीनों को
न रखनी चाहिये अर्थात् इनको जड़ सहित नाश क
चाहिये। इनका शेष रखनेसे, यह बढ़ कर भयङ्कर रूप
करते हैं।

(७४) यदि भिखारी घर पर कुछ माँगने आवे, तो
कड़ा जवाब न देना चाहिये। अगर शक्ति हो, तो
का काम करदे ; अगर आप न कर सके तो दूसरे
करा दे।

(७५) मनुष्य को, नियमित समय पर, पथ्य और
मित भोजन करना, दीनता न करना, सुखसे सोना और
रहना उचित है।

(७६) स्त्री-प्रसङ्ग, भोजन और दिशा-पेशाब एकान्त स्
में करने चाहियें। कसरत का अभ्यास और व्यवसाय स
करना उचित है।

(७७) आदमी को भोजन की बुराई न करनी चाहि
भोजन प्रेमपूर्व्वक करना उचित है। भोजनके सामानों

स रहते हैं। जिस भोजनके पदार्थों में मीठा रस अधिक हो, उस भोजन को अच्छा समझना चाहिये।

(७८) बुद्धिमान को केवल विवाहिता स्त्रियोंसे क्रीड़ा करनी चाहिये; किन्तु रण्डियोंके साथ विहार कदापि न करना चाहिये; जो युद्ध-विद्यामें निपुण हों उनके साथ युद्ध करना चाहिये और जो अपने सामने सिर झुकाते हों उनके साथ कसरत-कुश्ती का अभ्यास करना चाहिये।

(७९) रातके पहले और पिछले पहरमें सोना उचित नहीं है। रातके दूसरे और तीसरे पहर सोनेके लिये ठीक हैं।

(८०) बुद्धिमान को ग़रीब, अन्धे, लँगड़े, लूले और बहरे मनुष्यों की हँसी, भूल कर भी, न करनी चाहिये।

(८१) वृद्ध लोगोंकी और राजा की आज्ञा भङ्ग न करनी चाहिए बुरे काम करनेवाले गुरु को भी समझाना चाहिये। कामके बतानेवाले छोटे मनुष्य की भी, मानने-योग्य, बात माननी चाहिये। जवान स्त्री को घरमें अकेली छोड़ कर कहीं न जाना चाहिये।

(८२) पतिव्रता स्त्री, पिताकी स्त्री, अपनी जननी, बालक, बाप, पति-पुत्र-हीना कन्या, बेटे की बहू, बहिन, मामी, भौजाई, मौसी, भूआ, नाना, अपुत्री गुरु, श्वसुर और मामा तथा दौहित्र (पुत्री का पुत्र), भाई और भाञ्जे— इन सबका, अपनी सामर्थ्यानुसार, अवश्य पालन करना चाहिये।

(८३) धन हो या न हो, किन्तु माता-पिताके, और मित्र तथा स्त्रीके कुलका एवं दास-दासियोंका अवश्य करना चाहिये।

(८४) लँगड़े, लूले, अन्धे और संन्यासी तथा निर्ध अनाथों का पालन करना चाहिये।

(८५) जो मनुष्य अपने कुटुम्ब का पालन नहीं करत उसके समस्त गुणोंसे क्या फ़ायदा? वह मनुष्य तो हुआ ही मरे हुए के समान है।

(८६) जिसने कुटुम्ब का पालन नहीं किया, दुश्म सिर नीचा नहीं किया, मिली हुई चीज़ की रक्षा नहीं की,- मनुष्योंके जीनेसे क्या लाभ है?

(८७) जो मनुष्य स्त्रियोंके अधीन हैं; हमेशा अपन दबे रहते हैं; दरिद्र, भिखारी, और गुण-हीन हैं तथा दु से दबे हुए हैं, उन जीवित मनुष्योंको मृतक—मुर्दा—स चाहिये।

(८८) बुद्धिमान को अपनी उम्र, दौलत, घरका सलाह, मैथुन, दवा, दान, मान, अपमान,—इन नौ बातें अच्छी तरह गुप्त रखना चाहिये। अर्थात् ये बातें किसी कहनी चाहियें।

(८९) बुद्धिमान को देश-देश की सफ़र करनी चाहि राज-सभा या कचहरियोंमें जाना चाहिमे; अनेक प्र

शास्त्र या ग्रन्थ देखने चाहियें; वेश्याओंसे मुलाक़ात और विद्वानों से दोस्ती करनी चाहिये।

(९०) किस देशमें कौन मत है, कैसी चीज़ें मिलती है, क्या पैदा होता है, कैसे जानवर हैं, कैसे मनुष्य हैं और वहाँ की रीति-नीति कैसी है,—ऐसी-ऐसी बातें देश-देशकी यात्रा करनेसे ही मालूम होती हैं।

(९१) कौन झूठ बोलनेवाला और कौन सच बोलनेवाला है, लोग शास्त्र और लोक-रीति पर चलते हैं या नहीं, कैसा क़ानून और राज-नियम है,—इत्यादि बातें राज-सभा या कचहरियोंमें जानेसे मालूम होती हैं।

(९२) शास्त्रोंके देखने, पढ़ने और विचारनेसे मनुष्य अहङ्कारी और धर्मान्ध नहीं होता। किसी एक शास्त्रके जान लेनेसे मनुष्य सब विषयोंमें पण्डित नहीं हो जाता। किसी एक शास्त्रसेही किसी विषयका निर्णय भी नहीं हो जाता; अतः मनुष्यको अनेक प्रकारके शास्त्र और ग्रन्थ देखने और मनन करने चाहिये।

(९३) वेश्याके यहाँ जाकर यह बात सीखनी चाहिये कि, वह किस-किस ढँग और चतुराईसे पैसा घसीटती और आप पुरुषोंके अधीन न होकर, उनको अपने वशीभूत कर लेती है। वेश्यासे यह चतुराई सीखकर, पुरुष को किसीके वश न होना चाहिये; किन्तु जगत् को अपने अधीन करना चाहिये।

किसी ज़मानेमें यहाँके धनी-मानी लोग अपने बालकों वेश्याओंके घर शिक्षा लाभ करनेको भेजा करते थे। वहाँ लड़के रण्डियों की चालाकियाँ, मनुष्योंके वश करनेकी तरकीबें और तमीज़—तहज़ीबसे रुपया पैदा करनेका ढँग सीख आते थे। जिस समय इस देशमें ऐसी रीति थी, लड़के वहाँ जाकर गुण सीखते थे, अवगुण नहीं सीखते थे। आजकल न तो वैसी वेश्यायही हैं, जो भले आदमिओंके लड़कोंको ख़राब न करें और न वैसे धर्म-नीतिके जाननेवाले लड़केही हैं, जो काजल की कोठरीमें जाकर बेदाग़ चले आवें। अतः यह चाल अच्छी होने पर भी, समयको देखते हुए, आजकल, हमारी तुच्छ बुद्धि में, ठीक नहीं मालूम होती। अब तो लड़कों को इन ज़हरीली काली नागिनोंसे दूरही रखना चाहिये। हमारे पास सैकड़ों बारह-बारह चौदह-चौदह वर्षके बालक गर्मी या सोज़ाकसे सड़ते हुए आते हैं। सो भी यह हालत लुक—छिप कर होती है। अगर वह लोग माता-पिता की आज्ञासे खुले-खज़ाने वेश्याओंके घर जाने लगें, तब तो पटड़ा ही हो जावे।

(१४) पण्डितोंके साथ मित्रता करने और उनकी सुहबत करनेसे वेद, पुराण और धर्म-शास्त्रका अच्छा ज्ञान होता है एवं खूब अक्क बढ़ती है।

देशाटन करना, राज-सभामें जाना, अनेक प्रकारके शास्त्र देखना, वेश्याओंसे परिचय करना और पण्डितोंसे मित्रता करना—ये पाँचों तरकीब चतुराई की जड़ हैं; अतः चतुर

सीखने के इच्छुकोंको इन पाँचों बातों पर चलना चाहिये। किन्तु आजकलके ज़मानेमें वेश्याके संसर्गसे बिल्कुल बचना चाहिये; क्योंकि इस समयके लोग अल्प-वीर्य होनेसे चञ्चलमति होते हैं।

(९५) अगर अपने रास्तेमें, सामनेही, गुरु, बलवान् पुरुष, रोगी, मुर्दा, राजा, कठिन व्रत करनेवाला और सवारी पर चढ़ा हुआ मनुष्य आजाय; तो आपको हट जाना और रास्ता छोड़ देना चाहिये।

(९६) गाड़ीसे पाँच हाथ, घोड़ेसे दस हाथ, हाथीसे सौ हाथ और बैल से भी दस हाथ दूर रहना चाहिये।

(९७) सींगवाले, नाख़ुनवाले, डाढ़वाले जानवरों और दुष्टों का विश्वास न करना चाहिये; इनके सिवा नदी तटके वास-स्थान और स्त्री का भी भरोसा न करना चाहिये।

(९८) खाते हुए रस्तेमें न चलना चाहिये; हँस कर बात न करनी चाहिये; खोई हुई या नाश हुई चीज़ का रञ्ज न करना चाहिये और अपने किये हुए काम की तारीफ़ न करनी चाहिये।

(९९) जिसकी तरफ़से कुछ वहम हो उसके पास न रहना चाहिये, नीच मनुष्य की नौकरी छोड़ देनी चाहिये और किसी की बात छिप कर न सुननी चाहिये।

(१००) राजाको मित्र समझ कर मन-चाहे काम न करने चाहियें; बेवकूफ़ आदमी को अपना मालिक न बनाना चाहिये; किन्तु महात्माओं की सेवा करनी चाहिये।

(१०१ जो मनुष्य कुछ थोड़ासा ज्ञान रखते हैं, न तो प्रीति करनी चाहिये और न बैर ही करना चाहिये।

(१०२) मुहब्बत रखने, पास बसने, तारीफ़ें, प्रणाम राम राम आदि करने, ख़िदमत करने, चा- होशियारी, आदर-सन्मान, नम्रता, बहादुरी, विद्या औ- से तथा सामने आते देख कर मान देने, आनेवालेके जाने, हंस कर बातचीत करने और भलाई करनेसे सं- अपने वशमें करना चाहिये ।

यह उपदेश, वास्तवमें, संसारी लोगोंके लिये बड़े- का है। उपरोक्त रीतियों पर चलनेसे कौन मनुष्य बड़ा हो सकता? जो पराधीन हैं, जो दूसरोंके मातहत हैं, उ- से ऊंचा होना चाहते हैं, उन्हें ये बातें अपने हृदय-प- लिख लेनी चाहियें। हमने स्वयं इन तरकीबोंसे ऊँचे दर्जेके रईसों और अँगरेज़ अफ़सरों को अपने प्रसन्न कर लिया और लाभ उठाया; किन्तु अफ़सोस कि, आज-कलके स्कूलोंके शिक्षित छोकरे नम्रतासे ह- कोस दूर भागते हैं। वे लोग अपने गुरु को गुरु करनेमें भी शरमाते हैं; दरिद्री बापको बाप कहते लजा- कुछ भी न जान कर, थोथी स्कूली विद्याके घमण्डमें मान्य और पूज्य लोगोंको सिर झुकानेमें भी आँखें चुरा- भला, ऐसे नीति-हीन मनुष्य कैसे उन्नतिके उच्च सोपा- चढ़ सकते हैं? हमारी रायमें, यदि लड़कों को नीति-

और धर्म-शिक्षा घर पर दीजावे, तो वह बेशक अनमोल मनुष्य बन सकते हैं।

(१०३) ऊपर; जो मनुष्योंके वश करनेके उपाय बताये गये हैं वे सब सज्जनोंके प्रति व्यवहार करने योग्य हैं। दुष्टोंके सङ्ग वैसा व्यवहार करना अनुचित है; क्योंकि दुर्जन वैसे व्यवहारसे वशमें नहीं होते। अगर मनुष्य सामर्थ्यवान हो तो दुश्मनों को ज़ोरसे वशमें करे। अगर ज़ोरसे वशमें न कर सके, तो छल-कपट या चालाकीसे वशमें करे अथवा उपरोक्त विधियोंमेंसे जिससे वशमें होते दीख उसीसे वशमें करे।

(१०४) शिकार, जुआ, स्त्री और शराब ये व्यसन हैं। पुरुषों को इन व्यसनोंसे बचना ही उचित है।

(१०५) झूँठा व्यवहार न करे, किसी की रोज़ी न मारे, किसी का बुरा न चाहे और ऐसा काम करे जिससे हमेशा आराम मिले।

(१०६) चिन्ताग्रस्त, बीमार, व्यभिचारी, चोर, विषयी और धनके लोभी को नींद नहीं आती। जिसका दुश्मन ज़ोरावर होता है, जिसके मददगार ख़राब होते हैं, जो राजा अन्याय करता है, जिस राजाकी प्रजा और मन्त्री राजासे फटे हुए रहते हैं—इन सबको भी रातको सुखसे नींद नहीं आती, अतः बुरी बातों को छोड़ कर सुखसे सोना चाहिये।

(१०७) साँप, शेर और चोरके मारने को अकेला न जाना चाहिये।

(१०८) युद्धमें किसी की मदद न करनी चाहिये; अ
करनी ही हो तो उसकी सहायता करनी चाहिये, जिसके
बहुतसी फौज हो। राजा और शिक्षकके सामने ऊँचे आ
पर न बैठना चाहिये।

(१०९) जो अपने करने लायक़ या किये हुए काम
नहीं कहता और औरत की कही हुई बात को आँखोंसे
बिना सच नहीं मानता,—वह उत्तम पुरुष है।

(११०) जो अपनी माता, अपने बेटे की बहू और
भाई की बहूके अपराध पर अधिक नज़र नहीं रखता,—
उत्तम पुरुष है।

(१११) सोलह वर्षसे ऊपर पुत्रको और बारह
ऊपर स्त्री को ताड़ना न देनी चाहिये। बेटे की बहू
भाई की बहू वग़ैरः को गाली-गलौज या बुरे वचनोंसे
न देना चाहिये। बेटीके बेटे और छोटे भाई को, पुत्रसे
अधिक, मानना चाहिये।

(११२) भाई की बहू, बेटे की बहू और बहिनकी पा
अपनी पुत्रीसे भी अधिक करनी चाहिये।

खेद का विषय है कि, शुक्राचार्य्यजीके इस अमूल्य उ
को आजकलके अधिकांश हिन्दू बिल्कुल ही नहीं जानते।
नीतिके न जाननेसे ही अनेक स्वर्ग-सुख देनेवाली गृहस्थि
नरक-समान हो रही हैं। मैंने अपनी आँखोंसे पचासों घर
देखे हैं, जहाँ ठीक इस उपदेशके विरुद्ध काम होते

श्वसुर पुत्र-वधुओंको मुंहसे न निकालने योग्य अश्लील गालियाँ देते हैं। बहुतसे अधर्मी तो मार भी बैठते हैं। कन्यासे अधिक समझना तो बड़ी बात है, उनको टहलनी या दासीसे भी बदतर समझते हैं। उनको तकलीफ देनेमें कोई बात उठा नहीं रखते। यहाँ तक कि उनके सोनेके लिये काफी समय नहीं देते और खानेको पूरा भोजन नहीं देते; जिससे उन बेचारी अबलाओंका जीवन बड़े दुःखसे कटता है। मेरी रायमें, दुनियाके असभ्यसे असभ्य देशोंमें भी गुलामों और क़ैदियों को भी इतना कष्ट न सहना पड़ता होगा। धन्य है स्त्री-जाती को सहनशीलता! दूसरा कोई इतना कष्ट कदापि न उठा सकेगा। मैंने अड़ौस-पड़ौसमें ऐसी बातें होते देखकर लोगों को बहुत कुछ समझाया; मगर उन पत्थर-हृदयोंके दिल पर कुछ भी असर न हुआ। ऐसी ख़राबियाँ केवल धर्म-शास्त्र और नीतिके न जाननेसे होती हैं। हमारे पूर्व्वजों और महात्माओंने जीवमात्रके सुखके लिये उपयोगी-उपयोगी नियम बनानेमें घाटा नहीं रक्खा है; किन्तु लोग उनको देखते नहीं, सुनते नहीं, जानते नहीं, तब कहाँसे उनपर अमल कर सकते हैं?

(११३) घरका स्वामी वही है जो कुटुम्बका पालन करे। जो कुटुम्ब का पालन नहीं करते वे चोर होते हैं।

(११४) स्त्रियोंमें झूठ, साहस, मूर्खता और कामदेव की प्रबलता होती है; अतः स्त्रियोंके साथ एक पलङ्ग पर न सोना चाहिये।

(११५) जिसके साथ अपनी कन्या की शादी करनी हो, उसका धन, बल, रूप, शील, स्वभाव, विद्या और उम्र देखनी चाहिये। अगर वर ग़रीब या धनहीन हो तो चिन्ता नहीं, किन्तु विद्वान् और खूबसूरत अवश्य होना चाहिये।

(११६) वर की उम्र, सुन्दरता और दौलत ही न देखनी चाहिये; किन्तु पहिले उसके कुल की जाँच करनी चाहिये; फिर क्रमशः विद्या, अवस्था, स्वभाव, धन, उम्र और ख़ूबसूरतीकी परीक्षा करनी चाहिये। जो वर इन परीक्षाओं में ठीक निकले, उसके साथ अपनी कन्याकी शादी कर देनी चाहिये। क्योंकि कन्या सुन्दरता चाहती है; माता धन चाहती है; बाप विद्या चाहता है; रिश्तेदार कुलको चाहते हैं और बराती मिठाई खाना चाहते हैं।

आजकलके अधिकांश लोग न रूप को देखते हैं, न विद्या, शील और अवस्था आदिको। वे देखते हैं, केवल धनको। वर कुरूप हो, काना हो, मूर्ख हो, जुआरी हो, रण्डीबाज़ हो तो परवा नहीं; किन्तु होना चाहिये धनवान। अनेक जातियोंके लोग तो धनके लोभमें पड़कर, अपनी कन्याओंको महादुर्बल, बूढ़, और मूर्ख बरोंको दे देते हैं।

बरका स्वभाव, उसकी विद्या, उसकी आरोग्यता और उसकी उम्र ज़रूर देखनी चाहिये। देखते हैं, कि धनी किन्तु कुपथ-गामी लोग थोड़े ही दिनोंमें अपनी बदचलनीके कारण निर्धन हो जाते हैं; किन्तु सुन्दर स्वभाववाले विद्वान् लोग

धन न होनेपर भी, धनवान हो जाते हैं और अपनी स्त्रीको सुख देते हैं। रोगी और चढ़ी अवस्थाके लोगोंको कन्या देना, अपनी आत्मजा—कन्या—को जीते जी कुएँ में डालना है। जो माता पिता या भाई इन सब बातोंका भली भाँति विचार किये बिना, जिस-तिस को कन्या दे देते हैं वे ईश्वर के दरबार में जवाबदिह होते हैं। हमने कितने ही पापियों को धनलोभ से कन्या विक्री करते और मनमाना धन लेते देखा है ; किन्तु किसीको फलते-फूलते और सुख पाते नहीं देखा। ऐसा नीच कर्म करनेवाले कितने ही ऐसे आदमी देखे, जिन के कुलमें नाम लेनेवाला और पानी देनेवाला न रहा।

(११७) विवाह करनेवालेको ऐसी कन्यासे विवाह करना चाहिये, जो अपने गोत्र या परिवार की न हो, उसके भाई हों, कुल अच्छा हो तथा योनि-दोष न हो।

(११८) क्षण-क्षणमें विद्या और थोड़ा-थोड़ा धन भी इकट्ठा करना चाहिये। विद्या चाहनेवाले को एक-एक पल भी न खोना चाहिये और धनार्थीको एक-एक कण न गँवाना चाहिये।

(११९) स्त्री, पुत्र और दानके लिये धन संग्रह करना उचित है। धन समय पड़े पर रक्षा करता है ; अतः धनको खूब अच्छी तरह बचाकर रखना चाहिये।

(१२०) बुद्धिमान्‌को यह सोचकर, कि मैं सौ बरस तक जीऊँगा और धन दौलतसे सुख-भोग करूँगा, धन और विद्या का सदा संग्रह करना चाहिये।

(१२१) पच्चीस बरस तक, साढ़े बारह बरस तक, सवा छः बरस तक बुद्धि-अनुसार विद्या पढ़नी चाहिये ; वि... रूप धन सब धनोंकी जड़ है ।

(१२२) विद्या-रूपी धन, दान करनेसे सदा बढ़ता है अर्थात् और धनोंकी तरह यह धन देनेसे घटता नहीं, कि... उल्टा बढ़ता है। विद्यामें बोझ नहीं होता, न कोई इसे ... सकता है और न छीन सकता है ।

(१२३) धनवान मनुष्यके पास जब तक धन रहता... तब तक सब उसकी सेवा-टहल करते हैं ; अगर गुणी पु... भी धनवान न हो, तो स्त्री पुत्र आदि उसे छोड़ देते... तात्पर्य्य यह है कि, सांसारिक व्यवहार चलानेके लिये धन... मुख्य चीज़ है ।

(१२४) क्योंकि संसारमें धनही सार है ; इसलिये मनुष्य... अच्छी-अच्छी तरकीबों और साहससे धन पैदा करना चाहिये।

(१२५) उत्तम विद्या द्वारा, अच्छी नौकरी करके, बहादुरी... काम करके, खेती करके लेनदेन, वाणिज्य-व्यापार और ब्याज... रुपया देकर या जो उपाय अपनेसे हो सके उससे धन पैदा क... और बढ़ानेका उद्योग करना चाहिये ।

(१२६) धनवानके दरवाज़े पर गुणवान् चाकरके सम... रहते हैं। धनवानके दोषोंको भी लोग गुण समझते हैं ; कि... धनहीनके गुणोंको भी दोष समझते हैं । निर्धन मनुष्यकी ... कोई निन्दा करते हैं ।

(१२७) धनको ऐसी तरकीवसे रखना चाहिये कि, कोई यह न जान सके कि, इसके पास इतना धन है और वह अमुक स्थानमें रक्खा है।

(१२८) सूदके लालचसे धन ऐसी जगह न देना चाहिये; जहाँ ब्याज तो ब्याज मूल-धन भी नाश हो जावे। खाने-पीने और लेन-देन तथा व्यवहारमें जो शर्म छोड़कर काम करता है, वही सुख पाता है।

(१२९) जिस समय किसी को धन दिया जाता है, तब तो गाढ़ी मित्रता होती है; किन्तु जब उससे लौटानेकी बात कही जाती है अथवा दिया हुआ धन वापिस माँगा जाता है, तब दुश्मनी होती है।

(१३०) मनुष्यको चाहिये कि, दिलके अन्दर उदारता और बाहर कञ्जूसी रखकर मौक़े पर मुनासिब ख़र्च करे और अपनी सामर्थ्य-अनुसार अच्छे स्त्री, पुत्र और मित्रोंकी धनसे रक्षा करे।

(१३१) अपना शरीर फिर नहीं होता; किन्तु स्त्री पुत्र और मित्र आदि फिर भी हो जाते हैं; इसलिये इन सबसे अपनी रक्षा करे; क्योंकि अगर मनुष्य ज़िन्दा रहेगा, तो सैकड़ों तमाशे देखेगा।

(१३२) जिसके साथ गाढ़ी मित्रता करनी हो उससे धन मत माँगो। उसकी नामौजूदगीमें उसके ज़नानख़ाने में न जाओ। उसकी स्त्री से बातचीत मत करो। उसके दोषोंको मत देखो और उसके विरुद्ध वादविवाद मत करो।

(१३३) जो मनुष्य अपने और माँ-बापके गुणोंसे प्रसिद्ध है, वह उत्तम से भी उत्तम है। जो अपने गुणोंसे मशहूर है वह उत्तम है। जो बापके गुणोंसे प्रसिद्ध है वह मध्यम है और जो मा के गुणोंसे प्रसिद्ध है वह नीच है। जो शख़्स अपनी कन्या, अपनी स्त्री या बहिनके भाग्य-भरोसे जीता है, वह नीचसे भी नीच है।

(१३४) खूब धनवान होने पर, पुत्र वग़ैरः की परवरिश अच्छी तरह करनी चाहिये और एक दिन भी बिना दान दिये ख़ाली न जाने देना चाहिये ; अर्थात् हर रोज़ कुछ न कुछ दान अवश्य ही करना चाहिये।

(१३५) मैं मौतके मुँहमें हूँ और मेरी उम्र एक क्षणकी है —ऐसा समझ कर मनुष्यको दान और धर्म करना चाहिये; परलोकमें दान और धर्मके सिवा कोई सहायक नहीं है।

(१३६) किसीकी बुराई या भलाई बिना विचारे न करनी चाहिये। बिना विचारे किये हुए अपकार और उपकार दोनों अनिष्ट होता है।

(१३७) अत्यन्त निर्दयता, अत्यन्त बुराई और अत्यन्त नम्रता कभी न करनी चाहिये। इसी तरह अत्यन्त वादविवाद, अत्यन्त आसक्ति और अत्यन्त हठ भी न करना चाहिये ; क्योंकि "अति" सब जगह नाशका कारण है ; अतः "अति" से बचना ही चाहिये।

(१३८) निर्दयता करनेसे मनुष्य पछताता और दुःखि

होता है; कञ्जूजीसे निन्दाभाजन होता है; बहुत नर्मीसे उसे कोई मानता नहीं; अति वाद करनेसे निरादर होता है; अति दानसे कङ्गाली आती है; अति लालच करनेसे अपमान होता है और अत्यन्त हठ करने से मनुष्य मूर्ख समझा जाता है।

(१३९) जवान स्त्री, धन और पोथी इन तीनोंको दूसरे के अधिकारमें न रखना चाहिये। अव्वल तो यह दूसरेके हाथमें जाकर मिलते ही नहीं और यदि दैव-योगसे मिल भी जाँय तो स्त्री भ्रष्ट हुई, धन नष्ट हुआ और पुस्तक चिथड़ी हुई मिलती है।

(१४०) बुद्धिमान्‌को उचित है कि हँसीमें भी किसीसे ऐसी बात न कहे जिससे दूसरेका दिल नाराज़ हो। जिसको जन्मभर दान-मानसे खुश रक्खा है, उसको कड़वी बात न कहनी चाहिये।

(१४१) कड़वी बात कहनेसे दोस्त भी दुश्मन हो जाता है; क्योंकि कठोर वचन रूपी बाण जब मनमें घुस जाता है, तब फिर किसी तरह नहीं निकल सकता।

(१४२) अपना शत्रु जब अपनेसे अधिक ज़ोरावर हो, तब उसको अपने कन्धे पर ले जाना चाहिये; किन्तु जब उसका ज़ोर घट जाय, तब उसे इस तरह नाश कर देना चाहिये, जिस तरह घड़े को पत्थर पर पटक कर फोड़ डालते हैं।

(१४३) गहने, राज्य, पुरुषार्थ और विद्यासे मनुष्य... उतनी शोभा नहीं होती, जितनी शोभा सज्जनतासे होती है।

(१४४) घोड़ेमें तेज़ चाल, बैलमें धीरज, मणिमें ... दमक, राजामें क्षमा, वेश्यामें हाव-भाव और गवैयेमें ... आवाज़ भूषण है।

(१४५) धनवानमें दातारी, सिपाहीमें बहादुरी, गाय... दूधकी अधिकता, तपस्वीमें इन्द्रियोंका वश करना, और विद्वा... वाचालता भूषण है।

(१४६) सभाके लोगोंमें पक्षपात-हीनता, गवाहोंमें ... बात बोलना, नौकरोंमें मालिकसे प्रेम, और मन्त्रियोंमें राजा... भलाईकी बातें भूषण हैं।

(१४७) मूर्खों में चुप रहना और स्त्रियों में पा... भूषण है। अर्थात् ये सब इन लक्षणों से शोभा पाते हैं। ... विपरीत लक्षणों से ये सब बुरे मालूम होते हैं।

(१४८) किसी काम में एक आदमी का मालिक या मुखि... होना अच्छा है। मालिक या मुखिया का न होना या एक... अधिक मालिक होना बुरा है।

जिस कारख़ाने, दूकान या कोठीमें एक आदमीको ... पर काम चलता है, वह कारख़ाना या कोठी अवश्य उन्न... करती है। जिस सेनामें एक अफ़सर मुख्य होता है, वह ... विजय लाभ करती है; किन्तु जहाँ जना-जता मालिक ...

है, वह कारख़ाना, वह दूकान और वह फ़ौज नष्ट हो जाती है। सलाह सबकी ली जा सकती है ; किन्तु काम एक मनुष्य की मति पर होना चाहिये। यही बात आजकलके पश्चिमी राज्ञाओंमें देखी जाती है। समस्त सभासदों की सलाह और वादविवाद के बाद वही बात तय होती है, जिसे सभापति स्वीकार करता है। पृथ्वीराज चौहानके पीछे हमारे देशीय राजाओं में कोई मुखिया न रहा। नाई की बरात में सभी ठाकुर बन गये। सभी अपनी डेढ़-डेढ़ चाँवलकी खिचड़ी अलग-अलग पकाने लगे। इसी कारण से मुसल्मानों द्वारा पद-दलित और परास्त होकर पराधीनता की बेड़ियोंमें जकड़े गये। चाहें एक बड़ा राज्य हो, चाहें छोटीसी गृहस्थी हो अथवा कोई कार्य्यालय हो, उसमें सबसे पहले एक आदमी को, जो सबमें चतुर, बुद्धिमान और अनुभवी हो, मुखियत्व के लिये चुन लेना चाहिये। पीछे सबको उसे अपने राजा की तरह मानना चाहिये। क़दम-क़दम पर उसकी सलाह के अनुसार चलना चाहिये। हम अपने अनुभव से इस तरीके की उमदगी देख चुके हैं। जिन्हें किसी काममें सिद्धि लाभ करना हो, जिन्हें अपने काममें विघ्न-बाधाओंका होना नापसन्द हो, उन्हें अवश्य इस नीति-वाक्य पर चलना चाहिये।

(१४६) कोई कैसा ही गुणवान क्यों न हो, जिस में चुगलख़ोरी, क्रोध, जल्दबाज़ी, चोरी, दूसरे के अच्छे कामों में भी दोष ढूँढ़नेकी प्रकृति, बहुत लालच, काम बिगाड़ना,

और अत्यन्त सुस्ती,—ये अवगुण होते हैं, उसके गुण
दोषों से दब जाते हैं। अतः मनुष्यों को ऊपर कहे हुए
से बचना चाहिये।

(१५०) बचपन में माँ का मरना, जवानी में
मरना और बुढ़ापे में धन तथा पुत्र का नाश हो जाना—
पाप का फल है। धनवान के औलाद न होना और
का अपढ़—मूर्ख—रह जाना भी महापापका फल है।

(१५१) मूर्ख पुत्र, बिधवा कन्या, कर्कशा स्त्री,
नीच की चाकरी, और रोज़ रास्ता चलना,—ये छः दुःख
हैं अर्थात् इनसे सुख और चैन नहीं मिलता।

(१५२) जिसका दिल पढ़ने, पढ़ाने, गाने, बजाने,
के देखने, तथा स्त्री, तपस्या, और बहादुरी में नहीं लगता
वह बन्धन से खुला हुआ नर-रूप में पशु है।

(१५३) जो पराई बढ़ती अथवा उन्नति नहीं
सकता, जो दूसरे में दोष निकालता और निन्दा करता है
औरों को देखकर कुड़ता है, जिसका अन्तष्करण मैला
है, किन्तु मुखपर प्रसन्नता होती है,—वह दुष्ट होता है।

(१५४) जिसके पीछे आशा लग रही है उसे
सारे ख़ज़ाने से भी सन्तोष और सुख नहीं हो सकता।
आशा नहीं है, उसका मन थोड़े से धन से भी भर जाता है।

(१५५) दुष्ट आदमी दूसरों को शिक्षा देने के लिये

आदमी के समान बने रहते हैं; किन्तु आप अपनी स्वार्थ सिद्धिके लिये सैकड़ों तरह के बुरे कर्म करते हैं।

(१५६) जो पुत्र मा-बाप की आज्ञानुसार चलता है, उनकी सेवा-टहल में सुस्ती नहीं करता, छाया के समान साथ रहता है, धन कमाने का उद्योग करता है और सब तरह की विद्या-कलाओं में निपुण है,—वही पुत्र पिता को खुश रखनेवाला है। किन्तु जो आज्ञा नहीं मानता, सेवा करने से जी चुराता है तथा धन नाश करता है, वह दुःखदायी है।

(१५७) जो स्त्री सदा पति से प्रेम रखती है, घर के धन्धे में प्रवीण होती है, पुत्रवती, सुन्दर स्वभाववाली और जवान होती है वह पति की प्यारी होती है।

(१५८) जो माँ अपने बच्चे के क़ुसूरों को बरदाश्त करके भी उसकी पालना करती है वह सुखदायिनी होती है; किन्तु जो माँ पर-पुरुष-रता होती है, वह पुत्र के हक़ में दुःखदायिनी होती है।

(१५६) जो बाप अपने बेटे के पढ़ाने और उसके रोज़गारकी कोशिश करता है और हमेशा उसे हितकारी उपदेश देता है, वह पिता पुत्र के हक़ में सुखदायी होता है।

(१६०) जो सदा सहायता देता है, कभी मित्र के विरुद्ध बात मुँह से नहीं निकालता, सच्ची और हितकारी बात कहता और मानता है, वही मित्र होता है।

(१६१) नीच मनुष्यों से मेल-जोल, पराये घर में जाना, बिरादरीवालोंसे विरोध, अपमान, और दरिद्र—ये दुःखदाई हैं। विद्वानों में दरिद्रता और दरिद्रता में औरत होना भी दुःखदाई है।

(१६२) जिस जगह राजा, वैद्य, साहूकार, गुणवान जल न हो वहाँ का बसना, एक भी पुत्री का पैदा होना और बाप के आगे हाथ पसारना,—ये सब ही सन्ताप देने वाले हैं।

(१६३) जो पुरुष रूपवान, धनवान, बलवान विद्वान् होकर भी स्त्री की इच्छा पूर्ण न करे,—वह नहीं पाता।

(१६४) जो स्त्री को हर तरह प्रसन्न और स रखता है अथवा उसकी मन-चाही करता है, स्त्री उसके में हो जाती है। जैसे बालकका लाड़ प्यार करने से बालक में हो जाता है।

(१६५) मनुष्य जिस काम का ख़र्च वग़ैरः जानता हो, काम को काम के जाननेवाले अनुभवी पुरुषों से करावे। पुरुष हरेक काम को खूब सोच-समझकर करते हैं। वे फ़िज़ूल छोटासा काम भी नहीं करते।

(१६६) बुद्धिमानको चाहिये कि ऐसा काम न करे जि अधिक ख़र्चा पड़ता हो। व्योपारी उस कामको करते हैं, जि नफ़ा अधिक होता है।

(१६७) ज्ञानवान लोग तत्त्व को चाहते हैं, पाखण्डी तपस्या चाहते हैं, अग्नि-पूजक अग्नि चाहते हैं, योगीजन एकान्त स्थान चाहते हैं, पर-पुरुष-रता स्त्री यार चाहती है, रोगी वैद्यको चाहता है, भिखारी दानीको चाहता है, डरा हुआ मनुष्य बचानेवालेको चाहता है, दुष्ट लोग दूसरे में दोष चाहते हैं और जिसके घरमें किसी प्रकार का माल बेचने के लिये तैयार रहता है, वह उसका महँगा होना चाहता है।

(१६८) जो मनुष्य मूर्ख होता है, वह गुस्सेसे लाल हो जाता है। झगड़ा या वाद-विवाद करता है, बहुत सोता है, नशा खाता है, व्यर्थके काम करता है और अपना अच्छा काम बिगाड़ कर बुरा काम करता है।

(१६९) ब्राह्मण में सत्वगुण, क्षत्रिय में तमोगुण रहता है, किन्तु वैश्य और शूद्र आदिकों में रजोगुण की अधिकता होती है। जिसमें सतोगुणकी अधिकता हो, वही उत्तम है।

(१७०) जीविका वही उत्तम होती है, जिससे अपने धर्म को नुक़सान नहीं पहुँचता; देश वही अच्छा होता है, जहाँ अपने कुटुम्बियोंका गुज़ारा होता है; खेती वही अच्छी होती है, जो नदीके किनारे पर की जाती है।

(१७१) वैश्य का रोज़गार मध्यम है, शूद्र का धन्धा अधम है और माँगना बहुत ही नीच काम है; किन्तु तपस्वियोंके

लिये माँगना अच्छा है। धर्मात्मा राजाकी नौकरी कमी-
अच्छी समझी जाती है।

(१७२) राजाकी नौकरी किये बिना बहुतसा धन
मिलता; किन्तु राज-सेवा करना बड़ा कठिन काम है।
मानके सिवा अन्य मनुष्य राज-सेवा नहीं कर सकता।
की नौकरी खाँड़े की धार के समान है।

(१७३) जिस भाँति साँपको पकड़नेवाला साँपको
वशमें कर लेता है; उसी तरह बुद्धिमान मन्त्री अपने मन्त्रों
सलाहों—से राजाको अपने वशमें कर लेता है।

(१७४) पहले ग़रीब होना और पीछे अमीर होना अच्छा
है; पहिले धनवान होना और पीछे कङ्गाल होना बुरा
और पहले सवारी पर चढ़कर चलना और पीछे पैदल
भी बुरा है।

(१७५) औलाद होकर मर जावे, उससे बिना औलाद
रहना अच्छा है; ख़राब सवारी पर चढ़कर चलनेसे
चलना अच्छा है। किसीसे विवाद या विरोध करनेसे
रहना अच्छा है।

(१७६) पराये घरमें रहने से वन में बसना
है। दुष्टा स्त्री के साथ रहने से भिक्षा माँगना या
अच्छा है।

(१७७) क़र्ज़ लेने के समय सुख होता है; लेकिन
समय दुःख होता है। दुष्ट के साथ मित्रता करने में

सुख होता है ; किन्तु छोड़ने के समय कष्ट होता है। इसी तरहसे अपथ्य—नुक़सानमन्द—चीज़ खाने के समय सुख बोध होता है ; किन्तु जब वह अपथ्य चीज़ अपने प्रभावसे रोग पैदा करती है तब बड़ा कष्ट होता है।

(१७८) ख़राब मन्त्रियों से राजा, ख़राब वैद्य से रोगी ख़राब राजा से प्रजा, ख़राब सन्तान से कुल और खोटी बुद्धिसे आत्माका नाश हो जाता है।

(१७९) हाथी, घोड़ा, बैल, बालक, स्त्री और तोते के सिखावेवालोंमें जैसे गुण होंगे ; वैसेही गुण उनमें—हाथी घोड़े आदिमें—सङ्गति से आजायँगे।

(१८०) अच्छी स्त्री, अच्छी सन्तान, अच्छी विद्या, अच्छा धन, अच्छे दास, भली दासी, सुन्दर शरीर, उत्तम घर और भला राजा,—ये दस गृहस्थ लोगोंके लिये बहुत ही सुखदायी होते हैं।

(१८१) रनवास अथवा ज़नानख़ानेमें बूढ़े, विश्वासयोग्य अथवा अच्छे चालचलन के मर्द, औरतों या हिजड़ों को रखना चाहिये। अगर कोई जवान मर्द अपना परम मित्र भी हो ; तोभी उसे ज़नानख़ानेमें न जाने देना चाहिये।

(१८२) निःसन्तान स्त्री, अच्छी सवारी, अच्छा बोझा ढोनेवाला मज़दूर, दूसरेका दुःख नाश करनेवाली विद्या, अच्छा पहरेदार और चुस्त-चालाक नौकर,—ये छः परदेश में सुख देते हैं ;

(१८३) रास्ता चलनेवालेको चाहिये कि, अपने स मददगार ज़रूर रखे; अकेला रास्ता न चले। रात हो पर, ऐसे गाँव में ठहरे जिसके नज़दीक ही अच्छा पानी अच्छा रास्ता हो। रास्ते या जङ्गल में आराम करने को ठहरे।

(१८४) बहुत घूमना, बहुत खाना, बहुत मिहनत करना और बहुतही स्त्री-प्रसङ्ग करना,—ये चारों जल्दी ही मनुष्य को बूढ़ा कर देते हैं। अतः इन सब को उचित रूपसे करना चाहिये।

(१८५) जो मनुष्य अवगुणों को भी गुण कहकर बखानता है, वह प्यारा बन जाता है। जो अधिकतर गुण-ही-गुण को गाता है वह मित्र क्यों न होगा ?

(१८६) जो प्रिय होकर भी, अवगुणोंका खुल्लमखुल्ला बखान करे, वह दुश्मन है; जो गुणों को भी अवगुण कर बखानता है, वह प्यारा कैसे हो सकता है ?

(१८७) स्तुति—तारीफ़—करने से देवता भी मनुष्य के अधीन हो जाते हैं; तब मनुष्य क्यों न अधीन होंगे ?

(१८८) मैं अवगुणोंकी खान हूं, मुझमें गुण कहां हो सकते हैं? मैं ही मूर्ख हूं,—जो ऐसा समझता है वह सबसे बड़ा है।

(१८९) दुष्ट मनुष्य उपकारी मनुष्य के भारी उपकार को भी सरसोंके दाने से भी छोटा समझता है।

(१६०) किसी से ऐसी हसी नहीं करनी चाहिये ; जिससे झगड़ा हो जाय। मसख़री में किसीको ऐसी बात न कहनी चाहिये कि, तुम्हारी स्त्री कुलटा है। मित्र-भाव से भी किसीको बुरी बात न कहनी चाहिये।

(१६१) जो बात या चीज़ छिपाने लायक़ हो, उसे भी मित्र से न छिपाना चाहिये। मित्र की कोई गुप्त बात या चीज़ को प्रकाश न करना चाहिये। अगर किसी तरहसे मित्र से बिगाड़ हो जावे, तो शत्रु हो जानेपर भी मित्र की न कहने योग्य बात हरगिज़ किसी से न कहनी चाहिये।

(१६२) विपत्ति के समय मनुष्य को गूँगा, बहरा, अन्धा और खञ्जा बन जाना चाहिये। जो ऐसा नहीं करते, उनको दुःखके कारण नुक़सान उठाना पड़ता है।

(१६३) दूसरेके घर जाकर उसकी स्त्री को न देखे ; धन-हीन होनेपर भी मालिक की आज्ञा बिना कोई चीज़ न ले।

(१६४) जिस गाँव के रहनेवाले धर्म-हीन, नीति-हीन, कपटी, लोभी और सख़्त सज़ा देनेवाले हों—उस गाँवको छोड़ कर दूसरे गाँवमें बसना चाहिये।

(१६५) दूसरे के झगड़े को अपने सिर पर लेकर बहस न करनी चाहिये। किसी मण्डली में बैठ कर, राजाकी बात पर तर्क-वितर्क न करना चाहिये।

(१६६) बिना शास्त्र को देखे हुए ज्योतिष, धम, नीति और चिकित्सा आदि में टाँग न अड़ानी चाहिये।

(१९७) पराधीनता से बढ़कर दुःख नहीं है और स्वा-
नतासे बढ़कर कोई सुख नहीं है। जो गृहस्थ घर पर ही र-
है, विदेशमें नहीं रहता ; वह हमेशा सुखी रहता है।

(१९८) व्यवहार पल-पलमें बदलता रहता है ; अतः
और पुराने व्यवहारोंके जाननेवालोंका अनुकरण करे।

(१९९) कोई भी व्यवहार को प्रत्यक्ष कहने में ह
नहीं है। व्यवहार-ज्ञान—प्रत्यक्ष, अनुमान और उपमान
होता है।

चौथा अध्याय ।

जो राजा बहादुर है, दूसरे राजाओं पर चढ़ाई करता है, नीति को जानता है तथा सेना रखता है; उस राजा के मित्र-राजा भी उसके गुप्त शत्रु होते हैं। वे लोग मौक़ा देखते रहते हैं; जब तक दाँव-घात नहीं पाते, चुपचाप बैठे रहते हैं। जहाँ मौक़ा या दाँव पाते हैं धर दवाते हैं। इसमें अचम्भे की कोई बात नहीं है; क्योंकि राज्य का लोभ किसको नहीं होता?

(२) राजा का न कोई मित्र होता है और न राजा ही किसी का मित्र होता है।

(३) मा, नाना-नानी, मामा-मामी, पिता, दादी, अपनी पुत्री, अपनी स्त्री, अपनी सुसरालवाले,—ये सब स्वभाव से ही मित्र होते हैं।

(४) विद्या, बहादुरी, अक़्लमन्दी, ताक़त और धीरज—ये पाँचों स्वाभाविक मित्र हैं। चतुर लोग इनसे ही अपना मतलब निकालते हैं।

(५) हिंसा करनेवाला, बदचलन, क़र्ज़ करनेवाला बाप और व्यभिचार करनेवाली मा और स्त्री,—ये सब दुश्मन होते हैं।

(६) अपने भाई, चाचा, उनकी स्त्रियाँ, उनके पुत्र, बहू, सौत तथा देवरानी और जिठानी ये सब आपसमें शत्रु होते हैं।

(७) मूर्ख बेटा, चिकित्सा न जाननेवाला वैद्य और ... राजा ये भी शत्रु होते हैं।

(८) जिस भाँति उपाय करनेवाले साँप, हाथी और ... को भी अपने वशमें कर लेते हैं और मृत्यु लोकसे स्वर्गलोक चले जाते हैं तथा हीरे में भी छेद कर देते हैं ; उसी तरह साम, दाम, दण्ड, भेद इन चार उपायोंसे मित्र, रिश्तेदार, स्त्री, पुत्र और दुश्मनोंको वश करना चाहिये।

(९) अगर एकसा मिज़ाज हो, बराबर की उम्र हो, एक ही विद्या, एक ही जाति, एक ही व्यसन, एक ही रोज़गार हो और एक जगह ही रहना हो तो दोस्ती हो जाती है ; किन्तु इन सबके अलावः नम्रता का होना ज़रूरी है।

(१०) जिस उपाय से प्रजा शान्त रहती है, उस उपायको दण्ड कहते हैं। दण्डके भय से प्रजा धर्ममें तत्पर रहती है। दण्ड-भयसे कोई चोरी-ज़ोरी नहीं करता, झूँठ नहीं बोलता, दुष्ट मनुष्य सज्जन हो जाते हैं और क्रूर मनुष्य अपनी क्रूरताको त्याग देते हैं।

(११) अगर गुरु भी घमण्डी हो, बुरे भले कामको न जानने वाला हो और खोटे रास्ते पर चलनेवाला हो ; तो राजा को उचित है कि वैसे गुरु को भी सीधा करे।

(१२) राजाको उचित है कि माता पिता और स्त्री के पालन-पोषण न करनेवाले पुरुषको सज़ा देकर रास्ते पर लावे और उसकी आधी कमाई स्त्री और माता-पिताको, उनके गुज़ारेके लिये दिलावे ।

(१३) धन जमा करनेमें बड़ा भारी कष्ट होता है। जमा करनेसे रखनेमें और भी अधिक कष्ट होता है। अगर ज़रा भी लापरवाही की जाती है, तो जमा किया हुआ धन ज़रासी देर में नष्ट हो जाता है।

(१४) धन कमानेवाले मनुष्यको धन नाश होनेसे जितना दुःख होता है ; उतना दुःख स्त्री, पुत्र और दूसरे लोगोंको किस तरह हो सकता है ?

(१५) जो मनुष्य अपने काम में खुद ढीला होता है, उसके सहायक भी ढिलाई करते हैं। जो अपने काममें खुद चुस्त और फुर्तीला होता है, उसके मददगार भी वैसेही, होते हैं।

(१६) जो मनुष्य धन-सञ्चय करना जानता है, किन्तु सञ्चित—जमा किये हुए—धनको रखना नहीं जानता, उससे बढ़कर कोई मूर्ख नहीं है। ऐसे मनुष्य का धन जमा करना फ़िज़ूल है।

(१७) जो मनुष्य एक काम में दो मनुष्यों को अधिकार देता है, एक स्त्री के जीते जी दूसरी स्त्री लाता है, और सब

किसीका अत्यन्त विश्वास कर लेता है, उससे बढ़कर दूसरा मूर्ख नहीं है ।

(१८) जो मनुष्य बहुत ही लोभी हो, जो स्त्रियोंके अधीन हो, जो चोर, व्यभिचारी और जीव-हिंसा करनेवालेकी गवाही माने, वह भी मूर्ख है ।

(१९) मनुष्य को चाहिये कि सूम—कञ्जूस—की तरह धनकी रक्षा करे ; किन्तु मौक़ा पड़ने पर त्यागीकी भाँति दान या ख़र्च करे और हरेक चीज़को यथार्थ रूप से जानने की कोशिश करे ।

(२०) यज्ञ करना और कराना, पढ़ना और पढ़ाना, दान देना और लेना,—ये सब ब्राह्मण के कर्म हैं ।

(२१) यज्ञ करना, पढ़ना, दान देना, भले आदमियोंकी रक्षा करना, दुष्टोंको दण्ड देना और अपना भाग लेना,—ये सब क्षत्रियके कर्म हैं ।

(२२) यज्ञ करना, पढ़ना, दान देना, खेती करना, लेन-देन या वाणिज्य व्योपार-करना तथा गायोंकी रक्षा करना—ये सब वैश्यके कर्म हैं ।

(२३) दान करना और नौकरी करना शूद्र आदि नीच जातियोंके कर्म हैं ।

(२४) जिसने सारी विद्याएँ पढ़ी हों, वह सब का गुरु है । जिसने विद्या नहीं पढ़ी, वह केवल जाति से गुरु नहीं हो सकता ।

(२५) विद्या और कलाओं की गिन्ती नहीं है; तथापि ३२ विद्या और ६४ कला मुख्य हैं।

(२६) विद्या वाणी द्वारा सिद्ध होती है, किन्तु कलाको गूंगा भी कर सकता है।

(२७) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्वणवेद,—ये चार वेद हैं। आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, और तन्त्र—ये चारों उपवेद हैं।

(२८) व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द—ये वेदोंके अङ्ग हैं।

(२६) मीमांसा, तर्क, सांख्य, वेदान्त, योग, इतिहास, पुराण, स्मृति, नास्तिक-मत, अर्थ-शास्त्र, काम-शास्त्र, शिल्प-शास्त्र, अलङ्कार, काव्य, देशकी भाषा, मौक़े की युक्ति, मुसल्मानों का मत इत्यादि विद्याएँ हैं।

(३०) ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास—ये चार आश्रम हैं। ब्राह्मण चारों आश्रम पालन कर सकता है; किन्तु क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रके लिये संन्यास मना है। वे लोग शेष तीन आश्रम पालन कर सकते हैं।

(३१) विद्या के लिये ब्रह्मचर्य आश्रम है। सब जीवों की पालना के लिये गृहस्थाश्रम है। इन्द्रियों के दमन करनेके लिये वाणप्रस्थ और मोक्ष-लाभ के लिये संन्यास है।

(३२) स्त्री को उचित है कि पति से पहले सूती उठकर

शौच आदि से निपट कर, पलङ्ग के बिस्तरोंको उठावे और झ
झाड़ू वग़ैरहः लगाकर घरको साफ़ करे।

(३३) अग्निशाला और आँगन को लीप-पोत कर शुद्ध
और यज्ञके चिकने बर्तनोंको गरम जलसे धोकर साफ़ क
पीछे उनको जहाँ के तहाँ रख दे और दूसरे बर्तनोंको माँज
उनमें जल भर कर रख दे।

(३४) रसोईके बर्तनों को माँज-धोकर चूल्हेको लीपे
उसमें आग और ईंधन रख दे।

(३५) सवेरे का सब काम करके, सास और ससुर
प्रणाम करे। सास, ससुर, मा बाप भाई आदि रिश्तेदारोंने
कपड़े और ज़ेवर पहननेको दिये हों, उन्हें पहने।

(३६) स्त्री का धर्म है कि, वह मन, वाणी और कर्म
पवित्र रहे, पतिकी आज्ञा पर चले, छायाके समान साथ रहे
मित्रके समान उसकी भलाई में लगी रहे।

(३७) स्त्री अपने पति की दासी के समान रहे। रसो
तय्यार करके पति को निवेदन करे। पीछे कुटुम्ब के स
लोगों को भोजन करा कर, पति को भोजन करावे। पति
आज्ञा लेकर :बाक़ी बचे हुए अन्न को आप खावे। इन स
कामों से छुट्टी पाकर, दिन-भर की आमदनी और क़र्च का
हिसाब देखे।

(३८) फिर सन्ध्या-समय घरकी सफ़ाई करके, भोजन
बनावे और पति तथा नौकर-चाकरों को खिलावे।

(३९) आप अधिक न खाय। घर की रीति-अनुसार पलङ्ग बिछा कर पति की सेवा करे।

(४०) जब पतिको नींद आजावे, तब आप भी उसके पास ही, उसीमें ध्यान लगा कर सो जावे। स्त्रीको उचित है कि कभी नङ्गी न सोवे, नशेसे मतवाली न रहे, कामेच्छाको छोड़े, इन्द्रियोंको वशमें करे।

(४१) पतिसे चिल्ला कर कठोर वचन न बोले, किसीके साथ लड़ाई-झगड़ा न करे और वृथा बकवाद न करे।

(४२) पतिके धन को फिजूल ख़र्चा न करे; धन और धर्म का नाश न करे; रूसना-मटकना, ईर्षा-द्वेष और निन्दा आदि बुरी आदतोंसे बचे।

(४३) जो स्त्री ऊपर लिखी हुई तरकीबोंसे पति की सेवा करती है, उसका इस दुनियामें नाम होता है और मरने पर वह पति-लोकमें जाती।

(४४) जब स्त्री का रजोदर्शन हो, तब वह सबको छोड़ कर किसी अन्दरूनी घरमें जाबैठे, जिससे उसे कोई देख न सके; स्नान न करे, गहने न पहिने, ज़मीन पर सोवे और चौथे दिन सूरज निकलने पर स्नान करे। जब स्त्री इस भाँति शुद्ध हो जाय, तब पहले लिखी हुई रीति-अनुसार फिर घरके काम-काजमें लगे। यह धर्म ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की स्त्रियों का है तथा दूसरी जाति की स्त्रियों का भी यही धर्म है।

(४५) गाने-वजाने, मीठे बचनों और क्रीड़ा आदिसे
पति प्रसन्न हो, वैसेही उसको प्रसन्न करना चाहिये,
पति के समान स्वामी नहीं और पतिके समान दूसरा सुख
है। अतः स्त्री का परम आश्रय केवल उसका पति ही है।

(४६) बाप, भाई और पुत्र प्रमाणसे धन और सुख
हैं; किन्तु पतिके धन और सुख देनेकी हद नहीं है।
पति बेहद सुख और धन आदिका देनेवाला है, उसकी
कौन स्त्री न करेगी?

(४७) जिसका अन्न एक दफा भी खाया हो, उसके
प्राण तक त्याग देना नौकर का धर्म है। जो नोकर
कालमें भी स्वामी को नहीं छोड़ता, वह नौकर प्रशंसा
होता है।

(४८) मालिक भी वही प्रशंसायोग्य है, जो स्वामि
नौकरके लिये प्राण तक त्याग दे।

(४९) इस पृथ्वी पर बहुतसे नीतिनिपुण राजा हु
किन्तु रामचन्द्रके समान नीतिज्ञ राजा कोई भी न हुआ
उनके नीति-बलसेही बन्दरोंने भी उनकी नौकरी स्वीका
कर ली।

(५०) श्रीकृष्णके समान कूट नीति जाननेवाला
कोई नहीं हुआ। उन्होंने अपनी बहिन सुभद्रा की भी
अर्जुनके साथ कर दी।

(५१) जो मनुष्य अपनी रक्षाका उपाय नहीं करता, वह जड़ और पशुके समान है। देखना चाहिये कि, स्त्रियाँ भी अपने यारके छिपानेके लिये चालाकियाँ करती हैं।

(५२) जो नौकर अपने मालिकसे प्रेम रखता है, वह उत्तम है; जो उस शख्स की सेवा करता है जो अधिक तनख़्वाह देता है वह मध्यम है और जो अपने मालिकसे पेट-भर खाना और नौकरी मिलनेपर भी छिप-छिप कर दूसरे की सेवा करता है वह नीच होता है।

(५३) काम वही आरम्भ करना चाहिये, जो सुखसे पूरा हो जावे। एक वक्तमें ही बहुतसे कामों को शुरु कर देना भला नहीं है।

(५४) जब तक आरम्भ किये हुए काम ख़तम न हो जाँय, तब तक दूसरा काम न छेड़े; क्योंकि जब पहला छेड़ा हुआ काम ही न हुआ तो दूसरा कैसे होगा?

(५५) अपने बलके अनुसार आरम्भ किया हुआ काम रोज़-रोज़ करे, जिससे वह सुखसे समाप्त होजावे।

विदुर नीति।

विदुरजी नीति-शास्त्रके बड़े भारी पण्डित थे। उन्होंने कौरवों को बहुत कुछ समझाया-बुझाया मगर वे किसी तरह न माने। धृतराष्ट्र भी अपने बेटों के मोह-जालमें फँस गया। उसने भी विदुर जी की बात इस कान सुनी उस कान निकाल दी।

एक दिन राजा धृतराष्ट्र पाण्डवोंके भेजे हुए सञ्जयके आने पर उससे टेढ़ी-सीधी बातें सुन कर बहुत दुःखी हुए। तब उन्होंने विदुर महाराज को बुलवाया और उनसे कहने लगे—"हे विदुर! सञ्जय मेरी बुराई कर गया है। कल वह सभा में आवेगा और पाण्डवोंका समाचार सुनावेगा। न जाने वह क्या कहेगा? मुझे उसी चिन्तासे रात-भर नींद नहीं आती। मेरा शरीर जला जाता है। आप मेरे जैसे घोर चिन्ता-रूपी अग्निमें जलते हुए की शान्तिके लिये कुछ तदबीर बताइये।

विदुर बोले—"महाराज! युधिष्ठिर सदा तारीफ़के लायक़ काम करते हैं। बुरे काम उनसे नहीं होते। वे ईश्वर और वेदको मानते हैं और श्रद्धा रखते हैं। उनमें सब राज-चिह्न मौजूद हैं और वे तीनों लोकके स्वामी होने योग्य हैं। अफ़सोस की बात है, कि आपने उन्हींको राज्यसे निकाल दिया! आप विद्वान् और धर्मात्मा हैं, किन्तु अन्धे हैं; इसी वजहसे आपको राज्य नहीं मिला। आपने अब पाण्डवोंका राज्य छीन लिया है; इससे कहना पड़ता है कि आप सचमुच ही अन्धे हैं। पाण्डव सत्यवादी, धर्मात्मा, दयालु, और महाबलवान हैं और आपको अपने पिताके समान जानते हैं; इसीसे वह आपको क्षमा कर रहे हैं। जब आपने दुर्योधन, शकुनि, कर्ण और दुःशासनको सब तरहके अख़्त्यार—अधिकार—दे दिये हैं, तब आपको सुखकी इच्छा करना वृथा है।

जो विद्वत्ता, वैराग्य, धर्म और शक्तिके होते हुए भी धर्म को छोड़ दे, वह मूर्ख होता है!

जो शख़्स अच्छे काम करता है, बुरे कामोंको नहीं करता, ईश्वर को मानता है और सबमें श्रद्धा रखता है,—वह पण्डित कहलाता है।

जो गुस्सा, घमण्ड, सुख और शर्मके मारे धर्म को नहीं छोड़ता तथा आदर-योग्य मनुष्य का आदर करता है, वह पण्डित कहलाता है।

जिसकी सलाह और तदबीरें किसीको मालूम नहीं होतीं,

किन्तु किया हुआ काम ही सबकी नज़र आता है, पण्डित कहलाता है।

जिसके काममें सर्दी, गर्मी, भय, काम, धनवानता, निर्धनतासे विघ्न नहीं होता,—वही पण्डित है।

जो लोग अपनी शक्ति-अनुसार काम करनेकी इच्छा करते हैं और जैसी इच्छा करते हैं वैसाही काम कर भी दिखाते हैं तथा किसी का अपमान नहीं करते, वह पण्डित कहलाते हैं।

जो असल बात को शीघ्र ही समझ जाता है, सुननेकी बात को देर तक सुनता है, खूब सोच-विचार कर काममें हाथ डालता है, काम और क्रोधके अधीन होकर कोई काम नहीं करता और बिना पूछे नहीं बोलता, वह पण्डित कहलाता है।

जो शख़्स न मिलने-लायक़ चीज़ की इच्छा नहीं करता, नष्ट हुई चीज़की चिन्ता नहीं करता, भयानक विपत्ति पड़ने पर भी जी नहीं छोड़ता, वह पण्डित कहलाता है।

जो मनुष्य खूब सोच-विचार काम को शुरू करता है, काम को ख़तम किये बिना नहीं छोड़ता, किसी समय भी काम करनेसे मुंह नहीं मोड़ता और इन्द्रियों को अपने वश रखता है यानी स्वयं इन्द्रियोंके वशीभूत नहीं होता, वह पण्डित कहलाता है।

जो मनुष्य अच्छे-अच्छे कर्म करता है, सदा धन और

का उद्योग करता है, अपनी भलाई की बात पर ध्यान रखता है, आदरसे प्रसन्न और अनादरसे अप्रसन्न नहीं होता और जो गङ्गाके समान गम्भीर होता है,—वही पण्डित कहलाता है।

जिसकी बुद्धि शास्त्रानुसार है, जिसकी विद्या बुद्धि-अनुसार है और जो श्रेष्ठ पुरुषोंकी मर्य्यादा को नहीं तोड़ता—वह पण्डित है।

जो शख़्स बात कहनेमें नहीं हिचकता, जो अच्छी-अच्छी अद्भुत 'बातें जानता है, जो किसी विषय पर तर्क या दलील कर सकता है, जो इशारेसे ही बातको समझ जाता है,—वह पण्डित कहलाता है।

जो शख़्स पढ़ा-लिखा न होकर घमण्डी हो, दरिद्री होकर भी ऊँची-ऊची वासनाओंके भोगने की इच्छा करता हो तथा खोटे कामोंसे धन पैदा करना चाहता हो, वह मूर्ख कहलाता है।

जो अपने कामको छोड़ देता है, किन्तु दूसरेके कामको सिद्ध करना चाहता है; सहायता करने लायक़ होने पर भी मित्रकी सहायता नहीं करता और सहायता करने लायक़ न होने पर सहायता करना चाहता है,—वह मूर्ख कहलाता है।

जो उचित चीज़ोंको छोड़ता और अनुचित चीज़ों को चाहता है तथा बलवानसे दुश्मनी करता है,—वह मूर्ख कहलाता है।

जो दुश्मन को दोस्त समझता है और दोस्त को दुश्
समझता है तथा दोस्तको नुक़सान पहुँचाना चाहता है
नीच कर्म करता है, वह मूर्ख कहलाता है ।

जो सारा काम नौकरोंसे ही कराया चाहता है, आप
काम करनेसे जी चुराता है और जल्दी करने लायक़ का
वृथा टालमटोल करके विलम्ब करता है, वह मू
होता है ।

जो पितरोंका श्राद्ध नहीं करता, देवताओं की पूजा
करता और भले मित्रोंसे प्रीति नहीं रखता, वह मू
होता है ।

जो किसीके यहाँ विना बुलाये जाता है, विना कुछ
ही अपने-आप बकने लगता है और अविश्वास-योग्य मनु
का विश्वास कर लेता है, वह मूर्ख कहलाता है ।

जो शख़्स दूसरेके काममें दोष निकालता है और
वैसाही दोष-युक्त काम करता है—वह मूर्ख होता है ।

जो शख़्स अपने तईं सामर्थ्यवान समझ कर, धर्म-अ
हीन कर्मोंसे, न मिलने-योग्य चीज़के प्राप्त करनेकी इ
करता है, वह मूर्ख कहलाता है ।

जो शख़्स हुकूमत न करने लायक़ मनुष्य पर हुकू
करता है, जो राजाके बिना अकेला रनवासमें जाता है
जो कञ्जूस आदमी की नौकरी करता है, वह महामूर्ख क
लाता है ।

जो अत्यन्त विद्वान् और धनवान् होने पर घमण्डको पास नहीं आने देता, वह पण्डित कहलाता है।

जो मनुष्य अकेला ही धनका सुख भोगता है और अकेला ही अच्छे-अच्छे महलोंमें रहता है तथा अकेलाही नाना प्रकार के षटरस भोजन करता है ; किन्तु कुटुम्बियों और नौकरों को इस सुखमें शरीक नहीं करता, वह निर्दयी है।

मनुष्य अकेलाही पाप करता है और अकेलाही अपने किये हुए पापका फल भोगता है। पापकर्त्ताके साथियोंको पाप नहीं लगता ; पाप अपने करनेवालेके ही पीछे पड़ता है।

धनुर्धारी का तीर निशाने पर लगनेसे एकही जीवका नाश करता है और कभी निशाना चूक जानेसे निष्फल भी चला जाता है, किन्तु चतुर मनुष्य अपनी बुद्धिके बलसे राजा सहित राज्यका भी नाश कर सकता है।

मनुष्य को चाहिये, कि अकेला ही अच्छे-अच्छे भोजन न करे, अकेला किसी विषय पर विचार न करे, अकेला रास्ता न चले और सब सो जावें, तब आप अकेलाही जागता न रहे।

ईश्वर एक है। महाराज! आप उसे नहीं जानते। वह मनुष्यों को दुःखसे इस भाँति पार लगा देता है, जैसे नाव समुद्रके पार लगा देती है।

क्षमाशील मनुष्य को सब कोई असमर्थ समझ लेते हैं। परन्तु, वास्तवमें, क्षमावान् असमर्थ नहीं है। क्षमावान् को

असमर्थ समझ कर उसका अनादर और अपमान न करना चाहिये। क्षमा ही परम बल है। क्षमा सामर्थ्यवानोंमें गुण और असमर्थोंमें भूषण है।

मनुष्य क्षमासे सब किसी को अपने वशीभूत कर सकता है। संसारमें ऐसा कोई काम नहीं है, जो क्षमा द्वारा सिद्ध न हो सके। जिसके पास क्षमा-रूपी तलवार है, उसका दुष्ट मनुष्य क्या बिगाड़ सकता है? जहाँ घास-फूस नहीं है वहाँ अग्नि पड़कर आप ही बुझ जाती है। क्रोधी मनुष्य अपने दोषोंसे आपही आफ़त में पड़ता है।

केवल धर्म ही से कल्याण होता है; अकेली क्षमा से ही शान्ति होती है; अकेली विद्यासे ही सन्तोष होता है; और किसी जीवके प्राण नाश न करने से ही सुख मिलता है।

मनुष्य मीठा बोलने और महात्माओं के साथ प्रेम रखनेसे ही इस जगत् में प्रतिष्ठा पाता है।

जो मनुष्य न मिल सकने योग्य चीज़को चाहता है और जो शक्ति-रहित होकर गुस्सा करता है,—ये दोनों मनुष्य अपने ही शरीरको नाश करते हैं।

गृहस्थ होकर काम-धन्धा न करनेवाले की और संन्यासी होकर काम करनेवाले की अप्रतिष्ठा होती है।

जो समर्थ होने पर भी क्षमा करता है और निर्धन होने पर भी दान करता है, वह स्वर्गके भी सिर पर रहता है।

न्यायसे कमाये हुए धनके नाश होनेके दो ही कारण हैं,—कुपात्र को देना और सुपात्र को न देना।

जो मनुष्य धनवान होकर दान न करे और धनहीन होकर तपस्या न करे, उसके गलेमें पत्थर बँधवाकर उसे पानी में डुबो देना चाहिये।

जो संन्यासी होकर योग-साधन करता है और जो क्षत्रिय होकर रण-भूमिमें प्राण त्यागता है, वह सीधा स्वर्गको जाता है।

मनुष्य तीन भाँतिके होते हैं (१) उत्तम, (२) मध्यम, (३) अधम। उत्तम पुरुष को उत्तम, मध्यम को मध्यम, और अधमको अधम काम देना चाहिये। मतलब यह है कि, तीन तरहके आदमी और तींनही तरहके काम होते हैं। जो जिस योग्य हो, उसे वैसा ही काम देना चाहिये।

स्त्री, नौकर और बेटा,—ये तीन निर्धन कहलाते हैं। इन तीनोंके पास जो चीज़ होती है, उसका मालिक उनका मालिक ही होता है।

पराया धन छीनने, पर-स्त्रियोंसे व्यभिचार करने और अपने मित्रोंके त्याग देने,—इन तीन दोषोंसे मनुष्यका नाश होता है।

काम, क्रोध और लोभ,—ये तीनों ही नरकके दरवाज़े हैं। इन तीनोंसे मनुष्यका नाश होता है; अतएव इन तीनोंको बिल्कुल ही छोड़ देना चाहिये।

हे राजेन्द्र! वर पाना, पुत्र-जन्म होना, राज्य पाना और शत्रुको सङ्कटसे बचाना,—ये चारों सुख बराबर हैं।

विद्वान् और बलवान राजाको मूर्ख, आलसी, खुशामदी और जल्दबाज़ लोगोंसे सलाह न करनी चाहिये।

हे राजन्! अग्निहोत्र करना, चुप रहना, पढ़ना और यज्ञ करना—ये चारों कर्म सुखदायी हैं। परन्तु इन चारोंके भली भाँति न करनेसे दुःख होता है।

हे राजेन्द्र! पिता, माता, अग्नि, अपना शरीर और गुरु—इन पाँचोंको अग्नि कहते हैं। इन पाँचोंकी सेवा करना मनुष्य का धर्म है।

मनुष्यको चाहिये कि नींद, ऊँघाई, डर, गुस्सा, सुस्ती और दीर्घसूत्र—विचार ही विचारमें काम करनेमें देर करने का स्वाभाव—इन छः आदतोंको छोड़ दे; क्योंकि ये मनुष्योंके लिये सदा दुःखदायी हैं।

जिस तरह टूटी-नावको मनुष्य निकम्मी और प्राण-हानि करनेवाली समझकर छोड़ देते हैं; उस तरह ही मनुष्य इन को त्याग दे :—(१) न पढ़ानेवाला उस्ताद, (२) अपढ़ प्रोहित, (३) रक्षा न करनेवाला राजा, (४) कड़वे वचन बोलनेवाली स्त्री, (५) गाँवमें बसने की इच्छा रखनेवाला ग्वालिया और (६) वनमें बसनेवाला नाई।

मनुष्य को चाहिये कि सच, दानशीलता, फुर्ती, किसीको देखकर न जलना, क्षमा और सन्तोष—इन छः गुणोंको कदापि न छोड़े।

इस संसारमें ये सुख हैं—(१) धनकी आमद, (२) शरीर

निरोग रहना, (३) मीठे-मीठे वचन बोलनेवाली प्यारी स्त्री, (४) आज्ञा पालन करनेवाला पुत्र, (५) धन पैदा करानेवाली विद्या।

हे भारत! बेख़बर लोगोंसे चोरों की, रोगियोंसे वैद्यों की, कामी पुरुषोंसे स्त्रियों की, यजमानोंसे प्रोहितों की और मूर्खोंसे विद्वानों की रोज़ी (जीविका) चलती है।

गाय, नौकरी, खेती, स्त्री और विद्या,—ये पाँचों ऐसी हैं कि, मनुष्य इनको तरफ़से ज़रा भी बे-ख़बर होजाय, तो ये सब नष्ट हो जाती हैं।

काम निकल जानेपर मनुष्य अपने भलाई करनेवाले को, विद्या पढ़ लेने पर शिष्य गुरु को, शादी हो जानेपर बेटा मा को, अकामी पुरुष स्त्री को, नदी पार हो जाने पर मनुष्य नाव को और आराम हो जाने पर रोगी वैद्य को छोड़ देता है।

मनुष्य के लिये इस लोकमें ये छः सुख हैं :—(१) निरोग रहना, (२) किसी का क़र्ज़दार न होना, (३) देश-विदेश फिरना, (४) विद्वानों की सुहबत करना, (५) स्वाधीन होकर कमाना, और (६) सदा निर्भय होकर रहना।

नीचे लिखे हुए मनुष्य सदा दुःखी रहते हैं--(१) दूसरों से ईर्षा-द्वेष रखनेवाला (२) दूसरोंसे घृणा करनेवाला (३) असन्तोषी, (४) हर समय क्रोध-मुखी, (५) बात-बातमें सन्देह करनेवाला (६) पराधीन होकर जीविका चलानेवाला।

राजा को नीचे लिखे हुए दोष छोड़ देने चाहियें, क्योंकि इन दोषोंसे राजाको कष्ट होता है और वह कुटुम्ब-सहित नाश भी हो जाता है :—(१) अतिशय स्त्री सेवन, (२) जूआ खेलना, (३) शराब पीना, (४) कड़वी बातें मुँहसे निकालना, (५) सख़्त सज़ा देना, (६) काम बिगाड़ना, और (७) शिकार खेलना।

मनुष्योंमें निम्नलिखित आठ गुण भूषण हैं :—(१) बुद्धि (२) अच्छे कुलमें जन्म, (३) इन्द्रियोंको वश करना, (४) पराक्रम, (५), विद्या, (६) थोड़ा बोलना, (७) श्रद्धा और शक्ति-अनुसार दान करना और (८) अपने उपकार—ऐहसान—करनेवाले के उपकार को मानना।

शराब आदि पीनेवाला, मतवाला, बहुत से काम करने से घबराया हुआ, पागल, क्रोधी, जल्दबाज़, लोभी, डरपोक और कामी,—ये दस प्रकारके मनुष्य सङ्गति करने लायक़ नहीं हैं। चतुर मनुष्यको इनसे दूर रहना चाहिये।

जो मनुष्य किसीको निर्बल नहीं समझता, जो चतुराई से दुश्मनकी भी सेवा करता है, जो ज़ोरावर से दुश्मनी नहीं करता और जो मौक़ा पड़ने पर अपना बल दिखाता है,—वही बहादुर गिना जाता है।

जो मनुष्य होशियार और चौकन्ना होकर अपने कार्य्य-साधनका उद्योग करता है, जो समय पड़ जानेपर दुःख सहता है और बुरे स्थान पर जाकर भयभीत नहीं होता, वह महात्मा कठिन

कामको सिद्ध कर लेता है और अपने दुश्मनों को भी जीत लेता है।

जो मनुष्य बिना मतलबके काम नहीं करता, आदमियों को घरसे नहीं निकलता, पापियोंसे सुलह नहीं करता, पर-स्त्रियोंसे बुरा काम नहीं करता, छल चोरी और चुगलख़ोरी नहीं करता तथा शराब वग़ैरः नशीली चीज़ोंसे परहेज़ करता है,—वह हमेशा सुखी रहता है।

जो क्रोधके वश होकर धर्म, अर्थ और कामका सेवन नहीं करता, जो अनादर होने से दुःखी नहीं होता और जो मित्रों के साथ वाद-विवाद नहीं करता,—वह पण्डित कहलाता है।

जो शख़्स किसीकी वृद्धि—उन्नति—देखकर नहीं जलता, जो कम बोलता है, जो वाद-विवादमें ग़म खाता है और क्रोध नहीं करता,—वह प्रशंसापात्र है।

जो मनुष्य सब किसी का प्यारा होना चाहे, उसे दुष्टोंकी चाल न चलनी चाहिये; अपने बल-भरोसे दुश्मनोंसे लड़ना न चाहिये और क्रोध में किसी को अप्रिय बात न बोलनी चाहिये।

जो मनुष्य शान्तस्वभाव आदमियों से शत्रुता नहीं करता, जो कभी घमण्ड नहीं करता और जो सदा अपने तईं तुच्छ समझ कर खोटा काम नहीं करता,—उसे 'आर्य्य-पुरुष' कहते हैं।

जो मनुष्य अपने सुख और पराये दुःख से राज़ी नहीं होता और जो किसी को कुछ देकर पछतावा नहीं करता,—उस पुरुषको "श्रेष्ठ पुरुष" कहते हैं।

विद्वान् और बुद्धिमान को नीचे लिखे हुए काम छोड़ देने चाहियें :—(१) बलका घमण्ड, (२) वहम, (३) चुगलख़ोरी, (४) पाप-कर्म, (५) राजाकी निन्दा और उससे वैरभाव, (६) दुश्मनी, (७) पागल और मतवालेसे विवाद।

जो मनुष्य अपने बराबरवाले से विवाह, मित्रता और बात-चीत करता है तथा जो अपने से अधिक गुणवान् पुरुष की सलाह लेकर या उसे आगे करके काम करता है, वह बुद्धिमान प्रशंसायोग्य है।

जो मनुष्य अपने अधीन मनुष्यों को बाँटकर थोड़ासा खाता है, बहुतसी मिहनत करके भी थोड़ी नींद लेता है और माँगने पर दुश्मनों को भी देता है,—उसका सदा भला होता है।

जिसके इच्छित कर्म को मनुष्य जानते हैं; किन्तु जिसकी गुप्त बात को कोई नहीं जानता, उसकी कभी हानि नहीं होती।

जो शख़्स सबका भला चाहता है, सच बोलता है, नम्रता से रहता है, निष्कपट भावसे चलता है;—वह मनुष्य शोभायमान लगता है।

जो मनुष्य अपने कामोंसे आप ही लज्जित होता है, वह

सबका गुरु होने योग्य है । वह मनुष्य महातेजस्वी सूर्य्य के समान प्रकाशित होता है ।

मनुष्यको चाहिये कि जिसका भला चाहे उसे बुरी-भली, प्रिय और अप्रिय सब तरहकी बातें कहे ।

जों काम विरुद्ध उपाय करने से या विना उपाय किये ही सिद्ध हो जाय, उस काम के करने का उद्योग न करना चाहिये । इसी भाँति जो काम अनेक तरह की तद्‌बीरें करने पर भी न बने, उसको भी न करना चाहिये ।

जिस काम के करने से अपना मतलब बने, उसको पहले से सोच लेना चाहिये और किसी काममें जल्दी न करनी चाहिये ।

इस कामके करनेसे मेरा क्या मतलब निकलेगा, इसका नतीजा क्या होगा और मुझमें कितनी ताक़त है, ऐसा सोच-समझ कर काममें हाथ लगाना चाहिये ।

जो मनुष्य विना समझे-बूझे काम करता है, वह उस मछलीकी भाँति मारा जाता है, जो कांटेमें लगे हुए खाने के पदार्थ के लालच से कांटे को खाकर अपने प्राण गँवा देती है ।

बुद्धिमान को खाने-लायक़ चीज़ ही खानी चाहिये । जिस चीज़ के खानेसे; परिणाम में सुख मिले, वही चीज़ उत्तम है ।

जो अज्ञानी मनुष्य वृक्ष के कच्चे फल तोड़ लेता है, उसे

मीठा-मीठा रस भी नहीं मिलता और साथ ही बीज भी नाश हो जाता है। जो चतुर पुरुष पके हुए फल तोड़ता है, उसे रस मिलता है और समय पर बीज की भी प्राप्ति होती है। उस बीज से फिर वृक्ष तय्यार हो जाता है और उसमें पुनः फल लगते हैं।

मनुष्य को भौंरे की चाल पर चलना उचित है। भौंरा पहले फूल को रक्षा करता है और पीछे उसका रस पीता है। भौंरा फूलोंका रस पीता है, किन्तु वृक्ष की जड़ नहीं काटता; उसी भाँति मनुष्योंको करना चाहिये।

जिस भाँति बाग़ का माली दरख़्तोंसे फूल चुन लेता है, किन्तु उन्हें काटता नहीं; उसी भाँति मनुष्यों को चलना चाहिये।

जिस तरह पत्थरों से आग निकाली जाती है; उसी तरह बुद्धिमान पुरुष मूर्खों से अच्छी बात, अच्छा काम और अच्छा धन्धा सीख ले।

जिस तरह पत्थरोंके बीचसे सोना निकाल लिया जाता है, वैसे ही चतुर पुरुषको बालक और मूर्ख की बातों से भी सारांश निकाल लेना चाहिये।

जो धातु या लकड़ी आपसे आप मुड़ जाती है, उसे तपाने की ज़रूरत नहीं होती। धातु और लकड़ीकी भाँति चतुर पुरुषको अपनेसे अधिक बलवान के सामने स्वयं नीचा हो जाना चाहिये।

पशुओंका मित्र मेघ है, मन्त्रियोंका मित्र राजा है, स्त्री का मित्र पति है और ब्राह्मणका मित्र वेद है।

सत्यसे धर्म की, योगसे विद्याकी, उबटनसे सुन्दरता की और अच्छे चाल-चलनसे कुलकी रक्षा होती है।

जो शख़्स पराये रूप, धन, बल सुख और सम्मानको देख कर कुढ़ता है, उसके रोगका इलाज नहीं है।

जो अपने कामको डर कर पहले ही छोड़ देता है, वह महाअज्ञानी समझा जाता है। जिस कार्य्यके करनेसे हानि होनेकी सम्भावना हो, वह काम मनुष्यको भूल कर भी न करना चाहिये और साथही अपनी राय भी जल्दी प्रकाशित न करनी चाहिये।

मूर्ख लोगोंमें विद्या, धन और सहाय्य,—ये तीन मद के कारण होते हैं, किन्तु ये ही तीनों सज्जनोंके लिए सुखकारी होते हैं।

सुन्दर और साफ़-सुथरे कपड़े पहननेवाला सभाको जीत लेता है; सवारीवाला रास्ते को कुछ नहीं समझता और अच्छे स्वभाववाला मनुष्य सब को अपने वश में कर लेता है।

मनुष्य में शील ही बड़ा गुण है। शील के न रहने से मनुष्यके जीवन, धन और भाई-बन्धु तथा मित्र आदिका भी नाश हो जाता है।

हे महाराज! निर्धन सदा मीठा भोजन करता है; क्योंकि

भूख लगने पर सब तरह की चीज़ ही मीठी लगती है; धनवान को भूख नहीं लगती, इससे उसे मिष्टान्न भी मीठा नहीं लगता। दरिद्री लोग जठराग्नि प्रबल होने से काठ या पत्थर को भी पचा जाते हैं; किन्तु धनवान सुन्दर हल्का भोजन भी नहीं पचा सकते।

हे राजन्! धनका नशा शराबके नशेसे भी तेज़ होता है; क्योंकि धनके मद से उन्मत्त पुरुष मालिक और नौकर को तुच्छ समझता है।

जो अज्ञानी अपना मन वश में किये विनाही अपने कुटुम्ब को वश में करना चाहे और जो पहले कुटुम्बको वश में किये विना ही दुश्मनको जीतना चाहे, वह महामूर्ख है; उसका कोई काम सिद्ध नहीं हो सकता। जो पहले अपने मनको अपने वशमें करता है, पीछे अपने कुटुम्बको अपने वशमें करता है, वह निस्सन्देह अपने शत्रुओं को परास्त कर सकता है।

इन्द्रियों को जीतनेवाले, दुर्जनों को दण्ड देनेवाले, जांच-तोल कर काम करनेवाले और धैर्य्यशील पुरुषके पास लक्ष्मी जाती है।

हे राजन्! यह काया रथ है। आँख कान प्रभृति दसों इन्द्रियाँ घोड़े हैं और मन सारथी है। चतुर मनुष्य को इस कायारूपी रथमें होशियारीसे चलना चाहिये।

दुर्जनों की सङ्गति न करनी चाहिये; क्योंकि बुरों की

सङ्गतिसे बहुधा सज्जन भी मारे जाते हैं। सभी जानते हैं कि, सूखी लकड़ीके साथ गीली लकड़ी भी जल जाती हैं।

हे राजन्! दुष्ट लोगोंमें शान्ति, साधुता, पवित्रता, सन्तोष, मीठे वचन, सच और स्थिरता (एक बात पर क़ायम रहना,) आत्मज्ञान, दान, पुण्य, धर्म और अपनी कही हुई बातकी पकाई, ये उत्तमोत्तम गुण नहीं होते।

हे राजेन्द्र! मीठी बात बोलनेसे सुख, बढ़ता है; कड़वी बातसे दुःख बढ़ता है; कुल्हाड़ी द्वारा काटा हुआ वृक्ष फिर बढ़ जाता है; तीर का घाव भी फिर भर जाता है; किन्तु वचनरूपी तीर द्वारा हुआ घाव फिर नहीं भरता। तीर की अनी को वैद्य निकाल सकता है, किन्तु बात की चूभी हुई नोक को वैद्य भी नहीं निकाल सकता; क्योंकि वह दिलके भीतर चुभ कर खटका करती है।

मुहसे निकली हुई कड़वी बात मनुष्यके मर्मस्थानोंमें छिद जाती है। इसलिये कड़वी बान सुननेवालेके दिलमें खटकती रहती है और वह रात-दिन उसी उधेड़ बुनमें लगा रहता है। चतुर पुरूष को किसीसे कड़वी अथवा बुरी लगनेवाली बात न कहनी चाहिये।

तक़दीर जिसे तकलीफ़ देना चाहती है, उसकी अक्लको पहलेसेही नाश कर देती है। अक्लके मारे जानेसे मनुष्य बुरे-बुरे काम करने लगता है। जब नाश होने का वक्त नज़-

द्रोक आता है, तब अक्ल और भी मारी जाती है; फिर मनुष्य के दिलमें अधर्म और अन्याय घर कर लेते हैं।

मदिरा पीने, झगड़ा करने, शत्रुता करने, स्त्री-पुत्र और ज़ात-बिरादरीवालोंसे मन-मुटाव रखने तथा वाद-विवाद करने को बड़े लोग बुरा कहते हैं और सबको ऐसे कर्मों से बचने की सलाह देते हैं।

चतुर मनुष्य निम्नलिखित आदमियों को कभी गवाह न बनावे :—हस्त-रेखायें देखकर फल बतानेवाला, कम तोलने वाला बनिया, पाखण्डी ज्योतिषी, दोस्त, दुश्मन, तथा रण्डी का भड़ुआ।

जो मनुष्य जगत्‌में सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके लिये अग्निहोत्र, विद्याभ्यास तथा यज्ञ करता है, उसका भला नहीं होता; किन्तु जो शख़्स उपरोक्त कर्मों को विना किसी प्रकार की इच्छाके करता है, उसका कल्याण होता है।

घरमें आग लगानेवाला, विष देनेवाला, हथियार बनाने-वाला, अधूरा ज्योतिषी, मित्रसे द्रोह रखनेवाला, पर-स्त्रियों से बुरा कर्म करनेवाला, गर्भ गिरानेवाला, गुरुके पलँग पर पैर रखनेवाला, ब्राह्मण होकर शराब पीनेवाला, वेदकी निन्दा करनेवाला, ईश्वर को न माननेवाला, डाकू, पराई चीज़ ज़बरदस्ती छीननेवाला,—ये सब लोग ब्रह्महत्यारेके समान पापी होते हैं।

सुन्दरता की परीक्षा उजियालेमें होती है, धर्मकी परीक्षा

चालचलनसे होती है, सज्जनता की परीक्षा काम पड़नेसे होती है, बहादुरी की परीक्षा लड़ाईके समय होती है, बुद्धिमानीकी परीक्षा कठिन कामके समय और मित्रों की परीक्षा आपत्तिकालमें होती है।

बुढ़ापा सुन्दरता को नाश कर देता है, आशा धीरज को नाश कर देती है, मौत प्राण नाश कर देती है, दुर्ज्जनता धर्म का नाश कर देती है, क्रोध धनका नाश कर देता है, दुष्ट आदमी की चाकरी शीलता को नाश कर देती है, स्त्री-इच्छा लज्जा को नाश कर देती है और घमण्ड सबही गुणोंको नाश कर देता है।

अच्छे-अच्छे काम करनेसे धन मिलता है, और गम्भीरतासे बढ़ता है तथा इन्द्रियोंके जीतनेसे वह मनुष्यके पास चिरस्थायी हो जाता है।

बुद्धिमान होनेसे, अच्छे कुलमें जन्म लेनेसे, इन्द्रियों को जितनेसे, विद्याभ्यास करनेसे, पराक्रम दिखानेसे, दान देने, शक्ति-अनुसार बोलने तथा अपने उपकारीके उपकारके माननेसे मनुष्य प्रसिद्ध होता है।

यज्ञ करना, विद्याभ्यास करना, दान देना, तप करना, सच बोलना, क्षमा करना, दया रखना और लालच न करना— ये आठ धर्मके रास्ते हैं। इन आठोंमेंसे पहले चार पाखण्डी लोग भी कर सकते हैं; परन्तु शेषके चार धर्मों को महान-पुरुषोंके सिवा और लोग नहीं कर सकते।

जिस सभामें बूढ़े पुरुष न हों, वह सभा नहीं है। जो धर्मकी बात न कहें, वह बूढ़े नहीं हैं। जिसमें सत्य न हो वह धर्म नहीं है और जिसमें छल कपट हो, वह सत्य नहीं है।

पापी को पापका बुरा फल मिलता है और धर्मात्मा को धर्मका अच्छा फल मिलता है। धर्मात्मा मनुष्यको पाप-कर्म से बचना चाहिये। बारम्बार पाप करनेसे बुद्धि घटती है और ज्यों ज्यों बुद्धिका नाश होता है त्यों त्यों मनुष्य अधिक पाप करता है। धर्म करनेसे बुद्धि बढ़ती है। बुद्धि बढ़नेसे मनुष्य धर्मही धर्ममें लगा रहता है। धर्मके प्रभावसे मनुष्य की कीर्त्ति बढ़ती है और जिसकी कीर्त्ति होती है, वह स्वर्गमें जाता है।

दूसरेको देखकर जलनेवाला, पराया काम बिगाड़नेवाला, कठोर बात कहनेवाला, सब किसीसे शत्रुता रखनेवाला और दुष्ट मनुष्य की चाल पर चलनेवाला मनुष्य नाश हो जाता है।

जो परायी उन्नति देखकर नहीं कुढ़ता और अपनी बुद्धि को ठिकाने रखता है, वह सदा सुख पाता है।

मनुष्य को चाहिये कि दिनमें ऐसा काम करे, जिससे रात को सुखसे सोवे और आठ महीने ऐसा काम करे, जिससे बाकी महीने सुख :पावे। पहली उम्रमें ऐसा काम करे, जिससे बुढ़ापेमें सुख पावे और ज़िन्दगी-भर ऐसा काम करे, जिससे मरने पर सुख मिले।

भोजन की प्रशंसा उस समय करनी चाहिये, जबकि वह भली-भाँति पच जावे। स्त्री की तारीफ़ तब करनी चाहिये, जब वह भलमनसईसे जवानी बिता दे। वीर पुरुषकी तारीफ़ उस समय करनी चाहिये, जब कि वह लड़ाईमें विजय प्राप्त करे और तपस्वी की प्रशंसा उस समय करनी चाहिये, जब वह तपस्या पूरी कर ले।

शूरवीर, विद्वान् और सेवा करने का ढङ्ग जाननेवाला मनुष्य सोनेसे फूली हुई पृथ्वी का सुख भोगते हैं।

महामुनि आत्रेयने शिष्योंसे कहा था, कि दिलमें कालापन न रखना, सच बोलना और सब जीवोंके सुख-दुःख़को अपने दुःख-सुखके बराबर समझनाही धर्म है।

तुमसे जो शख़्स तुम्हारा दिल बिगाड़नेवाली कठोर बात कहे, उसका जवाब मत दो और अपने क्रोधको रोको। तुम्हारा रुका हुआ क्रोध बुरी बात कहनेवाले को नाश कर देगा और क्षमाके प्रतापसे तुम्हारा भला होगा।

चतुर मनुष्य को चाहिये कि किसीसे दिल बिगाड़नेवाली बात न कहे, किसीका अपमान न करे, घमण्ड न करे, नीचकी चाकरी न करे, मित्रोंसे शत्रुता न करे, नीच कर्म न करे और किसीसे रूखी बात न बोले।

मनुष्य को चाहिये कि रूखी बात किसीसे न कहे ; क्योंकि रूखी और कड़वी बात मनुष्यके मर्मस्थान, हृदय, हड्डी और प्राणको जलाकर ख़ाककर देती है। रूखी वाणीसे धर्म नाश

होता है। रूखी बात मनुष्यके हृदयमें काँटे की भाँति खटकती है।

बहुत बोलनेसे न बोलना अच्छा है। बोलनेसे सच बोलना उत्तम है। सचमें मीठी बात मिलाकर बोलना अच्छा है और मीठी बात धर्म-युक्त बोलना अच्छा है।

मनुष्य जैसे आदमी की सङ्गति करता है और जैसोंके साथ बैठता और जैसा बनना चाहता है, वैसा ही हो जाता है।

मनुष्य अपने दिलको जहाँसे फेरना चाहता है, वह वहाँसे फिर जाता है। जब दिल सब जगहसे फिर जाता है, तब मनुष्यको कुछ भी दुःख नहीं रहता। जिसे कुछ दुःख नहीं रहता, वह किसीको अपने अधीन करनेकी इच्छा नहीं रखता और न वह किसीसे वैर-विरोध करता है और न किसीको मारना चाहता है। वह न तो अपनी निन्दा सुनकर दुःखी होता है और न प्रशंसा सुनकर सुखी होता है। ऐसे मनुष्यका स्वभाव समान हो जाता है। वह सबका भला चाहता है और किसीकी हानि नहीं चाहता। ऐसेही पुरुषको उत्तम पुरुष कहते हैं।

जो बिना मतलब मुँहसे बात न निकाले ; जिसे जिस चीज़के देनेका वचन देदे, उसे, वह चीज़ देदे और शत्रु के दबानेका अवसर देखता रहे, वह मध्यम पुरुष कहलाता है।

जिसको लड़ाई-झगड़ा और कलह प्यारा लगे, जो किये हुए उपकार को न माने, जो किसीसे मित्रता न रक्खे और

सदा दुष्टोंके से कर्म करता रहे, वह नीच पुरुष कहलाता है।

जो किसी पर भी विश्वास न करे, मित्रोंका अनादर करे और अपने किये हुए काममें भी सन्देह और शङ्का करे, वह अधम पुरुष कहलाता है।

मनुष्यको हमेशा भले आदमियोंकी सुहबत करनी चाहिये, किन्तु अपना मतलब निकालनेके लिये मध्यम पुरुषके पास जानेमें भी हर्ज नहीं है; परन्तु सुख चाहनेवाले को नीच मनुष्यके पास तो किसी हालतमें भी न जाना चाहिये।

मनुष्य नीचों की सङ्गतिसे नीच हो जाता है। नीच होने से उसकी बुद्धि और उसका मन सब ख़राब हो जाते हैं, फिर उसकी प्रशंसा नहीं होती। प्रशंसा न होनेसे कुलका, गौरव नाश हो जाता है।

जिस मित्रमें पिताके समान विश्वास हो, वही मित्र है। जो विना किसी कारण के मित्रता करे, वही मित्र है। जिसके भयसे डर लगे और जिसके कामोंसे सन्देह उत्पन्न हो, वह मित्र नहीं है।

जिसका चित्त चलायमान हो, जो बूढ़ोंकी सेवा न करे, जिसकी बुद्धि एक ठिकाने न रहे, वैसे मनुष्य की मित्रता का कुछ भरोसा नहीं।

जिस मनुष्य का मन, चित्त और शरीर चञ्चल है; जो इन्द्रियोंके अधीन है, उस मनुष्यको धर्म और अर्थ इस भाँति

छोड़ देते हैं, जिस भाँति हंस जलहीन तालाव को छोड़ देते

जिसका चित्त नदी की नावकी भाँति चञ्चल हो, जो बि किसी कारणके क्रोध करे और बिना किसी वजहके राज़ी जाय, वह मूर्ख है।

मनुष्य बारम्बार पैदा होता और बारम्बार मरता है; बार म्बार धनवान और बारम्बार निर्धन होता है; बारम्बार भी माँगता है और बारम्बार दानी बनाता है। कभी वह सु शोकके वशीभूत होता है और कभी शत्रुओंको शोक कराता है। सुख, दुःख, मरण और जीवन प्रायः सदा हुआ ही करते ; अतः मनुष्यको चाहिये कि सुख और दुःखको सुख दुःख न माने।

हे राजेन्द्र! विद्या, तपस्या, इन्द्रिय-दमन और निर्लोभता इनके सिवा मुझे और कोई शान्तिका उपाय नज़र नहीं आता।

बुद्धिसे भयका नाश होता है; तपस्या करनेसे मोक्ष मिलती है; गुरुओं की सेवा करनेसे ज्ञान की प्राप्ति होती है और योग-साधन करनेसे शान्ति मिलती है।

अच्छा विद्याभ्यास करने, अच्छा युद्ध करने, अच्छे कर्म और उत्तम तपस्या करने का फल अन्त में मिलता है।

जिसके मनमें किसी प्रकार का दुःख होता है वह न तो चारण-भाटों की स्तुति-गान से, न मनमोहिनी स्त्रियों के हाव-भाव से प्रसन्न होता है।

जिस भाँति अनेक डाली पत्तों और फलोंसे सदा हुआ अकेला वृक्ष हवाके झकोरोंसे गिर पड़ता है; उसी भाँति अकेला आदमी दुश्मनोंसे मारा जाता है।

जिस जगह बहुतसे वृक्ष एक दूसरे से सटकर पास-पास लगे रहते हैं, वहाँ तेज़ हवाके झकोरे कुछ नहीं कर सकते; क्योंकि वह आपस में मिले हुए रहते हैं जो आपसमें मिले रहते हैं उन पर शत्रु का बस नहीं चलता।

अन्याय-कर्मों से पैदा किया हुआ धन वंशका नाश कर देता है; किन्तु न्यायसे कमाया हुआ धन बेटों पोतों तक स्थिर रहता है। अतः मनुष्यको सुमार्ग से ही धन संग्रह करना चाहिये।

जो घूँसोंसे आकाश को पीटना चाहता है, जो आकाशके इन्द्र-धनुष को नवाना चाहता है, जो सूरज और चन्द्रमा की किरणों को पकड़ना चाहता है, जो दुष्टको उपदेश देता है; जो थोड़े नफ़ेसे राज़ी हो जाता है, जो बहुत दिन तक दुश्मन की चाकरी करना चाहता है, जो स्त्री की रक्षा करके अपनी भलाई चाहता है, जो न कहने लायक़ बात कहता है, जो कोई अच्छा काम करके अपनी प्रशंसा आप करता है, जो अच्छे कुलमें जन्म लेकर नीच कर्म करता है, जो कमज़ोर होकर जबरदस्त से बैर करता है, जो अविश्वासी से अपनी बात कहता है, जो न करने लायक़ कामके करने की इच्छा रखता है, जो पुत्र-बधू से हँसी-ठट्ठा करता है, पुत्रकी बहू से

भय नहीं करता, जो दूसरे के खेतमें अपना बीज बोता है, स्त्रियोंसे बाद करता है. जो किसीका धन लेकर कहता है हमें याद नहीं हमने तुम्हारा धन कब लिया, जो भिखारी आगे अपनी तारीफ़ करता है और दुर्ज्जन को सज्जन बना चाहता है, वह मूर्ख है। इन सत्तरह प्रकारके मनुष्योंको बांध के लिये, मृत्युके समय, यमदूत हाथोंमें फाँसी लेकर आते हैं।

जो शख़्स जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये। दुर्ज्जनके साथ दुष्टता और सज्जनके साथ साधुताका बर्ताव करना चाहिये।

वृद्धावस्थासे सुन्दरता, आशासे धैर्य्य, मृत्युसे प्राण, द्वेषसे धर्म, स्त्री-इच्छासे लाज, दुष्टकी चाकरी से सुचरित्रता और क्रोधसे लक्ष्मी नाश हो जाती है; किन्तु घमण्ड से तो सब कुछ ही नाश हो जाता है।

बहुत घमण्ड करने, बहुत झगड़ा-फिसाद करने, किसीकी चीज़ न देने, क्रोध करने, अपना ही पेट पालने और मित्रोंसे शत्रुता रखने से मनुष्य की उम्र घट जाती है। उपरोक्त छः दोष मनुष्य की उम्र काटने में तेज़ तलवारका काम करते हैं। मौत से कोई नहीं मरता। जो मरता है, उपरोक्त दोषों से मरता है।

जो अपने ऊपर विश्वास रखनेवाले की स्त्री से सम्भोग करता है, जो ब्राह्मण-वंश में जन्म लेकर वेश्यागमन करता है

अथवा शराब पीता है, जो ब्राह्मणों की आजीविका नाश करता है और उन्हें नौकर रखता है,—वह ब्रह्महत्यारे के समान पापी समझा जाता है।

जो विद्वानों की बात मानता है, नीति-शास्त्रको जानता है, सब कुटुम्ब से बचा हुआ अन्न आप खाता है, किसी को देखकर नहीं जलता, बिना बुरा काम किये नहीं घबराता, दूसरे के किये उपकार को मानता है, सच बोलता है और सब के साथ नम्रता से बर्ताव करता है,—वह विद्वान्। ऐसा मनुष्य स्वर्ग को जाता है।

हे राजेन्द्र! हमेशा मीठी-मीठी बातें कहनेवाले मनुष्य बहुत हैं; किन्तु कड़वी और हितकारी बात के कहने और सुननेवाले बहुत कम हैं। जो मनुष्य राजा के प्रेम और क्रोध का ध्यान भुलाकर, कड़वी और हितकारी बात कहता है, वही राजाका सच्चा मददगार है।

बुद्धिमानको चाहिये कि कुटुम्ब की भलाई के लिये एक आदमी को त्याग दे, गाँव की भलाई के लिये कुटुम्ब को छोड़ दे, नगर की भलाई के लिये गाँव को छोड़ दे और अपनी भलाई के लिये कुटुम्ब, गाँव और नगर आदि सब को छोड़ दे।

विपत्तिकालके लिये धन बचाकर रखना चाहिये; धन से कुटुम्ब की रक्षा करनी चाहिये; किन्तु अपनी रक्षा धन और स्त्री दोनों से ही करनी चाहिये।

जूआ बैर की जड़ है ; अतः बुद्धिमानों को हँसी में भी जूआ न खेलना चाहिये। पहले समय में जिन्होंने जूआ खेला, उन्होंने घोर कष्ट पाया।

जो नौकर अपने मालिक की बातों पर ध्यान न दे, उसकी बातों का अनादर करे, कडवी वाणी बोले, कहे हुए कामको न करे और अपनी अक़्ल का घमण्ड करे,—उस नौकर को फ़ौरन से पहले निकाल देना चाहिये।

अल्प-भोजी मनुष्य को रोग नहीं होता। थोड़ा खानेवाले के आयु, बल और सुख बढ़ते हैं तथा उसका पुत्र बलवान होता है। महात्मा लोग बहुभोजी मनुष्यको बुरा कहते हैं।

जो मनुष्य दान न दे, गाली दे, विद्या न पढ़े, सदा वनमें रहे, आदर-योग्य मनुष्य का आदर न करे, दयाहीन हो, हर किसी से दुश्मनी करे और किसी का उपकार न माने,—वह ख़राब आदमी है। ऐसे आदमी से घोर दुःख पड़ने पर भी भीख न माँगनी चाहिये।

जो हमेशा बुरे काम करे, जो सदा ग़लतियाँ करे, जो हमेशा झूठ बोले, जिसकी प्रीति का टिकाव न हो, जिसके मन में प्रेम-भाव न हो, जो अपने तईं बहुतही होशियार माने, उससे भूल कर भी प्रेम न करना चाहिये।

धनसे सहायता करनेवाले मिलते हैं और सहायकों से धन की आमद होती है। धन और सहायकों का आपस में

ऐसा सम्बन्ध है कि, बिना एक के दूसरे का काम ही नहीं निकल सकता।

मनुष्य को चाहिये कि पुत्र को विद्या पढ़ावे, उसको सब तरह के ऋण से उऋण करदे और शेष में उसे धन्धे से लगादे। कन्या हो तो उस की शादी, अच्छा घर और वर देख कर, कर दे। अन्त में आप वन में जाकर तप करे।

जो मनुष्य अपनी उन्नति करना चाहता है, जो उद्योग और कामका निश्चय रखता है तथा जिसमें तेज, साहस, शक्ति और धर्म्म होता है,—उससे दरिद्रता कोसों दूर भागती है।

मनुष्यको चाहिये कि, सुखकी इच्छा करने के पहले धर्म्म-कार्य्य करे ; जिस भाँति स्वर्ग में अमृतका नाश नहीं होता, उसी भाँति धर्मात्मा का अर्थ नाश नहीं होता।

जो मनुष्य समयानुसार धर्म्म, अर्थ और काम का सेवन करता है, वह इन तीनों के प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

हे राजन्! जो आफ़त आजाने पर भी नहीं डरता तथा जो क्रोध और हर्ष के वशीभूत नहीं होता, वही सुख भोग करता है।

चतुर पुरुष, स्त्री, राजा, सर्प, मालिक, दुश्मन, भाग्य और उम्रका विश्वास नहीं करते।

गृहस्थ के घर में जब कोई शख़्स आवे, तब उसे बैठने को आसन और पीनेको जल देना चाहिये ; पीछे उसका क्षेमकुशल पूछकर, उसे भोजन आदि कराना चाहिये।

वेद पढ़ा हुआ ब्राह्मण जिस मनुष्य से मधुपर्क, गौ और भोजन न पावे ; उसका जन्म वृथा ही समझना चाहिये ।

जिसके स्वभाव में क्रोध न हो, जो समस्त पदार्थों को लोहे के समान समझे, जिस के दिल में शोक घर न कर सके, जो निन्दा और प्रशंसा को समान समझे, जो विना मतलब भ्रमण करता हो, उसे भिक्षुक कहते हैं। उसका सब तरह से सम्मान करना चाहिये ।

चतुर मनुष्य से शत्रुता करके ऐसा न समझना चाहिये, कि मैं दूर हूँ ; क्योंकि चतुर मनुष्य के हाथ बड़े लंबे होते हैं। वह दूर बैठा हुआ ही अपने शत्रु का नाश कर सकता है ।

विश्वास-योग्य मनुष्य का विश्वास करना चाहिये। विश्वास-योग्य नहीं है उसका विश्वास नहीं करना चाहिये। अविश्वास-योग्य का विश्वास करने से सर्व्वनाश हो जाता है।

मनुष्यको किसी की मसख़री न करनी चाहिये, अपने घरकी स्त्रियों को अपने वशमें रखना चाहिये, किसीका हिस्सा न छीनना चाहिये। सदा मीठी वाणी बोलना और नम्रता रखना उचित है। स्त्रियों से सदा मीठा बोलना ज़रूरी है; किन्तु उनके अधीन होजाना अच्छा नहीं है ।

महाभाग्यवती और पुण्यवती स्त्री आदर-योग्य है ; क्योंकि स्त्री घरका धन और घरकी शोभा है ।

जिस राजा का भेद कोई भीतरी और बाहरी आदमी न

जान सके, वह राजा सब जगह की ख़बर रख सकता है और उसका राज्य बहुत दिन तक रहता है।

मनुष्य को चाहिये कि जब तक काम सिद्ध न हो जाय, तब तक उस कामका भेद किसी को न दे। जब काम बन जाय, तब बेखटके उसे कामको प्रकाशित कर दे।

राजा को जब धर्म्म या राज्य-सम्बन्धी कामोंका विचार करना हो, तब ऐसे एकान्त स्थानमें बैठे जहाँ कोई न खासके। सलाह-सूत करनेके लिये पर्वत की चोटी, एकान्त अटारी और बिना घास का जङ्गल अच्छा समझा जाता है।

अपनी मन की बात मूर्ख मित्र, रोगी और दुश्मन से हरगिज़ न कहनी चाहिये और जाँच किये बिना किसीको अपना सलाह-कार अथवा मन्त्री न बनाना चाहिये;

जो शख़्स बुरे काम करता है, वह उन कामों के हो चुकते ही आप भी हो चुकता है अर्थात् नाश हो जाता है। अच्छे कर्म्म करने से सुख मिलता है और अच्छे कर्म्म न करनेसे पीछे पश्चात्ताप करना पड़ता है।

जो बिना कारणके क्रोध नहीं करता और बिना कारण के खुश नहीं होता, जो खुद अपने हाथों से काम करके देखता है, जो अपने धन की सम्हाल आप रखता है, वह राजा बहुत दिन तक राज्य करता है।

दुश्मन को पकड़ कर कभी नहीं छोड़ना चाहिये। यदि ताक़त हो तो अवश्य नाश कर देना चाहिये। जीते हुए शत्रु को छोड़ देने से भारी हानि होनेका खटका रहता है।

देवता, ब्राह्मण, बूढ़े, बालक, राजा और रोगी पर कभी नाराज़ न होना चाहिये। बुद्धिमान् को उचित है कि मूर्खों की भाँति लड़ाई-झगड़ा न करे; क्योंकि बैर-विरोध करने से बदनामी होती और आफ़त आती है।

जिसके खुश होने से कुछ फ़ायदा न हो और जिसके नाराज़ होने से कुछ नुक़सान न हो, ऐसे मालिक को नौकर लोग इस भाँति त्याग देते हैं जिस भाँति स्त्रियाँ नपुंसक पतियोंको त्याग देती हैं।

जो विद्या, बुद्धि, शील, जाति और उम्र में बड़े हैं, उनका अनादर मूर्खों के सिवा और कौन कर सकता है? अर्थात् उनका निरादर मूर्ख ही करते हैं और सब लोग तो आदर ही करते हैं।

दुश्चरित्रवालों, मूर्खों, परायी निन्दा करनेवालों, क्रोध करनेवालों तथा अधर्म्म करनेवालों पर ही विपत्ति पड़ती है।

छल न करने, दान देने, मर्य्यादा रखने और सबके भलेकी बात कहने से दुश्मन भी दोस्त हो जाते हैं।

किसी से छल न करनेवाला, सब काम करने की शक्ति रखनेवाला, पराया ऐहसान—उपकार—माननेवाला और सरल स्वभाव का मनुष्य, निर्धन होनेपर भी, सबका मित्र बना रहता है।

जिसका चित्त हर समय स्त्रियों में लगा रहता है, जो बावले और नीच लोगों की सङ्गति करता है, जो दुष्ट लोगोंसे

संसर्ग रखता है,—वह अच्छा आदमी नहीं है। ऐसे मनुष्यसे दूर ही रहना चाहिये।

जिस घर में स्त्री, कपटी या बालक का अख़्त्यार हो, अथवा जिस घर में इनकी बात चलती हो, वह घर इस भाँति डूब जाता है जिस भाँति नदी में पत्थर डूब जाता है।

जो मनुष्य अपनी प्रयोजन-सिद्धि से ही मतलब रखता है और बहुत तृष्णा में नहीं पड़ता, हम उसे पण्डित कहते हैं।

हे राजेन्द्र! कोई मनुष्य तो दान करने से, कोई मीठी-मीठी बातें करने से और कोई अच्छी-अच्छी सलाहें देने से जगत् का प्यारा होता है।

विद्वान् और चतुर लोगों को वैर-विरोध करना उचित नहीं है। उन्हें मित्र के साथ मित्रता और शत्रु के साथ शत्रुताका वर्ताव करना चाहिये।

दुष्ट आदमी पराई निन्दा किया करते हैं; दूसरों को सङ्कट में फसा देखकर प्रसन्न होते हैं और नित्य सवेरे सोकर उठते ही लड़ाई-झगड़े करने की तदबीरें सोचते हैं।

जिनके देखनेसे ही पाप लगता है, उनके साथ बैठने से बड़े भारी भय की सम्भावना रहती है; ऐसे लोगों को धन देने या उनसे धन लेने, दोनों बातोंमें ही भय है।

अपना मतलब गाँठनेवाले, आपस में वैर-विरोध करनेवाले, दुष्ट और बेहया लोगों की सङ्गति कदापि न करनी चाहिये; क्योंकि जब ऐसे लोगों से प्रेम नहीं रहता, तब सब सुख नाश

हो जाते हैं। मित्रता का सुख दुष्ट मनुष्यों के साथ प्रेम करने से नहीं मिलता; अतः ऐसे स्वार्थी और नीच लोगोंसे पहले ही प्रेम न करना चाहिये।

दुष्ट मित्र अपने मित्र की बदनामी और हानिकी तद्बीर करता है और ज़रासा अपराध हो जाने पर भी जामे से बाहर हो जाता है। और पीछे बड़ी-बड़ी कठिनाइयों से भी शान्त नहीं होता। इसलिये बुद्धिमान को उचित है कि दुष्ट, कपटी और अयोग्य मित्र को पहचान कर दूर से ही हाथ जोड़ दे।

अपने जाति-भाइयों के साथ बैठकर भोजन करना चाहिये; उन लोगों से प्रेमपूर्व्वक अच्छी-अच्छी बातें करनी चाहियें; क्योंकि जाति ही मनुष्य को डुबो देती है और वही पार लगा देती है।

मनुष्य को बिना विद्या अभ्यास किये और बिना वृद्ध पुरुषों की सेवा किये कुछ भी काम न करना चाहिये।

चाहें अच्छे कुल में जन्म हो, चाहें बुरे कुल में; जो शख़्स धर्म्म की मर्य्यादा को नहीं तोड़ता और इन्द्रियों के अधीन नहीं होता तथा जो विद्वान् और ज्ञानवान है, वह मनुष्य अच्छे कुल में जन्मे हुए मनुष्यों से अच्छा समझा जाता है।

जिन मित्रों के दिल मिले हुए हैं, जो आपस के सुख को सुख और दुःख को दुःख समझते हैं, जिनकी बुद्धि समान है, उनका प्रेम-भङ्ग कदापि नहीं होता।

मूर्ख, घमण्डी, क्रोधी, साहसी और पापी से प्रेम न करना चाहिये; किन्तु ज्ञानवान, धर्म्मात्मा, सत्यवादी, गम्भीर, प्रेमी, जितेन्द्रिय और धर्मकी मर्य्यादा न तोड़नेवाले सज्जनों से प्रेम करना चाहिये।

उद्योग करनेसे ही लाभ होता है, उद्योग से ही धन और सुख मिलता है। उद्योगी मनुष्य सदा सुख भोग करता और धन-सञ्चय करता है। उद्योग के समान अच्छा कर्म और नहीं है।

जिस काम के करने से मनुष्य धर्म और यश का नाशक न हो, वही काम मनुष्य को करना चाहिये। बुद्धिमान को भूल कर भी अधर्म और अपकीर्त्ति का काम न करना चाहिये।

हे भारत! मूर्ख, रोगी, शराबी, और आलसियों को धन-लाभ नहीं होता तथा जो मनुष्य अजितेन्द्रिय और निरुत्साही हैं, उनके पास लक्ष्मी भूलकर भी नहीं आती।

जो नम्रता से रहता है, सच बोलता है और लज्जा रखता है, उसे मूर्ख लोग भले ही असमर्थ समझें, किन्तु उन्नति के शिखर पर वही चढ़ता है।

जो मनुष्य खूब उद्योग करता है, युद्धसे मुँह नहीं मोड़ता अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहता है और हरेक काम को खूब सोच-समझ कर करता है, वह सदा सुखी बना रहता है।

वेदों का फल यज्ञ है, विद्या का फल शील है, स्त्रीका फल पुत्र है और धन का फल धर्म है।

अपनी उन्नति का ख़याल रखना एवं ऐसा उद्योग करना जिससे उन्नति हो, इन्द्रियों को अपने अधीन करना, सब तरह के काम करना, ग़लती न करना, सब बातों को याद रखना और हरेक काममें विचार कर हाथ डालना,—ये सब उन्नति की जड़ हैं।

स्त्री, धूर्त्त, आलसी, अभिमानी, डरपोक, दुष्ट, चोर, देव या ईश्वर की निन्दा करनेवाले तथा उपकार न माननेवाले का विश्वास भूलकर भी न करना चाहिये।

जो धन बहुत से कष्ट उठाने, अधर्म-कार्य्य करने और दुश्मन के सामने गिड़गिड़ाने से हाथ आवे, उस धनकी इच्छा कदापि न करनी चाहिये। वैसे धन से धन-हीन रहना ही अच्छा है।

जो दान से मित्रों को, युद्ध से शत्रुओं को और खानपान एवं वस्त्रादि से कुटुम्बको जीतता है,—उसीका जीवन सफल है।

जो प्रतिष्ठा लाभ करने पर घमण्ड छोड़ देता है और अपनी शक्ति-अनुसार उत्तम कर्म करता है, वह बहुत अच्छा सुखी होता है।

झूँठसे धन कमाना, राजा से चुगलख़ोरी करना और गुरु की निन्दा करना—ये तीनों पाप ब्रह्महत्या के बराबर हैं।

विद्यार्थियोंको सुख नहीं है और सुखार्थियों को विद्या नहीं है; अतः जो विद्याके चाहनेवाले हैं उन्हें सुख से मुँह मोड़ लेना चाहिये और जो सुख के अभिलाषी हैं उन्हें विद्या को तिलाञ्जलि दे देनी चाहिये।

अग्नि काठसे नहीं अघाती, स्त्री पुरुष से नहीं धापती, समन्दर नदियों से तृप्त नहीं होता और काल प्राणियों की चटनी करने से सन्तुष्ट नहीं होता।

मनुष्य को उचित है कि अपने जीवन और धनके लोभ से अथवा स्त्री और भय के कारण से धर्म को न छोड़े; क्योंकि धर्म का नाश कभी नहीं होता; किन्तु सुख-दुःख का नाश जल्दी ही हो जाता है।

हे राजेन्द्र! आप विचार कर देखिये तो सही, कि इस भूतल पर कैसे-कैसे प्रतापी राजा हो गये हैं, जिन्होंने पृथ्वीके एक छोर से दूसरे छोर तक राज्य किया और सांसारिक सुख-ऐश्वर्य्य भोगे; लेकिन मरने के समय सब राज-पाट, महल मकान और सुख के समस्त सामान छोड़कर ख़ाली हाथ चले गये।

मनुष्य अपने प्यारे, आँखों के तारे पुत्र को, मर जाने पर, जङ्गल में ही छोड़ कर चल देता है अथवा उसे चिता में रखकर जला देता और बाल बखेर कर रोता है; परन्तु उस मरनेवालेके साथ कोई जाता नहीं।

मृत मनुष्यके धन-जायदाद को दूसरे ही भोगते हैं। उस के हाड़, माँस और खून को अग्नि जला-चला कर भस्म कर देती है। उसकी आत्मा के साथ कोई नहीं जाता। साथ जाते हैं, केवल पाप और पुण्य।

मरे हुए मनुष्य को जाति-बिरादरीवाले और कुटुम्बी लोग इस भाँति त्याग देते हैं; जिस भाँति फल-फूल-रहित वृक्ष को पखेरू त्याग देते हैं। उसका साथ कोई नहीं देता। जाते हुए मनुष्यके साथ उसके कर्म ही जाते हैं; अतः मनुष्य को यत्न करके धर्म्म ही करना चाहिये।

हे भारत! आत्मा नदी है। उसमें पुण्य-रूपी जल भरा है। सत्य और धारणा उस नदी के किनारे हैं; परन्तु उस नदीमें क्रोध और काम ये दो बड़े-बड़े मगर घूम रहे हैं। जो मनुष्य इन दोनों से बचकर उस नदी में स्नान करता है, वह बहुत सुख पाता है। हे महाराज! आप धारणा-रूपी नाव पर चढ़कर इस नदी के पार हो सकते हैं।

जो ब्राह्मण नित्य स्नान करता है, नित्य जनेऊ बदलता है, नित्य वेद-पाठ करता और सच बोलता है एवं गुरु की सेवा करता और नीच मनुष्यका भोजन नहीं करता, वह अपने धर्म से च्युत नहीं होता।

जो क्षत्रिय के घर में जन्म लेकर वेदों का पाठ करता है, यज्ञ करता है, प्रजा की रक्षा और पालना करता है और दो

तथा ब्राह्मण के लिये संग्राम-भूमिमें प्राण देदेता है, वह सीधा स्वर्ग को जाता है।

जो वैश्य होकर वेदोंको पढ़ता है और मौक़ा पड़नेपर ब्राह्मण, क्षत्रियों तथा नौकरों को धन देता और यज्ञ के धूएँ को सूँघ कर पवित्र होता है, उसका कल्याण होता है।

जो शूद्र होकर ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य की सेवा करता है और उनको हर तरह राज़ी रखता है, वह मरने पर स्वर्ग को जाता है।

विदुर बोले—महाराज! इस समय पाण्डव लोग क्षत्रियोचित धर्म से नीचे गिरे जाते हैं; अतएव आप उनकी रक्षा कीजिये।

धृतराष्ट्र बोले—हे विदुर! जो तुम कहते हो, वही हमारी बुद्धि में आता है; परन्तु न जाने दुर्योधन के सामने आते ही हमारी मति क्यों पलट जाती है? इस से यह प्रतीत होता है कि, पुरुषार्थ की अपेक्षा प्रारब्ध ही बलवान है; प्रारब्ध का उल्लङ्घन करना असम्भव है; अतः पुरुषार्थ को हम व्यर्थ समझते हैं।

भर्तृहरि नीति।

मूर्ख मनुष्य समझा-बुझाकर सरलता से वश में किया जा सकता है ; बुद्धिमान मनुष्य और भी सरलता से वश में किया जा सकता है ; किन्तु जिसको थोड़ासा ज्ञान है उसको ब्रह्मा भी रास्ते पर नहीं ला सकता।

मूर्ख मनुष्य यदि कोई बुरा काम करने लगता है, तो बुद्धिमान-विद्वान् मनुष्य उसे युक्ति और तर्क-वितर्कसे समझा-बुझा कर अच्छे रास्ते पर ला सकता है। यदि कोई बुद्धिमान मनुष्य प्रमाद या भ्रम-वश खोटे रास्तेपर चलने लगता है, तो उसे ज्ञानवान मनुष्य बहुतही आसानी से कुमार्गसे हटाकर सुमार्ग पर ला सकता है ; किन्तु जो न तो बिलकुल

मूर्ख ही है और न बिल्कुल पण्डित ही है वह थोड़ा जानने-वाला, मूर्ख और पण्डित के बीच की अवस्था का मनुष्य, ब्रह्मा के समझाने-बुझाने से भी असत् मार्ग को छोड़कर सत्-मार्ग पर नहीं आ सकता। जब ब्रह्मा ही अल्पज्ञ मनुष्य को समझाकर सुमार्ग पर लानेमें असमर्थ है, तब मनुष्यों से क्या हो सकता है?

मनुष्य अपने बल से मगर की डाढ़ों में से मणि को निकाल सकता है, चञ्चल लहरों से भरे हुए समुद्र को अपनी भुजाओं के बल से तैरकर पार कर सकता है, क्रोध से भरे हुए भुजङ्ग—साँप—को फूल की भाँति सिर पर धारण कर सकता है; किन्तु हठ पर चढ़े हुए मूर्ख को उस की हठ से नहीं हटा सकता।

यह बात असम्भव है, कि कोई मनुष्य मगरके दांतोंसे मणिको निकाल सके; यह भी असम्भव है कि कोई लहरों से उथल-पुथल समुद्र को अपनी भुजाओं के बल से तैर कर पार कर सके। यह भी अनहोनी बात है, कि कोई काले भुजङ्ग को फूल की भाँति सिरपर धारण कर सके। सम्भव है, कि उपरोक्त तीनों असम्भव काम सम्भव हो जायँ अर्थात् कोई मनुष्य उन तीनों कामों को किसी भाँति कर भी सके; लेकिन यह बिल्कुल अनहोनी बात है कि, उक्त तीनों कामों की शक्ति रखनेवाला मनुष्य भी मूर्ख को उसके असत् मार्ग की ज़िद्द से हटाकर सत् मार्ग पर ला सके।

यत्नपूर्व्वक कोल्हू में पेरने से शायद कोई बालू में से तेल निकाल सके ; कदाचित् कोई मृगतृष्णा से अपनी प्यास बुझा सके ; शायद कोई बहुत घूम-फिर कर कहीं से ख़रगोश का सींग भी ले आसके ; परन्तु कोई भी मनुष्य हठ पर चढ़े हुए मूर्खको उसकी हठसे अलग नहीं कर सकता ।

बालूमें तेल नहीं होता । हज़ार उपाय करने से भी उसमें से तेल नहीं निकल सकता । शायद कोई मनुष्य इस असम्भव को सम्भव कर सके । मृगतृष्णा से किसी की प्यास नहीं बुझती, लेकिन कदाचित् कोई मनुष्य ऐसा कर सके। ख़रगोश के सींग होते ही नहीं, फिर तलाश करने से कहांसे हाथ आसकते हैं ? किन्तु शायद कोई आदमी घूम-फिरकर और ढूँढ़-ढाँढ़ कर ख़रगोश का सींग भी ले आवे । ये तीनों काम असम्भव हैं । इन असम्भवों को सम्भव करनेवाले मनुष्य तो पृथ्वी पर मिल भी जायँ ; किन्तु हठ पर चढ़े हुए मूर्ख को हठ से हटानेवाला मनुष्य मिलना बिल्कुल ही असम्भव है।

जो मनुष्य अपने अमृत-समान उपदेशों से दुष्ट को, कुमार्ग से हटाकर, सुमार्ग पर लाना चाहता है ; वह उसके समान है जो कोमल कमलकी डण्डीके सूतसे हाथीको बाँधना चाहता है, सिरस के फूल की पंखरी से हीरे को छेदना चाहता है और खारी समन्दर को एक बून्द शहद डाल कर मीठा करना चाहता है ।

कमल की डण्डी के सूत से हाथी नहीं बांधा जासकता ; सिरस के फूल की पँखुरीसे हीरे में छेद नहीं किया जासकता और एक बून्द मधुसे समुद्र-जल मीठा नहीं हो सकता । ये तीनों असम्भव बातें हैं । इन तीनों की भाँति ही मूर्ख को सदुपदेश द्वारा कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर लाना भी असम्भव ही है ।

चुप रहना मनुष्य के अपने अधीन है । मूर्खों की मूर्खता ढकनेके लिये ही ब्रह्मा ने इसे बनाया है । विद्वानों की सभा-समाजो में मूर्खों का चुप रहना ही भूषण है ।

विद्वानोंकी मण्डलीमें यदि मूर्ख आदमी कुछ न बोले, चूप्पी साधे रहे, तो उसकी मूर्खता किसी को मालूम नहीं हो सकती । बोलने से तो लोग उसकी मूर्खता का पता पा जाते हैं ; अतः मूर्खता छिपानेके लिये "मौन" ही परमास्त्र है ।

जब मैं अल्पज्ञ था, तब मैं हाथीके समान मदमें अन्धा था । उस समय, मैं अपनेको सर्व्वज्ञ समझकर घमण्ड करता था । लेकिन पीछे जब मुझे विद्वान् और बुद्धिमानोंकी संगतिसे कुछ ज्ञान हुआ ; तब मने समझा कि मैं तो मूर्ख हूँ, इस बात के जानते ही मेरा मद इस भाँति उतर गया, जिस भाँति ज्वर उतर जाता है ।

मनुष्य जब इधर-उधरसे कुछ जान लेता है, लेकिन पूर्ण-तया किसी विषयको नहीं जानता, तब उसे अल्पज्ञ कहते हैं । अल्पज्ञ (अधकचरा) मनुष्य मनमें यही समझता है कि मैं ही

सब कुछ जानता हूँ, मुझसे अधिक जाननेवाला और नहीं है। उस अवस्थामें उसे घमण्ड हो जाता है। यदि दैवात् वह किसी विद्वान्‌की सुहबत में जा पड़ता है और वह उसकी विद्वत्ता बुद्धिमत्ता आदिको देखता है तब समझने लगता है कि, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। ऊँट जबतक पहाड़के नीचे नहीं जाता, तब तक वह अपने तईं पहाड़से भी ऊँचा समझता है; किन्तु जब उसके नीचे जाता है, तब उसका अभिमान किरकिरा हो जाता है।

कुत्ता मनुष्यके कीड़ोंसे भरे हुए, लारसे भीगे हुए, बदबूदार, निन्दित, नीरस और बिना माँसके हाड़को प्रेमसे चबाता है। अगर उस समय उसके पास इन्द्र भी खड़ा हो, तोभी उसे शर्म नहीं आती। इससे यह साबित होता है कि, नीच जीव जिस चीज़को ग्रहण कर लेता है, उसकी निस्सारता और सफ़ाई आदि पर ध्यान नहीं देता।

गङ्गा पहले स्वर्गसे शिवजीके मस्तक पर गिरी; शिवजी के सिरसे पर्वत पर गिरी; पर्वतसे पृथ्वी पर गिरी; पृथ्वीसे सैकड़ों धाराओंमें बँटकर और कम होकर समुद्रमें जा मिली। तात्पर्य्य यह है कि, गङ्गा नीचे गिरतीही चली गई। इसी भाँति अविचारी—अविवेकी—लोग हमेशा सैकड़ों तरह से नीचेही नीचे गिरते चले जाते हैं।

जलसे आग बुझाई जा सकती है। छातेसे धूपका बचाव किया जा सकता है। तीक्ष्ण अङ्कुशसे हाथी रोका जा सकता

है। डण्डेसे दुष्ट बैल और गधा सीधा किया जा सकता है। तरह-तरह की औषधियोंसे रोग निर्मूल किया जा सकता है। नाना प्रकार के यन्त्रोंसे ज़हर उतारा जा सकता है। मतलब यह है कि, शास्त्रमें सबका इलाज है; परन्तु मूर्खका इलाज कहीं नहीं है।

जो मनुष्य पढ़ना-लिखना और गाना-बजाना कुछ भी नहीं जानता, वह बिना पूँछ और सींगका जानवर है। वह घास नहीं खाता किन्तु जीता है, यही उसका सौभाग्य है।

जिनमें न विद्या है, न तप है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण है और न धर्म है, वे मनुष्य पृथ्वी पर भार-रूप साक्षात् पशु हैं। बात इतनी ही है कि, वे मनुष्य-रूपमें मृगोंकी भाँति पृथ्वी पर घूमते हैं।

पहाड़ और जङ्गलोंमें सिंह व्याघ्र आदि वनचर जीवोंके साथ फिरना अच्छा; किन्तु मूर्ख आदमीकी सङ्ग इन्द्र-भवनमें भी अच्छा नहीं।

शास्त्रोक्त शब्दोंसे सुन्दर संस्कृत वाणीवाले, शिष्योंको विद्या पढ़ाने योग्य एवं सुप्रसिद्ध कवि लोग जिस राजाके राज्यमें धनहीन रहते हैं, उस राजाकी मूर्खता समझनी चाहिये। कवि लोग तो निर्धनतामें भी श्रेष्ठ ही होते हैं। रत्नकी परीक्षा करनेवाला जौहरी यदि रत्नकी क़ीमत घटा दे, तो रत्नपारखी बुरा समझा जायगा, न कि रत्न।

हे राजाओं! जिसको चोर देख नहीं सकते, जो हमेशा

सुखको बढ़ाता है, जो माँगतोंको देने से उल्टा बढ़ता है और जो कल्पान्त में भी नाश नहीं होता, ऐसा विद्या-रूपी गुप्त धन जिन लोगोंके पास है उनसे घमण्ड मत करो ; क्योंकि उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।

जिन विद्वानोंके हाथमें मोक्ष तकका साधन है, उनका अनादर मत करो। तुम्हारी क्षुद्र लक्ष्मी उनको इस भाँति नहीं रोक सकती ; जिस भाँति कमलकी डण्डीका सूत उन हाथियों को नहीं रोक सकता, जिनके काले-काले मस्तक नवीन मदकी धाराओंसे शोभायमान हैं।

यदि विधाता हंसपर नाराज़ हो जाय, तो उसका कमल-वनका निवास नष्ट कर सकता है ; किन्तु उसकी दूध और जलको अलग-अलग कर देनेवाली सुप्रसिद्ध चतुराईको नाश नहीं कर सकता।

हाथोंमें कङ्कन पहनने से, गलेमें चन्द्रमाके समान सफेद मोतियों के हार पहनने से, स्नान करने से, चन्दन-कस्तूरी आदिके लेपन करनेसे और सिर के बालोंकी सजावट करनेसे मनुष्य स्वरूपवान नहीं दिखाई देता। केवल शुद्ध साफ़ बोली से ही मनुष्य सुन्दर मालूम होता है। सब भूषण नाश हो जाते हैं, किन्तु शुद्ध वाणी-रूपी भूषण नाश नहीं होता।

विद्या मनुष्य का रूप है, विद्या छिपा हुआ गुप्त धन है ; विद्या भोग भुगानेवाली, यश करानेवाली और सुख दिलाने-

वाली है। विद्या गुरुओं का गुरू है। परदेश में विद्या मित्र है। विद्या परम देव है। राजाओं में विद्या का ही आदर होता है, धन का आदर नहीं होता। जो विद्याहीन हैं, वे पशु हैं।

यदि मनुष्यमें क्षमा है तो कवच की क्या आवश्यकता है? यदि क्रोध है तो शत्रु की क्या आवश्यकता है? यदि जाति है तो अग्निकी क्या आवश्यकता है? यदि मित्र है तो दिव्य औषधियों से क्या मतलब है? यदि दुष्टोंसे पाला पड़ा हुआ है, तो साँपों से क्या होगा? यदि निर्दोष विद्या है, तो धनकी क्या ज़रूरत है? यदि लज्जा है तो ज़ेवरों की क्या ज़रूरत है? यदि कविता करने की शक्ति है, तब राज्य से क्या मतलब है?

जो पुरुष अपने कुटुम्बियों से उदारताका वर्ताव करते हैं; जो ग़ैरों पर दया-भाव रखते हैं, जो दुष्टों से दुष्टताका वर्ताव करते हैं, जो सज्जनोंसे प्रेम रखते हैं, जो राज-सभामें नीति-अनुसार चलते हैं, जो विद्वानों के साथ नम्रता रखते हैं, जो दुश्मनोंके सामने बहादुरी दिखाते हैं, जो माता-पिता और गुरु आदि बड़े लोगों के प्रति क्षमा का बर्ताव करते हैं, जो स्त्रियों में धूर्ततासे चलते हैं वे ही उत्तम पुरुष हैं—उन्हीं का इस दुनिया में टिकाव हो सकता है।

सत्सङ्गति—अच्छी सङ्गति—बुद्धि की मन्दताको नाश करती है, सच बोलना सिखाती है, मान बढ़ाती है, पापोंको

नाश करती है और दशों दिशाओंमें कीर्त्ति—नामवरी—फैलाती है ; सज्जनों सङ्गति पुरुष के लिये क्या नहीं करती ?

वह धर्मात्मा प्रसिद्ध कविश्वर सबसे उत्तम हैं, जिनकी यशरूपी काया में जरा-मरणका भय नहीं है ।

अच्छी चाल चलनेवाला पुत्र, पतिव्रता स्त्री, कृपा करनेवाला स्वामी, प्रेमी मित्र, चाल न चलनेवाले कुटुम्बी ; दुःख-रहित मन, सुन्दर स्वरूप, ठहरनेवाली सम्पत्ति, विद्यासे खिला हुआ चेहरा,—यह सब सुखके सामान उस पुरुषको मिलते हैं, जिस पर स्वर्ग-पति नारायण प्रसन्न होते हैं ।

जीव-हिंसा न करना, पराया धन हरने की इच्छा न रखना, सच :बोलना, समय पर अपनी शक्ति-अनुसार दान देना, पर-स्त्रियोंकी चर्चामें चुप रहना, तृष्णा न रखना, बड़े आदमियों से नम्र रहना, जीवमात्र पर दया रखना, सब शास्त्रोंमें प्रवृत्ति रखना और नित्य नैमित्तिक कर्म न छोड़ना—ये सब पुरुषोंके कल्याण करनेवाले रास्ते हैं ।

नीच लोग विघ्न होनेके भयसे किसी कामको आरम्भही नहीं करते । मध्यम लोग कामको आरम्भ तो कर देते हैं, किन्तु विघ्न होते देखकर कामको छोड़ बैठते हैं । उत्तम पुरुष जब कामको आरम्भ कर देते हैं, तब विघ्न होने पर भी उसका पीछा नहीं छोड़ते, किन्तु जैसे-तैसे उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं ।

हमारे आजकलके अधिकाँश भारतवर्षीय भाइयोंमें नीच

और मध्यम लोगोंकी सी प्रकृति पाई जाती है। ये लोग केवल तो विघ्न-भयसे किसी काममें हाथ ही नहीं डालते। डालते भी हैं, तो विघ्न देखते ही उसे छोड़ बैठते हैं; किन्तु अङ्गरेजों में ठीक उत्तम लोगों की सी प्रकृति देखी जाती है। वे जिस कामको आरम्भ करते हैं, उसे विघ्न पर विघ्न, हानिपर हानि होने तथा अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पर भी विना पूरा किये नहीं छोड़ते। यदि यूरुप-निवासी भर्तृहरिकी इस नीति-अनुसार न चलते तो आज वे रेल, तार, ट्राम आदि न चला सकते, विजलीसे पङ्खा झलवाने और रोशनी करानेका काम न ले सकते। हमारे भारतीय भाइयोंको भी इस नीति पर चलना बहुतही आवश्यक है।

मानियोंमें अग्रगण्य सिंह, जो सदा मदसे मतवाले हाथी के मस्तकको चीरकर मांस खानेकी इच्छा रखता है, भूखके मारे आँखों में दम आने पर, बुढ़ापे से दुःखी निर्बल तेज-हीन होने पर और भोजन विना मरणप्रायः होनेपर भी, क्या सूखी घास खाना पसन्द करेगा?

सिंह कैसा ही भूखा क्यों न हो, भूखके मारे दम क्यों न निकलता हो, किन्तु वह अहंकारी और पुरुषार्थी होनेसे मांस छोड़ कर घास नहीं खाता। इसी तरह पुरुषार्थी और मानी पुरुष, सङ्कटावस्था आजाने पर भी, छोटा काम नहीं करते।

कुत्तेकी भूख पित्त और चर्बी लगे हुए मैले और मांस-रहित हाड़के टुकड़े से नहीं बुझती, तथापि वह उसे पानेसे

प्रसन्न हो जाता है ; दूसरी ओर सिंह गोदमें आये हुए स्या
को छोड़ कर हाथीको जाकर मारता है ; इस बात से
मालूम होता है कि, सारे जीव दुःखी होने पर भी अपने-अपने
पुरुषार्थके अनुसार फलकी इच्छा करते हैं।

कुत्ता टुकड़ा देनेवाले के सामने पूँछ हिलाता, पैरोंमें गिर
सिर देता और ज़मीन पर लेटकर पेट और मुँह दिखाता है ;
किन्तु गजराज अपने खिलानेवाले की तरफ़ एक बार गम्भीरतासे
देखता है और अनेक भाँतिकी लल्लोचप्पो और खुशामदें करने
से खाता है।

जगत् में उसी पुरुष को जन्म हुआ समझना चाहिये,
जिसके जन्म लेनेसे वंश की उन्नति हो ; नहीं तो पहिये की
भाँति घूमनेवाले इस संसार में मरकर जन्म कौन नहीं लेता?

फूलों के गुच्छे या तो लोगों के मस्तक पर विराजते हैं या
वनमें सूख-सूख कर गिर जाते हैं। बड़े आदमियों की दशा भी
ठीक फूलोंके माफ़िक़ ही होती है।

दानवों के राजा राहु का मस्तकमात्र हो रह गया है तथापि
वह विशेष पराक्रमकी इच्छा रखनेके कारण से, आकाश के
वृहस्पति आदि ग्रहोंको छोड़कर, पूर्ण तेजवान सूर्य्य और
चन्द्रमाको ही ग्रसता है।

इसका मतलब यह है कि, पराक्रमी और बड़े लोग छोटे-
मोटोंको तङ्ग नहीं करते। छोटों पर हाथ साफ करने में

अपनी निन्दा समझते हैं। राहु वृहस्पति आदि छोटे-छोटे ग्रहोंको हिक़ारत की नज़र से देखकर और उन्हें अपने मुक़ाबिले का न समझकर छोड़ देता है; किन्तु सूर्य्या और चन्द्रमा पर, जो सब से अधिक तेजवान हैं, अपना ज़ोर जमाता यानी ग्रसता है।

चौदह भवन की श्रेणी को शेष भगवान् ने अपने फन पर धारण कर रक्खा है, शेष जी को कच्छप भगवान्ने अपनी पीठपर सम्हाल रक्खा है, समुद्र ने कच्छप को अनादरसे शूकर के अधीन कर दिया है; इससे यह सिद्ध होता है कि बड़ों के चरित्र की विभूति की सीमा नहीं है।

प्रश्न होता है कि, पृथ्वी किसके आधार पर है? हमारे पुराणोंमें लिखा है कि, पृथ्वी शेष नागके फणों पर स्थित है। शेष नाग कछुए पर ठहरे हुए हैं। कछुआ सूअर अथवा बाराह पर ठहरा हुआ है। लेकिन आजकल के विद्वानोंके विचार से पृथ्वीको सूर्य्या अपनी आकर्षण-शक्तिसे अपनी ओर खींचता है। इसीसे पृथ्वी जहाँकी तहाँ ठहरी हुई है। यही बात ठीक भी मालूम होती है।

राजा इन्द्रने मदमें भरकर अग्नि के समान जलते हुए तीर पर्वतों पर चलाये। उनसे पर्वतों के पङ्ख कट गये। उस समय मैनाक नामक पर्वतने, अपने पिता हिमाचलको सङ्कट में छोड़कर, जलों के राजा समुद्रमें कूदकर अपने पङ्ख बचा

लिये। मैनाकका भागकर अपने पङ्ख बचाने और पिताको सङ्कटमें छोड़जानेसे मर जाना अच्छा था।

सूर्य्यकान्त मणिमें चेतन-शक्ति नहीं है; तथापि वह सूर्य्य के किरण-रूपी पैरोंके छूजानेसे जल उठती है। इसी भाँति तेजस्वी पुरुष दूसरोंके द्वारा किया हुआ अनादर किस तरह सह सकते हैं?

जाति पातालमें चली जाय, सब गुण उससे भी नीचे चले जायँ, शील पहाड़से गिर कर चूर हो जाय, शूरता पर वज्र गिर पड़े, तोभी हमें चिन्ता नहीं। हमें तो केवल "धन" से काम है; जिसके बिना जाति, शील, शूरता आदि गुण तिनके के समान हैं।

सब इन्द्रियाँ वही हैं, वैसे ही कर्म हैं, वही बातें हैं; परन्तु ख़ाली धनकी गरमी बिना, वही पुरुष पल-भरमें और का और हो जाता है, यह एक अजीब बात है!

जब मनुष्यके पास धन रहता है तब लोग उसे सर्व्वगुण-सम्पन्न, बुद्धिमान कहते हैं; किन्तु जब उसके पास धन नहीं रहता, तब उसका शरीर, इन्द्रियाँ और बुद्धि आदि तो वैसेही बने रहते हैं; लेकिन लोग उसे मूर्ख कहने लगते हैं। जाता तो केवल धन है; इन्द्रियाँ और बुद्धि वगैरः तो कहीं नहीं जातीं; लेकिन लोग उसी आदमी को निकम्मा और निर्बुद्धि कहने लगते हैं। क्या यह कम आश्चर्य्य की बात है?

जिसके पास धन है वही पुरुष कुलीन है, वही गुणवान है, वही वक्ता है, वही दर्शन करने योग्य है। इससे यह साबित होता है कि, सब गुण धनके अधीन हैं।

कोई मनुष्य चाहें वह नीच कुलमें जन्मा हो, चाहें वह मूर्ख हो, चाहें वह गुणहीन हो, चाहें उसे साधारण बात-चीत करना भी न आता हो, चाहें इतना कुरूप हो कि देखने से भी घृणा होती हो; किन्तु यदि उसके पास धन हो तो लोग उसे कुलीन, पण्डित, गुणवान, वक्ता और देखने-योग्य कहने लगते हैं। यदि कोई कुलीन, विद्वान, गुणवान, सुवक्ता हो; लेकिन निर्धन हो तो लोग उसे नीच, मूर्ख, गुणहीन आदि कहने लगते हैं। तात्पर्य्य यह है कि, सारी महिमा धनकी है। गुण, कुल और विद्या आदि सब धनके नीचे हैं।

ख़राब मन्त्रियों की सलाहसे राजा का राज डूब जाता है। राजा की सुहबतसे तपस्वी का तप भङ्ग हो जाता है। लाड़ करनेसे पुत्र बिगड़ जाता है। विद्याभ्यास न करनेसे ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व नहीं रहता। कपूतके जन्म लेनेसे कुलका नाम डूब जाता है। दुष्ट मनुष्य की चाकरीसे शीलता नष्ट हो जाती है। शराब पीनेसे शर्म और हया हवा होजाती है। बिना देख-भाल किये खेती नाश होजाती है। परदेशमें रहनेसे प्रेम नहीं रहता। कड़ाईसे मित्रता नहीं रहती। अन्याय-अनीति करनेसे उन्नतिमें बाधा पहुचती है और

बिना समझे-बुझे अन्धेके माफ़िक लुटानेसे धन नाश हो जाता है।

महाराज भर्तृहरि का यह बचन अक्षर-अक्षर सही और दुरुस्त है। इसकी सभी बातें क़रीब-क़रीब हमारी आज़माई हुई हैं। पाठकों को ये सब बातें हृदय-रूपी पट्टी पर अच्छे तरह जमा लेनी चाहियें। समय-समय पर इन सब बातों के याद रखने से मनुष्य दुःख-सागर में पड़ने से बच जाता है।

धन की तीन गति हैं—दान, भोग और नाश। जिसने अपना धन दान नहीं किया और भोगा भी नहीं, उसके धन की तीसरी गति होती है अर्थात् वह नाश हो जाता है।

सान पर साफ़ की हुई मणि बहुत अच्छी लगती है, संग्राम-विजयी पुरुष तलवारसे कटा हुआ खूब सुन्दर मालूम होता है, मद-क्षीण हाथी देखनेमें भला जान पड़ता है, शरद् ऋतुकी थोड़े जलवाली नदी बहुत अच्छी लगती है, दूज का चाँद बहुत प्यारा मालूम होता है, रति-केलि द्वारा मर्दन की हुई बाला—सोलह वर्षकी स्त्री—बहुत सुन्दर मालूम होती है और वह राजा जो दान पर दान करनेसे दरिद्री होजाता है बहुत ही शोभायमान लगता है। मतलब यह है कि, उपरोक्त सब दुर्बल होने ही से भले मालूम होते हैं।

जब मनुष्य निर्धन अवस्थामें होता है, तब केवल एक पसेरी जौ चाहता है और जब वही मनुष्य धनवान होजाता है तब

दुनिया को घास-फूसके समान समझने लगता है। मतलब यह निकलता है कि, अवस्था ही मनुष्य को छोटा और बड़ा बना देती है।

हे राजन्! यदि तुम पृथ्वीरूपी गायको दुहना चाहते हो; तो बछड़े रूपी प्रजा का पालन करो। जब प्रजारूपी बछड़ा खूब पाला-पोसा जायगा, तब यह पृथ्वी कल्पलताके समान भाँति-भाँतिके फल देगी।

राजा को कहीं सच बोलना होता है और कहीं झूठ, कहीं कठोर बचन बोलने होते हैं और कहीं मीठे वचन, कहीं जीव का नाश करना होता है और कहीं दया-भाव दिखाना होता है, कहीं लोभी बनना होता है और कहीं उदार, कभी बहुतसा धन लुटाना होता है और कभी जमा करना होता है। 'राजनीति' वेश्या की भाँति अनेक प्रकारके रूप-रङ्ग बदलती है।

जो राजा विद्वान् और कीर्त्तिमान नहीं हैं; जो ब्राह्मणों का पालन नहीं करते; जो दान, भोग और मित्र-रक्षा नहीं करते, उन राजाओंकी सेवासे क्या लाभ हो सकता है?

ब्रह्माने जो थोड़ा या बहुत धन हमारी मस्तकरूपी पट्टीमें लिख दिया है, वह मारवाड़ की निर्जल भूमिमें जा बैठनेसे भी मिल सकता है; उससे अधिक धन सोनेके सुमेरु पर्वत पर जानेसे भी नहीं मिल सकता; इसलिये धीरज धारण करो—घबराओ मत—और धनवानोंके पास जाकर वृथा याचना मत

करो। घड़े को कूएँ या समुद्रमें डालकर देखलो, दोनों जगह समानही जल आवेगा।

पपीहा पक्षी मेघसे कहता है—"हे मेघ! तुम्हीं जीवन-आधार हो, इस बातको सभी जानते हैं। अब मेरी दीनता की बाट क्यों देखते हो?"

अरे पपीहा! सावधान होकर और चित्त लगाकर हमारी बात सुन! आकाशमें बहुतेरे मेघ हैं किन्तु वह सब समान नहीं हैं। कितने तो बरस-बरस कर धरती को तृप्त कर देते हैं और कितनेही फिजूल गरज-गरज कर चले जाते हैं। मित्र! इसलिये तू जिसे देखे, उसीके सामने दीनता मत करे।

दया न करना, विना कारण लड़ाई-झगड़ा करना, पराये धन और पर-स्त्री की हमेशा चाह रखना, अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों की बरदाश्त न करना,—ये सब बातें दुष्ट मनुष्यों में स्वभावसे ही होती हैं।

दुष्ट मनुष्य यदि विद्वान् भी हो तोभी उससे दूरही रहना उचित है; क्योंकि जिस सर्पके सिरपर मणि होती है, क्या वह भयङ्कर नहीं होता?

दुष्ट लोग लज्जावान आदमी को मूर्ख, व्रत करनेवालेको पाखण्डी, शूरवीर को निर्दयी, पवित्र को कपटी, चुप रहनेवालेको निर्बुद्धि, मीठा बोलनेवाले को ग़रीब, तेजस्वी को घमण्डी, बहुत बोलनेवाले को बक्की और स्थिर चित्तवाले को

आशक्त कहते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि गुणवानोंमें ऐसा कोई गुण नहीं है, जिसमें दुर्जनोंने दोष न लगाया हो।

जो लोभी है उसे और अवगुणों की क्या ज़रूरत है? जो चुगुलख़ोर है उसे और पाप कमाने की क्या आवश्यकता है? जो सत्यवादी है उसे तपस्यासे क्या प्रयोजन है? जिस का मन साफ़ है उसे तीर्थ करनेसे क्या फ़ायदा? यदि सज्जनता है तो और गुणोंसे क्या मतलब? यदि नामवरी है, तो ज़ेवरोंकी क्या ज़रूरत? यदि सत् विद्या है, तो कुटुम्बी और मित्रों की क्या कमी है? यदि अपयश अथवा बदनामी है, तो मरणसे और क्या होगा?

दिनका ज्योतिहीन चन्द्रमा, यौवनहीना नारी, कमल-रहित सरोवर, ख़ूबसूरत आदमी निरक्षर, धनवान कञ्जूस, सज्जन पुरुष निर्धन और राज-सभामें दुष्ट आदमी—ये सातों मेरे दिलमें काँटे की भाँति चुभते हैं।

प्रचण्ड क्रोधी राजाओं का कोई मित्र नहीं होता; क्योंकि अग्नि होम करनेवालेका भी हाथ छूजानेसे जला देती है।

अगर नौकर चुप रहता है तो कहने लगते हैं कि वह गूँगा है; यदि बहुत बातचीत करता है तो बकवादी कहलाता है; यदि नज़दीक रहता है तो ढीठ कहलाता है; यदि दूर रहता है तो मूर्ख कहलाता है; यदि क्षमा करता है यानी टेढ़ी-सूधी सब सुनता और चूँ भी नहीं करता, तो डरपोक कहा जाता है; यदि कड़वी और कठोर बातों को सहन नहीं

करता तो कुलहीन कहलाता है। मतलब यह है कि, नौकरी या चाकरी बड़ा कठिन काम है; यह इतनी कठिन है कि योगी लोग भी इसे नहीं कर सकते ।

जो अनेक प्रकार की दुष्टता करता है, जो निरङ्कुश है, जिसके पहले जन्मके बुरे कर्म उदय हो रहे हैं, जिसके पास दैव-योगसे धन आ गया है और जो गुणोंसे द्वेष करता है, ऐसे अधम पुरुषके पास रहकर कौन सुख पा सकता है ?

जिस भाँति दोपहर पहले की छाया पहले तो बहुत लम्बी-चौड़ी होती है, किन्तु पीछे पल-पल घटने लगती है; उसी भाँति दुष्ट लोगोंकी मित्रता पहले तो खूब बढ़ती है; किन्तु पीछे क्षण-क्षण घटने लगती है; किन्तु भले आदमियों की मित्रता दोपहर पीछे की छायाके समान पहिले तो बहुत थोड़ी होती है; परन्तु पीछे आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ती चली जाती है।

हिरन घास खाकर गुज़ारा करते हैं, मछलियाँ जलसे जीविका-निर्व्वाह करती हैं और सज्जन लोग सन्तोषवृत्तिसे जीवन चलाते हैं; परन्तु न जाने क्या बात है जो शिकारी हिरनोंसे, मछली-मार मछलियोंसे और दुष्ट लोग सज्जनोंसे व्यर्थ शत्रुता करते हैं।

भले आदमियों की सङ्गति की इच्छा, पर-गुणोंसे प्रसन्न होना, माता-पिता आदि गुरुजनोंसे नम्रता, विद्यामें रुचि,

अपनी स्त्रीसे सम्भोग, लोक-निन्दासे डरना, महादेवमें भक्ति, अपनी आत्मा को वशमें रखने की शक्ति और दुष्ट आदमी की सङ्गति का त्याग—ये निर्मल गुण जिन पुरुषोंमें हैं, उन्हें हम नमस्कार करते हैं।

महात्मा लोग विपत्तिमें धीरज रखते हैं, ऐश्वर्य्यमें क्षमा-शील रहते हैं, सभा-समाजमें चतुराईसे बात-चीत करते हैं, अपनी कीर्त्ति चाहते हैं और शास्त्रोंके देखनेमें लगे रहते हैं।

भले आदमी दान देकर प्रकट नहीं करते, अपने घर पर आये हुए का सत्कार करते हैं, दूसरे की भलाई करके चुप रहते हैं, अगर कोई दूसरा उनके साथ भलाई करता है तो लोगोंसे कहते रहते हैं, धन-दौलत पानेसे घमण्ड नहीं करते, जिस किसी का ज़िक्र चलता हो उसकी निन्दा की बात बचाकर बात कहते हैं। सत्पुरुषोंमें ये सब गुण पाये जाते हैं। कह नहीं सकते, यह कठिन व्रत उन लोगोंको किसने सिखाया है ?

जो लोग दान देकर डङ्का पिटते फिरते हैं या समाचार-पत्रोंमें अपने दानकी ख़बरें छपाते हैं, घर पर आये हुए पुरुष का अनादर करते हैं, किसी का उपकार करके कहते फिरते हैं कि फलाँ शख़्स पर हमने यह ऐहसान किया है, सभा-समाजमें गँवारपनेसे बात-चीत करते हैं, धन पाकर घमण्डके नशेमें चूर हो जाते हैं, जिस किसी की चर्चा होती है उसकी

निन्दाओंका ढेर लगा देते हैं, जिन शख़्सोंमें ये लक्षण पाये जाते हैं वे दुष्टात्मा होते हैं। आजकल ऐसेही लोगोंकी बहुतायत है।

जिन हाथोंसे दान दिया जाता है, जिस मस्तक पर गुरु-जन—माता पिता आदि—के पैर पड़ते हैं, जिस मुँहसे सत्य बात निकलती है, जिन भुजाओंसे अतुल पराक्रम का काम होता है, जिस हृदयमें स्वच्छ वृत्ति होती है और जिन कानों से शास्त्र सुने जाते हैं, वे सब प्रशंसायोग्य हैं।

सम्पत्तिमें, महात्मा लोगोंका दिल कमल से भी कोमल हो जाता है; किन्तु विपत्तिमें, वह पहाड़ की बड़ी भारी शिला से भी सख़्त हो जाता है।

जल की बूंद जब गरम तवे पर पड़ती है, तब उसका नाम भी नहीं रहता; लेकिन जब वही बूंद कमलके पत्ते पर पड़ती है तब मोतीसी दिखाई देती है और जब वह, स्वाती नक्षत्रमें, समुद्र की सीपमें पड़ती है तब मोती ही बन जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रायः बुरे भले और मध्यम गुण सङ्गतिसेही हो जाते हैं।

जो अपने अच्छे चाल-चलनसे बाप को राज़ी करे वही पुत्र है, जो अपने पतिका सदा भला चाहे वही स्त्री है, जो सम्पद और विपद्में एक समान रहे वही मित्र है। ऐसे पुत्र, स्त्री और मित्र जगत्में उसेही मिलते हैं, जिसने पुण्य किया है।

एकही देव की आराधना करनी चाहिये, चाहें विष्णु की चाहें शिव की। एकही मित्र बनाना चाहिये, चाहे राजा हो चाहे तपस्वी। एकही जगह बसना चाहिये, वनमें अथवा नगरमें। एकही स्त्रीसे प्रेम करना चाहिये, सुरूपा हो या कुरूपा।

जिस भाँति फल लगनेसे वृक्ष नीचे झुक जाते हैं, नया जल भर जानेसे बादल ज़मीन की ओर नव जाते हैं; उसी भाँति भले लोग सम्पत्ति पाकर ऊँचे नहीं होते, किन्तु नीचे हो जाते हैं। परोपकारी लोगोंका स्वभाव ऐसाही होता है।

कानों की शोभा शास्त्र सुननेसे है न कि कुण्डल पहनने से, हाथों की शोभा दान करनेसे है न कि कङ्कन पहननेसे, दयावान मनुष्यों की शोभा परोपकार करनेसे है न कि चन्दन लगानेसे।

जो मित्रको पाप करनेसे मना करते हैं, उसे उसके भले की बात बताते हैं, उसकी गुप्त बात को छिपाते हैं, उसके गुणों को प्रकाशित करते हैं, मुसीबत पड़ने पर उसका सङ्ग नहीं छोड़ते और मौक़ा पड़ने पर यथाशक्ति धन भी देते हैं, वे ही श्रेष्ठ मित्र हैं। सन्त लोगोंने भले मित्रोंके ये ही लक्षण कहे हैं।

सूर्य्य बिना कहे कमलों को और चन्द्रमा बिना कहे कुमुद-पुष्पों को खिलाता है, बादल बिना माँगे पृथ्वी पर जल बरसाता

है ; इसी भाँति सन्त लोग, बिना कहे-सुने ही, पराई भलाई का उद्योग आपसे आप करते हैं।

जो मनुष्य अपने काम को बिसार कर पराया काम करते हैं, वे सत्पुरुष हैं। जो अपने और पराये दोनों काम करते हैं, वे सामान्य पुरुष हैं। जो अपना काम बनानेके लिये पराया काम बिगाड़ते हैं वे राक्षस हैं और जो व्यर्थ दूसरे का काम बिगाड़ते हैं, वे कौन पुरुष हैं सो हम भी नहीं जानते।

जब दूधमें जल मिला, तब दूधने अपने मित्र जलको रूप और गुणमें अपने समान बना लिया अर्थात् अपना रूप और गुण उसे दे दिया। जब अग्निकी तेज़ीसे दूध जलने लगा, तब जलने अपने मित्र की रक्षाके लिये अपना शरीर जला दिया। जब दूधने देखा कि हमारा मित्र जल गया, तब वह भी आगमें कूदने लगा। जब दूधमें फिर पानीके छींटे मारे गये, तब वह अपने मित्र को आता हुआ देखकर ठण्डा हो कर ठिकाने पर बैठ गया। यह दूध और जलके विषयमें उचित ही बात है ; क्योंकि सज्जनों की मित्रता इसी तरह की होती है।

जब दूधमें जल मिला देते हैं, तब जल भी दूधके समान हो जाता है। यहाँ कवि कहता है कि, दूध अपने मित्र जलको अपना रूप और गुण देकर अपनासा बना लेता है। इस तरह दूध अपनी मित्रता का कर्त्तव्य पालन करता है। दूधमें जो पानी होता है वह पहलेही जलता है ; पानीके होते हुए

दूध नहीं जलता। लेकिन कवि यह दिखाता है कि, जल अपनी मित्रताके कर्त्तव्य-वश स्वयं जल जाता है और दूधको नहीं जलने देता। जब जल नहीं रहता, तब दूध आगकी तेजी से उफनता है और कड़ाहीसे निकल कर आगमें गिरना चाहता है; तब औटाने वाला उसमें उफान न आने देनेको पानीके छींटे मारता है। पानी पड़ते ही दूध नीचे बैठ जाता है। यहाँ कवि यह दिखाता है कि दूध अपने मित्र को पा कर शान्त हो जाता है। भर्तृहरि महाराजने दूध और जलको मित्रताके बहानेसे मित्रताके बहुतही उत्तम लक्षण दिखये हैं। तात्पर्य्य यह है, कि मित्रता ऐसीही होनी चाहिये, जैसी दूध और जलकी।

समुद्रमें एक तरफ़ विष्णु भगवान् शेष-शय्या पर सोते हैं, एक ओर उनके शत्रु राक्षस रहते हैं, एक ओर शरणमें गये हुए पर्व्वत पड़े हुए हैं, एक ओर बड़वानल प्रलय की अग्निके समान अग्निसे जल को औटा रहा है; किन्तु समुद्र इन सबसे कुछ भी विचलित नहीं होता। उसका विशाल आकार और डीलडौल यह सब भार सहनेमें समर्थ है। मतलब यह है, कि सत्पुरुष भी समुद्र की भाँति ही होते हैं।

तृष्णा को छोड़ो, क्षमा को धारण करो, मद का त्याग करो; पाप-कर्म्ममें मत लगो, सच बोलो, साधु लोगों की मर्य्यादा पर चलो, विद्वानों की सेवा करो, माननीय पुरुषों का

मानकरो, दुश्मनों को भी खुश रक्खो, अपने गुणों को प्रसिद्ध करो, अपनी नामवरी बनाये रक्खो और दुःखी लोगों पर दया करो ; क्योंकि ये ही सत्पुरुषोंके लक्षण हैं।

मन, वाणी और शरीरसे त्रिलोकीके जीवों पर उपकार करनेवाले और पराये ज़रासे भी गुण को पहाड़के समान बड़ा समझ कर चित्तमें प्रसन्न होनेवाले सज्जन विरलेही होते हैं।

हमें उस सोनेके सुमेरु पर्वत और चाँदीके कैलाश पर्वत से क्या फ़ायदा, जिनके आश्रित वृक्ष हमेशा जैसे-के-तैसेही बने रहते हैं ? हम तो मलयाचल को सबसे अच्छा समझते हैं, जिसके आश्रित कङ्कोल, नीम और कुटज आदि वृक्ष चन्दन हो जाते हैं।

देवताओंने समुद्र मथा और रत्न पाये ; इससे वे सन्तुष्ट हुए, मगर उन्होंने समुद्र का मथना जारी ही रक्खा। पीछे हलाहल विष निकला ; इससे वे भयभीत तो हुए, किन्तु मथन-कार्य्य फिर भी न छोड़ा। जब अमृत निकल आया, तब ही काम छोड़ा और आराम किया। इससे यह मालूम होता है कि धैर्य्यवान पुरुष जिस कामको आरम्भ करते हैं, उसे अपना इच्छित पदार्थ प्राप्त किये बिना नहीं छोड़ते।

कभी ज़मीन पर ही सो रहते हैं, कभी सुन्दर पलङ्ग पर सोते हैं, कभी साग-पात खाकर पेट भर लेते हैं, कभी शाली चाँवल खाते हैं, कभी चिथड़े पहनते हैं और कभी अच्छे-

अच्छे भड़कदार कपड़े पहनते हैं। मतलब यह है; कि मनस्वी और कार्य्यार्थी पुरुष दुःख और सुख को नहीं गिनते।

सज्जनता ऐश्वर्य्य का भूषण है, घमण्ड न करना शूरताका भूषण है, शान्ति ज्ञानका भूषण है, नम्रता शास्त्र पढ़ने का भूषण है, सुपात्रको दान देना धन का भूषण है, क्रोध न करना तपस्या का भूषण है, निष्कपट रहना धर्म्म का भूषण है। इनके सिवा और सब गुणों का कारण और भूषण "शील" है।

नीतिनिपुण लोग बुरा कहें चाहें भला कहें, लक्ष्मी आवे चाहें चली जाय, अभी मरण हो जाय चाहें कल्पान्त में हो; परन्तु धीर लोग न्याय के रास्तेसे एक क़दम भी इधर-उधर नहीं होते।

एक साँप सपेरेके पिटारेमें बन्द था, उसे अपने जीने की भी आशा न थी, शरीर दुखी था, भूकके मारे इन्द्रियाँ शिथिल हो रही थीं। रातके समय एक चूहा पिटारेमें छेद करके घुस गया। साँप उसे खाकर तृप्त हो गया और उसी चूहेके किये हुए छेदसे बाहर निकल गया। इससे साफ़ मालूम होता है, कि मनुष्योंकी वृद्धि और क्षय का कारण केवल "दैव" है।

हाथोंके ज़ोरसे गिराई हुई गेंद ऊपर को ही उछलती

है, इससे यह मालूम होता है कि अच्छी चालसे चलनेवालों की विपत्ति प्रायः नहीं ठहरती ।

मनुष्यके शरीरमें आलस्यही महाशत्रु है। उद्योगके समान मनुष्य का दूसरा मित्र नहीं है ; क्योंकि उद्योग करने से दुःख पास नहीं फटकता ।

छाँटा काटा हुआ वृक्ष फिर बढ़ आता है, इस बातको विचार कर सज्जन लोग विपत्तिसे नहीं घबराते ।

राजा इन्द्रके सलाहकार—मन्त्री—बृहस्पति थे, वज्र उसका हथियार था, देव-सेना उनकी सेना थी ; स्वर्ग उनका क़िला था, ऐरावत हाथी उनकी चढ़ने की सवारी थी ; इतनी सब आश्चर्य्यमयी सामग्री तो थी ही, साथ ही विष्णु भगवान् को उन पर पूर्ण कृपा भी थी ; तथापि इन्द्र युद्धमें शत्रुओंसे हार ही खाते रहे। इससे यह मालूम होता है कि, केवल दैव की शरण ही मुख्य है ; पुरुषार्थ बृथा है और उसे धिक्कार ।

यद्यपि मनुष्यों को कर्मानुसार ही फल मिलता है और बुद्धि भी कर्मानुसार ही हो जाती है, तथापि बुद्धिमानोंको खूब सोच-विचार कर हो काम करना चाहिये ।

किसी गञ्जे आदमी का सिर धूपके मारे जलने लगा। दैवयोगसे वह छाया की तलाशमें, एक ताड़के वृक्षके नीचे जा खड़ा हुआ। खड़े होते ही उसके सिर पर एक ताड़फल गिरा ; जिससे बड़ी भारी आवाज़ हुई और उसका सिर

फट गया। इससे यह साबित होता है, कि भाग्यहीन मनुष्य जहाँ जाता है वहाँ विपत्ति भी उसके साथ-साथ जाती है।

हाथी और साँप को बन्धनमें देखकर, सूरज और चन्द्रमा में राहु द्वारा ग्रहण लगते देखकर और बुद्धिमानों को धनहीन देखकर, हमें विधाता ही बलवान मालूम होता है।

ब्रह्माने पुरुष-रत्न को समस्त गुणों की खान और पृथ्वीका भूषण बनाया; परन्तु उसकी काया क्षणमें नाश होनेवाली बनायी, यह बड़े दुःख की बात है! इससे ब्रह्मा की मूर्खता ही मालूम होती है।

करीलके पेड़ोंमें पत्ते नहीं लगते, इसमें वसन्त का क्या दोष है? उल्लूको दिनमें नहीं दीखता, इसमें सूर्य्यका क्या दोष है? मेह की धारा पपहिये के मुँहमें नहीं गिरती, इसमें बादल का क्या दोष है? इस सब का मतलब यह है, कि विधाताने जो कुछ पहलेसे ही ललाटमें लिख दिया है, उसे मिटाने को सामर्थ्य किसीमें नहीं है।

हम देवताओं को नमस्कार करते हैं; किन्तु सारे देवता विधाताके अधीन हैं, अतः हम विधाता को ही नमस्कार करते हैं; किन्तु विधाता भी हमारे पहले किये हुए कर्मों के अनुसार ही फल देता है; इससे यह मालूम हुआ कि विधाता और फल दोनों ही कर्मके अधीन हैं। जब ऐसा है, तब हमें विधाता और देवताओंसे क्या मतलब? हम तो उस

कर्मको ही नमस्कार करते हैं, जिस पर विधाता का भी ज़ोर नहीं चलता ।

कर्मने ब्रह्मा को कुम्हार की तरह ब्रह्माण्ड-रचना पर नियत किया, विष्णु को दश अवतार लेनेके सङ्कटमें डाला, महादेवके हाथमें खोपड़ी देकर भीख मँगाई और सूर्य्य को सदाके लिये घूमनेके काम पर मुक़र्रर कर दिया ; इसवास्ते हम कर्म ही को नमस्कार करते हैं ।

पुरुषकी: सुन्दर सूरत उसे कुछ फल नहीं देती, न उत्तम कुल, न शील, न विद्या और न खू ब अच्छी तरह की हुई टहल-चाकरी ही फल देती है। पहले जन्मकी की हुई तपस्यासे जो भाग्य बना है, वही समय-समय पर वृक्ष की भाँति फल देता है।

सोते हुए, बेख़बर और विषम अवस्थामें स्थित पुरुष की,—वनमें, युद्ध-भूमिमें, शत्रुओंके बीचमें, जलमें, अग्निमें एवं पर्वत की चोटी पर,—केवल पहले जन्मके पुण्य ही रक्षा करते हैं।

जो सत्क्रिया दुष्टोंको साधु बना देती है, मूर्खों को विद्वान् बना देती है, वैरियोंको मित्र बना देती है, गुप्त विषयों को प्रकट कर देती है, हलाहल विष को अमृत बना देती है, उस सत्क्रिया रूपी भगवती की आराधना-उपासना करो। हे सज्जनो ! यदि मनोवाञ्छित फल पाना चाहो, तो और गुणोंके सीखनेमें वृथा:परिश्रम मत करो।

जब कोई काम करना हो तो पहले विचार करना चाहिये, कि यह काम करने योग्य है या नहीं; यदि करने-योग्य है तो इसका नतीजा क्या होगा; क्योंकि जो काम बिना विचारे जल्दबाज़ीसे किया जाता है, उसका फल मरने के समय तक हृदय में काँटे की भाँति खटका करता है।

जो पुरुष, इस कर्म्मभूमि में आकर, तप नहीं करता वह अभागा उस पुरुष के समान है जो वैदूर्य्यमणि के बासन में चन्दन की लकड़ियों से लहसन पकाता है, खेत में सोने का हल चलाकर आक (मादर) के वृक्ष बोता है, और कपूर-वृक्ष के टुकड़े काट कर कोदों के चारों तरफ़ मेंड बनाता है।

चाहे समुद्र में डूब जाओ, चाहे मेरु पर्वत की चोटी पर चढ़ जाओ, चाहे घोर युद्धमें शत्रुओं को जीतो; चाहे व्योपार, खेती, नौकरी आदि सारी विद्या और कलाए सीखलो; चाहे आकाश में पक्षियों की भाँति उड़ते फिरो; परन्तु जो नहीं होनेवाला है वह कभी नहीं होगा और जो पूर्व्वकर्मानुसार होनेवाला है, वह कभी बिना हुए न टलेगा।

जिस पुरुष का, पहले जन्मका, बहुतसा पुण्य होता है, उस पुरुष के लिये भयानक जङ्गल सुन्दर नगर हो जाता है; सब कोई उसके मित्र और बन्धु हो जाते हैं; सारी धरती उस के लिये रत्नों से भर जाती है।

लाभ क्या है? गुणी लोगोंकी सङ्गति। दुःख क्या है? अविद्वानों यानी मूर्खों की सङ्गति। हानि क्या है? समयपर

चूकना । चातुरी क्या है ? धर्म-कार्य्यमें लगे रहना । वीर कौन है ? जिसने अपनी इन्द्रियों को वश किया । स्त्री कौनसी अच्छी होती है ? स्त्री वही अच्छी होती है, जो पतिके अनुकूल चलती है । धन क्या है ? विद्या धन है । सुख क्या है ? प्रवास में न रहना । राज्य क्या है ? अपना हुक्म चलना ।

मालती के फूलों की वृत्ति दो भाँति की होती है या तो वे मनुष्य के मस्तक पर ही विराजते हैं या वनमें ही नाश हो जाते हैं । धीर पुरुषों की वृत्ति भी मालती के पुष्पों की भाँति ही होती है ।

जो अप्रिय—कड़वे—वचनों के दरिद्री हैं, जो प्रिय—मीठे-वचनों के धनी हैं, जो अपनी ही स्त्रीसे सन्तुष्ट रहते हैं, जो पराई निन्दाको अपने पास नहीं रहने देते,—ऐसे पुरुष-रत्नों से कहीं-कहीं की पृथ्वी ही शोभायमान है ।

जिसके चित्तमें स्त्रियोंके कटाक्षरूपी वाण कुछ असर नहीं करते, जिसके दिलको क्रोधरूपी अग्नि नहीं जलाती, जिस के मन को इन्द्रियों के विषय अपनी ओर नहीं खींच सकते,—वह धीर पुरुष त्रिलोकी को विजय कर सकता है ।

जिस भाँति अकेला सूर्य्य सारे जगत् में प्रकाश फैला देता है, उसी भाँति अकेला वीर पुरुष सारी पृथ्वी को पाँवके नीचे दबाकर अपने अधीन कर लेता है ।

जिसके शरीर में समस्त जगत् का प्यारा "शील" मौजूद

है, उसके लिये अग्नि जलके समान जान पड़ती है, समुद्र छोटी नदीसा मालूम होता है, सुमेरु पर्वत छोटीसी पत्थर की शिला मालूम होता है, सिंह उसके आगे हिरन बन जाता है और विष उसके लिये अमृत होजाता है ।

गुलिस्ताँ।

माल ज़िन्दगीके आरामके वास्ते हैं; किन्तु ज़िन्दगी माल जमा करने के वास्ते नहीं है। मैंने एक बुद्धिमान मनुष्यसे पूछा,—"कौन भाग्यवान और कौन भाग्यहीन है?" उसने उत्तर दिया:—"जिसने खाया और भोगा वही भाग्यवान है, किन्तु जिसने भोगा नहीं; लेकिन छोड़कर मरगया, वह भाग्यहीन है।" उस शख़्स के लिये ईश्वर से दुआ मत माँगो, जिसने ईश्वर-भक्ति या परोपकार का काम न किया, तमाम उम्र रुपया जमा करने में बिता दी और उसको काम में भी न लाया।

दो शख़्सों ने वृथा कष्ट उठाया और व्यर्थ कोशिशें कीं; एक तो वह जिसने धन जमा किया, किन्तु उसे भोगा नहीं, दूसरा वह जिसने अक्ल सीखी, मगर उसका अभ्यास न किया। चाहे जितनी विद्या क्यों न पढ़ लो, अगर तुम उस पर अमल नहीं करते तो तुम नादान हो। वह जानवर जिसपर किताब लदी हुई हैं, न तो विद्वान् है न बुद्धिमान। उस मूर्खको क्या ख़बर कि, उस के ऊपर किताबें लदी हैं या ईंधन।

विद्या धर्म्म-रक्षा के लिये हैं न कि धन जमा करने के लिये। जिसने धन कमाने के लिये अपनी नामवरी और विद्या ख़र्च कर दी, वह उस के समान है जिसने ख़लियान बनाया और उसे बिल्कुल जला डाला।

विद्वान् जो संयमी—परहेज़गार—नहीं है, अन्धा मशालची है। वह दूसरों को राह दिखाता है, किन्तु उसे ख़ुद्को राह नहीं मिलती। जिसने अपनी उम्र बेख़बरी में गँवादी वह उसके माफ़िक़ है जिसने रुपया तो डाला, मगर कुछ चीज़ न ख़रीदी।

बादशाहत की नामवरी अक्लमन्दोंसे होती है और धर्म धर्मात्माओंसे पूर्णता प्राप्त करता है। अक्लमन्दोंको राज-दरबार में नौकरी पाने की जितनी ज़रूरत है, उससे बादशाहों को अक्लमन्दों की अधिक ज़रूरत है। ए बादशाह! ध्यान देकर मेरी नसीहत सुन, तेरे दफ्तर में इस से अधिक क़ीमती नसीहत नहीं है :—"अपना काम अक्लमन्दों के सिपुर्द कर; यद्यपि सरकारी काम करना अक्लमन्दों का काम नहीं है।"

तीन चीज़ें, तीन चीज़ोंके बिना, क़ायम नहीं रहतीं; दौलत बिना सौदागरीके, इल्म बिना बहस के और बादशाहत बिना दहशतके।

दुष्टों पर दया करना, सज्जनों के ऊपर ज़ुल्म करना है। ज़ालिमों को माफ़ करना, सताये हुओं पर ज़ुल्म करना है। अगर तुम कमीनों के साथ मेल-जोल रक्खोगे और उनपर

मिहरवानी करोगे ; तो वे तुम्हारी हिमायत से अपराध करेंगे और तुमको उनके अपराधों का हिस्सेदार बनना पड़ेगा ।

बादशाहों की दोस्ती और लड़कों की मीठी-मीठी बातों पर भरोसा न करना चाहिये ; क्योंकि बादशाहों की दोस्ती ज़रा से शक पर टूट जाती है और लड़कों की प्यारी-प्यारी बातें रात-भर बदल जाती है । जिसके हज़ार चाहनेवाले हैं, उसे अपना दिल मत दो ; अगर दो, तो जुदाई की तकलीफ़ें सहने को तय्यार रहो ।

मित्र के सामने अपना सारा गुप्त भेद मत खोलदो, कौन जाने वह कब तुम्हारा शत्रु होजावे ? इसी भाँति शत्रु को भी हर तरह की तकलीफ़ें मत दो, कौन जाने वह कभी तुम्हारा मित्र ही होजावे ? वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो, किसी को भी मत दो ; जिसे तुम भेद दो, चाहें वह विश्वास-योग्य ही क्यों न हो । अपनी गुप्त बात को जितनी अच्छी तरह तुम खुद छिपा सकते हो, दूसरा हरगिज़ न छिपा सकेगा ।

किसी की गुप्त बातों को एक शख़्स से कहना और उसे दूसरे से कहने की मनाही करने से एकदम चुप रहना भला है । ए भले आदमी ! पानी को निकास पर ही रोक । जब वह नदीके रूप में बहने लगेगा, तब तू उसे रोक न सकेगा । ज बात सब लोगोंके सामने कहने लायक़ नहीं है, उसे पोशीदगी में भी मत कह ।

अगर कोई निर्बल शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे और तुम्हारी आज्ञानुसार चले, तो तुम को समझना चाहिये कि वह अपना बल बढ़ाना चाहता है। चूँकि कहा है:—"मित्रों की सचाई पर भी विश्वास न करना चाहिये; तब शत्रुओं की लल्लो-चप्पो से क्या भली आशा की जासकती है?" जो निर्बल शत्रु को तुच्छ समझता है, वह उसके माफ़िक है जो आग की छोटीसी चिनगारी की परवा नहीं करता। अगर तुम में शक्ति है, तो आग को आज ही बुझादो; क्योंकि जब वह प्रचण्ड रूप धारण करेगी, तब वह संसार को जला देगी। जब कि तुझमें शत्रु को बाणसे छेदने की शक्ति हो, तब तू शत्रु को कमान खींचने का मौक़ा मत दे।

दो दुश्मनों के दर्म्यान अगर कुछ बात कहे, तो इस भाँति कहे, कि यदि वे आपस में दोस्त भी होजावें, तोभी तुझे लज्जित न होना पड़े। दो मनुष्यों की दुश्मनी आगके समान है और जो बातें बनाता है वह आगमें ईंधन डालता है। जब दो दुश्मन आपस में सुलह कर लेते हैं, तब वे दोनों ही चुगल-ख़ोर को बुरी नज़र से देखते हैं। जो शख़्स दो आदमियों के बीच में आग लगाता है, वह खुद अपने तईं उसमें जलाता है। अपने मित्रों से इस तरह चुपचाप बात कर, कि तेरे ख़ूनके प्यासे शत्रु तेरी बात सुन न लें। अगर दीवार के सामने भी कुछ बात कहे, तो होश रख, कि दीवार के पीछे कान न लग रहे हों।

जो मनुष्य अपने मित्र के शत्रुओं से मित्रता करता है वह अपने मित्रको नुक़सान पहुँचाना चाहता है। ए बुद्धिमान मनुष्य ! तू उस मित्र से हाथ धोले, जो तेरे शत्रुओं से मेल-जोल रखता है ।

जब तुम्हें किसी काम के आरम्भ करने के समय ऐसा सन्देह उठ खड़ा हो, कि इस काम को किस ढङ्ग से आरंभ करें ; तब तुम्हें वह ढङ्ग अख़्त्यार करना चाहिये, जिस से तुम्हें नुक़सान न पहुंचे। कोमल स्वभाव के मनुष्य से कड़ाई से बातें न करो और वह शख़्स जो तुम से मेल रखना चाहता है, उससे लड़ाई-झगड़ा मत करो ।

जब तक रुपया ख़र्च करने से काम निकल सके, तब तक जान ख़तरे में न डालनी चाहिये ; जब हाथ से किसी तरह काम न निकले, तलवार खींचना ही मुनासिब है।

बलहीन शत्रु पर दया मत करो ; क्योंकि यदि वह बलवान हो जायगा, तो तुम्हें हरगिज़ न छोड़ेगा। जब तुम किसी दुश्मन को कमज़ोर देखो, तब अपनी मूछोंपर ताव मत दो; क्योंकि हर हड्डी में गूदा और हर लिबास में मर्द है। जो शख़्स दुष्ट को मार डालता है, वह दुनिया को उसकी दुष्टताओं से बचाता है और अपने तईं ईश्वर के कोपसे छुड़ाता है। क्षमा प्रशंसा-योग्य है ; तथापि अत्याचारी—ज़ालिम—के ज़ख़्म पर मरहम न लगाओ। जो साँप की जान बख़्शता है

यह नहीं जानता, कि मैं आदम की औलाद को नुक़सान पहुँचाता हूँ।

शत्रु की सलाह के माफ़िक़ काम न करो, किन्तु उसकी बात अवश्य सुनो। शत्रु की सलाह के विरुद्ध काम करना ही बुद्धिमानी है। शत्रु जिस काम के करने को कहे, वह काम न करो। अगर तुम उसकी सलाह के माफ़िक़ काम करोगे, तो तुम्हें रञ्ज करना और पछताना पड़ेगा; अगर शत्रु तुम्हें तीरके समान सीधी राह भी दिखावे; तोभी तुम उस राहको छोड़ दो और दूसरी राह अख़्त्यार करो।

अधिक क्रोध करने से भय पैदा होता है और अधिक मिहरबानी से रौब नहीं रहता। न तो इतनी सख़्ती करो कि, लोग तुम से नफ़रत करने लगें और न इतनी नरमी अख़्त्यार करो कि, लोग तुम्हारे सिर पर चढ़ें। सख़्ती और नरमी उस ज़र्राह के माफ़िक़ काम में लानी चाहिये, जो पहले तो चीरा देता है, किन्तु साथ ही मरहम भी लगाता है। बुद्धिमान आदमी न तो अत्यधिक कड़ाई ही करता है और न इतनी नर्मी ही करता है कि, उसकी क़दर भी घट जाय। एक जवान ने अपने पिता से कहा:—"आप बुद्धिमान हैं, अपने अनुभव से मुझे कुछ उपदेश दीजिये।" उसने उत्तर दिया:—"सिधाई और भलमनसई से काम ले, मगर इतनी सिधाई मत रक्खे कि, लोग भेड़िये के तेज़ दाँतों से तेरा अपमान करें।"

दो शख़्स बादशाहत और मज़हब के दुश्मन हैं; बादशाह बिना रहम के और फ़क़ीर बिना इल्म के। ईश्वर की आज्ञा न पालन करनेवाला बादशाह किसी मुल्क में न होवे।

दुष्ट मनुष्य शत्रु के हाथ में गिरफ्तार है; वह चाहे जहां क्यों न जावे, किन्तु अपनी सज़ा के चङ्गुलों से रिहाई नहीं पा सकता। अगर दुष्ट आदमी आफ़त से बचनेके लिये आसमान पर भी चला जावे, तोभी अपनी दुष्टता के कारण आफ़त से नहीं बच सकता।

जब शत्रु की सेना में फूट देखो, तब ख़ूब साहस करो; किन्तु यदि वे आपस में मिले हुए हों, तो तुम ख़बरदार रहो। जब तुम दुश्मनों के दर्म्यान लड़ाई-झगड़ा देखो, तब चैन से दोस्तोंके पास जा बैठो; किन्तु जब तुम उन्हें एक-दिल देखो, तब कमान पर चिल्ला चढ़ाओ और क़िलेकी दीवारों पर पत्थर जमा करो।

जब दुश्मन की कोई चाल काम नहीं करती, तब वह दोस्ती पैदा करता है; क्योंकि दोस्ती के बहाने से वह उन सब कामों को कर सकता है, जिनको कि वह दुश्मनी की हालत में न कर सका था।

साँपके सिरको अपने दुश्मन के हाथ से कुचलो। ऐसा करनेसे दो लाभोंमें से एक अवश्य ही होगा। अगर दुश्मन साँप को जीत ले, तब तो तुमने साँपको मार लिया और अगर

सांप तुम्हारे दुश्मन को जीत ले, तो तुमने अपने दुश्मन से रिहाई पाई।

युद्ध के दिन, शत्रु को निर्बल देखकर निर्भय मत रहो; क्योंकि जो जान पर खेलेगा, वह शेरका भेजा भी निकाल लावेगा।

जब तुम्हें किसीको ऐसी ख़बर देनी हो, जो उसका (जिसे ख़बर दी जाती है) दिल बिगाड़े, तब तुम्हें उचित है कि उसे वह ख़बर मत दो। तुम चुप्पी साध जाओ। उस बुरी ख़बर को वह किसी दूसरे शख़्स से ही सुन लेगा। ए बुलबुल! मौसम बहार की खुश-ख़बरी ला। बुरी ख़बर उल्लूके लिये छोड़ दे।

किसी की चोरी की बात बादशाह से मत कहो; सिवा उस हालत के, जब कि तुम्हें यह विश्वास हो कि, वह तुम्हारी बात पसन्द करेगा; अन्यथा तुम अपने ही नाशका सामान करोगे। जब तुम्हें किसीसे कोई बात कहनी हो, तो पहले यह निश्चय करो कि, बातका असर होगा या नहीं। अगर असर होनेकी उम्मीद दीखे, तो मुंहसे बात निकालो।

जो शख़्स खुद-पसन्द—घमण्डी—आदमी को नसीहत देता है, वह खुद नसीहत का मुहताज है।

दुश्मन के धोखे में मत फँसो और खुशामदी की ललो-चप्पो से फूलकर कुप्पा न हो जाओ। उसने बारीक जाल और इसने लालच का पल्ला फैलाया है। मूर्ख को तारीफ़

अच्छी मालूम होती है। ख़बरदार रहो और खुशामदी की बातें मत सुनो ; क्योंकि वह अपनी थोड़ीसी पूँजी लगाकर, तुमसे अधिक नफे की आशा करता है। अगर तुम एक दिन भी उसकी इच्छा पूर्ण न करोगे, तो वह तुममें दो सौ ऐब—दोष—निकालेगा।

जब तक कोई शख़्स किसी बात करनेवाले के दोष नहीं पकड़ता, तब तक उसकी बात दुरुस्त नहीं होती। मूर्ख की तारीफ़ और अपने विचार-बल पर निर्भर होकर, अपनी बात की सुन्दरता पर घमण्ड मत करो।

हर शख़्स अपनी अक्ल को कामिल और अपने बच्चे को खूबसूरत समझता है। एक यहूदी और एक मुसलमान, आपस में, इस ढंगसे झगड़ रहे थे कि मुझे हँसी आ गई। मुसल्मान ने गुस्सेमें भर कर कहा :—"अगर मेरा यह क़ौल दुरुस्त न हो, तो खुदा मुझे यहूदी की मौत मारे!" यहूदी ने कहा : —"मैं तौरेत की क़सम खाता हूं, अगर मेरी बात तेरी तरह झूठ हो, तो मैं तेरे माफ़िक़ मुसल्मान हूं।" अगर संसार में अक्ल न होती, तो कोई अपने नादान होनेका गुमान भी न करता।

दस आदमी एक थाली में बैठकर खा लेंगे ; मगर दो कुत्ते एक मुर्दार—लाश—से सन्तुष्ट न होंगे। अगर लालची आदमी के हुक्ममें तमाम दुनिया भी हो तोभी वह भूखा ही है ; किन्तु जो सन्तोषी है, वह एक रोटीसे ही राज़ी रहता है। तंग पेट

बिना गोश्तके एक रोटीसे ही भर जाता है; किन्तु तङ्गनज़र तमाम दुनिया की दौलतसे भी सन्तुष्ट नहीं होती। मेरे पिताने, मरते समय, मुझे यह नसीहत दी:—"शहवत-परस्ती—आग है, उससे बचो। नरककी आगको तेज़ मत करो; क्योंकि तुम उस आगको सह न सकोगे। सन्तोषरूपी जलसे वर्तमान आग को ही बुझा दो।"

जो मनुष्य शक्ति—अधिकार—रहते हुए भलाई नहीं करता, उसे शक्तिहीन—अधिकारहीन—होनेपर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारी से बढ़कर अभागा और नहीं है; क्योंकि विपत्ति के समय कोई उसका दोस्त नहीं होता।

धैर्य्यसे काम बन जाते हैं; किन्तु जल्दबाज़ीसे बिगड़ जाते हैं। मैंने एक जङ्गलमें अपनी आँखोंसे दो आदमी देखे। एक जल्दी-जल्दी चलता था और दूसरा धीरे-धीरे। धीरे-धीरे चलनेवाला तेज़ चलनेवालेसे पहलेही अपनी मञ्जिल मक़सूद पर पहुँच गया। तेज़ घोड़ा मैदान दौड़ते-दौड़ते थक गया, जबकि ऊँटवाला धीरे-धीरे बराबर चला ही गया।

मूर्खके लिये "मौन" से बढ़ कर दूसरी अच्छी चीज़ नहीं है। अगर मूर्ख इस बात को जानता, तो मूर्ख न कहलाता। अगर तुममें कोई खूबी और होशियारी नहीं है, तो अपनी ज़बान को अपने दाँतोंके भीतर ही रक्खो। ज़बान मनुष्य की बेइज्जती कराती है। अखरोट बिना गुठलीके

हल्का होता है। एक अज्ञात मनुष्य, एक गधे को तालीम देनेमें, अपना सारा समय नष्ट किया करता था। किसीने कहा—“ए नादान! तू किस लिये इतनी कोशिश करता है? इस अज्ञानता पर तुझे धिक्कार है! जानवर तुझसे बोलना न सीखेंगे, तू जानवरोंसे चुप रहना सीख।” जो मनुष्य उत्तर देनेसे पहले विचार नहीं करता, वह अण्ड-बण्ड बात ही बोलता है। या तो बुद्धिमान की भाँति अपने शब्दों को दुरुस्त करके बोलो अथवा जानवरों की भाँति चुप्पी साध लो।

यदि तुम दूसरों को अपनी बुद्धिमानी दिखाने और वाह-वही लूटने की ग़रज़से अपनेसे अधिक बुद्धिमानसे वाद-विवाद करोगे, तो उल्टी तुम्हारी मूर्खता ही प्रकट होगी। जब कोई शख़्स तुम्हारी अपेक्षा अच्छी बात कहे और तुम खुद भी उस बात को भली भाँति जानो; तोभी ऐतराज़ मत करो।

जो बुरोंकी संगति करता है, वह नेकी नहीं देखता। अगर कोई फरिश्ता किसी देव की संगति करे तो वह भय, चोरी और धूर्त्तता ही सीखेगा। तुम बुरोंसे नेकी नहीं सीख सकते; भेड़िया चमार का काम नहीं करता।

आदमियोंके छिपे हुए ऐब ज़ाहिर मत करो; क्योंकि उनकी बदनामी करनेसे तुम्हारी भी बेऐतबारी हो जायगी। जिसने इल्म पढ़ा, किन्तु उस पर अमल न किया वह

उस मनुष्यके समान है, जिसने ज़मीन जोती मगर बीज न बोया।

जो शख़्स कि लड़ाई झगड़ा करनेमें तेज़ है, काम करनेमें दुरुस्त नहीं हो सकता; चादरसे ढकी हुई सूरत बहुत सुन्दर मालूम हो सकती है, किन्तु चादर हटाते ही नानी नज़र आवेगी।

अगर तमाम रातें क़दरके लायक़ होतीं, तो क़दर करने लायक़ रातें बेक़दर हो जातीं; अगर हरेक पत्थर बदख़्शाँ का लाल होता, तो लाल और :पत्थरों का मोल एक समान होता।

हरेक सुन्दर सूरत वाले का मिज़ाज भी अच्छा हो, यह कठिन बात है; क्योंकि भलाई दिलके अन्दर होती है न कि सूरतमें! तुम आदमीके तौर-तरीक़े देखकर, एक दिनमें, यह जान सकते हो कि इसने कितना इल्म हासिल किया है अर्थात् यह कितना विद्वान् है, मगर उसके दिलकी तरफ़से निर्भय मत रहो और अपनी पहचान का घमण्ड न करो; क्योंकि मनुष्य की दुष्टता का पता बरसोंमें लगता है।

जो शख़्स बड़े लोगोंसे लड़ाई करता है, वह स्वयं अपना ख़ून बहाता है। जो अपने तईं बड़ा ख़याल करता है, वह उसके समान है, जो कनखियोंसे देखता है मगर दूना देखता है। अगर मेंढे के सिरके साथ खेल करोगे, तो अपने सिर को जल्दी ही टूटा हुआ देखोगे।

शेरके साथ पञ्जा लड़ाना और तलवार पर मुट्ठी मारना, अक्लमन्दों का काम नहीं है। ज़बरदस्तके साथ ज़ोर-आज़माई और लड़ाई न करो। जब ज़बरदस्तका सामना हो जाय, तब अपने हाथों को बग़लोंके नीचे दबा लो।

जो कमज़ोर आदमी ज़बरदस्तके साथ लड़ाई या ज़ोर-आज़माई करता है, वह अपने दुश्मन का दोस्त बनकर अपनी मौत आप बुलाता है जो छायामें पला है, वह योद्धाओंके साथ युद्धभूमिमें कैसे जा सकता है? जिसकी भुजाओंमें बल नहीं है, यदि वह लोहेकी कलाईवाले का सामना करता है, तो वह मूर्खता करता है।

दुर्जन लोग सज्जनों को उसी तरह नहीं देख सकते, जिस तरह बाज़ारू कुत्ते शिकारी कुत्तोंको देखकर भौंकते और गुर्राते हैं; मगर उसके पास आनेकी हिम्मत नहीं करते।

जब कोई नीच मनुष्य किसी दूसरे की गुणोंमें बराबरी नहीं कर सकता, तब वह अपनी दुष्टताके कारण उसमें दोष लगाने लगता है। नीच और परगुण-द्वेषी मनुष्य गुणवान की निन्दा उसकी नामौजूदगीमें ही करता है, लेकिन जब सामना हो जाता है, तब उसकी बोलती बन्द हो जाती है।

जो पेट न होता तो चिड़िया चिड़ीमारके जालमें न फँसती और चिड़ीमार भी अपना जाल न फैलाता। पेट हाथों की हथकड़ी और पैरोंकी बेड़ी है। जो पेट का गुलाम है, वह ईश्वर की उपासना नहीं करता।

बुद्धिमान देरसे खाते हैं, धर्मात्मा आधे पेट भोजन करते हैं, योगी लोग सिर्फ उतना खाते हैं जितनेसे ज़िन्दगी क़ायम रह सके, जवान लोग जो कुछ थाली में होता है सब खा जाते हैं, बूढ़ोंके जब तक पसीना नहीं निकलता, तब तक खातेही रहते हैं, किन्तु कलन्दर इतने भुखमरेपनसे खाते हैं कि, पेट में सांस चलने को भी जगह नहीं रहती और थाली में एक टुकड़ा भी दूसरों की जीविका को नहीं रहता। जो शख़्स पेट का गुलाम होता है, उसे दो रात नींद नहीं आती ; एक रात तो पेटके बोझके मारे और दूसरी रात भूख की फ़िक्रसे।

स्त्रियोंके साथ सलाह करनेसे बर्बादी होती है और उपद्रवियों अथवा राजद्रोहियोंके प्रति दातारी करनेसे अपराध होता है। जो चीते पर रहम करता है वह बकरियों पर जुल्म करता है। अगर तुम दुष्टों पर दया करते हो और उनकी हिमायत लेते हो ; तुम भी उनके किये हुए पापके अपराधी हो।

जो कोई अपने दुश्मन को, अपने क़ाबूमें पाकर भी, मार नहीं डालता, वह खुद अपना दुश्मन है। अगर पत्थर हाथ में हो और साँप पत्थरके तले हो, तो उस समय पशोपेश करना और देर करना बेवक़ूफ़ी है। चीतेके तेज़ दाँतों पर रहम करना, भेड़ों पर ज़ुल्म करना है। किन्तु दूसरे लोग इस विचारके विरुद्ध हैं और कहते हैं कि, कैदियोंके मारडालनेमें बिलम्ब करना अच्छा है, क्योंकि पीछे उनका मारना

और छोड़ना हाथमें है ; क्योंकि यदि कोई बिना विचारे मार डाला जावे, और पीछे कोई ऐसी बात निकल आवे, जिससे उसका मार डालना अनुचित जँचे, तब वह ज़िन्दा नहीं हो सकता। मार डालना आसान है, मगर ज़िन्दा करना नामुमकिन—असम्भव—है। तीरन्दाज़ का सब्र करना अक्लमन्दी है ; क्योंकि जो तीर कमानसे निकल जायगा, वह फिर लौटकर न आवेगा।

अगर कोई बुद्धिमान मूर्खों के साथ, किसी विषय पर, बाद-विवाद करे ; तो उसे अपनी इज्ज़त की आशा त्याग देनी चाहिये ; अगर कोई मूर्ख किसी अक्लमन्द को हरा दे, तो आश्चर्य न करना चाहिये ; क्योंकि मामूली पत्थर भी तो मोती को तोड़ डालता है। जिस समय, एकही पिञ्जरे में, कोयलके साथ कव्वा हो, उस समय यदि कोयल न गावे तो आश्चर्य्य की क्या बात है? यदि कोई हरामज़ादा किसी बुद्धिमान पर जुल्म करे, तो बुद्धिमान को चाहिये कि कुपित और शोकार्त्त न हो। अगर एक निकम्मा पत्थर बेश-क़ीमत सोनेके प्याले को तोड़ दे, तो पत्थर बेश-क़ीमत और सोना कम-क़ीमत न हो जायगा।

अगर कोई अक्लमन्द कमीनों की मण्डलीमें पड़कर, उनपर अपने उपदेश का असर न डाल सके अथवा उनका प्रशंसा-भाजन न बन सके, तो इसमें आश्चर्य्य की कौन बात है? बीन की आवाज़ ढोल की आवाज़ को दबा नहीं सकती और बद-

गर लहसन अम्बर की खुशबू को परास्त कर देता है। मूर्ख
ो अपनी ऊँची आवाज़ का घमण्ड हुआ, क्योंकि उसने
ुस्ताख़ीसे एक अक्लमन्द को घबरा दिया। क्या नहीं जानते
कि, हिजाजके बाजे की आवाज़ नटके ढोलसे दब जाती
है? अगर एक रत्न कीचड़में गिर पड़े, तोभी वह वैसाही
नफ़ीस बना रहता है और यदि गर्दा आस्मान पर चढ़ जावे,
तोभी अपनी असली नीचता नहीं छोड़ता। लियाक़त विना
तालीमके और तालीम विना लियाक़तके बेकार है। शक्कर
की क़ीमत भन्नेसे नहीं है, किन्तु उसकी आपकी ख़ासियतसे
है। कस्तूरी वह है जो आप खुशबू दे, न कि अत्तारके
कहनेसे। अक्लमन्द, अत्तारके तबले—डब्बे—के समान है, जो
चुपचाप रहता है, लेकिन गुण दिखाता है। मूर्ख नटके ढोल
के समान है जो शोर बहुत करता है, किन्तु भीतरसे पोला है।
अन्धोंके बीचमें सुन्दरी कन्या और काफ़िरोंके घरमें
क़ुरान की जो गति है, वही गति बुद्धिमान की मूर्खों
में है।

जिस दोस्तको तुम एक मुद्दतमें अपने हाथमें लाये
हो, उससे एक दममें नाराज़ न होजाओ। पत्थर जो
बरसोंमें लाल हुआ है, उसे एक क्षणमें पत्थरसे न तोड़
डालो।

बुद्धि, ज्ञान-शक्तिके इस भाँति अधीन है, जिस भाँति एक
सीधा-सादा पुरुष चालाक स्त्रीके वशमें। उस सुखदाई घरके

दरवाज़े को बन्द कर दो, जिसके अन्दर औरत की आवाज़ गुंजती है।

बुद्धि, विना वलके छल और कपट है और वल विना बुद्धिके मूर्खता और पागलपन है। सबसे पहले विचार, उद्योग और बुद्धिमानीकी आवश्यकता है, इनके पीछे राज्यकी। क्योंकि मूर्खोंके हाथमें हुकूमत और दौलत देना, खुद अपने विरुद्ध हथियार देना है।

वह उदार पुरुष जो खाता और दान करता है, उस धर्मात्मा से अच्छा है जो निराहार रहता और सञ्चय करता है। जो पुरुष, लोगों का प्रशंसापात्र होनेके लिये, विषय भोगोंका त्याग करता है वह उचित को छोड़ कर अनुचित रीतिसे विषय-वासना पूरी करता है। वह साधु जो ईश्वर-भजनके लिये एकान्त-वास नहीं करता, वह विचारा धुँधले शीशेमें क्या देखेगा? थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है और बूँद बून्दसे नदी बन जाती है।

अक्लमन्द आदमी को मामूली आदमी की गुस्ताख़ी, लापरवाहीसे दरगुज़र न करनी चाहिये; क्योंकि इससे दोनों तरफ़ नुक़सान पहुंचता है; अक्लमन्द का रौब कम होता है और मूर्ख की मूर्खता बढ़ती है। अगर तुम नीच मनुष्य के साथ मिहरबानी और खुशीसे बातें करोगे, तो उसका घमण्ड और हठ बढ़ जायगा।

पाप, किसीके भी द्वारा क्यों न किया जाय, घृणा उत्पादक

लेकिन विद्वानों में और भी ज़ियादा ; क्योंकि विद्या
...न से युद्ध करने का शस्त्र है। अगर कोई हथियारबन्द
...मी क़ैद में पड़ जावे, तो उसे बहुत ही लज्जित होना
है। दुश्चरित्र मूर्ख दुश्चरित्र पण्डित से अच्छा है ; क्योंकि
...ने तो अन्धे होने के कारण राह खोई, किन्तु पण्डित दो
...ख होते हुए भी कूए में पड़ा।

वह शख़्स जिस की रोटी लोग उसके जीते जी नहीं
...ते, उस के मरने पर उस का नाम भी नहीं लेते। जब
...स देशमें अकाल पड़ा, तब यूसुफने भरे-पूरे भण्डार से कुछ
...खाया ; क्योंकि खाने से उसे भूखों के भूल जानेका
...न्देशा था। बेवा अंगूर चखती है, न कि मालिक बाग़।
...जो सुख-सम्पद की अवस्था में रहता है, वह किस भाँति जान
...सकता है कि भूखा रहना कैसा है? जो आप दुःखी है, वही
...दुखियों की दशा जानता है। ए मनुष्य! तू जो तेज़ घोड़े
...पर चढ़ा हुआ है, उस गधे का विचार कर, जो काँटों से लदा
...हुआ कीचड़ में फँसा है।

अपने पड़ोसी फ़क़ीर से आग मत माँग ; क्योंकि उस की
...चिमनी से जो कुछ निकलता है, वह उसके दिलका धूआँ है।

अकाल और सूखा के समय किसी तङ्गहाल फ़क़ीर से यह
...मत पूछो कि किस तरह गुज़र होती है ; यदि पूछना ही हो,
...तो उस हालतमें पूछो जबकि तुम्हारा इरादा उसे जीविका
...देकर उसके घावपर मरहम लगाने का हो। जब तुम किसी

लदे हुए गधेको कीचड़में फँसा हुआ देखो, तब उस पर रहम करो और किसी भाँति उसके सिरपर होकर न निकल जाओ। अगर तुम आगे बढ़ो और पूछो कि कैसे गिरा; तो कमर बाँधो और मर्दों के मानिन्द उस की पूँछ पकड़ कर खींचो।

दो बातें असम्भ हैं; एक तो भाग्य में लिखे से अधिक खाना; और दूसरे, नियत समय से पहले मरना। होनहार, हमारे हज़ारों बार रोने-पीटने या खुशामद और शिकायतें करनेसे टल नहीं सकती। हवा के ख़ज़ाने के फरिश्ते को क्या परवा, यदि एक बेवा बुढ़िया का चिराग़ बुझ जावे।

ए रोज़ी—जीविका—माँगनेवाले! भरोसा रख, तू बैठकर खायगा और तू जिस को मौत का बुलावा आगया है भाग मत; क्योंकि भागकर तू अपनी जान बचा न सकेगा। बैठा रह या उद्योगकर, भगवान् तेरी रोज़ की रोटी अवश्य भेजेगा। शेर या चीते के मुँह में भी क्यों न चला जावे, यदि तेरे मरने का दिन न आया होगा, तो वे भी तुझे हरगिज़ न खा सकेंगे।

जो तेरे भाग्यमें नहीं है वह तुझे न मिलेगा और जो तेरे भाग्यमें है वह तुझे जहाँ तू होगा वहीं मिल जायगा। सुना है, कि सिकन्दर बड़ी मिहनतसे अन्धेरी दुनियामें गया; किन्तु वहाँ पहुंच जानेपर भी वह अमृत न चख सका।

मछुआ बिना रोज़ीके दजला (नदी) में मछली नहीं पकड़ सकता और मछली बिना मौत के खुश्की—स्थल—पर नहीं

सकती। लालची मनुष्य, जीविका की फ़िक्रमें, तमाम दुनिया में दौड़ता फिरता है और मृत्यु उसकी एड़ियों के पीछे घूमती है।

द्वेषी मनुष्य निरपराध मनुष्यों से शत्रुता रखता है। मैंने एक मूर्खको एक प्रतिष्ठित मनुष्य का अपमान करते देखा। मैंने उससे कहा :—"महाशय! अगर आप भाग्यहीन हैं, तो इसमें भाग्यवानों का क्या दोष है?" जो तुमको देखकर जले, उसका बुरा मत चीतो; क्योंकि वह अभागा स्वयं आफ़त में फँसा हुआ है। जिसके पीछे ऐसा शत्रु (दूसरे को देखकर जलना) लग रहा है, उसके साथ शत्रुता करने की क्या आवश्यकता है?

श्रद्धाहीन विद्यार्थी निर्धन प्रेमी है; अनजान यात्री पङ्खहीन पक्षी है; अनभ्यस्त विद्वान् फल-हीन वृक्ष है और विद्याहीन साधु बिना द्वारका घर है।

कुरान इस ग़रज़से प्रकाशित की गई थी, कि लोग उससे अच्छी-अच्छी नसीहतें सीखें, न कि इस मतलब से कि लोग उसका पाठ मात्र किया करें। निरक्षर योगी पैदल मुसाफ़िर के समान है और सुस्त विद्वान् सोते हुए सवार के माफ़िक़ है। वह पापी जो हाथ उठाकर ईश्वर से आशीर्वाद माँगता है, उस साधुसे अच्छा है जो अभिमान करता है। वह फ़ौजी अफ़सर जो शान्त, शील और मिलनसार है; उस क़ानून जानने-वाले से अच्छा है जो लोगोंपर ज़ुल्म करता है।

वह विद्वान् जो शास्त्रोंको पढ़कर उनके अनुसार नहीं चलता, भिड़—बर्र—के समान है, जो डङ्क मारती है किन्तु मधु नहीं देती। कठोर और गंवार भिड़से कह दो:—"जब तू मधु नहीं देसकती, तब डङ्क न मार।"

जिस पुरुष में पुरुषत्व नहीं है वह औरत है और जो साधु लालची है वह बटमार—लुटेरा—है। जिस मनुष्य ने लोगोंकी दृष्टिमें पवित्र बनने के लिये सफ़ेद कपड़े पहिने हैं, उसने अपना ऐमालनामा काला किया है। हाथको सांसारिक वस्तुओंसे रोकना चाहिये। आस्तीनोंके लम्बी अथवा छोटी होनेसे क्या?

दो मनुष्यों के दिलसे रञ्ज नहीं जाता; एक तो व्यौपारी जिसका जहाज़ समन्दर में डूब गया है और दूसरा वह जिस का वारिस—उत्तराधिकारी—क़लन्दरों के साथ बैठा हुआ है। यद्यपि बादशाह की दी हुई ख़िलअत क़ीमती होती है, किन्तु अपने मोटे-झोंटे और फटे-पुराने कपड़े उससे कहीं बढ़कर होते हैं। यद्यपि बड़े आदमियों का खाना—भोजन—मज़ेदार होता है; तथापि अपनी झोलीका टुकड़ा उससे ज़ियादा स्वाद होता है। सिरका या साग-पात जो अपनी मिहनत से जुटाया जाता है, वह गाँवके सर्दार के दिये हुए भेड़के बच्चे और रोटीसे अच्छा होता है।

जिस दवा पर भरोसा न हो वह दवा खाना और बिना

हुई राहपर, बिना काफ़ले के अकेले जाना,—ये दोनों बुद्धिमानों की मतिके विरुद्ध हैं।

लोगोंने एक बड़े भारी विद्वान् से पूछा कि, आप ऐसे ... किस तरह हुए? उसने कहा :—"मैं जिस बातको ... नता था, उसके दर्याफ़्त करने में शर्म न करता था। अगर ... चतुर वैद्यको नाड़ी दिखाओगे, तो आराम होनेकी आशा ... सकोगे। हर चीज़के विषय में जिसे तुम नहीं जानते, ...; क्योंकि पूछने की थोड़ीसी तकलीफ़ से तुम्हें विद्याकी ...ष्ठित राह मिल जायगी।"

जब तुम्हें इस बातका निश्चय हो, कि अमुक बात मुझे ...ंत समयपर आप ही मालूम हो जायगी; तब तुम उस ...के जानने के लिये जल्दी मत करो। अगर थोड़ा सब्र न ...गे और जल्दबाज़ी करोगे, तो तुम्हारी इज़्ज़त और रौब ... कमी आजायगी। जब लुक़मान ने देखा, कि दाऊदके ...थमें लोहा, करामातके बलसे, मोम हो गया; तब उसने यह ...झकर कि मुझे यह भेद बिना पूछे ही मालूम हो जायगा, ...ससे कुछ न पूछा।

सामाजिक योग्यताओं में नह बात ज़रूरी है, कि या तो ...तुम घर-धन्धेमें लगो या एकान्तमें बैठकर ईश्वर-भजन करो। ...ब किसीसे कोई बात कहो तब पहले यह विचारो, कि यह ...त उसे रुचेगी या नहीं और उसका ध्यान मेरी ओर है या ...हीं। अगर उसका ध्यान तुम्हारी तरफ़ हो, तो उसके

मिज़ाज के माफ़िक बात कहो। जो बुद्धिमान मजनूं के पास बैठेगा, वह लैलाके ज़िक्रके सिवा और बात न कहेगा।

अगर कोई आदमी ईश्वर-भजन करने के लिये किसी शराब की दूकान में जाय ; तो लोग सिवा इस बात के कि वह वहाँ शराब पीने गया था और कुछ न कहेंगे। इसी भाँति जो मनुष्य दुष्टों की सङ्गति करता है, चाहे वह दुष्टोंके से आचरण पर न चले ; तोभी लोग उस पर दुष्टोंकीसी चालपर चलने का दोष लगावगे। अगर तुम नादानों की सुहवत करोगे, तो तुम पर नादानी का कलङ्क लगेगा। मैंने एक अक्लमन्द से कहा कि मुझे कुछ नसीहत दो। उसने कहा :—“अगर तुम विचारवान और बुद्धिमान हो, तो मूर्खों की सङ्गति मत करो ; क्योंकि उनकी सुहवत से तुम गधे हो जाओगे और अगर तुम मूर्ख हो तो तुम्हारी अज्ञानता और भी बढ़ जायगी।”

अगर किसी सीधे ऊंटकी मुहरी एक बालक के भी हाथ में हो ; तो ऊंट उसे १०० कोस तक राज़ी-राज़ी लिये चला जायगा। किन्तु अगर रास्तेमें एक ऐसा ख़न्दक आजावे, जिसमें जान जानेका भय हो और बालक अज्ञानता-वश ऊंट को उसी ख़न्दकपर लेजाना चाहे ; तो ऊंट उस समय बालक के हाथसे मुहरी छुड़ा लेगा और उसकी आज्ञानुसार कदापि न चलेगा ; क्योंकि आफ़त के समय मिहरबानी करना बुरा है। कहते हैं, कि मिहरबानी से दुश्मन दोस्त नहीं होता, बल्कि दुश्मनी और भी बढ़ता है। जो मनुष्य तुमपर मिहर-

...ती करे, उसके साथ नम्र रहो और जो इसके विरुद्ध आचरण ...रे, उसकी आँखोंमें धूल झोंको। कठोर और सख़्त मिज़ाज आदमी के साथ मिहरबानी और नरमी से बात-चीत न करो; क्योंकि ज़ङ्ग खाया हुआ लोहा घिसी हुई रेतीसे साफ़ नहीं होता।

जो शख़्स, अपनी बुद्धिमानी दिखाने के लिये, दूसरोंकी बातोंके बीचमें बोलता है वह अपनी नादानी प्रकट करता है; होशियार आमदी से जब तक कुछ पूछा न जाय, तब तक वह जवाब नहीं देता। बात चाहें जैसी साफ़ क्यों न हो, किन्तु उसका दावा करना कठिन है।

झूठ कहना ज़ख़्म करना है। अगर घाव आराम भी होजाय, तोभी निशान बना रहता है। यूसफ के भाई झूठ बोलने में बदनाम हो गये थे। जब उन्होंने सच बोला, तब भी किसीने उनका विश्वास नहीं किया। जिसको सच बोलने की आदत है, वह अगर कभी ग़लती से झूठ भी बोलदे; तो उसका क़ुसूर माफ़ हो सकता है; किन्तु वह शख़्स जो झूठ बोलने के लिये प्रसिद्ध है, यदि सच भी बोले तो आप उसे झूठाही कहेंगे।

यह बात संशय-रहित है, कि सृष्टिमें मनुष्य सब जीवोंसे ऊंचा और कुत्ता सबसे नीचा जानवर है; लेकिन अक्लमन्द कहते हैं, कि कृतज्ञता न माननेवाले आदमी से कृतज्ञता स्वीकार करनेवाला कुत्ता अच्छा है। अगर कुत्तेको एक

टुकड़ा रोटी दे दो और पीछे तुम उसके सौ पत्थर भी मारो, तोभी वह रोटीके टुकड़ेको न भूलेगा। यदि तुम एक नीचको चिरकाल तक पालो ; तोभी वह एक तुच्छसी बात पर तुमसे लड़नेको मुस्तैद होजायगा।

वह फ़क़ीर जिसका अन्त अच्छा है, उस बादशाह से भला है जिसका अन्त बुरा है। सुखसे पहले दुःख भुगतना अच्छा है ; किन्तु सुखके पीछे दुःख भोगना भला नहीं है।

आसमान ज़मीन को वृष्टिसे उपजाऊ बनाता है ; किन्तु ज़मीन उसे बदले में धूलके सिवा कुछ नहीं देती। घड़ेमें जो कुछ होता है, वह उसीको टपका देता है। अगर तुम्हारी नज़रमें मेरा स्वभाव अच्छा न जँचे, तो तुम अपने स्वभाव की उत्तमता को न छोड़ो। सर्व्वशक्तिमान् भगवान् पापीके पाप-कर्म्म को देखते हैं, किन्तु पापको छिपाते हैं ; परन्तु पड़ोसी देखता नहीं है, लेकिन हल्ला मचाता है। भगवान् रक्षा करें! अगर आदमी आदमी के गुप्त कामोंको जानता, तो कोई किसी की दस्तन्दाज़ी से न बचता।

सोना खानसे खोदकर निकाला जाता है, किन्तु सूमसे उसकी जान खोदने से। कमीने लोग ख़र्च नहीं करते, किन्तु ख़बरदारी से जमा करते हैं। उन लोगोंका कहना है, कि ख़र्च कर देनेसे ख़र्च करने की उम्मेद अच्छी है। तुम एक दिन कमीने को शत्रुओंको इच्छानुसार रुपया छोड़ कर मरा हुआ देखोगे।

जो निर्बलोंपर दया नहीं करता, उसे बलवान के अत्याचार सहने पड़ेंगे। ऐसा सदा नहीं होता, कि बलवान भुजा निर्बल भुजाको परास्त हो करती रहे। निर्बल का दिल न दुखाओ; अन्यथा कोई तुमसे अधिक बलवान तुमको नीचा दिखावेगा।

एक फ़क़ीर अपनी ईश्वर-उपासना के समय कहा करता था :—"हे भगवन्! बुरों पर दया करो, क्योंकि नेकोंपर दया करके तुमने उन्हें नेक बनाया है।"

अक़्लमन्द झगड़ा देखकर दूर हट जाता है और जब शान्ति देखता है तब लङ्गर डाल देता है; क्योंकि झगड़े के समय दूर रहने में कुशल है और शान्ति के समय बीचमें रहने में सुख है।

बादशाह ज़ालिमों के दूर करने के लिये, कोतवाल खून करनेवालों की ख़बरदारी के वास्ते और क़ाज़ी चोरीके मुक़द्दमे सुनने के लिये हैं। दो ईमानदार आदमी अपनी नालिश करने क़ाज़ीके पास नहीं जाते। जो तुम्हें हक़ मालूम हो उसे दे दो। झगड़े-तकरार के साथ देनेसे, राज़ीसे देना भला है। यदि कोई मनुष्य राज़ीसे सरकारी टैक्स नहीं देगा, तो हाकिम के नौकर ज़ोरसे लेलेंगे।

बूढ़ी वेश्या सिवा फिर पाप न करने की प्रतिज्ञा के और क्या कर सकती है? पदच्युत कोतवाल मनुष्योंपर और ज़ुल्म न करने के इक़रार के सिवा और क्या कर सकता है? वह मनुष्य जो, जवानीमें, एकान्तमें बैठकर ईश्वर में चित्त लगाता

है, ईश्वर की राहमें शेर-मर्द हैं; क्योंकि वृद्ध मनुष्य तो अपने कोनेसे ही नहीं सरक सकता।

दो मनुष्य मरते समय अपने साथ शोक लेगये; एक वह जिसने जमा किया किन्तु भोगा नहीं, दूसरा वह जिसने विद्या पढ़ी किन्तु उसे काममें न लाया। किसीने ऐसा कञ्जूस विद्वान् नहीं देखा, जिसके दोष ढूँढ़ने की लोगोंने कोशिश न की हो। लेकिन अगर एक दाता मनुष्य में दो सौ ऐब भी हों, तथापि उसकी दातारी उनको छिपा देती है।

फुटकर नीति

विविध संस्कृत ग्रन्थों से।
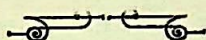
धनुर्धारी के वाण से कोई मरे और न भी मरे, किन्तु बुद्धिमान की बुद्धि से देश और देशाधिपति दोनों का नाश हो जाता है।

बुद्धिमान या तो सभा में जाय नहीं, यदि जाय तो यथार्थ बात कहे ; क्योंकि बोलने और न बोलने, दोनों ही से, आदमी अपराधी हो जाता है।

राज-सभा में जाकर, राग-द्वेष छोड़ कर, ऐसी बात कहनी चाहिये ; जिससे मनुष्य को ईश्वर का अपराधी न बनना पड़े।

राजाके पास कोई अदण्ड्य नहीं है ; यदि गुरु, भाई, पुत्र, पुरोहित और माता-पिता भी धर्म से डिग जावें ; तो राजा उनको भी दण्ड दे सकता है।

अत्यन्त कठोर मालिक को त्याग देना ही ठीक है ; मूर्ख और कृतघ्न स्वामी को भी छोड़ देना चाहिये ; किन्तु सूम यानी कञ्जूस को तो सब से पहले छोड़ देना उचित है।

राजा के विचारवान न होने से, गुणवानों के गुण इस भाँति नष्ट हो जाते हैं; जिस भाँति पति के विदेश में होने से पतिव्रता स्त्रियों की छातियाँ नहीं उठतीं।

राज-माता, राज-पटरानी, राज कुमार, मन्त्री और राज-प्रोहित इनके साथ राजा के समान बर्ताव करना चाहिये।

बुद्धिमान को चाहिए कि आमदनी से चौथाई ख़र्च करे; क्योंकि जिस दीपक में तेल होता है वह बहुत देर तक जलता रहता है।

बुद्धिमानों का काम है, कि धन को संग्रह करें, बढ़ावें और यत्न से उसकी रक्षा करें। जो मनुष्य विना कमाये खाये चला जायगा, वह एक दिन सुमेरु को भी चाट जायगा।

राजा को उचित है, कि अज्ञानी अपराधियोंको क्षमा करे; क्योंकि सब आदमियों में चतुराई का होना कठिन है।

जो काम बड़े लोगों से नहीं होता, उसे छोटे आदमी कर लेते हैं; जैसे गुफ़ा का अँधेरा सूर्य्य से दूर नहीं होता, किन्तु दीपक से दूर हो जाता है।

घर पर आये हुए दुश्मन का भी सम्मान करना चाहिए; क्योंकि वृक्ष अपने काटनेवाले के सिर से अपनी छाया को हटा नहीं लेता।

सुगन्धपूर्ण केतकीका पुष्प जिस तरह काँटोंसे घिरा रहता है;; उसी तरह राजा भी दुष्टों से घिरा रहता है।

बुद्धिमान को पदवी देने से राजा को तीन लाभ होते हैं यश, स्वर्ग और धन की प्राप्ति।

मूर्ख को पदवी देने से राजा को तीन दोष लगते हैं,— अपयश, नरक, और धन-हानि।

जो राजा का काम नमकहलाली से करता है और जिसे राजा चाहता है, उसे राजा के अन्य मुँह-लगे राज-सेवा से अलग करने के यत्न किया करते हैं

राजा को उचित है, कि किसी बड़े काम पर किसी कर्मचारी को पाँच सात वरस से अधिक न रक्खे; क्योंकि जो पुराना नौकर होता है वह अपराध होने से भी नहीं डरता और स्वामी को कुछ न समझ कर, स्वतन्त्रता से काम करता है।

विष मिला हुआ भात, हिलता हुआ दाँत, और बदनामी करानेवाला मन्त्री—सलाहकार—को एकदम जड़ से उखाड़ देना ही बुद्धिमानी है।

राजा, बावला, बालक और धन-मदसे मतवाले, उस वस्तु की इच्छा करते हैं; जिसका मिलना असम्भव हो।

छः कानों में पहुँचकर गुप्त भेद प्रकट हो जाता है; इस लिये राजा को चाहिये कि दो से तीसरे के साथ सलाह न करे।

समय-समय पर इनाम देनेवाला, अपराध हो जाने पर क्षमा करनेवाला और क़दरदान मालिक कठिनता से मिलता

है ; इसी भाँति स्वामी का भला करनेवाला और चतुर चाकर भी मुश्किल से मिलता है।

जो गुणों की क़द्र करना नहीं जानते, बुद्धिमान उनकी नौकरी नहीं करते। जिस भाँति ऊसर धरती के जोतने-बोने से कुछ लाभ नहीं होता ; वैसेही अज्ञानी स्वामी की सेवा करने से कुछ नफ़ा नहीं होता ।

राजा के रनवास में जानेवालों और रानियों से जो सलाह नहीं करता, वही राजा का प्यारा होता है।

जो मनुष्य राजाके वैरियोंसे वैर रखता है और उसके मित्रों अथवा कृपा-पात्रोंसे प्रेम रखता है, वही राजाका प्यारा होता है।

जो मनुष्य युद्ध में अपने स्वामी के आगे-आगे चलता है, नगर में उसके पीछे-पीछे चलता है और महल में द्वार पर बैठता है, वही राजा का प्यारा होता है।

राज-सभामें बिना पूछे कुछ न बोलना चाहिये ; जो बिना पूछे बोलता है उसका अनादर होता है।

जिसे अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं है वह चाहें धनवान हो, चाहे कुलीन हो, चाहें राज-कुटुम्ब का हो और चाहे स्वयं राजा ही क्यों न हो, बुद्धिमान लोग उसकी नौकरी नहीं करते।

जिसकी नज़र में काँच मणि है और मणि काँच है, उसके पास अच्छा नौकर कदपि नहीं ठहर सकता।

यदि स्वामी भले-बुरे नौकरों से एकसा बर्ताव करता है, तो नौकरों का उत्साह भङ्ग हो जाता है।

प्रजा पर कृपादृष्टि रखने वाले राजा की वृद्धि होती है। प्रजा के नष्ट होने से राजा भी नष्ट हो जाता है।

निरक्षर ब्राह्मण, वृद्ध गृहस्थ, धनहीन कामी, धनिक तपस्वी, कुरूपा वेश्या और डरपोक राजा—ये छः व्यर्थ हैं।

कुत्ते में शुद्धता, ज्वारी में सत्य, सूर्प्प में शान्ति, स्त्रियों में काम-शान्ति, मद्यप में तत्त्वविचार और राजा में मित्रता, न तो किसी ने देखी और न सूनी होगी।

बुद्धिमान को चाहिये कि मूर्ख के पास न जाय, यदि जाय तो ठहरे नहीं; यदि ठहर भी जाय तो कुछ कहे नहीं; यदि कहे भी तो मूर्खता की ही वात कहे।

बहुत मेल-जोल से अवज्ञा होती है और किसी जगह वारम्बार जाने से अनादर होता है। प्रयाग में गङ्गा बहती है; किन्तु प्रयाग-वासी, गङ्गा को छोड़कर, कुओं पर ही स्नान करते हैं।

निष्कपट मित्र से, गुणवान चाकरसे, शक्तिमान स्वामी से और प्यारी स्त्री से, मनुष्य अपने दुःख की बात कहकर, सुख पाता है।

जो बिना बुलाये जाता है, बिना पूछे बोलता है और अपने लिये राजा का प्यारा समझता है, वह मूर्ख है।

जो मनुष्य अपने भला चाहनेवाले मित्र और सेवकों क

बात नहीं मानता ; वह अपने तईं मुसीवत में फसाता और दुश्मनों को राज़ी करता है।

बड़े लोगोंके घरमें, आसन, भूमि, जल और मीठी वाणी,— इनका अभाव कभी नहीं होता ।

जैसे अपने प्राण प्यारे होते हैं वैसेही और जीवों को भी अपने प्राण प्रिय लगते हैं ; इसीलिये सज्जन, सब जीवोंके प्राणों को अपने प्राणों के समान समझकर, उन पर दया करते हैं।

निर्बलों का बल राजा है, बालकों का बल रोना है, मूर्खों का बल चुप है और चोरों का बल झूठ है।

पुत्रसे अधिक कोई लाभ नहीं है, अपनी विवाहिता स्त्रीसे बढ़कर सुख नहीं है और झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

चतुर पुरुष को चाहिये कि अपने मा-बाप और गुरु की प्रशंसा उनके मुंह-सामने करे ; मित्र और बन्धु-बान्धवों की बड़ाई उनकी पीठ-पीछे करे ; सेवकों की प्रशंसा उनके काम करने के पीछे करे ; किन्तु पुत्र और स्त्री की तारीफ़ उनके आगे या पीछे कभी न करे।

बुद्धिमान को चाहिये, कि बीती बातका सोच न करे और आगे होनेवाली बात की चिन्ता न करे ; किन्तु सदा वर्तमान काल के अनुसार काम करे।

विना सवारी सफ़र करने, मानहीन भोजन करने और नासमझ मालिक की नौकरी करने से बढ़कर और दूसरा दुःख नहीं है।

अन्नदान से विद्यादान की महिमा अधिक है; क्योंकि अन्नदानसे तो क्षण-भरका ही सुख होता है; किन्तु विद्यादान से जीवनभर सुख मिलता है।

जो मनुष्य कभी राज़ी और कभी नाराज़ होता है अथवा क्षण में प्रसन्न और क्षण में अप्रसन्न होता है, उससे दूर रहने में ही भलाई है।

घोड़े हाथी का बलिदान कोई नहीं करता; सिंह का बलिदान तो कियाही नहीं जाता; परन्तु बकरे की बलि की जाती; इससे मालूम होता है कि दैव भी दुर्बल को ही मारता है।

हवा वनके जलानेवाली आग की तो सहायता करती है, किन्तु दीपक को बुझा देती है; इससे मालूम होता है कि, ग़रीब से कोई दोस्ती नहीं करता।

जो आदमी अपने से दूर हो, जल में हो ,दौड़ रहा हो, धनके घमण्ड में चूर हो अथवा मदसे मतवाला हो रहा हो, उसको नमस्कार प्रणाम आदि न करना चाहिए।

मूर्ख शिष्यके पढ़ाने, बदचलन स्त्रीको परवरिश करने और शत्रुओं की सङ्गति करने से बुद्धिमानों में भी दोष लग जाता है।

अपनी आज्ञानुसार चलनेवाले, निरपराध और प्रेमी को जो त्याग देता है, वह उसी तरह दुःख पाता है, जिस तरह रामचन्द्र ने सीता को त्याग कर दुःख पाया था।

मनुष्य को जीव-हिंसा, चोरी, और पर-स्त्री-गमन से सदा बचना चाहिए।

जो मनुष्य किसी से वैर-विरोध नहीं रखते, न किसी से कुछ माँगते और न किसी की निन्दा करते हैं और बिना बुलाये किसी के घर नहीं जाते, वह मनुष्यरूप में देवता हैं।

विवाह के समय, ऋतुदानके समय, सूली चढ़ने के समय, सर्व्वस्व नाश होने के समय तथा ब्राह्मण के लिए आवश्यकता होने से, पुरुष झूठ बोल सकता है, क्योंकि इन पाँच मौक़ों पर झूठ बोलने से पाप नहीं लगता।

स्त्रीकी जुदाई, स्वजनों का अपवाद, क़र्ज़दारी, कञ्जूस की नौकरी, दरिद्रता में मित्र-दर्शन,—ये पाँच विना आग ही शरीर को जलाते हैं।

जो मित्रके साथ बात-चीत, खाना पीना और बैठना करते हैं, उनके समान पुण्यवान और नहीं हैं।

बिना कहे जिस भाँति शरीर का भला हाथ और आँख का भला पलक करते हैं; उस भाँति बिना कहे-सुने जो भलाई करे वही मित्र है।

मित्र चार प्रकार के होते हैं :—(१) पेटके (२) सम्बन्ध के, (३) वंशके (४) और वह जिनको दुःख से छुड़ाया हो।

रोगी, निर्धन, पर देशी और शोकाकुल मनुष्य के लिये मित्र-दर्शन ही औषधि है।

स्वाभाविक मित्र भाग्यसे मिलता है। उसकी मित्रता पत्ति कालमें भी कम नहीं होती।

गुप्त भेदको प्रकाश कर देना, माँगना, निठुरता करना, त चलायमान करना, क्रोध करना और मिथ्या बोलना, ये त्र मित्रताके दूषण हैं।

सिंहनी एक ही पुत्र जनकर सुख पाती है; किन्तु गधीको क सौ पुत्र होने पर भी, भार ही लादना पड़ता है।

बचपन में जिसने विद्या न पढ़ी, जवानी में जिसने धन हीं कमाया, बुढ़ापे में जिसने पुण्य नहीं किया, वह चौथी वस्था में क्या कर सकेगा?

बुद्धिमान अपने मनमें ऐसा समझकर, कि मैं न तो बूढ़ा ँगा और मरू गा, विद्या और धनका संग्रह करे तथा मृत्युके हाथमें अपनी चोटी समझकर पुण्य करे।

विद्या के समान भाई नहीं है, रोगके समान शत्रु नहीं है, त्रके समान मित्र नहीं है और लेनदेनसे बढ़कर कोई ज़बरदस्त नहीं है।

बिना विद्याके जीवन शून्य है, बिना बान्धवों के दिशाएं सूनी हैं, बिना पुत्रके घर सूना है और जहाँ दरिद्रता है वहाँ सब ही सूना है।

आलसी को विद्या नहीं आती,, विद्याहीन को धन नहीं मिलता, धनहीन का कोई मित्र नहीं होता और बिना मित्रके इस जगत् में सुख नहीं मिलता।

जूआ, वाहियात :पुस्तकें पढ़ना, नाटक से प्रेम, स्त्री-सङ्ग, आलस्य और नींद—ये छः विद्याभ्यास में बाधक हैं ।

बुद्धिमानको चाहिये कि अवस्था चढ़ जाने पर भी विद्या-अभ्यास मन लगाकर करे ; यदि इस जन्ममें फल न मिलेगा, तो अगले जन्ममें तो अवश्य ही मिलेगा ।

वसन्त बीतनेपर कोकिलके शब्द से क्या लाभ ? कायर के अस्त्र-शस्त्रों के सजने से क्या फ़ायदा ? विपत्ति में जो काम न आवे, उस मित्र से क्या प्रयोजन ? विद्याहीन मनुष्यके जीनेसे क्या मतलब ? तात्पर्य्य यह है कि ये सब वृथा हैं ।

मूर्ख मनुष्यको धनवान देखकर, विद्या-प्रेमी विद्यासे मन न खींचें ; क्योंकि वेश्याओं को जड़ाऊ ज़ेवरों से लदी हुई देखकर, भले आदमियों की स्त्रियाँ वेश्या नहीं हो जातीं ।

जो धन-लोलुप हैं, उनका न कोई गुरु है न मित्र ; जो कामातुर हैं; उनको न लज्जा है न भय ; जो विद्या-प्रेमी हैं, :उनको न सुख है न निद्रा ; जो भूखसे पीड़ित हैं, उनको न रुचि है, न समय ।

विद्वान् दरिद्री भी उत्तम होता है । किन्तु मूर्ख धनवान अच्छा नहीं होता ; क्योंकि सुन्दरी मृगनयनी स्त्री फटे पुराने कपड़े पहन कर भीं अच्छी मालूम होती है ; किन्तु नेत्र-हीना—अन्धी—स्त्री वस्त्राभूषणों से सजी हुई भी अच्छी नहीं लगती ।

जिस कुलमें स्त्रियोंका आदर होता है, वहाँ देवता प्रसन्न ते हैं और जहाँ इनका अनादर होता है, वहाँ यज्ञ-हवन दि सब निष्फल हो जाते हैं ।

जिस कुलमें स्त्री, पुत्री, पुत्र-वधु, और बहिन दुःखी रहती वह कुल शीघ्र ही निर्धन हो जाता है ; और जिस कुलमें शोक्त स्त्रियाँ सुखी रहती हैं, वह कुल धन-धान्य आदि से रा-पूरा रहता है ।

उन्नति चाहनेवाले पुरुष को चाहिये कि यज्ञोपवीत, वाह आदि उत्सवों में वस्त्र-अलङ्कार आदिसे स्त्रियों का म्मान करें ।

जिस कुलमें पतिसे स्त्री और स्त्रीसे पति प्रसन्न रहता है, स कुलमें अवश्य सुख होता है ।

स्त्रीको उचित है, कि बालकपन, जवानी और बुढ़ापे आदि सी अवस्था में भी स्वतन्त्र न रहे। उसे हमेशा पति-पुत्र के धीन रहना उचित है ।

स्त्री बचपनमें पिताके अधीन रहे, जवानी में पतिके अधीन हे, जब पति मर ज़ावे तब पुत्रके अधीन रहे ; किन्तु स्वतन्त्र भी न रहे ।

स्त्रीको पिता, पुत्र और पतिसे कदापि अलग न होना चाहिये । इनसे अलग रहने से स्त्री दोनों कुलोंका नाम बदनाम करती है ।

पति स्त्रीको ऋतुदान एवं अनेक दूसरे अवसरों पर सुख

देता है। स्त्रीके लिये पतिसे बढ़कर सुख देनेवाला और कोई नहीं है; अतः स्त्रीको सदा पतिकी आज्ञा में रहना ही आवश्यक है।

यदि पति दुष्ट, क्रोधी, नपुन्सक, लम्पट, कोढ़ी, लँगुड़ा, लूला, काना, अन्धा बहरा हो; तोभी पतिव्रता को ऐसे पति का भी अपमाग न करना चाहिये; क्योंकि ऐसा पति भी देवता के समान पूजनीय है।

स्त्रीके लिये न व्रत-उपवासकी आवश्यकता है न यज्ञ की; वह केवल पति-सेवासे ही स्वर्गमें सम्मान पाती हैं।

पति-लोक चाहनेवाली पतिव्रता अपने जीवित अथवा मृत पतिका अप्रिय कार्य्य कदापि न करे।

यदि स्त्रीका पति मर जावे, तो वह पुष्टिकारक भोजन न करे; किन्तु कन्दमूल फल-फूल खाकर गुज़ारा करे और पर-पुरुष का नाम भी न ले।

जो स्त्री पुत्रके लिये पर-पुरुष का सङ्ग करती है, वह इस लोकमें बदनाम और पतिलोक से च्युत होती है।

जो स्त्री पर-पुरुष से व्यभिचार करती है, वह इस लोक में निन्दित होती है, और मरनेके पीछे स्यारी होती है एवं कुष्ट आदि रोगोंसे पीड़ित होती है।

वही स्त्री है जो गृह-कार्य्यमें प्रवीणा है, वही स्त्री है जो सन्तान प्रसव करती है, वही स्त्री है जो पतिप्राणा है, वही स्त्री है जो पतिव्रता है।

जिस स्त्रीसे पति प्रसन्न न हो, उसे स्त्री नहीं कह
ते। पतिके प्रसन्न रहने से स्त्रियोंके सब देवता प्रसन्न
हैं।

पतिके क्रोध करने और कुपित होनेपर भी जो स्त्री प्रसन्न-
रहती है, वह धर्मभागिनी है।

स्त्रीके पास अच्छे-अच्छे कपड़े और गहने न हों, तो कोई
की बात नहीं है; क्योंकि स्त्रीका सच्चा भूषण (गहना)
पति ही है। जो स्त्री पतिहीना है, वह कैसी ही सुन्दरी
न हो, किन्तु भली नहीं मालूम होती।

जिस भाँति सपेरा ज़बरदस्तों साँपको बिलसे निकाल लेता
, उसी भाँति पतिव्रता पतिको लेकर स्वर्गमें जाती है।

स्त्रीका धर्म है कि, अपने पतिकी कही हुई गुप्त बातें और
का धन वग़ैरः किसी शख़्स को भूलकर भी न बतावे।

झूठ बोलना, साहस करना, फ़रेब करना, पर-धन देखकर
ना, अत्यन्त-लालच करना, मूर्ख रहना और अपवित्र
ना,—ये सब स्त्रियोंके स्वाभाविक दोष हैं।

अग्निकी ईँधन से, समुद्र की नदियों से, मृत्युकी मनुष्यों
और स्त्रियोंकी पुरुषों से कभी तृप्ति नहीं होती।

दान, मान, सम्मान, सिधाई, सेवा, शस्त्र, शास्त्र, इनमें से
किसीसे भी स्त्रियाँ प्रसन्न नहीं होतीं। स्त्रियाँ सब तरह
विषम हैं।

गुणवान, कीर्त्तिमान, रतिशास्त्र-पारङ्गत, धनवान

और जवान पतिका तिरस्कार करके स्त्री मूर्खसे मन मिला लेती हैं ।

लज्जा, नम्रता, चातुरी और भय,—स्त्रीके पातिव्रत के कारण नहीं । स्त्रीके चाहनेवालों का अभाव ही उसके पातिव्रत का कारण है ।

जिस शास्त्रको शुक्र और बृहस्पति जानते हैं, उस शास्त्रको स्त्री स्वभाव से ही जानती है ।

घोड़ोंका कूदना, बादल का गरजना, स्त्रियोंके मनकी बात, पुरुष के भाग्यका हाल, बृष्टि का होना या न होना,—इन छः बातोंको देवता भी नहीं जानते, तब मनुष्य बिचारे किस भाँति जान सकते हैं ?

राजाके मनकी बात, सूमके धनका हाल, दुष्टके दिल की इच्छा, स्त्रीका चरित्र और पुरुषका भाग्य,—इनके विषयमें देव भी अनजान है ; तब मनुष्य विचारा किस खेतकी मूली है ?

जो पुरुष अज्ञान औरत की बातपर चलता है और आप कुछ नहीं विचारता, वह काठका उल्लू है ।

नदी, नखवाले जानवर; सींगवाले पशु, हथियारबन्द सिपाही, राजकुल और स्त्री का विश्वस हरगिज़ न करना चाहिये ।

जिन घरोंमें स्त्री-पुरुषों के दर्म्यान प्रेमका अभाव होता है, उन घरोंसे लक्ष्मी कूँच कर जाती है और वहाँ दरिद्रता का निवास हो जाता है:। ऐसे स्त्री-पुरुषोंका संसारमेंहो नाही वृथा है ।

उर्दू और फ़ारसी की पुस्तकों से अनुवादित।

धन और यौवन पर जो अभिमान करता है, वह मूर्खों का राज है; बुद्धिमान जानते हैं, कि दौलत और जवानी की छाया और चपला की चमकके समान हैं।

जब तक तुम्हारी जान और इज़्ज़त ख़र्च करने से बच ; तब तक जानको ख़तरेमें न डालो और इज़्ज़तमें बट्टा लगाओ। ध्यान रक्खो कि, काया नाश होने पर फिर नहीं सकती और गयी हुई इज़्ज़त फिर नहीं लौट सकती। आप सलामत रहेंगे, तो धन फिर भी बहुतेरा हो सकेगा। य धन कमाता है, किन्तु धन मनुष्य को पैदा नहीं ता।

यदि कोई मनुष्य तुम्हारी खुशामद करे, तो उसकी खुशा- में आकर फूल न जाओ; क्योंकि आजकल मतलब की ामद रह गई है। बिना मतलब कोई खुशामद नहीं ता। यदि तुम खुशामद से खुश होगे; तो तुम्हें बहुत ठगाना और दुःखित होना पड़ेगा।

जिससे पहले कुछ दुश्मनी हो चुकी हो, उससे खूब होशियार ो। यदि वह तुमसे दोस्ती करना चाहे, तो सम्हल कर ती करो। अगर सिधाई से धोखेमें आजाओगे, तो े बहुत पछताना पड़ेगा।

अगर तुम्हारा कहना बावन तोले पाव रत्ती ठीक हो तोभी मुर्खसे बहस न करो। मूर्खके साथ बहस करनेसे सिवा नुक़सान के नफ़ा न होगा।

जहाँ बहुत से गप्पी गप्प हाँक रहे हों, वहाँ तुम चुप रहो; क्योंकि जब मैंडक टरटर किया करते हैं, तब कोयलें नहीं कूका करतीं।

कम बोलना, कम खाना, कम सोना कम क्रोध करना, और कम लालच करना,—काम बुद्धिमानों का है।

किसीको अगर कुछ बुरा भला कहना हो, तो एकान्तमें ले जाकर कहो। जो बात चार आदमियों के सामने कही जाती है, वह बहुत ही नागवार गुज़रती है। यदि दो चार बार एकान्त में समझाने से न समझे; तब तुम उसे चार आदमियों में फटकार कर शर्मिन्दा कर सकते हो।

अगर किसी :पर नाराज़ हो और उसे बुरा भला कहना चाहो, तो खूब सोच समझकर मुँहसे बात निकालो; क्योंकि ज़बान का ज़ख्म तीरके ज़ख्मसे बुरा होता है।

जो धनवान होकर सुख-भोग नहीं करता और दरिद्रियों का पालन नहीं करता तथा जो विद्वान् होकर दूसरोंको विद्या-दान नहीं करता, वह इस जगत् में वृथा आया है।

चोर, ज्वारी, रण्डीबाज़, राजद्रोही और बदमाशों की सुहबत मत करो। जो खुद ऐसा कोई ऐब नहीं करता; किन्तु

नकी सङ्गति मात्र करता है वह भी वदनाम हो जाता है और किसी न किसी दिन मुसीबत में फँस जाता है।

बुद्धिमान को चोर, ज्वारी, वेईमान, वदमाश एवं औरतों की चालाकियाँ जान लेनी चाहियें ; किन्तु अक्लमन्दी तभी है, जब खुद कभी इनके फन्देमें न फँसे।

वात, वक्त, जवानी और आव, एक वार जाकर नहीं लौटतीं ; अतः बुद्धिमानों को इनकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये।

मोती और मनुष्य की क़ीमत आव पर है। वेआव मोती और वेइज़्ज़त मनुष्य निकम्मे हैं। मनुष्य को, जिस तरह वने, अपनी इज्ज़त बचानी चाहिये।

राजकर्म्मचारियों की आँखोंमें शील या मुहव्वत नहीं होती। ये लोग जिससे दोस्ती रखते हैं और जिससे पैसा पाते हैं, उसीकी अधिक मिट्टी ख़राव करते हैं।

नीति, और धर्मके अनुसार चलकर पैसा पैदा करो। जो अन्याय, अनीति और अधर्मके आश्रय से धन कमाते हैं, अन्तमें उनका बुरा ही होते देखा गया है।

नीचके साथ वाद-विवाद और झगड़ा मत करो ; अगर करोगे तो लज्जित होगे और पछताओगे। यदि तुम उससे जीते तोभी हारे और हारे तो हारे हो ही।

दुनिया में अनेक प्रकार के इल्म और हुनर हैं। अगर

तुम अक्लमन्द और हुनरमन्द होना चाहो, तो अक्लमन्द और हुनरमन्दों की सुहबत करो ।

बनमें, सूने मकान में और युद्धभूमि में हरगिज़ ग़ाफ़िल होकर मत सोओ ; जहाँ तक हो सके, जागते रहो । यदि इस नसीहत पर अमल न करोगे ; तो शायद आपको अपनी जानसे हाथ धोना पड़ेगा ।

दिल्लगी करनेसे दिल ज़रूर खुश होता हैं ; मगर ज़रासो दिल्लगी से अक्सर बड़ी-बड़ी दुर्घटनायें हो जाती हैं ; अतः चतुर पुरुषोंको अधिक दिल्लगी न करनी चाहिये । अक्लमन्दों ने कहा है :—"रोगका घर खाँसी और लड़ाई का घर हाँसी ।"

अगर दो आदमी एकान्त में बातें करते हों, तो उनके पास मत जाओ । अगर तुम्हें उनसे कुछ काम हो, तो ज़रा सब्र करो । अगर बहुत ही जल्दी हो, तो जिससे काम हो उसको अपने पास बुलाकर या उसे अपने आनेकी सूचना देकर उससे मिलो ।

आपको जो ज़रूरी-ज़रूरी काम करने हैं, उन्हें झटपट कर डालो ; जब मौत सिरपर आजायगी, तब रोने पछताने और हाथ मलनेके सिवा कुछ न कर सकोगे । ज़िन्दगी का कुछ भरोसा नहीं है, साँस आया और न आया ।

बुद्धिमानको चाहिये कि जैसी सभा हो वैसी बात कहे ; जितनी शक्ति हो उतना ही बोझ उठावे ; जैसा घोड़ा हो वैसा ही चाबुक लगावे और जैसा समय हो वैसी ही बात बनावे ।

अगर तुम्हारा कोई काम खुशामदसे निकल सके, तो वश्य खुशामद करो; क्योंकि खुशामदसे खुदा भी राज़ी हो जाता है, तब मनुष्य क्यों न राज़ी होंगे। जो ऐंठमें आकर अपना काम निकालनेके लिये खुशादम नहीं करते, वे मूर्ख हैं। बुद्धिमान वही है, जो जैसे तैसे अपना काम वना ले।

अगर क़द्रदान ग़रीब भी हो जावे तोभी उससे मिलो; अगर क़द्र न जाननेवाला धनवान भी हो, तोभी उसके पास न जाओ।

अगर तुम्हें रेल, ट्राम या किसी दूसरी चलती सवारीसे उतरना हो, तो जिस तरफ़ सवारी जाती हो उसी तरफ़ मुंह करके फुर्तीसे उतर पड़ो। यदि दूसरी तरफ़ मुँह करके उतरोगे, तो गिर पड़ोगे और शख़्त जख़्मी हो जाओगे।

जब तक हो सके, किसीके क़र्ज़दार मत बनो। क़र्ज़दारी बड़ी ख़राब है। इसके आगे बड़े-बड़े योधाओंको हार खानी पड़ती है। बातकी बात सुननी पड़ती है और ब्याजका ब्याज देना पड़ता है। हम तो यही कहते हैं, कि अगर घरमें खाने को न हो तो फ़ाका कर लो; मगर किसीसे कुछ उधार न माँगो। किसी बात की चिन्ता मत करो; चिन्तासे काया ख़ाक हो जाती है। चिन्ता करनेसे कुछ लाभ भी नहीं होता। जो होनहार होती है, वह होकर रहती है। इसीलिये अक्कमन्द लोग चिन्तासे दूर ही रहते हैं।

खाने-पीनेमें, व्यौपारमें, पढ़ने-पढ़ानेमें और सवाल-जवाब करनेमें शर्म न करो।

नौकर, बालक, शागिर्द और औरत को बहुत मुँह मत लगाओ। अगर इनको सिरपर चढ़ाओगे, तो ये नाकमें दम कर देंगे; अतः इनको मौ-क़ेमौक़े पर घुड़की बताना ही भला है।

अगर बड़प्पन चाहते हो तो नम्रता धारण करो; यदि धनवान होना चाहते हो, तो सब्र करो और नियत साफ़ रक्खो।

रसायन कोई नहीं बना सकता। जो रसायन बनानेका दावा करे, उसे ठग और मक्कार समझो। बहुतेरे बनावटी साधु-फ़क़ीर गली-कूचोंमें फिरते रहते हैं और भोले-भाले लोगों को अपने फन्देमें फाँसा कर महा कङ्गाल बना देते हैं। रसायन बनवानेवालों की रसायन तो नहीं बनती, किन्तु ठगोंकी रसायन तो बन ही जाती है।

जो आदमी धनवान,. विद्वान्, बलवान, हाकिम और हकीम तथा चुगलख़ोरसे मेल-मुलाक़ात रखता है, वह सदा सुखी रहता है।

मिहनत करने और नियत साफ़ रखनेसे धन आता है। अपने दोष और दूसरोंके गुण प्रकट करनेसे बड़प्पन मिलता है।

अगर कोई कुछ लिखता :हो, तो तुम उसके पास जाकर उसकी लिखी हुई चीज़ मत देखो। यदि वह इज़ाजत दे, तो देख सकते हो।

अगर किसीके घर जाओ, तो एकाएकी धड़धड़ाते हुए उसके
न घुस जाओ। कौन जाने, घरके लोग किस तरह बैठे
या क्या करते हों। जानेवाले को पहले आवाज़ देनी
हिये, यदि दरबान हो तो उसके द्वारा ख़बर भिजवानी
हिये। जब घरवाले बुलावें तब अन्दर जाना चाहिये।

किसीके घरमें जाकर उसकी चीज़ों को उलट-पुलट कर
ना अथवा यों पूछना कि, अमुक चीज़ तुमने कहाँसे और
ने को ख़रीदी इत्यादि बातें मूर्खता प्रकट करती हैं।

अगर किसी चिट्ठी, बिल, चिक, हुण्डी, दस्तावेज़ वग़ैरः
दस्तख़त करने हों; तो उन्हें खूब पढ़-समझकर दस्तख़त
ो; अन्यथा धोखा खाओगे और पछताओगे। साथही लोग
हें उल्लू बनावेंगे।

अगर कोई शख़्स तुम्हारे सामने आकर किसी की निन्दा
े; तो तुम समझ लो कि वह तुम्हारी निन्दा भी दूसरेके
मने ज़रूर करेगा।

अशराफ़ अगर ग़रीब हो जावे, तोभी अशराफ़-अशराफ़
है। अगर नीच धनवान होजावे, तोभी नीच-नीच
है।

विद्या, बुद्धि, बल या धन, वक्त पर वही काम आता है जो
पने पास होता है। पराई विद्या-बुद्धि आदिसे समय पर
ाम नहीं निकलता।

अगर नीचके हाथ धन आजाता है, तो वह अभिमान करने

लगता है और यदि उसके हाथ हुकूमत आजाती है, तो वह
लोगों पर ज़ुल्म करने लगता है ।

जो आदमी अपना कारोबार दूसरेके हवाले करके, आप
आनन्द की वंशी बजाता है, उसका काम अवश्य बिगड़ जाता
है । दूसरोंसे कोई काम सिद्ध नहीं होता ; खेती खसम सेती
होती है । हाँ, काम दूसरोंसे कराइये ; मगर निगरानी अपनी
रखिये ; फिर कुछ नुक़सान न होगा ।

यदि चोर, ज्वारी और बदमाश आदमी कोई चीज़ सस्ती
से सस्ती बेचे, तोभी मत ख़रीदो ; अन्यथा एक न एक दिन
पकड़े जाओगे और अपने किये का फल पाओगे ।

बड़ोंके पास बैठनेसे बड़प्पन मिलता है, छोटोंके पास
बैठनेसे छुटाई आती है । गन्धी की दूकान पर बैठनेसे
ख़ुशबूसे दिमाग़ तर होता है ; किन्तु लुहार की दूकान पर
बैठनेसे कपड़े काले होते हैं ।

बुरा काम यदि छिपकर भी करोगे, तोभी छिपा नहीं
रहेगा ; अन्तमें दुनिया जान ही जायगी । यदि दुनिया न
भी जानेगी, तो सर्व्वव्यापक परमात्मा तो उसे देखही
लेगा ।

जो मनुष्य भगवान्, मृत्यु और अपनी इज़्ज़तसे डरता है,
उससे कोई बुरा काम नहीं होता ।

माता-पिताने तुम्हारे पालने-पोषनेमें बड़ा कष्ट उठाया
है ; अतः तुम सदा उनकी आज्ञापालन करो । जिस कामसे

उनका जी राज़ी रहे वही काम करो। भूलकर भी ऐसा काम न करो, जिससे उनके दिलको ठेस पहुँचे।

गुण माने उसे गुण सिखाओ, कङ्गाल को धन-दान करो, सबको नसीहत दो और नेकी बुरे-भले दोनों प्रकारके मनुष्यों के साथ करो।

स्त्री, बालक, मतवाला, मूर्ख और रोगी अगर तुम्हें गाली भी दें, तो भी बुरा मत मानो ; बुरा उनकी बातों का मानना चाहिये, जिनमें कुछ अक़्ल हो। मूर्खकी बातका बुरा माने, वह भी मूर्ख ही है।

अगर तुमसे बड़े या तुम्हारे गुरु रास्ते में मिल जावें, तो उनको प्रणाम राम राम आदि अवश्य करो। बड़ोंके सामने नीचे स्थान पर बैठो। उनके सामने हंसी-मसख़री और चप-लता आदि मत करो।

आजकल वह ज़माना है, कि बात करनेमें दुश्मनी पैदा हो जाती है ; इसवास्ते किसी से अधिक मेल-जोल मत बढ़ाओ। जहाँ अधिक मेल होता है वहीं दुश्मनी होते देखी जाती है। जिनसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता, उनसे दुश्मनी कभी नहीं होती।

अभिमान भूल कर भी न करो। अभिमानी से सभी नफ़रत करते हैं। अभिमानी का सिर नीचा हुए बिना नहीं रहता।

अगर कोई गुप्त सलाह करनी हो तो चारों ओर नज़र

फैलाकर देख लो ; क्योंकि दुश्मन हर समय टोहमें रहता है। शत्रु के पास गुप्त भेद चला जानेसे सब काम चौपट हो जाता है।

जिस घरमें बेवक़ूफ़ोंके साथ सलाह-मशवरः होता है और जहाँ स्त्री-पुरुषोंमें झगड़ा हुआ करता है, वहाँसे दौलत हज़ार कोस दूर भागती।

जिस भाँति तपाने, छेदने, काटने और गलानेसे सोने की परीक्षा होती है ; वैसेही विद्या, बुद्धि, स्वभाव और चालचलन से पुरुष की जाँच होती है।

छुरी, छड़ी, छाता, छल्ला और लोटा,—ये पाँचों जीज़ें सफ़रमें अपने पास अवश्य रक्खो।

अगर अदालतमें जानेका काम पड़े, तो हाकिमके सामने उतनी ही बात कहो जितनी कि वह पूछे। सवाल का जवाब बढ़ाकर देना या और-का-और जवाब देना मूर्खता की निशानी है। ऐसी मूर्खतासे हाकिम लोग अक्सर चिढ़ भी जाते हैं।

बालक, मूर्ख, बुज़ुर्ग, पागल, शागिर्द और मुसाफ़िर से मसख़री मत करो ; अगर करोगे तो अवश्य दुःख पाओगे।

जिस बात को तुम भली भाँति नहीं जानते, उसके विषयमें ज़िद मत करो और न अनजानी बात पर बाज़ी लगाओ।

किसी की बुराई मत करो। जो और का बुरा करता है, उसका ईश्वर बुरा करता है ; कहते हैं कि जो दूसरे को कुआ खोदता है उसके लिये खाई तय्यार हो जाती है।

जिस बातसे दूसरेका दिल विगड़े, वह वात अपनी ज़वान हरगिज़ न निकालो। दूसरेके दिल को रञ्ज पहुँचानाही से वड़ा पाप है।

अक्लमंदीकी बातें।

(अङ्गरेज़ी मासिक पत्रोंसे)

"कर्ज़" एक प्रकार की अग्नि है जो मनुष्य-शरीरके सारभूत तत्त्वोंको जलाकर ख़ाक कर देती है ; अतः मनुष्य को इस अग्निसे बचना बहुत ही ज़रूरी है।

नीच आदमी दूसरेके कामका जो उद्देश बताता है, उसीसे उसकी निजकी योग्यता का पता लग जाता है।

जब तुम किसी को सहायता देना न चाहो ; तब सहायता माँगनेवालेके सामने मीठी-मीठी बातें न बनाओ। झूठी आशा दिलाना बड़ी निर्दयता का काम है। जिस काममें तुम सहायता देना चाहो या दे सको, उसीकी आशा दिलाओ ; अन्यथा तुरन्त उत्तर देदो कि, हमसे यह काम न होगा।

मिहनत अपने बलाबलके अनुसार चाहे जितनी करो ; किन्तु चिन्ता मत करो। मिहनत और चिन्ता दोनोंसे शरीर क्षीण होता है ; किन्तु मिहनतसे जितना क्षीण होता है, उसकी अपेक्षा चिन्तासे कई गुणा अधिक क्षीण होता है। चिन्ता बहुत बुरी बला है।

मनुष्य को अपनी वर्त्तमान स्थिति परही सन्तोष न कर

चाहिये। उसे ऐसा साहस करना चाहिये, जिससे उसकी उसके मनके माफ़िक़ हो सके। साहसी आदमी, अपनी मतके बलसे, अपनी नीची दशाको ऊँची करनेमें, बहुधा ल-मनोरथ होते देखे गये हैं।

अगर तुम थोड़ी उम्रमें धनवान न हो, तो धनवान होने की शा को बिल्कुल त्याग न दो; दस पाँच अमीरों की हालत ग़ौर करनेसे तुम्हें मालूम हो जायगा, कि उनमें अधिकांश स सालके बाद अमीर हुए थे।

अगर तुम कोशिश और उद्योग न करोगे, केवल तक़दीर भरोसे ही बैठे रहोगे; तो सौ बरसमें भी तुम्हारी इच्छा न होगी। अगर बराबर उद्योग करते रहोगे; तो एक-न-दिन तुम्हारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा।

इस जगत् में मनुष्य को धन-दौलत और इज़्ज़त हासिल ने में बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का मुक़ाबला करना पड़ता है। स मनुष्य में उन कठिनाइयों और दिक़्क़तों का सामना करने और उनको दूर करने की हिम्मत एवं धैर्य्य होता है, वही ी और प्रतिष्ठित हो सकता है।

यदि तुम सुख-पूर्व्वक जीवन बिताना चाहते हो तो इन तों से बचो :—शराब पीना, तमाखू खाना और पीना, क़सम ना, धोखा देना और दूसरों की ज़मानत देना।

जो मनुष्य सारी उम्र रुपया जमा करनेमें ही ख़र्च कर देते

हैं और मृत्यु-काल तक रुपये का लोभ नहीं त्यागते, उनको सुख और स्वर्ग नहीं मिल सकता।

अगर मनुष्य खाने-पीने और सोने के सिवा कुछ काम न करे, तो मनुष्य और पशुओं में कुछ अन्तर नहीं है। इस से मालूम होता है कि, मनुष्य का भाग्योदय उसके अपने हाथ में है।

जो मनुष्य जवानी में पराये धनसे आनन्द नहीं करता; किन्तु अपनी भुजाओं के बल से कमाये हुए धनसे ही सुख भोगना चाहता है, वह पिछली अवस्थामें अवश्य धनवान और सुखी होता है।

अगर तुम्हें कोई जवाब-तलब चिट्ठी मिले, तो तुम उसका जवाब फौरन लिख दो। यदि तुम उसके जवाब लिखनेमें देर करोगे, तो आलस्य-वश देर पर देर होती चली जायगी।

अगर तुमको अपनी घरू चिट्ठी में किसी मनुष्य की बुराई लिखनी हो तो उसका नाम न लिखो; क्योंकि उस चिट्ठी का दूसरे मनुष्य के हाथ में पड़ जाना सम्भव है।

अगर तुम विदेश में धन्धा-रोज़गार करने के लिये जाओ; तो नियत समय पर घरवालों को चिट्ठी लिखा करो। चाहे महीने में एक बार भेजो, चाहे चौथे आठवें दिन भेजो, मगर नियत समय पर चिट्ठी अवश्य भेजो। घरवाले चिट्ठी की बाट देखा करते हैं और जब समय पर चिट्ठी नहीं पहुंचती, तब बहुत कुछ घबराते हैं। तुमको इस बात का ख़याल रखना

चाहिये, कि तुम्हारी ज़रासी सुस्ती और ग़फ़लत से उन लोगों को कितना कष्ट होगा।

जब तुम्हें कोई ऐसी चिट्ठी मिले जिसका जवाब देना ज़रूरी है, तब तुम चिट्ठी पढ़ने के साथ उसका जवाब लिख दो; क्योंकि उस समय तुम्हें उस चिट्ठीका मतलब भली भाँति याद होगा। चिट्ठी पढ़कर तत्काल जवाब लिखने से चिट्ठीका जवाब अच्छा लिखा जाता है; दूसरे जवाब लिखने में आसानी होती है और दिक़्क़त कम होती है।

चिट्ठी पढ़ने में निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखो :—

(१) जब तुम्हें किसी परिचित मनुष्य या किसी रिश्तेदार की चिट्ठी मिले, तो यह बात देखो कि लिखावट उसीके हाथ की है या नहीं। इस बातपर ध्यान देनेसे बहुत कुछ लाभ होता है। (२) चिट्ठी खोलने से पहले, जहाँ से चिट्ठी चली और जहाँपर आयी है, उन दोनों स्थानोंकी मुहरोंकी तारीख़ वग़ैरः देख लो। इससे आपको यह मालूम हो जायगा कि, चिट्ठी लिखनेके दिन ही डाक में छोड़ी गयी थी या पीछे। यहाँ पोष्टमैन ने चिट्ठी आनेके दिन ही दी या पीछे दी। (३) सब कामों को छोड़कर पहले चिट्ठी पढ़ लो। (४) चिट्ठी खोलने के समय इस बात का ध्यान रक्खो कि डाक-मुहर न फटने पावे। सम्भव है कि डाक-मुहर फाड़ देने से तुमको उसके बिना छटपटाना पड़े।

जिस समय तुम्हें कोई बीमारी हो, उस समय किसी को

भी पत्र मत लिखो । अगर तुम्हें किसीको अपनी सेवा-सुश्रुषा के लिये बुलाना हो, तो बेशक बुलवा सकते हो ।

जो मनुष्य अपनी अन्तिम अवस्थामें धनवान, कीर्त्तिमान होते हैं या ऐसी अवस्था में मरते हैं, वे ही सच्चे धनवान और कीर्त्तिमान हैं ।

जब तक तुम किसी की अन्तिम अवस्था न देख लो, तब तक उसे सुखी मत कहो ; क्योंकि जो आज पूर्ण सुखी और ऐश्वर्य्यशाली है वह कल राह का भिखारी या उससे भी बदतर हो सकता है । जो मरने के समय तक सुखी है, वही सच्चा सुखी है ।

जिन्हें खाने को अन्न और पहनने को कपड़े नहीं मिलते, उनसे मिहनत-मज़दूरी करा कर उनका पेट भरने से बड़ा धर्म्म होता है ।

अगर कोई काम तुम्हारी इच्छानुसार न हो, तो रात-दिन उसी चिन्ता में मत लगे रहो । अगर ऐसा करोगे तो तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो जायगा और तुम पूरे पागल हो जाओगे । अगर काम न बने और मनोरथ पूर्ण न हो, तो बिलकुल चिन्ता न करो । अपना ध्यान उस बात से हटाकर किसी दूसरी आनन्ददायिनी बातकी तरफ़ लगा दो । अगर तुम्हारा चित्त एक ही विषय में लगा रहता हो ; तो सफ़र करके अपना ध्यान दूसरी तरफ़ लगा दो ।

दरवाज़े के सूराख़ से किसी की गुप्त बात छिपकर सुनना,

[कि]सी को कुछ करते हुए छिपकर देखना और किसी को [चि]ट्ठी बिना मालिककी आज्ञाके पढ़ना,—ये तीनों बातें बहुत बुरी हैं।

जब तुमको क्रोध आ रहा हो, तब एक भी अक्षर मत [लि]खो। क्रोध की हालत में लिखने से, तुम्हारा लेख बिल्कुल [ख़]राब हो जायगा।

छोटे-छोटे बालकों और नौकरों को गाली देकर मत [बु]लाया करो। ऐसा करने से परिणाम में बड़ी भारी बुराई [हो]ना सम्भव है।

जो काम तुमको कल करना है, उसका ढङ्ग आज ही [ल]गा लो। दूसरे दिनके काम का कार्य्य-क्रम पहले दिन ही [नि]श्चित कर लेने से काम में कभी गड़बड़ नहीं होती। बड़े-[ब]ड़े सभी काम, विशेष कर छापेख़ाने के काम, इस ढङ्ग से [सु]चारु रूप से चलते हैं।

जब तुम्हारे हाथमें एक काम हो, तब दूसरा काम हाथमें [म]त लो। जब एक काम हो जावे, तब दूसरेमें हाथ लगाओ। [ब]हुत आदमी एक कामको पूरा किये बिना ही, दूसरे काममें हाथ [ल]गा देते हैं; इससे उनके दोनोंही काम बिगड़ जाते हैं।

किसी काममें शीघ्रता मत करो। जो काम अत्यन्त शीघ्रता [से] किये जाते हैं, वे सब बिगड़ जाते हैं; बल्कि उन कामोंको फिरसे करना होता है और धीरे-धीरे करनेसे जितना समय [ल]गता, उससे दूना समय फिर करनेसे लग जाता है।

जिस कामके करनेसे तुम्हारा और तुम्हारे बालबच्चोंका पेट भरता है, उस कामको छोड़कर दूसरा काम मत करो ; क्योंकि जिस कामको तुम कर रहे हो, उसमें मुम्हारा अनुभव है। दूसरे कामको तुम कर सको या न कर सको, इसमें सन्देह है। जो जाने हुए कामको छोड़कर, अनजान काम करता है, उसे कभी लाभ नहीं होता।

अगर मनुष्य किसीका क़र्ज़दार न हो और उसके पास अपने घरकी ज़मीन हो, तो बहुतही अच्छा हो ; क्योंकि खेतीसे बढ़कर सुखदायी और स्वतन्त्र धन्धा और नहीं है।

जब तुम खेती और व्यापार दोनोंमें से एक भी न कर सको, तब नौकरी करो। खेती वग़ैरः हो सकने पर, नौकरी करना भूल है। नौकरी करना और साँपसे प्रेम करना एक ही बात है।

जो मनुष्य सुकर्म करता है वह बहुत दिन तक जीता है और जो दूसरोंके सुखकी फ़िक्र रखता है, वह स्वयं सुख पाता है।

दूसरोंको अच्छी-अच्छी चीज़ें देना उदारताका लक्षण है और अपने लिये अच्छी-अच्छी चीज़ें चुनकर रख छोड़ना स्वार्थ-परता और नीचताकी निशानी है।

अगर किसीके साथ भलाई करो, तो उसे अपने मुंहसे मत कहो ; क्योंकि ऐसा करनेसे किया हुआ उपकार नष्ट हो जाता है।

जिसने बहुतसा धन कमाया वह धन्य नहीं है ; किन्तु वह पुरुष निस्सन्देह धन्य है और वही सच्चा सुखी है, जिसने परोपकार किया है ।

संसारमें ऐसा कोई जीव नहीं है, जिससे कुछ काम न निकले ; अतः वृथा जीव-हिंसा न करो ।

अगर तुम्हें तुम्हारी इच्छानुसार धन्धा-रोज़गार या नौकरी न मिले ; तो हाथ पर हाथ धरकर न बैठ जाओ । अपने मामूली ख़र्चके लायक़ तो धन्धा अवश्य ही करो । दूसरोंसे ऋण ले लेकर या उनके गले पड़कर पेट भरना लज्जाकी बात है ।

रोज़गार चाहें जूते पोंछनेका ही क्यों न हो ; यदि वह चतुराई से किया जाय, तो उसमें भी बहुत लाभ हो सकता है ।

जो मनुष्य अपने भीतर-बाहर एकही विचार रखता है और अपने विचारके अनुसार सच्चे अन्तःकरणसे काम करता है, वह अन्तमें कीर्ति लाभ करता है ।

जिसके सिर पर एक कौड़ीका कर्ज़ नहीं होता और जो किसीका ज़ामिन नहीं होता, वह सदा सुखकी नींद सोता है ।

जो विवाहित पुरुष, रातको भोजन आदिसे निपट कर, गलियोंमें बीड़ी पीता हुआ फिरता रहता है, वह सांसारिक सुखसे हाथ धो बैठता है।

जिस शख़्सको तुम बारम्बार भला-बुरा कहते हो, यदि वह शख़्सतुम्हारी बातोंका प्रकटमें बुरा न माने, सब कुछ वर्दाश्त करता रहे और अपनी गुप्त बात तुम पर ज़रा भी ज़ाहिर न होने दे; उस शख़्ससे खूब ख़बरदार रहो। कौन जाने, वह किस दिन तुम्हारा गला काटेगा ? ऐसे मनुष्यका भरोसा कभी न करना चाहिये।

जिसका मुख हमेशा प्रसन्न रहता है, उसे सब कोई प्यार करते हैं। प्रसन्न-मुखी मनुष्य किसीको अप्रिय नहीं मालूम होता ; इसीलिये प्रसन्न-मुखी मनुष्यके सब काम सिद्ध हो जाते हैं।

जो मनुष्य धैर्य्य और शान्तिसे काम करते हैं, वे बड़े-बड़े कामोंको, थोड़ीसी मिहनतसे, बहुत अच्छी तरह पूरा कर डालते हैं ; किन्तु जो अधिरता और शीघ्रतासे काम करते हैं, उनके काम या तो पूरे नहीं होते या उनमें दोष रह जाते हैं।

अगर तुम्हें अपने बच्चों या नौकरोंकी बदचलनीकी कुछ बातें मालूम हो जायँ ; तो उनको यह न मालूम होने दो कि, तुम उनके ऐबोंको जान गये हो। अगर उन लोगोंको यह मालूम हो जायगा, कि तुम उनके ऐबोंको जान गये हो, तो वे निर्भय और निर्लज्ज हो जायँगे। ऐसे मौक़ों पर तुम दूसरोंके द्वारा उनसे कहलवाओ, कि यदि तुम्हारे पिता अथवा तुम्हारे स्वामी ये सब बातें जान जायँगे, तो तुम पर नाराज़

होंगे और तुमको दण्ड देंगे। इस तरकीबसे चलने पर, वे तुमसे डरते रहेंगे और बदचलनीसे बाज़ आवेंगे।

हम पर जो बार-बार आफ़तें आती रहती हैं, वह सब हमारी या दूसरोंकी मूर्खताका फल है। अगर हम सोच समझ कर चलें, तो हम बहुतसी विपत्तियों से बच सकते हैं।

जो मनुष्य अपना दिल एकही ओर लगाये रहता है, उस को प्रत्येक काममें सफलता नहीं होती। साथ ही उसका स्वास्थ्य भी ख़राब हो जाता है।

यदि तुम्हारे चित्तमें कोई दुःख या कष्ट हो, तो तुम उसे अपने सच्चे मित्रोंके सामने कह दो; क्योंकि दुःखको दिलमें दबा रखनेसे काया क्षीण होती है।

अगर तुम विद्वान् और धनवान होना चाहते हो, तो उद्योग और परिश्रमका सहारा पकड़ो; क्योंकि उद्योगी और मिहनती मनुष्य हर काममें सफलता प्राप्त करता है।

किसी मनुष्यने किसी बुद्धिमानसे पूछाः—"क्योंजी! साहस और बुद्धि, इन दोनोंमें कौन सबसे उत्तम है?" बुद्धिमानने उत्तर दियाः—"बुद्धिकी अपेक्षा साहस उत्तम है; क्योंकि सारे काम साहस ही से बनते हैं।"

पेट-भर कर खालेनेपर भी जो मनुष्य उसी छमय दूसरे भोजनकी फ़िक्र करता है, वह महा हतभाग्य है।

जिस बातको तुम नहीं जानते, उसको शीघ्र ही दूसरेसे

पूछनेका स्वभाव डालो। अगर तुम्हारा स्वभाव ऐसा हो जावगा, तो तुम सब कामोंमें निपुण हो जाओगे।

जब तुम्हें कोई काम करना हो तो दूसरोंका सहारा मत ताको। जो अपना काम आप करते हैं, उनका कोई काम अपूर्ण नहीं रहता। मनुष्यको अपने ही पुरुषार्थ पर भरोसा रखना उचित है।

अपने रोज़गार-धन्धेमें पूर्ण प्रवीणता प्राप्त करके, कोशिश करो। यदि हिम्मत न हारोगे और विघ्न पर विघ्न होने पर भी उद्योग करते ही रहोगे; तो अन्तमें लक्ष्मीको तुम्हारी चेरी बनना ही पड़ेगा।

जो मनुष्य धन-दौलत और विद्या-बुद्धि तथा अधिकार आदिसे स्वास्थ्यको बढ़कर समझता है, वही सच्चा बुद्धिमान है। धन-दौलत अधिकार आदि चले जाने या नाश हो जाने पर फिर मिल जाते है; किन्तु यह शरीर नाश होने पर फिर नहीं मिलता। अतः शरीर-रक्षा करना बुद्धिमानोंका पहला काम है।

जब तुम अपने पास बठे हुए आदमियोंको अपने पाससे टालना चाहो; तब तुम उनकी मीठी दिल्लगी करने लगो। वे नाराज़ होकर आप ही उठ जायँगे;

अगर तुम सवेरे उठकर, इस बातका नियम कर लो कि दिन-भरके कामोंमें क्रोध, शीघ्रता और निर्दयतासे काम न लूंगा अर्थात् न गुस्सा हूंगा, न जल्दबाज़ी करूँगा और न

कठोर वचन बोलूंगा, तो तुम्हारा संसारी सुख बहुत कुछ बढ़ जायगा।

मनुष्यको धन पैदा करनेके लिये चतुराई चाहिये। पैदा करके रखनेके लिये उससे दुगुनी चतुराई चाहिये। फिर उसे अच्छे कामोंमें लगानेके लिये उससे भी दस गुनी अधिक चतुराई चाहिये।

फिज़ूलख़र्च आदमी कम ख़र्च करनेवाला हो सकता है; किन्तु कञ्जूस आदमी उदार नहीं हो सकता।

जो लोग न्याय और चतुराई से रुपया पैदा करते हैं, उनका जगत्‌में आदर होता है तथा उनका उनका चित्त प्रसन्न रहता है; लेकिन जो लोग अन्यायसे पैसा पैदा करते हैं वह संसारकी नज़रोंमें हक़ीर बनते हैं और उनका चित्त भी कभी शान्त नहीं रहता।

अगर दो पक्षके आदमी अपना-अपना झगड़ा तुम्हारे पास लावें; तो तुम एक तरफ़ की बात सुनकर ही फैसला मत कर दो, ऐसा करना अन्याय है; क्योंकि दोनों पक्षकी बातें सुने बिना, झगड़े का असल तत्त्व और सारासार मालूम नहीं होता।

जो लोग अपने धर्मसे नहीं डिगते, अपने ही धर्मपर पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखकर जीवन बिताते हैं, वह सुखकी मौत मरते हैं।

जिस घर में बाप बात-बात में दोष निकालनेवाला और

ताड़ना देनेवाला है, माता हर समय क्रोध करनेवाली है, स्त्री कर्कशा है, लड़की घर-घरमें फिरनेवाली है और लड़का बद-चलन है, उस घरसे तो घर न होनाही अच्छा है ।

पढ़ते-पढ़ते रातको कभी मत सो जाओ ; इस तरह सोनेसे घरमें आग लगनेका भय रहता है तथा आँखोंको नुक़सान पहुँचता ह ।

उत्साह और शक्ति का यदि तुम यथोचित उपयोग न कर सको, तो समझलो कि दुर्दैव और विपत्ति तुम्हारे सामने खड़े हैं ।
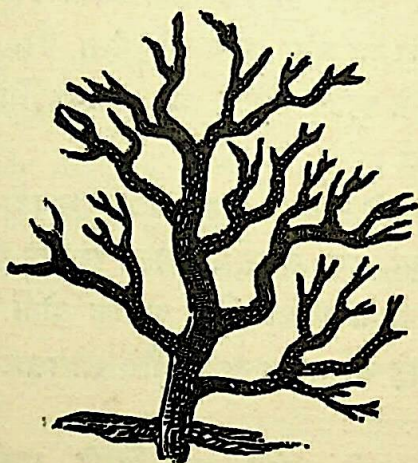
चीनदेश के महात्मा ।

कनफ्यूशियस की नीति

जवान आदमीको घरमें पुत्रवत्, किन्तु घरके बाहर छोटे ई के समान आचरण करना चाहिये। उसे खूब चौकन्ना र सच्चा रहना चाहिये तथा मनुष्यमात्र पर दया-दृष्टि रखनी ाहिये; किन्तु संगति केवल धर्मात्माओंकी करनी चाहिये। पना आचरण इस भाँति सुधारकर, शेष शक्ति विद्या पढ़ने या भ्यता सीखनेमें लगानी चाहिये।

जो मनुष्य अपने खाने-पीने और रहने-सहनेके मामलोंमें ज़्यादा आराम की ज़रूरत नहीं रखता, जो अपने कारोबार में खूब उद्योग करता है, जो सोच-समझकर मुंहसे बात निकालता है और अपनी उन्नति के लिये सज्जनों की संगतिमें ारम्बार आता-जाता रहता है, वह सच्चा बुद्धिमान और विद्या-प्रेमी है।

लिनफङ्ग नामक एक शिष्यने महात्मा कनफूयशियससे पूछा :—"दुनियाकी रीति-रस्में किस तरह पूरी करनी;

चाहियें ?" महात्माने उत्तर दियाः—"यह प्रश्न बड़े महत्व का है तमाम रीति-रस्मों या व्यवहारोंमें फ़िज़ूलख़र्ची से सादगी अच्छी है। मरे हुओंके शोक-प्रकाशनार्थ नुमायशी रोने-पीटने और हाय-हाय करने से मनके भीतर दुःखित होना अच्छा है।"

जिस जगह के आदमी दयालु और दानी हों, उसी पड़ौस में रहना उचित है। जो ऐसे गुणवानों का पड़ौस नहीं ढूंढ़ता, वह अक्लमन्द नहीं।

सत्पुरुष मेल-मिलापी होते हैं, किन्तु खुशामदी नहीं होते। नीच पुरुष खुशामदी होते हैं, किन्तु मेल-मिलापी नहीं होते।

सज्जन लोग बातें बनाने में संकोच करते हैं, किन्तु कामों में उदारता दिखाते हैं। तात्पर्य्य यह है, कि अच्छे आदमी बोलते कम है, लेकिन काम अधिक करते हैं।

जो दयावान और चिन्तारहित है, वह श्रेष्ठ पुरुष है। जो बुद्धिमान और निष्कपट है, वह सत्पुरुष है। जो सच्चा शूरवीर और निर्भयचित्त है, वह वास्तविक महात्मा है।

महात्मा कनफ्यूशियस, अपने एक चेलेसे जो एक बड़े देशका हाकिम था, कहते हैं:—"अपने निजके जीवन में आत्म-प्रतिष्ठा दिखाओ, कारोबार करने या किसी देशके प्रबन्ध करनेमें पूर्ण बुद्धिमानीसे काम लो और सावधान रहो। दूसरोंके साथ कारोबार या व्यवहार करनेमें ईमान्दारी और

ाई से चलो। अगर तुम जङ्गलियोंमें भी जा पड़ो; तोभी नियमोंका पालन करना मत छोड़ो।"

एक बार जूचङ्ग नामक शागिर्दने महात्मा कनफूयशियस पूछा :—"मनुष्यको कीर्त्तिमान् होने के लिये क्या उपाय ने चाहिये'?" महात्माने पूछा :—"कीर्त्तिमान् से तुम्हारा अभिप्राय है?" उसने कहा :—जिसका नाम घर-बाहर देश-मुल्कमें सब जगह हो, वही कीर्त्तिमान है।" महात्माने ा :—"जिसका नाम जगह-जगह हो रहा हो, वह कीर्त्तिमान हैं, वह तो येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध हो गया है। सच्चा र्त्तिमान् वह है जिसके ढंग सादा हैं; जो ईमान्दार, सत्यप्रेमी, ायप्रिय और धर्मपर चलनेवाला है। जो मनुष्योंकी आकृति र चेहरेके उतार-चढ़ावसे उनकी भीतरी अवस्था को समझ कता है, जो ख़ाली लोगोंके शब्दों पर ही विश्वास नहीं रता किन्तु उनके शब्दोंको विचाररूपी तराजू में तोलता है र अपने तईं सब से नीचा समझता है, वही मनुष्य ीर्त्तिमान हो सकता है; किन्तु जो शख़्स दयालु और दानी नेका ज़ाहिरा ढौंग रचता है, लेकिन वास्तवमें उसके सब ामोंमें पोल रहती है, वह प्रसिद्ध तो हो जाता है; किन्तु अपने ुप्त और प्रत्यक्ष जीवन में कीर्त्तिमान नहीं हो सकता।"

सज्जन एक क्षणके लिये भी अच्छे मार्ग से इधर-उधर हीं होते। वे कष्ट, दुःख और विपत्तिमें भी सदा की भाँति ुमार्ग पर ही दृढ़ता से टिके रहते हैं।

सज्जन धर्मज्ञान सञ्चय करनेमें निपुण होता है; किन्तु नीच केवल रुपया पैदा करनेमें ही अपने ज्ञानकी इतिश्री कर देता है।

अगर खानेको बुरा-भला भोजन और पीनेका जल मिले तथा अपनी मोड़ी हुई भुजासे तकिये का काम चल जाय, तो यह सुख क्या कुछ कम है? धन और उच्च पदवी जो अधर्म से प्राप्त की जाती है, वह चलते हुए बादलोंके समान अनस्थिर है।

फ़िज़ूलख़र्ची से घमण्ड और किफ़ायतशारीसे कञ्जूसी पैदा होती है; किन्तु घमण्डी होने की अपेक्षा कञ्जूस होना अच्छा है।

यदि किसी मनुष्यमें चूकङ्गके सब श्रेष्ठ गुण मौजूद हों; किन्तु यह अभिमानी और लालची हो, तो उसके सब गुण इन दो अवगुणोंके नीचे दब जाते हैं।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि चूकङ्ग नामक व्यक्ति चीन देशमें खूब गुणवान हुआ है। यदि मनुष्यमें उसकी भाँति सब श्रेष्ठ गुण मौजूद भी हों, लेकिन साथही घमण्ड और लोभ भी हों, तो उस मनुष्यके सर्व्वश्रेष्ठ गुण वृथा हैं। लोभ और अभिमान बड़े भारी दुर्गुण हैं। इनके आगे सब अच्छे-अच्छे गुण नहीं के समान है। अतः मनुष्य को लोभ और अभिमानसे बिल्कुल बचना चाहिये।

महात्माने कहा—मुझे ऐसा मनुष्य नहीं मिला, जिसके धर्म-प्रेम ने शारीरिक सुन्दरताके प्रेम की बराबरी की हो।

न हमें अपने-से-नीच दर्जेके लोगोंकी भली भाँति प्रतिष्ठा करनी चाहिये। कौन जानता है, कि वे लोग अपने तईं धीरे-धीरे आजके बड़े आदमियोंके बराबर न बना लेंगे। यदि वे चालीस या पचास सालकी उम्र तक भी अपने तईं प्रसिद्ध न कर सकें; तो हमें उनसे भय करने की आवश्यकता नहीं है।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि हमें निर्धन मनुष्योंका अनादर न करना चाहिये, किन्तु यथोचित सम्मान ही करना चाहिये। हमारा ऐसा समझना, कि अमुक दरिद्री या पद-हीन मनुष्य सदा इसी बुरी हालतमें रहेगा, भूलकी बात है। मनुष्य चालिस या ५० वर्षकी अवस्था तक उन्नति करके धनी या उच्चपदाधिकारी हो सकता है। जिसका हमने उस की गरीबी अवस्थामें सम्मान नहीं किया है, यदि वह ऊँचा हो जावे तो क्यों हमें अपनी पिछली कार्रवाई पर पश्चात्ताप न होगा? यदि मनुष्य ५० साल दुःख-दारिद्र्यमें बिता दे, तो पीछे उसका उन्नतिके उच्च सोपान पर चढ़ना असम्भव है।

जब जाड़ा आता है तभी सनोवर और सदाबहारके वृक्षों की सरसब्ज़ी मालूम होती है; अर्थात् विपत्तिके समय ही मनुष्यों का ठीक-ठीक हाल मालूम होता है।

जिसका दिल पराई निन्दासे साफ़ है, वह सचमुच ही सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी है।

चतुर मनुष्योंको अपने आदमियोंको युद्धमें ले जानेसे पहले

सात साल तक सैनिक शिक्षा देनी चाहिये। अशिक्षित सेना को युद्धमें ले जाना, उसको फँक देनेके समान है।

अपने अन्दर दोष रखना और उसके निर्मूल करनेकी चेष्टा न करना, वास्तविक दोष है।

बड़े लोगोंके सामने तीन ग़लतियोंसे परहेज़ करना चाहिये,—पहली भूल जल्दबाज़ी है यानी जब तक अपने बोलनेकी बारी न आवे उसके पहले बोलना; दूसरी भूल लज्जा है यानी जब अपने बोलनेकी बारी आवे तब न बोलना; तीसरी भूल ग़फ़लत है यानी श्रोताके मुख पर ग़ौर किये बिना ही बक़ते चले जाना।

इसका खुलासा मतलब यह है, चतुर मनुष्य बिना अपनी बारी आये अथवा बिना पूछे न बोले, जब बोलने की बारी आवे या कोई कुछ पूछे तब अवश्य बोले; जब बात सुनने वालेका ध्यान या दिल बातें सुनने की ओर न हो, तब न बोले। जो इसके विपरीत करते हैं यानी बिना बारी आये या बिना पूछे बोलते हैं; बारी आने या पूछने पर नहीं बोलते तथा सुननेवाले का ध्यान या मन न होने पर भी बोलेही जाते हैं,—वे मूर्ख हैं। बड़े लोग ऐसे मूर्खों को बुरा समझते हैं।

जिनकी विद्या स्वाभाविक है वे प्रथम श्रेणीके पुरुष हैं; जिन्होंने अभ्यास करके विद्या पढ़ी है वे द्वितीय श्रेणीके पुरुष हैं; जो मन्दबुद्धि हैं किन्तु पढ़नेकी चेष्टा करते रहते हैं, वे तृतीय

णीके पुरुष हैं ; किन्तु जो मनुष्य मन्दबुद्धि हैं और पढ़नेका योग भी नहीं करते, वे अधमाधम हैं ।

नौकरों और लड़कोंसे काम चलना बड़ा कठिन है। अगर उनसे हेल-मेल रक्खोगे, तो वे तुम्हारी अप्रतिष्ठा करेंगे और उन्हें दूर रक्खोगे तो वे अप्रसन्न होंगे ।

ड्यूक आइने पूछा कि मुझे अपने लोगोंके सन्तुष्ट करनेके लिये क्या करना चाहिये ? महात्माने उत्तर दिया :—"सुयोग्य र्मचारियों की पदोन्नति कर और अयोग्योंको निकाल दे, तो रे लोग तुझसे सन्तुष्ट हो जायंगे। अगर आयोग्योंको दोन्नति करेगा और सुयोग्योंको पदच्युत करेगा, तो लोग झसे असन्तुष्ठ हो जायंगे ।"

जूकङ्गने अच्छे राज्यकी परिभाषा पूछी ; तब महात्माने हा :—"खानेको काफ़ी सामान तय्यार रखना, राज्यरक्षाको थेष्ठ सेना रखना और रय्यतके दिलमें विश्वास जमाये रखना—राज्यके यही तीन दृढ़ अङ्ग हैं। अगर सेना न रहे, तोभी राज्य क़ायम रह सकेगा। अगर खानेको न मिले, तोभी राज्यको धक्का न लगेगा। किन्तु यदि रैयतके मनमें राजा का विश्वास न रहे, तो कोई भो राज्य टिक नहीं सकता ।"

किसीने महात्मासे अच्छे राज्यके लक्षण पूछे। महात्माने उत्तर दिया :—"राज्य वही अच्छा है, जिसकी छायमें रहनेवाले सुखी हों और अन्य राज्यके लोगोंका दिल उस राज्यमें आनेको चाहे ।"

जब तुम्हारे माता-पिता जीते हों, तब तुम उन्हें छोड़कर दूर-देश की यात्रा मत करो। अगर दूर ही जाना हो, तो ऐसी जगह जाओ, जहाँसे तुम्हारे मा-बाप को तुम्हारी ख़बर मिल सके।

बुद्धिमान मनुष्य बोलनेमें सुस्त होता है; किन्तु काम करनेमें तेज़ होता है; मूर्ख काम थोड़ा करता है, किन्तु बातें बहुत बनाता है।

ऊंचे दर्जेका आदमी दृढ़चित्त होता है, किन्तु झगड़ालू नहीं होता। वह सबसे मेल-मिलाप रखता है, किन्तु सब से भाईबन्दीका व्यवहार नहीं डालता।

दूसरोंके साथ वैसा बर्ताव मत करो, जैसा तुम खुद दूसरों से नहीं चाहते।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि यदि तुम चाहते हो कि कोई हमें गाली न दे, तो तुम भी किसीको गाली मत दो। अगर तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारा नुक़सान न करे तो तुम भी किसीका नुक़सान मत :करो। अगर तुम चाहते हो कि कोई तुम्हें घृणाकी दृष्टिसे न देखे, तो तुम भी किसी को नफ़रत की नज़रसे मत देखो। अगर तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारा ख़ून न करे, तो तुम भी किसीकी हत्या मत करो। कनफ्यूशियस की यह वाणी ईसामसीहकी सुनहरी नीतिसे बिल्कुल मिलती है। वह यह है—Do to others as ye would that they shoud do

o you. इसका मतलब यह है कि दूसरोंके साथ वैसाही र्ताव करो, जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें। त एक ही है, सिर्फ लिखने और कहनेके ढंग में फ़र्क़ है।

बुद्धिमान मनुष्य निम्न-लिखित नौ बातोंपर विशेष रूपसे यान रखता है:—वह हरेक विषय को बारीकी से देखता ; हर बातको साफ़-साफ़ सुनना चाहता है; अपनी आँखोंमें या और नम्रता रखना चाहता है; अपने आचरण को प्रति- ष्ठित बनाने की फ़िक्रमें रहता है; मुंहसे बात निकालनेमें मान्दारी का ध्यान रखता है; जब उसे किसी बातका संशय हता है, तब वह उसके पूछनेमें नहीं हिचकता; जब उसे क्रोध आता है, तब वह परिणाम—नतीजे—का विचार करता है; जब उसे धन कमाने का मौक़ा मिलता है, तब वह अपने धर्मका ध्यान रखता है।

कनफ्यूशियसने कहा है कि आत्मप्रतिष्ठा, उदारता, सत्य, साहस और दयालुता—ये पाँच गुण जिस मनुष्यमें हों, वह सर्व्वश्रेष्ठ पुरुष है। यदि आत्मप्रतिष्ठा दिखाओगे, तो लोग तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगे। अगर उदारतासे काम लोगे, तो सब लोग तुम्हारे वशीभूत हो जायँगे। मगर सत्यसे विचलित न होगे, तो जगत् तुम पर विश्वास करेगा। अगर साहससे काम करोगे, तो तुम बड़े-बड़े कामोंमें सफलता प्राप्त करोगे। अगर दिलमें दया रक्खोगे, तो दूसरों को अपनी इच्छा पर चला सकोगे।

ज़ूकङ्गने महात्मा कनफ्यूशियससे पूछा :—"क्या श्रेष्ठ पुरुष भी किसीसे घृणा रखता है ?" महात्माने उत्तर दिया :—"हाँ, वह उन लोगोंसे नफ़रत करता है जो दूसरोंके ऐबों को प्रकाशित करते हैं, जो ऊंचे दर्जेके मनुष्यों की बदनामी करते हैं, जिन में आत्मशासन का साहस नहीं है, जो बहादुर हैं किन्तु तङ्ग-दिल हैं। जू! तुम भी तो कुछ लोगोंसे घृणा करते होगे।" चेले ने उत्तर दिया :—हाँ, मैं भी उन लोगों से नफ़रत करता हूं, जो भेद लेने और दख़ल देनेमें ही अक़्लमन्दी समझते हैं, जो हर बातमें अपनी अनिच्छा या नारज़ामन्दी दिखानेमें ही साहस समझते हैं और जो दूसरों की निन्दा करनेमें ही ईमान्दारी समझते हैं।"

जूलूने पूछा—"क्या श्रेष्ठ पुरुष साहस को मूल्यवान नहीं समझता ?" महात्माने उत्तर दिया :—"वह धार्म्मिकता को सबसे ऊपर मानता है। उच्चपदस्थ मनुष्यमें यदि धार्म्मिकता-रहित साहस है, तो वह राज्य का नाशक है। अगर साधारण मनुष्यमें धर्म्म-हीन साहस है तो वह लुटेरा है।"

ईमान्दारी और सचाई को अपना मार्क़ूला (motto) बना लो। अपने समान लोगोंसे मित्रता रक्खो। अगर तुम से भूल हो जाय, तो उसके सुधारनेमें लज्जित हो।

जब किसीका पिता जीवित हो तब उसको इच्छा—रुचि—का झुकाव देखो और उसके बापके मरनेके बाद उसके काम:

खो। अगर मातम—शोक—के तीन सालके अन्दर वह अपने पिताके बाँधे हुए नियमोंसे न डिगे, तो उसे पिताका सच्चा पुत्र समझो।

ओड नामके जो तीन सौ भजन 'शिहचिङ्ग' नामक पुस्तक में लिखे हैं, उनका सारांश एक शब्दमें आ सकता है:—"बुरे ख़यालातोंको दिलमें जगह न दो।"

यदि तुम किसी मनुष्यके कामोंको ग़ौरसे देखो, उसके विचारों की आलोचना करो और उन बातों का ध्यान रक्खो, जिनसे उसे प्रसन्नता होती है; तो वह तुमसे अपनी असलियत न छिपा सकेगा।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि यदि तुम किसी मनुष्यके विषयमें उपरोक्त तीनों बातों का विचार ग़ौरसे करोगे, तो तुमसे यह बात कदापि न छिपेगी कि, वह कैसा आदमी है। वास्तवमें, कौन मनुष्य कैसा है, इस-बातके जाननेके लिये उपरोक्त नसीहत बहुतही उमदा है।

पुरानी विद्या पर विचार करते हुए, नई विद्या सीखते जाओ; इस तरह करने से तुम दूसरों के उस्ताद बन जाओगे।

बिना विचारके विद्याभ्यास करना वृथा है और विचार बिना विद्या भयानक है।

महात्मा कनफ्यूशियसने कहा—"मैं नहीं जानता कि, मनुष्य का काम सत्य बिना कैसे हो सकता है और बिना जूए

के गाड़ी या छकड़ा किस तरह चल सकता है ?"

जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन न करे, उसमें उचित साहसका अभाव समझना चाहिये ।

वह शख़्स जो अपने स्वामीकी सेवा उचित रीतिसे करता है, लोग उसे ख़ुशामदी कहते हैं ।

जो काम हो गया है उसपर वाद-विवाद करना वृथा है; जिसका इलाज या सुधार नहीं हो सकता उसका विरोध करना फिजूल है और बीती हुई बातोंमें दोष निकालना बेफ़ायदा है ।

मनुष्य के दोषोंसे भी शिक्षा मिल सकती है यानी मनुष्य के दोषोंपर ध्यान देनेसे मनुष्य गुणवान हो सकता है ।

उस विद्यार्थीको जो धर्म-शास्त्र पढ़ता है, अगर अपने फटे-पुराने कपड़ों और बुरे-भले भोजनसे लज्जा आती हो ; तो उसे धर्म-शिक्षाके अयोग्य समझना चाहिये ।

अगर तुम किसी पद पर न हो, तो इस बात का विचार करो कि तुम पद पाने के योग्य किस भाँति हो सकते हो ? यदि तुम प्रसिद्ध न हो, तो इस बात का विचार करो कि तुम कौनसी योग्यता रखने से प्रसिद्ध हो सकोगे ।

जब तुम किसी भले आदमी को देखो, तब तुम उस से गुणों में बढ़ जाने या बराबरी करने का विचार करो। जब तुम किसी बुरे आदमी को देखो, तब अपने ही दिलकी जाँच करो ।

प्राचीत काल के मनुष्य अपने विचारों को ज़बान पर लाने हिचकिचाते थे। उनको इस बात का भय था, कि कहीं मारे काम हमारी बातोंसे कम न हों।

कनफ्यूशियस ने कहा :—"अफ़सोस! मुझे अपने दोष आप देख सकनेवाला और अपने अन्तःकरण की रुकावट से अपने तईं दोषी ठहरानेवाला मनुष्य न मिला।"

मिश्रित नीति।

इङ्गलैंडके महाकवि या वलायतके कालिदासको शिक्षित-समाज में कौन नहीं जानता ? जिस तरह कालिदास ने शकुन्तला, कुमारसम्भव, रघुवंश आदि नाटक और काव्योंकी विचित्र रचना की है, उसी तरह शेक्सपियर ने रोमियो-जूलियट, वेनिसका व्योपारी आदि कितने ही नाटकों की अद्भुत रचना की है। जिस तरह हमारे भारत में कालिदास का सम्मान है, उसी तरह वलायत में शेक्सपियर की प्रतिष्ठा है। उसने "खुशामद और दोस्ती" पर एक अच्छी कविता लिखी है। हम उसका हिन्दी गद्यानुवाद अपने पाठकों की भेंट करते हैं :—

"इस समय जो तुम्हारी खुशामदें करता है, ज़रूरत के समय हरगिज़ तुम्हारे काम न आवेगा। बातें बनाना हवा की भाँति सहज है; किन्तु सच्चा दोस्त मिलना कठिन है। जब तक तुम्हारी अण्ठीमें टका है, तब तक अनेक मनुष्य तुम्हारे

दोस्त बने रहेंगे। जब अण्टी ख़ाली हो जायगी, कोई तुम्हारे पास भी न फटकेगा।

यदि कोई मनुष्य ख़ूब धन-दौलत उड़ाता है, तो ख़ुशामदी लोग उसे उदार—फैयाज़—कहते हैं। यदि उसका झुकाव कुकर्मों की तरफ़ होता है, तो ख़ुशामदी उसे आस्मान पर चढ़ा-चढ़ा कर फुसलाते और बिगाड़ देते हैं। अगर किसी तरह उसकी क़िस्मत फूट जाती है, पास कौड़ी नहीं रहती, तो वही ख़ुशामदी जो पहले उसे झुक-झुककर सलामें किया करते थे, उसकी ओर झाँकते भी नहीं; बल्कि उस के सङ्ग रहना भी नहीं पसन्द करते।

जो तुम्हारा सच्चा मित्र है ज़रूरत या विपत्ति के समय अवश्य तुम्हारे काम आवेगा। अगर तुम शोक करोगे, तो उसे रुलाई आवेगी। अगर तुम्हें नींद न आवेगी, तो उसे भी नींद न आवेगी। सच्चा दोस्त तुम्हारे हरेक सङ्कट में तुम्हारा साथ देगा। ऊपर जो कुछ लिखा है, वह सच्चे दोस्त और ख़ुशामदी दुश्मनकी पक्की पहचान है। (शेक्सपियर)

ख़ुशामद तेज़ शराब की भाँति शीघ्र ही मग़ज़ में चढ़ जाती है और सिर को फिरा देती है।

ख़ुशामद मानव स्वभावकी तीन नीचातिनीच प्रवृत्तियों—असत्य, नीचता और कपटके योग से बनी है।

किसी ने एक यूनानी विद्वान् से पूछा कि "साहब! कौन जानवर सबसे बुरा डङ्क मारते हैं।" उसने जवाब दिया :—

"निन्दक और खुशामदी। इन दोनों में कोई बड़ा अन्तर नहीं है। एक तुम्हारी पीठ के पीछे काटता है और दूसरा तुम्हारे मुंहके सामने।"

खुशामदी धूपघड़ी की छाया के समान है, जो धूपमें तो मौज़ूद रहती है, किन्तु बादलके आते ही नहीं रहती।

जिस समय तुम मधुमें लपेटे हुए शब्दोंको निगलने लगो तब होशियार रहो; क्योंकि मधुमें बर्रका होना भी सम्भव है।

सच्चे मित्र और खुशामदीकी यही पहचान है, कि खुशामदी तुम्हारे गुण-दोष दोनों को अच्छा बतलावेगा और सच्चा मित्र तुम्हें बुराई से रोक कर भलाई की तरफ़ लगावेगा।

बुद्धिमान अपने मित्रों को पहचान कर, उनसे इस भाँति चिपटा रहता है जिस भाँति बालक अपनी मा से चिपटा रहता है। उसका दूसरों की उदारता में हिस्सा लेना, वैसा ही है जैसा एक मधुमक्खी का फलों की सुन्दरता और सुगन्ध को नाश किये बिना ही शहद जमा करना।

ग़ज़ाली नामक एक फ़ारस के विद्वान् ने लिखा है:—"मैं उस दोस्त से परहेज़ करता हूं, जो मेरे बुरे कामों को भी अच्छा बताता है। मुझे वही दोस्त अच्छा लगता है, जो दर्पण की तरह मेरे दोषों को मेरे सामने रख देता है।"

शेख़सादी ने लिखा है:—"सच्चे मित्र की मित्रता सामने और पीठ-पीछे एकसी होती है; उनके माफ़िक नहीं होती, जो तुम्हारी पीठ-पीछे तुम्हारी निन्दा करते हैं और

सामने तुम्हारे लिए जान देने को तैयार रहते हैं। जब तुम मौजूद होते हो तब तो भेड़के बच्चे के माफ़िक़ सीधे रहते हैं और जब मौजूद नहीं होते, तब मनुष्य-भक्षी भेड़िये के समान हो जाते हैं। जो शख़्स तुम्हारे सामने तुम्हारे पड़ोसी की बुराई करता है वह तुम्हारा कैसा ही दोस्त क्यों न हो, तुम्हारी बुराई भी दूसरों के सामने अवश्य ही करेगा।

जिस तरह नमकके बिना आचार और मुरब्बे वग़ैरहः सड़ जाते हैं उसी तरह परोपकार-रूपी लवण बिना धन नष्ट हो जाता है।

ऐ सुख की नींद सोनेवाले! उसका ख़याल ज़रूर रख, जिसे शोक सोने नहीं देता।

ऐ धनी पुरुष! उनको मत भूल, जो दरिद्रताके अत्याचार से पीड़ित है।

ए जल्दी-जल्दी चलनेवाले! उस साथी पर दया कर, जो तेरे साथ-साथ चलने में असर्थ है।

बड़े-बड़े वृक्ष, बड़ी-बड़ी नदियाँ, रोग-नाशक बूटियाँ और महात्मा लोग "परोपकार" के लिए पैदा हुए हैं।

फ्रान्स देश के विक्रमी सम्राट् नेपोलियन बोनापार्ट ने, जिसके नामसे एक समय सारा संसार चकित हो रहा था और यह सोचा जाता था कि कहीं संसार के बहुत से राज्य और जातियों को वह अपने हाथमें कर इङ्गलैण्ड को अपने अधीन करने में समर्थ न हो जाय, अपने नीचे के अफ़सरों को

यह आज्ञा दे रखी थी कि हमारी निन्दा यदि कहीं भी छपे तो हमें अवश्य दिखा देना, तारीफ़ हो तो उसके दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि निन्दा झूठी होगी तो हमारी कोई हानि नहीं होगी। यदि ठीक होगी तो हमें अपने दोषों को दूर करने की कोशिश करनी होगी।

जो शख़्स अपने जन्मदाता के कृतज्ञ नहीं हैं, उन पर लक्ष्मी की कृपा हरगिज़ न होगी।

ए समझदारो! बुद्धिमानों की राय में, गर्भवती स्त्री का साँप जनना अच्छा; किन्तु दुष्ट बच्चा जनना भला नहीं है।

मनुष्य जिस भाँति संसारी काम-धन्धोंमें दिल लगाता है, अगर उसी भाँति ईश्वर में दिल लगावे; तो देवताओं से भी बढ़ जावे। जिस समय तू गर्भाशय में पूर्णरूपसे बना भी न था, तब भी ईश्वर तुझे न भूला। उसने तुझमें जीव डाला और बुद्धि समझ, प्रकृति, सुन्दरता और विचार-शक्ति दी। उसने तेरे कन्धे पर दो भुजाएँ लगाईं और उङ्गलियों-सहित हाथ दिये। ए नीच मनुष्य! क्या तू समझता है कि वह तुझे तेरा नित्य का भोजन भी न देगा?

लम्पट आदमी जब ख़ुशी के नशे में मतवाले हो जाते हैं; तब कङ्गाली के दिनों का ख़याल नहीं करते। उस वृक्ष में, जो गरमी के मौसम में फलों से लद जाता है, जाड़े में पत्तियाँ भी नहीं रहतीं।

एक बादशाह के लड़केकी पढ़ने की चाँदी की तख़ती पर

लिखा हुआ था :—"उस्ताद की सख़्ती, पिता के प्यार-दुलार से, अच्छी होती है ।"

जिसे बाल्यावस्था में कुछ गुण नहीं सिखाये गये हैं वह जवानीमें क्या गुण सीखेगा ? हरी लकड़ी को तुम जितना चाहो मोड़ सकते हो ; किन्तु जब वह सूख जायगी, तब आग बिना हरगिज़ सीधी न होगी ।

विद्वान् जहाँ जाता है वहाँ ही उसकी प्रतिष्ठा होती है और वह सबसे ऊँचा आसन पाता है ; किन्तु मूर्खको ज़रासा भोजन मिलता है और उसे मुसीबतका सामना करना पड़ता है ।

जिसमें स्वाभाविक बुद्धि नहीं है, उसे विद्यासे कुछ लाभ नहीं हो सकता । ख़राब लोहे पर कितनीही पालिस क्यों न करें, वह कभी चिकना और अच्छा न होगा । कुत्तेको सात नदियोंमें न धोओ ; क्योंकि जब वह भीगेगा, तब फिर मैला हो जायगा ।

जो मनुष्य किसी भारी काम पर, किसी नातजुरबेकारको नियत करेगा उसे अवश्य पछताना होगा और अक़्लमन्द लोग उसे नादान समझेंगे । बुद्धिमान आदमी भारी काम अयोग्य मनुष्यके सिपुर्द कदापि नहीं करता । चटाई बनानेवाला बुननेवाला है ; तथापि उसे रेशमके काममें नहीं लगाते ।

जिसके पास खानेको नहीं है उसे सुवर्णसे क्या फ़ायदा ? मरुस्थलमें धूपसे जलते हुए मुसाफ़िरको उबाली हुई शलग़म जितनी प्यारी है उतनी चाँदी नहीं ।

तुम जो लोगोंसे माँग-ताँग कर खाते हो, इससे शरीरको लाभ हो सकता है; किन्तु वह भोजन आत्माको हानिकारक है। अगर बज़ारमें, नामवरीके बदलेमें अमृत विकता होता तो बुद्धिमान नामवरी देकर कदापि न ख़रीदते। अपमान-सहित जीनेकी अपेक्षा, मान-सहित मरना अच्छा है।

दुर्जनको सज्जन बनाना असम्भव है। बादल सब जगह एकसा पानी बरसाते हैं; तथापि बाग़ोंमें गुल-लाला पैदा होते हैं, किन्तु ऊसर ज़मीनमें केवल घास।

जो राजा अपनी प्रजा पर अत्याचार करता है, विपत्तिके समय उसके मित्र भी प्रबल शत्रु हो जाते हैं। अतः राजाओं! अपनी प्रजाके साथ अच्छा वर्ताव करो और शत्रु के आक्रमणसे बेफ़िक्र होकर बैठे रहो; क्योंकि न्यायी राजाके लिये उसकी प्रजाही उसकी सेना है।

जो तुमसे डरे, तुम भी उससे डरो; चाहे तुम वैसे सैकड़ों को कुचलनेकी शक्ति क्यों न रखते हो। क्या तुम नहीं जानते, कि अपनी जानसे निराशी बिल्ली चीतेकी भी आँखें निकाल लेती है? साँप अपना सिर पत्थरसे कुचले जानेके भयसे किसानको डस लेता है।

आदमके बच्चे एक दूसरेके अङ्ग हैं और एकही मसाले से बनाये गये हैं। जब एकको कष्ट होता है तब दूसरेको भी पीड़ा होती है। वह शख़्स जो दूसरोंके दुःख पर लापरवाही दिखाता है, मनुष्य कहलानेके योग्य नहीं।

दौलत और ताक़त, इल्म या हुनरसे नहीं मिलती ; किन्तु ईश्वरकी सहायतासे मिलती हैं। अक्सर देखनेमें आता है कि दुनियामें मूर्ख लोगोंका सम्मान होता है और बुद्धिमानोंका अपमान ; एक महाविद्वान् शोक और दुःखसे मर गया ; जबकि मूर्ख ने एक खँडहरमें दबा हुआ ख़ज़ाना पाया ।
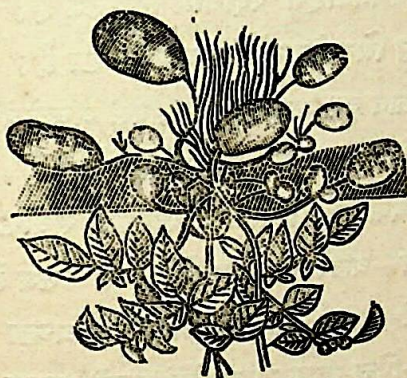
उत्तम और निकृष्ट समूह।
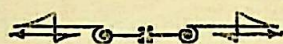
मनुष्यमात्रके याद रखने योग्य, कोई डेढ़ सौ, अनमोल बातें।

१ अन्न—जीवन-निर्वाहक पदार्थोंमें सर्वोत्तम है।
२ जल—प्यास मिटानेवालोंमें सबसे अच्छा है।
३ शराब—थकान दूर करनेवालोंमें सबसे अच्छी है।
४ निमक—रुचिकारक पदार्थोंमें सबसे अच्छा है।
५ खटाई—हृदयके लिये हितकारी पदार्थोंमें सर्वोत्तम है।
६ मुर्गेका मांस—बलकारी पदार्थोंमें सबसे उत्तम है।
७ मगरका वीर्य—वीर्य बढ़ानेवालोंमें सबसे अच्छा है।
८ शहद—कफ-पित्त-नाशक पदार्थोंमें सबसे अच्छा है।
९ घी—वातपित्त नाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।
१० तेल—वातकफ नाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है। *

---

* तेल वातकफ-नाशकोंमें सर्वश्रेष्ठ लिखा है, इसका यह मतलब है कि तेल बात नाशक है और वात-प्रधान वात-कफ नाशक है।

११ वमन—कफ नाश करनेके लिये सबसे अच्छा उपाय है।
१२ विरेचन—पित्त हरण करनेवालोंमें सर्वोत्तम उपाय है।
१३ बस्ती—वात हरण-कर्त्ताओंमें सबसे उत्तम है।
१४ स्वेद—पसीना शरीरको नर्म करनेवालोंमें सर्वोत्तम है।
१५ कसरत—शरीरको मज़बूत करनेवाले उपायोंमें राजा है।
१६ मैथुन—शरीरको दुबला करनेवालोंमें सबसे बढ़कर है।
१७ क्षार—पुरुषत्व-नाशक पदार्थोंमें सबसे बढ़कर है।
१८ तिन्दुक फल—अन्नमें अरुचि करनेवालोंमें सबसे बढ़कर है।
१९ कच्चा कैथ—स्वर भङ्ग करनेवालोंमें सबसे तेज़ है।
२० भेड़का घी—दिलको नुक़सान पहुचानेवालोंमें राजा है।
२१ बकरीका दूध—शोष नाशकों, रक्त रोकनेवालों, रक्त-पित्त-रोग नाशकों और दूध बढ़ानेवालोंमें सबसे उत्तम है।
२२ भेड़का दूध—पित्त-कफ बढ़ानेवालोंमें सबसे ज़बदस्त है।
२३ भैंसका दूध—नींद लानेवालोंमें सबसे उत्तम है।
२४ दही—अभिष्यन्दी पदार्थोंमें सबसे बढ़कर है।
२५ ईख—पेशाब लानेवालोंमें सबसे बढ़कर है।
२६ जौ—मल प्रकट करनेवालोंमें सबसे बढ़कर है।
२७ जामुन—वायु प्रकट करनेमें सबसे बढ़कर है।
२८ खली—पित्त-कफ करनेवालोंमें सबसे बढ़कर है।
२९ कुलथी—अम्ल-पित्त करनेवालोंमें सबसे बढ़कर है।
३० उड़द—पित्त-कफ-कारकोंमें सबसे बढ़कर है।

३१ मैनफल—वमन, आस्थापन और अनुवासनके उपयोगी पदार्थोंमें सबसे उत्तम है।

३२ निशोथकी जड़—सुखसे दस्त करानेवालोंमें सर्वोत्तम है *।

३३ अरण्ड—नर्म जुलाबोंमें सबसे उत्तम है ‡।

३४ थूहर—तेज़ दस्त करानेवालोंमें सबसे उत्तम है +।

---

* निशोथ और त्रिफला तीन-तीन तोले और बायविडङ्ग, पीपर, जवाखार एक-एक तोले—सबको कूटपीस और छानकर चूर्ण करलो, पीछे इस चूर्णको गुड़में मिलाकर लड्डू बनालो। पहले दिन बहुत हलकी मात्राका लड्डू खाइये, अगर उससे दस्त न हों, तो दूसरे दिन बढ़ालो। अथवा, उपरोक्त चूर्णको एक तोले शहत और आधा तोले घी में कोई छै माशे चूर्ण मिला कर चाट जाइये। यह जुलाब बहुतही अच्छा है। पथ्य-परहेज़का रगड़ा नहीं यानी किसी भी परहेज़ की ज़रूरत नहीं। बहुतही सुखसे दस्त होते हैं।

‡ "अरण्डीका" तेल त्रिफलेके काढ़े या दूधमें लेना सर्वोत्तम जुलाब है। बालक, वृद्ध, क्षत-क्षीण और नाजुकसे, नाजुकके लिये यह जुलाव सुखदायी है। इस तेलकी मात्रा जवानके लिये चार तोले तक है। त्रिफलेके काढ़ेमें लिया जाय तो काढ़ा दूना लेना चाहिये।

+ थूहरका दूध तीक्ष्ण जुलाबोंमें सबसे उत्कृष्ट है। परन्तु अनजानका दिया हुआ थोड़ीसी भी भूलसे विषके समान हो जाता है, जानकार वैद्यके द्वारा दिया हुआ दोषोंके भारी

विरेचनानां तीक्ष्णानां पयः सौधं परंमतम्।
अज्ञप्रयुक्तं भवति विषवत् कर्मविभ्रमात्॥

३५ औंगेके बीज—शिरोविरेचन करनेवालोंमें सबसे उत्तम हैं।
३६ वायबिडङ्ग—कृमि या कीड़े नाशकोंमें सबसे अच्छी है।
३७ सिरसके बीज—विषनाशक पदार्थोंमें सर्वोत्तम हैं।
३८ खैर—कोढ़ नाश करनेवाले पदार्थोंमें राजा है।
३९ रास्ना—वात नाशक पदार्थोंमें सबसे बढ़कर है।
४० आमला—अवस्था-स्थापकोंमें सर्वश्रेष्ठ है।
४१ हरड़—सब तरहके अच्छे पथ्योंमें श्रेष्ठ है।
४२ अरण्डकी जड़—बलवर्द्धक और बातनाशकोंमें सर्वोत्तम है।
४३ पीपरामूल—आनाह नाशकोंमें सर्वोत्तम है।
४४ चीतेकी छाल—गुदाका दर्द, गुदाकी सूजन नाश करनेवालों और भूख बढ़ानेवालोंमें सर्वोत्तम है।
४५ नागरमोथा—दीपन, पाचन और संग्राहकोंमें प्रधान है।
४६ कूट और पुहकरमूल—श्वास, खाँसी, हिचकी और पसलीका दर्द नाशकोंमें परमोत्तम है।
४७ अनन्तमूल—अग्निज्वाला-निवारक, दीपन, पाचन तथा अतिसार-नाशकोंमें उत्तम है।

सञ्चयको भी नाश करता और भयानकसे भयानक रोगोंकी शान्ति करता है, इसलिये इस जुलावको ऐसे-वैसे अनजानके कहनेसे न लेना चाहिये। सुश्रुतमें लिखा है:—

४८ गिलोय—दस्त बाँधनेवालों, बादी नाश करनेवालों, अग्नि दीपन करनेवालों, कफ नाश करनेवालों, और कफरक्तक विवन्ध नाश करनेवालोंमें सर्वोत्तम है।

४९ कच्चा बेलफल—मलको गाढ़ा करनेवालों, अग्नि दीपन करनेवालों, वात-कफ-नाशक द्रव्योंमें उत्तम है।

५० अतीस—दीपन, पाचन, संग्राहक और सब दोष करनेवालों में सर्वोत्तम है।

५१ कमलगट्टा, कमल और केसर एवं कमोदिनी—संग्राहक और रक्तपित्त-नाशकोंमें सर्वोत्तम है।

५२ जवासा—पित्त-कफ-नाशकोंमें सर्वोत्तम है।

५३ गन्धप्रियंगु—रक्त पित्तके अतियोग नाशकोंमें सर्वोत्तम है।

५४ कुड़ाकी छाल—कफ पित्त रक्त संग्राहकों और उपशोषक द्रव्योंमें सबसे अच्छा है।

५५ गंभारीफल—संग्राहक और रक्तपित्त-नाशकोंमें सबसे परमोत्तम है।

५६ पिठवन—संग्राहक, वातहर और वृक्षोंमें सर्वोत्तम है।

५७ विदारीकन्द—वृष्य और सब दोष नाशकोंमें उत्तम है।

५८ बला (खिरेंटी)—संग्राहक, बलवर्द्धक और वातनाशक द्रव्योंमें उत्तम है।

५९ गोखरू—मूत्रकृच्छ और वायुनाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।

६० हींग—छेदन, दीपन, अनुलोमन और वात-कफ-नाशकोंमें सर्वोत्तम है।

६१ अमलवेत—भेदन, दीपन, अनुलोमन, और वात-कफ-हरणकर्त्ताओंमें सर्वोत्तम है।

६२ जवाखार—स्रंसन, पाचन और बवासीर-नाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।

६३ माठा—ग्रहणीके दोष नाश करनेवालों, बवासीर नाश करनेवालों, और अधिक घी खानेके विकारोंके नाश करनेमें माठा या छाछ प्रधान है। *

६४ मांसखोर जानवरोंका मांस—ग्रहणी दोष, शोष, और बवासीरमें खाना उत्तम है।

६५ दूध घी का अभ्यास—बुढ़ापा नाशकरनेवाले उपायोंमें श्रेष्ठ है।

६६ सत्तू और घी का समपरिमाणसे रोज़ खाना—वृष्य और उदावर्त्त नाशक द्रव्योंमें उत्तम है।

६७ तेलके कुल्ले—दाँतोंके मज़बूत करनेवाले और रुचि करनेवाले उपायों में सर्वश्रेष्ठ हैं।

६८ चन्दन और गूलर—दाह नाशक लेपोंमें सर्वोत्तम हैं।

---

* भोजनके बाद भुना हुआ ज़ीरा, सेन्धा नोन मिला हुआ गायका माठा पीनेसे खूब भूख लगती है। एक कोरी हाँडीमें चीतेके जड़की छालको जलमें पीसकर लेप करदो। पीछे सुखालो। इस हाँडीमें गायका दूध जमाकर दहीको बिलो कर माठा बनाया करो और रोज़ पिया करो। बेहद लाभ होगा। बवासीरके लिये अकसीर है।

६९ रास्ना और अगर—शीतनाशक लेपोंमें उत्तम हैं।

७० खस—दाह नाशकरनेवाले और चमड़ेके दोष दूर करनेवाले लेपोंमें उत्तम है।

७१ कूट—वातनाशक अभ्यङ्गों और लेपके योग्य द्रव्योंमें उत्तम है।

७२ मूलहटी—चक्षुष्य, वृष्य, केशहितकर, कण्ठहितकर, वर्णहितकर, यानी आँख वीर्य, बाल, गला और शरीरके रङ्गको फ़ायदा पहुँचानेवाले और घाव भरनेवाले पदार्थोंमें सर्वोत्तम है।

७३ हवा—बल और चैतन्यता करनेवालोंमें सर्वोत्तम है।

७४ अग्नि—आम, स्तम्भ, शीत, शूल, और कम्पनाशक द्रव्यों में उत्तम है।

७५ जल—स्तंभनीय द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।

७६ बुझाया हुआ जल—वह जल जिसमें जली हुई मिट्टी का डेला बुझाया गया हो, सर्वोत्तम जल है।

७७ अत्यन्त भोजन—आम-दोष कारकोंमें सबसे तेज़ है।

७८ यथाग्नि भोजन—अग्निदीपक आहारोंमें सर्वोत्तम है।

७९ अभ्यासानुरूप कार्य—सेवनीयोंमें सबसे उत्तम है।

८० समयका भोजन—आरोग्यकर्त्ताओंमें परम उत्तम है।

८१ मल मूत्रादि वेगोंका रोकना—व्याधि करनेवालों में सबसे बढ़कर है।

८२ मद्य—यानी शराब प्रफुल्ल करनेवालोंमें सर्वश्रेष्ठ है।

८३ मद्य-विकार—धृति, स्मृति और बुद्धि नाशकोंमें सर्वोपरि है।

८४ भारी पदार्थ—बड़ी कठिनतासे पचनेवालोंमें सर्वोपरि है।
८५ एक समय भोजन—उत्तम प्रकारसे पचनेवालोंमें सर्वोपरि है।
८६ स्त्री-सङ्ग—राजयक्ष्मा करनेवालोंमें सर्वोपरि है।
८७ शुक्रवेगको रोकना—नपुंसकता करनेवालोंमें सर्वोपरि है।
८८ बासी अन्न—अन्नमें अरुचि करनेवालोंमें सर्वोपरि है।
८९ उपवास - आयु कम करनेवालोंमें सर्वोपरि है ;
९० भूख जाती रहे तब खाना—दुर्बलता करनेमें सर्वोपरि है
९१ अजीर्ण खाना—ग्रहणी दोषकारकोंमें सर्वोपरि है।
९२ विषम भोजन—अग्नि विषम करनेवालोंमें सर्वोपरि है। *
९३ दूध माँस आदि विरुद्ध पदार्थोंका एक समय खाना—
कोढ़ आदि निन्दित व्याधि करनेवालोंमें सर्वोपरि है।
९४ शान्ति—हितकारियोंमें सर्वश्रेष्ठ है।
९५ शक्तिसे अधिक परिश्रम—सब तरहके अपथ्योंमें राजा है।
९६ आहार बिहारादिका मिथ्या योग—व्याधि कारकोंमें
सर्वोत्तम है।
९७ रजस्वलागमन—अलक्ष्मी-कारकोंमें सर्वोपरि है।
९८ ब्रह्मचर्य्य—आयुवर्द्धकोंमें सर्वश्रेष्ठ है।
९९ संकल्प-साधन—वृष्यादिकोंमें सर्वोपरि है।
१०० मनकी स्फूर्त्ति—अवृष्योंमें सर्वोपरि है।
१०१ बलसे अधिक काम करना—प्राण नाशकोंमें सर्वोपरि है।

---

* भोजन के असमय पर खाने, अधिक खाने या कम खानेको विषम भोजन कहते है।

१०२ विषाद—रोग बढ़ानेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०३ स्नान—परिश्रम हरण करनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०४ हर्ष—प्रीति करनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०५ बहुत साग खाना—सुखानेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०६ सन्तोषसे रहना—पुष्टि करनेवालोंमें उत्तम है ।
१०७ पुष्टि—निद्राकारकोंमें उत्तम है ।
१०८ निद्रा—तन्द्रा करनेवालोंमें उत्तम है ।
१०९ सर्वं रसाभ्यास—बल करनेवालों सर्वोत्तम है ।
११० एक रस खाना—दुर्बल करनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१११ गर्भशल्य—अनाकर्षणीयोंमें सर्वोपरि है ।
११२ अजीर्ण—क़य कराने योग्योंमें सर्वोपरि है ।
११३ बालक—मृदु औषध द्वारा चिकित्सा करने योग्योंमें प्रधान है ।
११४ बूढ़ेका रोग—याप्य रोगोंमें सबसे बढ़कर है ।
११५ गर्भवती स्त्री—तेज़ औषधि, कसरत, मिहनत और पुरुष-संसर्गसे बचनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
११६ मनकी प्रसन्नता—गर्भधारकोंमें सबसे उत्तम है ।
११७ सन्निपात—दुश्चिकित्स्योंमें सबसे बढ़कर है ।
११८ आम चिकित्सा—विरुद्ध चिकित्सामें सबसे ऊपर है ।*

---

* आमदोष—जब लाल आदि लक्षणोंसे युक्त होता है, उसे विष कहते हैं । जब आम-दोष विषके समान हो, तब उसकीशीत चिकित्सा करनी चाहिये, किन्तु इस मौक़े पर गरम इलाज लाभदायक होता है ; इसीसे आमकी चिकित्साका विरोध है ।

११९ ज्वर—रोगोंमें सबसे अधिक बली है।
१२० कोढ़—बहुत समय तक रहनेवाले रोगोंमें राजा है।
१२१ राजयक्ष्मा—रोगोंमें असाध्य है।
१२२ प्रमेह—न छोड़नेवाले रोगोंमें सबसे बढ़कर है।
१२३ जोख—उपशस्त्रोंमें सबसे अच्छी है।
१२४ वस्ती—पञ्चकर्मों में उत्तम है।
१२५ हिमालय—औषधि-भूमिमें सर्वश्रेष्ठ है।
१२६ मरुभूमि—आरोग्य देशोंमें सबसे उत्तम है।
१२७ सोमलता—औषधियोंमें सर्वोत्तम है।
१२८ अनूपदेश—अहितकर्ता देशोंमें सबसे बढ़कर है।
१२९ वैद्य की आज्ञापालन करना—रोगीके गुणोंमें सर्वोत्तम है।
१३० चिकित्सक—चिकित्साके चतुष्पादोंमें प्रधान है।
१३१ नास्तिक—वर्जनीयोंमें सबसे अधिक वर्जनीय है।
१३२ लोभ—क्लेशकारकोंमें सबसे बढ़कर है।
१३३ रोगी की अबाध्यता—मृत्यु-लक्षणोंमें प्रधान लक्षण है।
१३४ अस्थिरता—डरपोक मनके लक्षणोंमें प्रधान है।
१३५ देशकाल आदिके विचार-पूर्वक औषधि देना—वैद्य के गुणोंमें प्रधान गुण है।
१३६ वैद्यसमूह—निःसंशय कारकोंमें प्रधान है।
१३७ शास्त्रज्ञान—औषधोंमें प्रधान है।
१३८ शास्त्रानुमोदित युक्ति—ज्ञानोंपादेयोंमें प्रधान है।
१३९ उत्तम ज्ञान—कालज्ञान-योजनाओंमें उत्तम है।

१४० अनुत्याग—व्यवसाय नाशक और काल-नाशक हेतुओंमें सर्वोत्तम है ।

१४१ चिकित्सक की बहुदर्शिता- निःसन्देह करनेवाले उपायोंमें प्रधान है ।

१४२ असमर्थता—भय पैदा करनेवालोंमें सर्वोपरि है ।

१४३ अपने सहपाठीसे शास्त्रार्थ करना—बुद्धिवर्द्धक उपायोंमें प्रधान है ।

१४४ आचार्य्य—शास्त्राधिकार हेतुओंमें प्रधान है ।

१४५ आयुर्वेद—अमृतोंमें प्रधान है ।

१४६ सद्वचन—अनुष्ठान करने योग्योंमें प्रधान है ।

१४७ बिना विचारे बोल उठना—सब तरहके अहित करनेवालोंमें प्रधान है ।

१४८ सर्वत्याग—सुख करनेवालोंमें सर्व्वोत्तम है ।

१४९ दूध—जीवनीयोंमें प्रधान है ।

१५० मांस—वृहंणियोंमें प्रधान है ।

१५१ गवेधुकधान्य—कृशताकारकोंमें प्रधान है ।

१५२ उद्दालक अन्न—रूक्ष करनेवालों यानी रुखापन करनेवालों में प्रधान है ।

उपरोक्त १५२ उत्तम बातें चरकके सूत्र-स्थानमें कहीं हैं । इनमें की प्रत्येक बात वैद्यक करनेवालों और वैद्यक न करने वालों दोनोंके लिये परम लाभप्रद हैं । चरकमें लिखा है :—

एतन्निशम्य, निपुणश्चिकित्सां सम्प्रयोजयेत् ।
एवं कुर्वन् सदा वैद्यो, धर्मकामौसमुश्नते ॥

निपुण वैद्य इन सभी विषयोंको, यानी इन १५२ बातों को, याद करके चिकित्सा करे । यदि वैद्य इस प्रकार करे तो धर्म और काम की प्राप्ति करे ।

अनमोल उपदेश।

यदि बुढ़ापेमें वात-कफके रोगोंसे बचना चाहते हो, तो सदा तेल की मालिश कराया करो।

यदि शरीर को बलवान बनाना चाहते हो, जल्दीही बुढ़ापेका आना पसन्द नहीं करते; तो कसरतका अभ्यास करो।

यदि शरीर को मोटा-ताज़ा देखना चाहते हो, तो मैथुनसे भरसक बचो।

यदि बुढ़ापे से बचना चाहते हो, बहुत उम्र तक जीना चाहते हो, सदा निरोग रहना चाहते हो, तो हरड़ अथवा आँवले अथवा त्रिफलेका विधि-पूर्वक सेवन करो।

यदि शरीरमें बलवीर्य की वृद्धि चाहते हो, स्त्रियोंका-मान भञ्जन करना चाहते हो, तो विदारीकन्द या मुलहटी का सेवन करो, इनके सेवन करनेकी विधि हमारी लिखी "स्वास्थ्य-रक्षा" नाम पुस्तक के पृष्ठ २८२-२८३ में देखो।

यदि चाहते हो कि बुढ़ापा हमसे दूर रहे, हमारी आँखों

की ज्योति बनी रहे, शरीरका रङ्ग सुन्दर बना रहे, तो आप सब झगड़े छोड़ कर घी दूध और मुलहटी का सेवन कीजिये ; शरीरमें अपार वीर्य होगा। देखो स्वास्थ्यरक्षा पृष्ठ २८२-२८३

यदि आप चाहते हो कि हमारे दाँत सदा पत्थरके समान मज़बूत बने रहें—कभी न होलें ; तो आप काले तिलोंके तेलके कुल्ले नित्य करते रहें।

यदि आप सुखसे जीवन का बेड़ा पार करना चाहते हैं, तो आप अत्यन्त भोजन; भारी पदार्थों का सेवन, अधिक स्त्री-प्रसङ्ग, चलते या निकलते हुए वीर्य को रोकना, व्रत-उपवास, अजीर्ण होनेपर भी फिर खाना, विषम भोजन, संयोग-विरुद्ध भोजन, अपने बलसे अधिक परिश्रम, रजस्वला-गमन, आहार विहारके मिथ्या योग, अधिक शोक चिन्ता, एक रस खाना, बिना विचारे बोल उठना—मलमूत्रादि बेगोंका रोकना,—इतने कामोंसे अवश्य बचिये।

अत्यन्त भोजन करनेसे विषके समान आम-दोष पैदा हो जायँगे, भारी पदार्थ बड़ो-बड़ी कठिनाइयोंसे पचेंगे। अधिक स्त्री-प्रसङ्गसे आपका शरीर दुर्बल हो जायगा, बिना अवस्थाके बुढ़ापा आजायगा और राजयक्ष्मा नामक ऐसा रोग हो जायगा, जिसके आराम करनेवाले वैद्य इस जगत्में चिराग़ लेकर खोजने से भी न मिलेंगे।

चलते हुए वीर्य्यंको और ज़रासी देरके मज़ेके लिये रोकने से आपका पुरुषत्व मारा जायगा, आप हींजड़ेके समान होजायँगे।

बस्ति यानो पेड़ूमें घोर पथरीका रोग हो जायगा, जिसके हो जाने पर आपको जीवन भार मालूम होगा।

व्रत उपवास अधिक करोगे, तो आपकी उम्र घट जायगी।

अजीर्ण होने पर भी, पहला भोजन न पचने पर भी, यदि आप फिर खा लेंगे, तो आप हैज़े से मर जायँगे अथवा आपको बवासीर जैसा, जन्मसे ही दुस्साध्य, रोग हो जायगा ; जिसके होनेसे सदा आपके प्राण कण्ठमें रहेंगे। विषम भोजन करोगे, तो आपकी अग्नि विषम हो जायगी। कभी भोजन पच जायगा, कभी न पचेगा, सदा हाज़मे की शिकायत बनी रहेगी, डाक्टरोंका घर भरा जायगा।

दूधके साथ मछली जैसा संयोग-विरुद्ध भोजन करोगे, तो अन्धे, बहरे, गूँगे हो जाओगे अथवा बिना मौत मर जाओगे।

अपनी सामर्थ्य से अधिक काम करोगे, तो ख़ूब ही जल्दी मरोगे।

रजस्वला स्त्रीके साथ संगम करोगे, तो आपसे लक्ष्मी हज़ार कोस दूर भागेगी, आपके शरीरका रक्त—ख़ून—दूषित होकर अनेक भयानक रोग होंगे।

क़ायदेके खिलाफ़ खाना-पीना, सैर सपाटा, सोना-बैठना प्रभृति करोगे, तो रोग और लोगों को छोड़ कर आपहीके पास दौड़-दौड़ कर आवेंगे।

अधिक शोक या चिन्ता करोगे, तो ख़ूब जल्दी बूढ़े होगे ; अनेक रोग-राक्षस आपके शरीर में आकर अपना घर बनावेंगे, आपके रङ्ग-रूप बल-वीर्य्य सब नाश हो जायँगे।

एक-ही-एक रसका सेवन कीजियेगा, तो आप दुर्बल होते चले जायँगे।

मलमूत्र आदि तेरह वेगोंको रोकियेगा, तो आप रोगोंके मारे हैरान हो जाइयेगा, भगवान्से सदा मृत्युको भेजनेकी प्रार्थना कीजियेगा। बिना विचारे ज़बानसे बात निकाल बैठोगे, तो बहुत पछताओगे। इस भूलका जो परिणाम होगा; वह सदा आपके हृदयमें शुलकी तरह खटकता रहेगा।

यदि आप परमायु चाहते हैं, सदा सुखी और निरोग रहना चाहते हैं; शरीरमें बल और पुरुषार्थ की वृद्धि चाहते हैं; तो आप तेलके कुल्ले किया करें, बदनमें तेल लगवाया करें, यथाग्नि समय पर हलका भोजन किया करें, मीठे खट्टे प्रभृति छहों रसों का सेवन किया करें। रातको नींद भर कर सोया करें, मनको सदा प्रसन्न रक्खा करें, लोभसे दूर रहा करें, सत्य बोला करें, सन्तोष और शान्तिसे प्रेम करें, सोंच-समझ कर मुंहसे बात निकाला करें और जब समय मिले आयुर्वेद-सम्बन्धी पुस्तकों को अवश्य देखा करें।

वैद्यजी! आपभी याद रखिये,—कफपित्त नाशकोंमें शहद, वात-पित्त नाशकोंमें घी, वात-प्रधान वात-कफ के रोग नाशकों में तेल, कफ हरण कर्त्ताओंमें वमन, पित्त हरण करने वालोंमें विरेचन (जुलाब), वात हरण करनेवालोंमें बस्ती, शरीरको मुलायम करनेवाले में स्वेद (पसीना दिलाना),

सुखसे दस्त करानेवालोंमें निशोथ की जड़, नर्म जुलाबोंमें

अरण्डीका तेल, वात-कफ नाशकोंमें रास्ना, सर्वोत्तम पथ्योंमें हरड़, कुष्टनाशकोंमें खैर, विषनाशकोंमें सिरसके बीज, कृमि-नाशकोंमें बायविडङ्ग, सिरका मवाद निकालनेवालोंमें ओंगेके बीज, गुदाकी पीड़ा नाशकोंमें चीतेके जड़की छाल, दीपन-पाचन और संग्राहकोंमें कूट और नागरमोथा, पित्त-कफ नाशकोंमें जवासा, मूत्रकृच्छ (सोज़ाक) नाशकोंमें गोखरू, बवासीर-नाशकोंमें माठा, शीतनाशक लेपोंमें रास्ना और अगर, दाहनाशकोंमें खस, तृषा (प्यास) नाशकोंमें ईंट का बुझाया जल, उपशस्त्रोंमें जोंख, चिरस्थायी रोगोंमें कोढ़, असाध्य रोगोंमें यक्ष्मा, याप्यरोगोंमें वृद्ध का रोग, अहितकर देशोंमें अनुपदेश,—ये सब प्रधान हैं। और भी याद रखिये,—ज्वर सब रोगोंमें वलवान है, प्रमेह साथ न छोड़नेवालोंमें प्रधान है, चिकित्साके चार पादोंमें वैद्य प्रधान हैं, रोगीके गुणोंमें वैद्यकी आज्ञापालन करना प्रधान है, निःसंशय करने वालोंमें वैद्य की दूरदर्शिता प्रधान है, पञ्च कर्म्मों में बस्ती प्रधान है, वैद्यके गुणोंमें देश-काल आदिका विचार प्रधान है, जिनकी चिकित्सा कठिन है ऐसे रोगोंमें सन्निपात प्रधान है, जिन रोगोंका इलाज-बे-कायदे किया जाता है, उनमें आमदोष प्रधान है।

वैद्योंको इन चन्द चुनी हुई बातोंके याद रखनेसे इलाजमें सुभीता होगा और इलाज का काम न करनेवाले रोगोंसे बचेंगे।

शरीरके तेरह वेग।
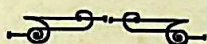
अधोवायु, विष्ठा, मूत्र, जँभाई, आँसू, छींक, डकार, वमन शुक्र, भूख, प्यास, श्वास, और नींद—ये तेरह वेग हैं। इन तेरहोंके रोकनेसे तेरह प्रकारके उदावर्त्त रोग होते हैं। इन शारीरिक वेगोंके रोकनेसे हानि होती है; किन्तु क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा, द्वेष प्रभृति मानसिक वेगोंके रोकनेसे बड़ा भारी लाभ होता है। उदावर्त्त रोग बड़े भयानक रोग हैं। कितने ही तो मनुष्य को घोर दुःख भुगाते हैं और कितने ही प्राण तक हरण कर लेते हैं; इस लिये आप भूल कर भी वेगों को न रोका कीजिये। सुनिये, इनसे कैसे-कैसे रोग होते हैं,—

पेशाब

के रोकनेसे पेड़ू और लिंगेन्द्रियमें दर्द होता है, पेशाब रुक-रुक कर थोड़ा-थोड़ा और कष्टसे होता है, सिरमें पीड़ा होती है, शरीर सीधा नहीं होता और पेटमें अफारा तथा जाँघों और और पेड़ू के जोड़ोंमें शूलसे चलते हैं।

ऐसी दशा होने पर, मूत्राघातमें पसीने निकालना पानीमें घुस कर नहाना, मालिश करना, भोजनके पहले और पीछे:

घृत सेवन करना और तीन प्रकारके वस्त-कर्म करना – ये उपाय चरकमें इसकी शान्तिके लिखे हैं ।

पाखाने

या मलके वेग को रोकनेसे पेटमें गुडगुडाहट और दर्द होता है, गुदामें कतरने की सी पीड़ा होती है. टट्टी साफ नहीं होती, डकारें आती हैं अथवा मुँहसे मल निकलता है। ये लक्षण माधवाचार्य्यने लिखे हैं। चरक में लिखा है, पक्वाशय और मस्तकमें पीड़ा होती है। अधोवायु और मल दोनों रुक जाते हैं। नाभि मलसे ल्हिस जाती है और पेट फूल जाता है।:

चरकमें लिखा है, मलके रुकने पर स्वेदन, अभ्यङ्ग, अव-गाहन, तीन प्रकारकी बत्ती, बस्ती-कर्म तथा वायुको अनु-लोमन करने वाले खान-पान,– इन सबसे काम लेना चाहिये।

शुक्र

यानी वीर्य्य के रोकनेसे मूत्राशयमें सूजन, गुदा और फोतों में पीड़ा, पेशाब का कष्टसे होना, शुक्र की पथरी, वीर्यका रिसना,—माधवने लिखा है, ऐसे-ऐसे अनेक रोग होते हैं। चरकने लिखा है, मैथुन करते समय छुटते हुए वीर्यके रोकने से लिङ्ग और फोतेंमें दर्द, शरीर टूटना यानी अङ्गड़ाई आना, हृदयमें पीड़ा और पेशाब का रुक-रुक कर होना—ये उपद्रव होते हैं।

ऐसी हालत होने पर मालिश, अवगाहन, यानी ग़ोते लगाकर जलमें नहाना, शराव पीना, मुर्ग़ोंका मांस खाना, शाली चाँवल खाना; दूध पीना, निरूह बस्ती और मैथुन करना—ये उपाय उत्तम हैं।

अधोवायु

यानी गुदा द्वारा निकलनेवाली हवाको शर्म या लज्जावश रोकनेसे अधोवायु, मल और मूत्र ये रुक जाते हैं, पेट फूल जाता है, अनायास थकानसी मालूम होती है, पेट में वादीसे दर्द होता है, और भी वायुके उपद्रव होते हैं।

ऐसा होने पर स्नेह, स्वेद और बस्तीकर्म करना तथा वायुको अनुलोम करवाले भोजन और पान देना उत्तम उपाय हैं।

वमन

के वेगको रोकने यानी आती हुई क़यको रोकनेसे खुजली, चकत्ते, अरुचि, मुँह पर झाँई, सूजन, पीलिया सूखी ओकारी और विसर्प—ये उपद्रव होते हैं। चरकमें कोढ़ अधिक लिखा है।

इन रोगोंके दूर करनेके लिये भोजनके बाद वमन करानी चाहिये, उसके बाद धूम-पान और लङ्घन कराने चाहियें तथा फस्त खोलनी चाहिये। इनके सिवा रूखे पदार्थोंका सेवन, कसरत और जुलाब, ये सभी उत्तम हैं।

छींक

के वेग को रोकनेसे गर्दनके पीछे की मन्या नामक नस जकड़ जाती है, सिरमें शूल चलते हैं, आधा मुँह टेढ़ा हो जाता है, इन्द्रियाँ दुर्वल हो जाती हैं और अर्द्धाङ्गमें वात-रोग हो जाता है। चरकने लिखा है—गर्दन का जकड़ना, मस्तक-शूल, लकवा, आधाशीशी और इन्द्रियोंकी दुर्वलता होती है।

ऐसी हालतमें हँसलीके ऊपरी भागमें मालिश करना; स्वेनद, धूम-पान, और नस्यका प्रयोग करना; वात नाशक क्रिया करना और भोजनके पहले और पीछे घी पीना—ये उत्तम उपाय हैं।

डकार

के वेग को रोकनेसे बादीके इतने रोग होते हैं—कंठ और मुख का भारीसा मालूम होना, एकदमसे नोचनेका-सा दर्द होना, समझमें न आवे ऐसी बात कहना। चरकने लिखा है—हिचकी, खाँसी, अरुचि, कम्प, और हृदय तथा छातीका बँधासा मालूम होना—ये:रोग होते हैं।

ऐसा होने पर हिचकी-रोगमें जो इलाज किया जाता है, वही इसमें भी करना चाहिये। हिचकी और श्वास का कारण कफयुक्त वायु है और दोनों का स्थान भी आमाशय हैं। इस लिये ऐसा उपाय करना चाहिये, जिससे छेदोंमें चिपटा हुआ

कफ पिघल जाय और श्वास-वायु अपनी राह में ठीक आने-जाने लगे। रोगीको स्वेद कराकर चिकना भोजन देना चाहिये, जिससे कफ बढ़े, पीछे पीपल, सेंधे नोन और शहत से या और किसी दवासे जो वायु की विरोधी न हो, वमन करानी चाहिये। वमन होने से कफ निकल जायगा, छेदों के शुद्ध होनेसे वायु स्वच्छन्दता-पूर्वक विचरने लगेगी, रोगीको आराम मालूम होगा। फिर भी यदि कुछ दोष रह जाय, तो धूमपान द्वारा निकाल देना चाहिये। जौ की बत्ती को चिलम में रखकर पिलाना, मोम, राल और घी—इन तीनों को इकट्ठा पीस कर, मल्लक सम्पुट में रखकर, धूम पान कराना अथवा हिचकी-नाशक नस्य सुंघाना, इस काम के लिये उत्तम उपाय हैं। हम हिचकी नाशक चन्द परीक्षित उपाय लिखते हैं—

(१) नाकमें हींग की धूनी दो

(२) ज़रासे सेंधानोनको जलमें पीसकर सुंघाओ

(३) मक्खी के गू को दूध में पीसकर सुंघाओ

(४) सोंठ को गुड़ मिलाकर सुंघाओ

(५) मुलेठीको शहतमें मिलाकर सुंघाओ।

(६) शहत और काला निमक मिलाकर बिजौरे का रस पिलाने या केवल शहत चटाने से असाध्य हिंचकी भी आराम होती है।

(७) सोंठ, पीपल, धायके फूल, इनके चूर्ण को शहत में मिलाकर चटाओ।

(८) डराने, आश्चर्यजनक बात कहने, प्राणायाम करने, अद्भुत बात कहने, मनमें चोट लगनेवाली बात कहने आदि से हिचकी आराम हो जाती है।

जंभाई

के वेग को रोकने से गर्दनके पीछे की नस और गलेका जकड़ जाना, मस्तक में बादीके विकार होना, नेत्र-रोग नासा-रोग, मुखरोग, और कर्णरोग का जोरसे होना—ये सब उपद्रव होते हैं। चरक में लिखा है—अङ्गों का नव जाना,—आक्षेपक वायु, सङ्कोच, शरीरके अङ्गोंका सोजाना और काँपना ये उपद्रव होते हैं।

इससे हुए रोगोंमें वातनाशक औषधि देना हितकारी है।

भूख

के वेगको रोकने से तन्द्रा, शरीर टूटना, अरुचि, थकाई, और नजर कम होना ये रोग होते हैं। चरक में लिखा है—देह में दुर्बलता, कृशता, विवर्णता, अङ्ग टूटना और भ्रम,—ये लक्षण होते हैं।

इसमें चिकने, गर्म और हल्के भोजन देना हितकारी है।

प्यास

के वेग को रोकने से कण्ठ और मुंह सूखते हैं, कानों से

कम :सुनायी देता है और हृदय में पीड़ा होती है। चरक में—श्रम और श्वास का होना अधिक लिखा है।

इससे हुए रोगोंमें शीतल क्रिया और तर्पण करना हितकारी है।

हम चन्द् उपाय लिखते हैं:—

(१) शहत का गण्डूष धारण करो।

(२) वड़के अङ्कुर, शहत, कूट, कमल और खील—इनको एक जगह पीस कर गोलियाँ बना लो। पीछे इन गोलियों को मुख में रक्खो।

(३) अनार, वेर, लोध, और विजौरे नीवू को एक जगह पीसकर माथे पर लेप करो।

(४) गीले कपड़े को शरीर पर लपेट लो।

(५) चाँवलों के जलमें शहत मिलाकर पीओ

(६) छटाँकभर मिश्रीको शीतल जलमें घोलकर शर्वत बना लो; पीछे उसमें ४।५ छोटी इलायची, चाँवलभर कपूर, २।३ लौंग १०।१५ काली मिर्च—इन सबको पीसकर मिला दो। शेषमें बारीक कपड़ेसे छान कर पिला दो। इसे "शर्करोदोक" कहते :हैं। यह बहुत ही उत्तम चीज़ है। यह वीर्य पैदा करनेवाला, पेट की जलन नाश करनेवाला, दस्त साफ़ लानेवाला, स्वाद में मज़ेदार; वात, पित्त, और खून विकार का नाश करनेवाला; बेहोशी जी मिचलाना और प्यास आदिके शान्त करनेमें परमोत्तम है।

(७) खस का इत्र सुंघाओ, खस के पंखे से हवा करो; सरसब्ज बाग़ की सैर करो। इन सब उपायों से अथवा इनमें से दो-तीन उपायों से बेशक बहुत लाभ होगा।

आँसुओं

के वेग को रोकने से मस्तक का भारीपन, नेत्ररोग और पीनस,—ये रोग ज़ोरसे होते हैं। चरक में लिखा है—जुकाम, आँखोंका रोग, हृदयरोग, अरुचि और भ्रम,—ये रोग होते हैं।

इस हालतमें नींदभर सोना, हलकीसी बढ़िया शराब पीना, चित्त प्रसन्न करनेवाली प्यारी-प्यारी बातों का कहना, मीठा-मीठा बाजा बजाना प्रभृति हितकारी है।

नींद

के वेग का धारण करनेसे जँमाई, अङ्ग टूटना, नेत्र और मस्तक का जड़ हो जाना और तन्द्रा—ये रोग होते हैं।

इस हालतमें शान्तिपूर्वक सोना और किसो दूसरे शख़्स का पैर:के तलवे और हाथ की हथेलियों का सुहराना हितकारी है।

सांस

के वेगको रोकने से हृदयरोग, मोह और वायुगोला,—ये रोग होते हैं। बाज़-बाज़ शख़्स थक जाने पर साँस रोका करते हैं।

इस दशा में रोगी को आराम देना चाहिए और वात-हरणकारी यानी बादी को नाश करनेवाली क्रियाए करनी चाहिएँ।

चरक भगवान्के उपदेश।

चरक भगवान् कहते हैं—शरीर-सम्बन्धी इन तेरह वेगोंको कभी मत रोको, जिससे ऐसे भयानक रोग हों।

यदि इस लोक और परलोक में मङ्गल चाहो, तो अनुचित साहस के वेगको, मनके वेग को, वाणीके वेग को, देहके वेगको, कर्म के वेग को तथा लोभ, शोक, भय, क्रोध और अभिमान के वेग को रोको। निर्लज्जता के वेग को, ईर्ष्या के वेग को, अनुराके वेग को और पराई सम्पत्ति देखकर कुढ़ने के वेग को रोको।

कठोर बोलने के वेग को, अत्यन्त ग्लानिसूचक बात के वेग को, मिथ्या बोलने के वेगको और अकालयुक्त वाक्यके वेग को रोको। दूसरे को कष्ट देने के वेग को रोको, स्त्री-सङ्गके वेग को, चोरी के: वेग को और हिंसा :प्रभृति के वेगको रोको ; अर्थात् अनुचित साहस मत करो, मनमें आवे सो मत कर बैठो, चाहे जो ज़बान से मत निकाल बैठो ; लोभ, शोक, भय, क्रोध और घमण्ड को पास मत आने दो ; शर्म को मत छोड़ो,;चटपट किसी पर मोहित न हो जाओ, पराई दौलत या पराया वैभव देखकर कुढ़ो मत, कठोर बात मत बोलो

झूठमत बोलो, दूसरे को जिससे कष्ट हो ऐसी बात चित्त में भी न लाओ, रण्डीबाज़ी से बचो, चोरी का ध्यान भी न करो, किसी भी प्राणी की हत्या मत करो इत्यादि ।

यदि आप शारीरिक वेगों को न रोकेंगे; मन-वच-कर्म से निष्पाप रहेंगे, तो आप 'पुण्यश्लोक' हो जायँगे । आप सदा सुखी रहेंगे, तो आपका धन-धर्म बढ़ेगा, कामकी प्राप्ति होगी और लक्ष्मी आपकी चेरी रहेगी ।

कसरत अच्छी है । सामर्थ्यानुसार कसरत करने से शरीर हलका और मज़बूत होता है, काम करने और क्लेश सहने की सामर्थ्य होती है, तीनो दोषोंका क्षय होता है, भूख बढ़ती है; मगर इसके भी अधिक करने से थकान, ग्लानि, क्षय-रोग, प्यास, रक्तपित्त, प्रतमक-श्वास, खाँसी, ज्वर और वमन—ये उपद्रव होते हैं ।

इसीलिए बुद्धिमानको ज़रूरत होनेसे भी अत्यन्त करसत, बहुत हँसना, बहुत बोलना, बहुत रास्ता चलना, बहुत स्त्रीसंसर्ग करना, और बहुत जागना—इनसे बचना चाहिए ।